मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 03 | सितम्बर, 2020 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

शिक्षक दिवस विशेषांक

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

ज्ञान के दूत हैं शिक्षक

'शिक्षा' (Education) की जब भी चर्चा होती है तो सर्वप्रथम 'शिक्षक' (The Teacher) एवं 'शिक्षार्थी' (The Student) के नाम आते हैं। शिक्षा किसके लिए और शिक्षा किसके द्वारा प्रश्नों के जवाब शिक्षार्थी एवं शिक्षक हैं। यही गुरु-शिष्य परम्परा है। इसके समान्तर मेरा चिन्तन पात्रता को लेकर चलता है। पात्रता किसी भी व्यक्ति के लिए अपेक्षित कार्य को करने के लिए आवश्यक योग्यता एवं क्षमता उसमें होने का नाम है। इसे यदि शिक्षक एवं शिक्षार्थी के संदर्भ में देखें तो अनेक गुण एवं अपेक्षाएं दिखाई देने लगेंगी जो उनमें होनी चाहिए। शिक्षक एवं शिक्षार्थी से क्या चाहा गया है और उनमें वे कितने खरे उतरते हैं, इसकी समय-समय पर समीक्षा की जाती रहनी चाहिए।

हम प्रति वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस, 15 अक्टूबर को शिक्षार्थी दिवस तथा 11 नवम्बर को शिक्षा दिवस मनाते हैं। इस माह 5 सितम्बर के दिन शिक्षक दिवस है। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति, विश्व प्रसिद्ध शिक्षक, उद्भट विद्वान एवं महान दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन् का जन्म दिन 5 सितम्बर भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस पावन दिवस पर प्रदेश के सभी गुरुजनों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आप सब सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहें, मेरी यही कामना है।

राजस्थान के शिक्षक ऊर्जा एवं उत्साह से लबरेज हैं। वे ज्ञान के दूत हैं। परिश्रम, समर्पण एवं प्रतिबद्धतापूर्वक शिक्षण के साथ ही उन्हें सौंपे गए विशिष्ट उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने तथा सामाजिक सरोकार के कार्यों में भी उल्लेखनीय कार्य करते रहे हैं। कोरोना महामारी से मुकाबले में उनकी भूमिका बहुत प्रशंसनीय रही है। मैं इसकी सराहना करता हूँ। महामारी के कारण विद्यालयों में शिक्षण कार्य स्थगित है। बच्चे पिछले छः माह से स्कूल नहीं आ रहे। इसके बावजूद ऑनलाइन शिक्षण, टेलीफोनिक एवं व्यक्तिगत सम्पर्क आदि के जरिए शिक्षा की अलख आप जगा रहे हैं। स्कूल न आकर भी आज बालक एवं उसके परिवार में शिक्षा की बात कही-सुनी जा रही है। यह बहुत अच्छा प्रयास है। आशा और विश्वास हमारी ताकत है। इस त्रासदी से मुक्ति मिलेगी और पहले की तरह सामान्य स्थिति फिर बनेगी। तब हम अपनी रफ्तार को बढ़ाकर इस दौर में रही कमी को पूरा कर लेंगे।

इस माह 8 सितम्बर के दिन विश्व साक्षरता दिवस है। साक्षरता शिक्षा की आधार शिला है। अगले माह 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 151वीं जयन्ती है। मैं चाहता हूँ कि इस दिन प्रदेश के सभी महात्मा गाँधी सार्वजनिक पुस्तकालयों के तत्वावधान में प्रभातफेरी, प्रार्थना सभा एवं विचार गोष्ठी जैसे आयोजन अवश्य किए जाएं। गाँधी जी सदाचार और निर्मल जीवन को शिक्षा का आधार मानते थे। जीवन में पवित्रता, प्रामाणिकता एवं शुद्धता बहुत आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति में ये गुण सोने में सुहागे की भांति होते हैं। शिक्षकों को इन उच्च मानवीय गुणों का धारक एवं प्रसारक होना चाहिए। इसी में उनकी महानता है।

एक बार पुनः शिक्षक दिवस एवं साक्षरता दिवस की हार्दिक बधाई एवं कोटिशः शुभकामनाओं के साथ.....

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"राजस्थान के शिक्षक ऊर्जा एवं उत्साह से लबरेज हैं। वे ज्ञान के दूत हैं। परिश्रम, समर्पण एवं प्रतिबद्धतापूर्वक शिक्षण के साथ ही उन्हें सौंपे गए विशिष्ट उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने तथा सामाजिक सरोकार के कार्यों में भी उल्लेखनीय कार्य करते रहे हैं। कोरोना महामारी से मुकाबले में उनकी भूमिका बहुत प्रशंसनीय रही है। मैं इसकी सराहना करता हूँ।"

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 3 | भाद्रपद शु.-आश्विन शु. २०७७ | सितम्बर, 2020

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- कर्तव्य और सम्मान 5

आलेख
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : सार स्कूली शिक्षा, **विप्रा अग्रवाल** 7
- जीतेंगे हम : **मंगल कुमार जैन** 11

शैक्षिक चिन्तन
- शैक्षिक चिन्तन की दिशा 12
  रमाकान्त वर्मा
- आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतन 13
  चैनाराम सीरवी
- परिणामोन्मुखी शिक्षा : **कुमार पाल सिंह** 16
- महावीर स्वामी और महात्मा गाँधी 18
  शबनम भारतीय
- वर्चुअल शिक्षा : स्कूली शिक्षा का बदलता स्वरूप : **प्रियंका जैन** 20
- ज्ञान वर्तमान शिक्षा : **डॉ. रिंकू सुखवाल** 21
- भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा 23
  विजय सिंह माली
- पद्मभूषण श्री अनिल बोर्दिया 25
  चम्पालाल उपाध्याय
- शिक्षक एक बहुआयामी शिल्पकार 26
  कुलदीप सिंह
- राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं शिक्षक 27
  बिहारी लाल जाँगिड़
- तुम्हारे पास कौन आता है? 28
  नरेश जाँगिड़
- एक आदर्श अध्यापक 29
  सत्यनारायण पंवार
- शिक्षा में बाल रंगमंच : एक विमर्श 30
  डॉ. रवीन्द्र मारू
- शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व 31
  सुरेश कुमार
- अवसर को पकड़ना ही, व्यक्ति को महान बनाता है : **हंसराज 'हंस' तंवर** 32
- डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा दर्शन 33
  राकेश
- शिक्षा में आई.सी.टी. की भूमिका 34
  सुभाष चौधरी
- ई-शिक्षा : **सीमा शर्मा** 35
- भारतीय वाङ्मय में-योग-प्रबोधन 36
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- शिक्षण सूक्तियाँ एवं प्रभावी अध्ययन 37
  मूलाराम परिहार
- विद्यालयी शिक्षा में समाजीकरण लैंगिंक समता के अवसर : **दिनेश कुमार गुप्ता** 38
- भारत माता : **कान्ता चाड़ा** 41

हिन्दी विविधा
- समय का मोल : **विमला नागला** 42
- विश्वास की कड़ी : **सीमा पोपली** 43
- विद्यार्थी जीवन की यादें : **सुधा रानी तैलंग** 45
- हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी 46
  डॉ. गिरीश दत्त शर्मा
- संघर्ष : **गोविन्द लाल** 47
- जीने का हक : **अरनी रॉबर्ट्स** 48
- सकारात्मक सोच की उद्भावना 50
  सुशीला चौधरी
- महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन 51
  मुकेश प्रजापत
- अनुत्तरित : **मनमोहन गुप्ता** 52
- भोला की कामयाबी 53
  दीपक कुमार गुर्जर 'दीप'
- जैसी दृष्टि-वैसी सृष्टि 54
  गोमाराम जीनगर
- भाषा विकल्प नहीं संकल्प है : **रमेश जोशी** 56
- TLM एक नवाचार : **मंजू वर्मा** 57
- इन्सानियत अभी जिन्दा है 58
  श्रवण सिंह राजपुरोहित
- चिड़िया : **मनोज कुमार यादव** 59
- एकता की ताकत 60
  ओम प्रकाश सारस्वत
- बच्चे बदल रहे थे, यही एक सुकून की खबर थी : **माणिक** 61
- राष्ट्रीय बाल आपदा विज्ञान काँग्रेस (NCSC) 64
  विमलेश चन्द्र
- नैतिक मूल्यों का ह्रास-एक चुनौती 65
  पृथ्वीराज लेघा
- जीतने की जिद्द : **अरूण कुमार** 68

- प्यार की जीत : **महेश कुमार चतुर्वेदी** 69
- भूटान के दीप : **शिवनारायण शर्मा** 70
- लॉक-डाउन : **तुलाराम निर्वाण** 71
- सच्चा शिक्षक : **विजयलक्ष्मी** 72
- बाल सभा ऐसी भी : **निधि शर्मा** 73

हिन्दी कविता

- क्योंकि अब इस दुनिया में : **शीतल साँगला** 74
- नमस्ते कर, नमस्ते कर : **अमित शर्मा** 74
- हे राही! तू चलना चल : **मनोज कुमार शर्मा** 74
- कर्मशाला : **इंद्रा** 75
- परिवार की अहमियत : **रामगोपाल राही** 75
- जिज्ञासा : **लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्णकली'** 76
- समय का उत्तर : **सुमन सिंह** 76
- धरा : **मधु वाघेला** 77
- अभिनन्दन : **हिम्मत राज शर्मा** 77
- सहारा : **डॉ. चेतना उपाध्याय** 77
- हम अलख जगाने आए हैं... 78
  महेश पंचाल 'माही'
- हम शिक्षक हैं : **संगीता जोया** 78
- आओ स्कूल चलें : **सुभाषचन्द्र** 79
- त्याग : **कमल सिंह भाटी** 79
- गुरु की महिमा : **प्रेम चन्द दाधीच** 80
- नया विश्व निर्माण : **सत्यपाल अवस्थी** 80
- ग्रीष्म ऋतु : **चन्द्र भान सम्मौरिया** 81
- शिक्षक मैं कहलाता हूँ : **शंकर दान** 81
- वक्त : **गिरधारी लाल** 82
- कर्त्तव्य पथ : **सोहन लाल कुमावत** 82
- मैं शिक्षक, मेरे अच्छे बच्चे 83
  लक्ष्मण राम सोलंकी
- मनुज से.... : **वेद प्रकाश कुमावत** 83
- है प्रकृति! तुझे नमन : **गोपाल कृष्ण शर्मा** 83
- छंद : **आभा मेहता 'उर्मिल'** 84
- बेटी देश की शान 84
  महीपाल सिंह 'खरडिया'
- शिक्षक : अज्ञानहर्ता : **तारकेश्वरी** 85
- नवीन : **मधु उपाध्याय** 85
- सीखो : **रेखा कुमारी ओझा** 85
- मन दीपक : **राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'** 85
- माँ की ममता : **प्रिंस व्यास** 85
- शिक्षा : **पवन कुमार माली** 86
- शिक्षक : **बाबूखान शेख** 86
- तेरी महिमा का पार नहीं... 86
  रामकृष्ण शर्मा
- आज फिर से सावन आया है : **बस्तीराज जाट** 86
- अब कोरोना का रोना क्यों 87
  डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
- अभिशाप है : **दीपसिंह भाटी** 87
- प्रेरक क्षणिकाएँ : **ललित देव शर्मा** 88
- निश्चय ही तुम्हारी जीत हो 89
  रेखा सुथार 'माधवप्रिया'
- हिन्दी और हिन्दुस्तान : **गौरव शर्मा** 89
- कामयाब : **प्रकाश कुमार खोवाल** 89
- शिक्षक समाज को संवारता है 90
  ब्रजपाल सिंह
- शिक्षक को प्रणाम 90
  घींसाराम धेतरवाल 'मानव'
- युग निर्माता : **रश्मि शर्मा** 90
- शिक्षा : **सुनीता नानकानी** 90
- कोरोना से जंग में... : **जगदीश चन्द्र शर्मा** 91
- मरुधर : **ईसरा राम पंवार 'मजल'** 91
- हे ईश्वर कुछ ऐसा कर दे 91
  संपत लाल शर्मा 'सागर'

राजस्थानी

- सत किण में? : **हेमा** 92
- फैरीवाळी : **भोगीलाल पाटीदार** 93
- चोर री रूखाळी 95
  रामजीलाल घोड़ेला 'भारती'
- बड़गड़ां बड़गड़ां : **आशुतोष** 96
- विमला : **आर.आर. नामा** 97
- आ राजस्थानी भाषा है : **नारायण दास जीनगर** 98
- मोट्यार : **गोपाल लाल वर्मा** 98
- फीस : **मनोज कुमार स्वामी** 99
- नेगम नींद निवाण : **जेठनाथ गोस्वामी** 101
- दस्तखत : **पूर्णिमा मित्रा** 103
- चेतो मिनखां चेतो : **सत्य नारायण नागौरी** 103
- लगन : **डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत** 103
- म्हारी भासा : **रतन लाल जाट** 104
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ : **नीलम पारीक** 104
- आ धरती धवळै धोरां री : **मदन सिंह राठौड़** 105
- आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार 106
  ओमदत्त जोशी
- प्यारो राजस्थान : **बिहारी लाल** 106
- चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, 107
  पढ़बा न चालो : **जी.आर. गुर्जर, देवेन्द्र'**
- भवावजू : **भाविक कुमार लौहार 'भावी'** 107
- लेखणी : **दशरथ सिंह खिड़िया** 108
- गाँव का बचपन : **नीलू कंवर शेखावत** 108
- श्रम री महिमा (लोकगीत) 108
  नाथू सिंह राजपुरोहित 'मनवा'
- विद्यार्थी री व्यथा : **जीतराम मकवाना** 109
- हाइकू छंद : **कमल कुमार जाँगिड़** 109

बाल साहित्य

- बालकाव्य एवं इसके मानदण्ड 110
  डॉ. बनवारी लाल पारीक 'नवल'
- शिक्षा का अधिकारी : **गोविन्द भारद्वाज** 111
- बचपन है अनमोल हमारा... 112
  मनमोहन गुप्ता
- दिवस भर चलती रहती चींटी 112
  नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'
- लैपटॉप इनाम में लूँगा 113
  डॉ. विजयगिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
- बचपन : **सुरेश कुमार शर्मा** 113
- वतन हमारा : **जितेन्द्र कुमार** 113
- बाबा : **भावना मिश्रा** 114
- विद्यार्थी जीवन : **राजेन्द्र सिंह चारण** 114
- मीठी रसदार जलेबी/पुस्तक मेरी मीत बनी 115
  प्रमोद दीक्षित 'मलय'
- गुरुवर शिक्षक : **जनकदुलारी वर्मा** 115
- हाथी आया हाथी आया : **नोरत मल रेगर** 115
- ग़ज़ल : **डॉ. भँवर कसाना** 115
- गुरुवर शिक्षक : **जनकदुलारी शर्मा** 115
- माँ : **सुमन ओझा** 116
- छप छप करता पानी : **पुखराज सोलंकी** 116
- दिनचर्या : **प्रतिभा व्यास** 116
- भारत महान : **चन्द्रिका व्यास** 116
- मन की अभिलाषा : **सत्य भूषण शर्मा** 117
- कुछ वक्त अपने आप के लिए निकाल 117
  लेने चाहिए : **अंकित कुमार शर्मा**
- हमको है देश से प्यार 117
  जगदीश चन्द्र कुम्हार
- संकट में दुनिया सारी... : **सतीश गोयल** 118
- राखी का अटूट रिश्ता : **शालू मिश्रा** 118

रपट

- Anintrospective and Prospective 119
  Assessment : **Lukut Ballabh Gaur**

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 66-67
- बाल शिविरा 124
- नवाचार 125
- शाला प्रांगण से 126
- हमारे भामाशाह 130

पुस्तक समीक्षा 121-124

- पिघलते लम्हों की ओट से
  लेखिका : श्रीमती कीर्ति शर्मा
  समीक्षक : **ओमप्रकाश सारस्वत**
- छुट्टी आई मौज करो
  लेखक : रामजीलाल घोड़ेला
  समीक्षक : **कमल किशोर पिपलवा**
- खेत
  लेखक : दिनेश पंचाल
  समीक्षक : **डॉ. प्रमोद कुमार चमोली**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641 विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

सत्यमेव जयते

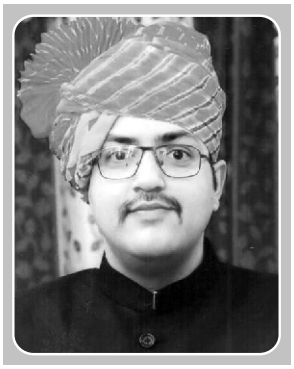

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

कर्तव्य और सम्मान

महान शिक्षक, दार्शनिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन, 5 सितम्बर **शिक्षक दिवस** के रूप में मनाते हुए हम सभी भारतीय गर्वानुभूति करते हैं।

शिक्षा विभाग राजस्थान में 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर शिक्षकों के सम्मान की सुदीर्घ उज्ज्वल परम्परा है। इसी परम्परा में गत वर्ष नया आयाम जुड़ा जिसे इस वर्ष भी हमने आगे बढ़ाया है। हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री, ऊर्जावान शिक्षा मंत्री और संवेदनशील प्रशासन की पहल पर श्रेष्ठ शिक्षकों के सम्मान की पारदर्शी और विकेन्द्रीकृत चयन प्रक्रिया अपनाई गई इसके अन्तर्गत सुदूर ढाणी और शहर में कार्यरत कर्मठ शिक्षकों को अधिक संख्या में सम्मानित करने का अवसर विभाग को मिला।

'शिक्षक दिवस' हमें उन सभी शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर देता है जिनकी बदौलत हमें आज की सामर्थ्य मिली है। इस सामर्थ्य से हम शिक्षा के क्षेत्र में अपना शत-प्रतिशत योगदान देकर अपना कर्तव्य पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। सभी सम्मानित शिक्षकों से मेरी अपेक्षा है कि वे अपने विद्यार्थियों को पूर्ण मनोयोग से विद्याध्ययन करवाते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और श्रेष्ठ संस्कार देने के प्रति कटिबद्ध रहें। सुदृढ़ राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण में समर्पित शिक्षकों की सदैव ठोस भूमिका रही है। हर युग में 'रामकृष्ण परमहंस' को 'स्वामी विवेकानन्द' की तलाश रही है। समर्पित शिक्षकों का सम्मान सदैव विद्यार्थी के दिल में रहता है।

'कोरोना' महामारी से प्रभावित परिवर्तित परिस्थितियों में हम शासन की एडवायजरी की पालना करते हुए अपनी क्षमता का श्रेष्ठतम कार्य करने का संकल्प लें।

आप सभी निरन्तर प्रगति करें। स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें।

'शिक्षक दिवस' की बधाई! हार्दिक शुभकामनाएँ!!

(सौरभ स्वामी)

"'शिक्षक दिवस' हमें उन सभी शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर देता है जिनकी बदौलत हमें आज की सामर्थ्य मिली है। इस सामर्थ्य से हम शिक्षा के क्षेत्र में अपना शत-प्रतिशत योगदान देकर अपना कर्तव्य पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। सभी सम्मानित शिक्षकों से मेरी अपेक्षा है कि वे अपने विद्यार्थियों को पूर्ण मनोयोग से विद्याध्ययन करवाते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और श्रेष्ठ संस्कार देने के प्रति कटिबद्ध रहें।"

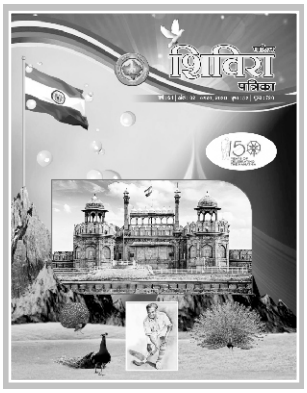

▼ चिन्तन

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति
विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां
विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।

भावार्थ : जिसे सुख की अभिलाषा हो (कष्ट उठाना न हो) उसे विद्या कहाँ से? और विद्यार्थी को सुख कहाँ से? सुख की इच्छा रखने वाले को विद्या की आशा छोड़नी चाहिए, और विद्यार्थी को सुख की।

पाठकों की बात

- शिक्षा विभाग राजस्थान की मासिक पत्रिका 'शिविरा' वैसे भी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। राजस्थान प्रदेश भर में घटित शिक्षा विभाग की संपूर्ण गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत करता एक दस्तावेज है। साथ ही विभाग द्वारा संचालित विद्यार्थी हितैषी योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करना इसकी श्रेष्ठता है। वही भारत वर्ण के अनूठे लाल जो आगे चलकर महापुरुषों के रूप में विख्यात हुए उनके जीवन दर्शन से सबको अवगत कराना इसकी अन्य विशेषता है। बहुरंगी शिविरा पत्रिका का माह अगस्त-20 का अंक नियमित पाठक के रूप में पढ़ा। माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा का साक्षात्कार राज्य में शैक्षिक उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों कार्यक्रमों व सरकार के चिंतन को उद्घाटित करने वाला लगा। शिविरा के प्रारंभिक पृष्ठों पर माननीय शिक्षामंत्री जी व श्रीमान शिक्षा निदेशक जी के द्वारा रचित क्रमशः 'अपनों से अपनी बात' व 'मेरा पृष्ठ' विभाग के अभिभावकों द्वारा दी गई सीख जैसे लगते है व प्रेरणादायक होते है। अगस्त के अंक में शिक्षामंत्री जी द्वारा 12वीं कला संकाय के राज्य टॉपर छात्र प्रकाश पुलवारिया की पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुति अत्यंत प्रशंसनीय है। इसी अंक में श्री नारायणदास जीनगर द्वारा रचित आलेख 'शिक्षा की सार्थकता बनाम उपयोगिता' बेहद ही ज्ञानवर्द्धक लगा। श्री जीनगर ने भारत में प्राचीनकाल की शिक्षा व्यवस्था में सर्व सुलभ व सार्वजनीकरण के अभाव को जहाँ रेखांकित किया है वहीं शिक्षा के अर्थ, सार्थकता व उपयोगिता के गूढ़ार्थ व व्यवहारपरक दोनों तरीकों का बेहतरीन प्रयास किया है।

भग्गाराम ढाल, कोलायत, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका का अगस्त अंक राष्ट्रीयता के रंगों-प्रतीकों की खास सज-धज के साथ प्रकट हुआ। बापू के आदर्शों की प्रासंगिकता और सिनेमा के प्रति उनकी अवधारणा के साथ ही राष्ट्रीय खेल दिवस की अहमियत और कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षण के ध्येय को रेखांकित करते इस अंक ने इससे भी आगे बढ़कर बहुत कुछ सोचने को मजबूर कर दिया। वस्तुतः यहाँ एक विशेष आकर्षण रहा शिक्षा राज्य मंत्री गोविन्द सिंह डोटासरा का विस्तृत और संदेशपरक साक्षात्कार। शिक्षा के बहुआयामी सरोकारों से जुड़े इस दो किश्तों (जुलाई-अगस्त) में सम्पन्न सार्थक बातचीत के कुशल सूत्राधार रहे जाने-माने चिंतक-लेखक और पूर्व संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत। इसी के चलते विशिष्ठ दृष्टि की एक बानगी खुद शिक्षा मंत्री के शब्दों में 'प्रतिभा महलों की मोहताज नहीं, वह झोंपड़ी में भी जन्म ले सकती है। रिक्शा चालकों के बच्चे भी आइ.ए.एस. बनते हैं। इसी सोच ने सरकारी क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोलने के लिए प्रेरित किया। वैसे शिविरा के विगत मार्च के अंक में ही 'अपनों से अपनी बात' में प्रोफेसर यशपाल समिति और कृष्ण कुमार का उल्लेख करते हुए उन्होंने शिक्षा में नवाचार 'नो बैग डे' जैसे विचार को साझा किया जिसका प्रभाव इस अगस्त अंक में विजय कुमार आर्य (नो बैग डे) और तिलक राज (रचनात्मक शनिवार) के लेखों में झलक उठा।...और हाँ, इसी अंक में नारायण दास जीनगर का विशेष लेख 'शिक्षा की सार्थकता बनाम उपयोगिता' पढ़ने को मिला जो एकदम अनुभूत है, ज्ञानवर्धक है और चुनिंदा प्रेरक प्रसंगों की वजह से रोचक भी बन पड़ा है। सच, शिविरा के इस रूप व स्तर से गुजरकर मन प्रफुल्लित हो गया। शिविरा परिवार को हार्दिक बधाई।

भगवती प्रसाद गौतम, कोटा

- हर माह की तरह अगस्त माह का भी शिविरा सारगर्भित प्रेरक नवाचार प्रोत्साहन के साथ महत्त्वपूर्ण सामयिक चर्चाओं व जानकारियों से आपूरित था। अंक की शुरुआत बोर्ड परीक्षा में संघर्ष से मिसाल कायम करने वाले बाड़मेर के प्रकाश फुलवरिया के गौरवान्वित करने वाले संदर्भ से जुड़ी थी। इस उपलब्धि ने सरकारी स्कूल की न केवल एक अलग सकारात्मक छवि गढ़ी है बल्कि इससे सरकारी शिक्षा में नवोन्मेष का वातावरण भी सृजीत हुआ है। प्रकाश की इस उपलब्धि में उनकी लगन के साथ विद्यालय स्टाफ का विशेष मार्गदर्शन व योगदान रहा है। दिशाकल्प पृष्ठ में निदेशक महोदय द्वारा सामयिक चुनौतियों को रेखांकित किया है। वर्तमान में शैक्षिक प्रगति की प्रतिबद्धता के लिए विशेष रूप से समन्वित प्रयास की दरकार में इनका उचित निर्देशन भी नजर आता है।

राजेंद्र श्रीमाली (अध्यापक) बांसवाड़ा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : सार स्कूली शिक्षा

❒ विप्रा अग्रवाल

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता काफी समय से अनुभव की जा रही है। इसी आवश्यकता की परिणती के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आगाज हुआ है। जिसमें से मैंने स्कूली शिक्षा से संबंधित कुछ बिन्दुओं से इस शिक्षा नीति को समझाने का प्रयास किया है। उम्मीद है आपको मेरा यह प्रयास अच्छा लगेगा।

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के लिए विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। भारत द्वारा 2015 में अपनाएँ गए सतत विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक सभी के लिए समावेशी व समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने का लक्ष्य है।

ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बिग डाटा, मशीन लर्निंग और अर्टिफिसियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते एक ओर विश्वभर में अकुशल कामगारों की जगह मशीनें काम करने लगी हैं और दूसरी ओर डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस, और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और माँग बढ़ेगी जो विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों में योग्यता रखते हों। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते संसाधनों की वजह से हमें ऊर्जा, भोजन, पानी, स्वच्छता आदि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए रास्ते खोजने होंगे। महामारी के बढ़ते उद्भव, संक्रमण रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में सहयोगी अनुसंधान और परिणामी सामाजिक मुद्दे, बहुविषयक अधिगम की आवश्यकता को बढ़ाते हैं। मानविकी और कला की माँग बढ़ेगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

इसी को देखते हुए 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो किसी से पीछे नहीं है, एक ऐसी

शिक्षा व्यवस्था जहाँ किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो। विभिन्न समुदायों, पिछड़े वर्गों को बराबरी पर लाने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है।

यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश की आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति इस सिद्धान्त पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करने वाली होगी बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास करने वाली होना आवश्यक है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान, प्रज्ञा, सत्य की खोज को भारतीय परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना गया है।

शिक्षा की नई नीति को निश्चित तौर पर, हर स्तर पर शिक्षकों को समाज के सर्वाधिक सम्माननीय और अनिवार्य सदस्य के रूप में पुनः स्थान देने में सहायता करनी होगी। सभी विद्यार्थियों के लिए, चाहे उनका निवास कहीं भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराना है। शिक्षा की पिछली नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुँच के मुद्दों पर था। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जिसे 1992 में संशोधित किया गया 86, के अधूरे कार्य को इस नीति के द्वारा पूरा करने का प्रयास किया गया है। 1986 की शिक्षा नीति के बाद एक बड़ा कदम निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध कराया है।

शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है, जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक और रचनात्मक कल्पना शक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धान्त जो बड़े स्तर पर शिक्षा प्रणाली और शिक्षण संस्थानों का मार्गदर्शन करेंगे, निम्नानुसार हैं:-

1. हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना।
2. बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना।
3. विषयों के चुनाव का लचीलापन।
4. विभिन्न विषयों और पाठयक्रमों में कोई स्पष्ट अलगाव न होना।
5. सभी ज्ञान की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहुविषयक दुनिया के लिए विज्ञान।
6. अवधारणात्मक, रचनात्मक और तार्किक समझ पर जोर।
7. बहुभाषिकता (भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन)
8. जीवन कौशल।
9. सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर।
10. विविधता और स्थानीय परिवेश के लिए एक सम्मान।
11. सभी शैक्षिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन।
12. शिक्षा के सभी स्तरों के पाठयक्रमों में तालमेल।
13. शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केन्द्र मानना।
14. स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तीकरण।
15. हल्का एवं प्रभावी नियामक ढाँचा।
16. उत्कृष्ट स्तर का शोध।

17. भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना।
18. शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है तथा शिक्षा तक पहुँच बच्चे का मौलिक अधिकार है।
19. एक मजबूत जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की स्कूली शिक्षा के संबंध में महत्त्वपूर्ण विजन:–

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराके, भारत को वैश्विक ज्ञान की महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत और न्यायसंगत समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के स्कूली शिक्षा के संबंध में महत्त्वपूर्ण विजन:–

1. सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण–शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है। प्रथम पाँच वर्ष ईसीसीई अर्थात आँगनबाड़ी केन्द्रों में प्रथम तीन वर्ष के बाद कक्षा 1व 2 का अध्ययन होगा। कक्षा 3 से 5 प्राथमिक स्तर तीन वर्ष, कक्षा 6 से 8 तीन वर्ष, कक्षा 9 से 12 चार वर्षीय कोर्स विद्यालयों में होगा।
2. प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शिक्षा मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित होगी।
3. छात्रों को पढ़ने और लिखने तथा आगे की स्कूली शिक्षा में जीवनभर सीखते रहने की बुनियाद रखती है।
4. शिक्षा प्रणाली में सर्वोच्च प्राथमिकता 2020 तक प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य प्राप्त करना होगा।
5. इसे लागू करने के लिए सर्वप्रथम शिक्षकों के रिक्त पदों को जल्द से जल्द और समयबद्ध तरीके से भरा जाएगा। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक स्कूल में शिक्षक, विद्यार्थियों का अनुपात 1:30 से कम हो।
6. मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान पर नए सिरे से जोर देने के लिए शिक्षक–शिक्षा और प्रारंभिक ग्रेड पाठ्यचर्या को नए सिरे से डिजाइन किया जाएगा।
7. सभी भारतीय भाषाओं में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए स्थानीय विद्यालयों में उपलब्ध होगा।
8. बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, उन्हें पौष्टिक भोजन और अच्छी तरह प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा काउंसलिग करवाई जाएगी। प्रत्येक बच्चे का स्वास्थ्य कार्ड बनाया जाएगा जिसमें बच्चे की विशेषज्ञों के द्वारा की गई जाँच का रिकॉर्ड होगा।
9. ड्रापआउट बच्चों की संख्या में कमी लाने के लिए एक सर्वे कार्यक्रम चलाया जाएगा।
10. छात्रों को पर्याप्त बुनियादी ढाँचा प्रदान करना ताकि सभी छात्रों को इसके माध्यम से प्री–प्राइमरी से कक्षा–12 तक के स्तर की सुरक्षित और आकर्षक शिक्षा प्राप्त हो सके।
11. सभी बच्चों के सीखने की सुनिश्चितता करने के लिए सभी बच्चों की ट्रेकिंग कर उनके सीखने के स्तर पर नजर रखी जाएगी जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि जिन बालकों ने विद्यालय में प्रवेश लिया है वे नियमित आ रहे हैं तथा आशानुकूल सीख रहे हैं।
12. दोनों सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के लिए विद्यालय के निर्माण को सरल करने के लिए संस्कृति, भूगोल और सामाजिक संरचना के आधार पर स्थानीय विविधताओं को प्रोत्साहित करने और शिक्षा के वैकल्पिक मॉडल बनाने के लिए स्कूलों के निर्माण संबंधी नियमों को सरल बनाया जाएगा।
13. बच्चों के अधिगम में सुधार के लिए भूतपूर्व छात्रों और समुदाय से स्वयंसेवी लोगों को प्रोत्साहित किया जाएगा। साक्षर स्वयंसेवकों, सेवानिवृत वैज्ञानिकों, सरकारी कर्मचारियों, अर्द्धसरकारी कर्मचारियों, भूतपूर्व विद्यार्थियों और शिक्षाविदों का एक डाटा बेस तैयार किया जाएगा।
14. पाठयक्रम की विषयवस्तु को प्रत्येक विषय में कम करके इसे बेहद बुनियादी चीजों पर केन्द्रित किया जाएगा। यह विषय–वस्तु मुख्य अवधारणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों पर केन्द्रित होगी। अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिया जाने के अर्न्तगत समन्वित शिक्षण को शिक्षण प्रकिया में स्थान दिया जाएगा जिससे कक्षा आनन्दपूर्ण बनेगी तथा भारतीय कला और संस्कृति का इसमें समावेश होने से भारतीयता से बच्चों का परिचय हो सकेगा।
15. खेल समन्वय अधिगम कक्षा के दौरान होगा ताकि छात्रों को फिटनेस के साथ–साथ जीवन कौशल प्राप्त करने में मदद मिल सके।
16. छात्रों को माध्यमिक विद्यालय के अध्ययन के लिए अधिक लचीलापन और अधिक विषयों के चुनाव के लिए विकल्प दिए जाएँगे। इसमें शारीरिक शिक्षा, विज्ञान, मानविकी, गणित के अलावा कला, शिल्प तथा व्यावसायिक विषय भी शामिल होंगे।
17. बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए बच्चों को घर की भाषा में (मातृ भाषा में) शिक्षण कराया जाएगा, जिससे वे जल्दी सीख जाएँगे। विज्ञान सहित सभी विषयों की उच्चतर गुणवत्ता वाली पुस्तकों को मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा।
18. संवैधानिक प्रावधानों, लोगों, क्षेत्रों और संघ की आकांक्षाओं और बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए त्रि–भाषा के विकल्प को जारी रखा जाएगा। बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों, क्षेत्रों और छात्रों के स्वयं के होंगे, जिसमें दो भारतीय भाषाएँ आवश्यक हैं।
19. भारत की भाषाएँ दुनिया की सबसे समृद्ध, वैज्ञानिक, सबसे सुन्दर और सबसे अधिक अभिव्यंजक भाषाओं में से एक जिनमें प्राचीन और विशाल आधुनिक साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान और धरोहर है। इसलिए छात्रों को इस विशाल

साहित्य के खजाने के बारे में जागरूक करने के लिए, देश के प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ाई के दौरान 'द लैंग्वेज ऑफ इंडिया' पर एक मजेदार प्रोजेक्ट में भाग लेगा होगा।

20. भारत की समृद्ध भाषाओं और उनके कलात्मक खजाने के संरक्षण के लिए, सभी स्कूलों के विद्याथियों के पास भारत के शास्त्रीय भाषाओं और उससे जुड़े साहित्य को कम से कम दो साल सीखने का विकल्प होगा।
21. भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में उच्चतर गुणवत्ता वाले कोर्स के अलावा, विदेशी भाषाओं, जैसे-कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली, रूसी आदि माध्यमिक स्तर पर व्यापक रूप से उपलब्ध करवाई जाएगी। ताकि छात्र विश्व की संस्कृतियों के बारे में जान सकें और अपनी रुचि के अनुसार भाषा का चुनाव कर सकें।
22. भारतीय साइन लेंग्वेज को देशभर में मानकीकृत किया जाएगा तथा इसमें पाठयक्रम सामग्री विकसित की जाएगी जो बधिर विद्यार्थियों द्वारा काम में ली जाएगी।
23. प्रत्येक विद्यार्थी ग्रेड 6 से 8 के दौरान स्थानीय समुदायों द्वारा तय किए गए एक आनन्दायी कोर्स करेगा, जो कि महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प जैसे कि बढ़ईगिरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तन बनाना आदि कार्य अपने हाथों से करने का अनुभव प्राप्त करेगा। इसी तर्ज पर कक्षा 6 से 12 तक छुट्टियों के दौरान विभिन्न व्यावसायिक विषय समझने के लिए अवसर उपलब्ध कराए जाएँगे।
24. भारत का ज्ञान में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और योगदान शामिल होगा। पूरे स्कूल पाठयक्रम के दौरान विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में प्राचीन और आधुनिक भारत के प्रेरणादायक व्यक्तित्वों पर वीडियो वृत्त चित्र दिखाए जाएँगे। छात्रों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए विभिन्न राज्यों का दौरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।
25. विद्यार्थियों को कम उम्र में नैतिक बोध के साथ पारंपरिक भारतीय मूल्यों, बुनियादी मानवीय और संवैधानिक मूल्यों जैसे- अहिंसा, स्वच्छता, लैंगिक संवेदनशीलता, बुजुर्गो के लिए सम्मान बहुलवाद आदि की शिक्षा भी दी जाएगी।
26. फाउंडेसनल स्तर से शुरू करके बाकी सभी स्तरों तक पाठ्यचर्या और शिक्षण शास्त्र को एक मजबूत भारतीय और स्थानीय संदर्भ देने की दृष्टि से पुन:गठित किया जाएगा। इसके अर्न्तगत सांस्कृतिक परंपराए, विरासत, रीति-रिवाज, भाषा, दर्शन, भूगोल आदि शामिल होंगे।
27. स्कूल शिक्षा के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा एनसीएफएसई 2020-21 एनसीईआरटी द्वारा तैयार की जाएगी जिसे सभी क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराया जाएगा।
28. सभी पाठयपुस्तकों में राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण मानी जाने वाली सामग्री को शामिल किया जाएगा, लेकिन स्थानीय संदर्भो और आवश्यकताओं को भी शामिल किया जाएगा। शिक्षकों के पास भी तय पाठ्यपुस्तकों में अनेक विकल्प होंगे।
29. पाठ्यपुस्तकों की कीमत का बोझ कम करने के लिए न्यूनतम संभव लागत पर उपलब्ध कराया जाएगा। पाठ्यपुस्तकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। एनसीईआरटी द्वारा सभी पाठ्यपुस्तकों को डाउनलोड और प्रिंट करने की सुविधा दी जाएगी।
30. स्कूल बैग का बोझ कम करने के लिए पर्याप्त प्रयास किए जाएँगे।
31. विद्याथियों के प्रोग्रेस कार्ड को पूरी तरह से नया स्वरूप प्रदान किया जाएगा। यह प्रगति कार्ड एक समग्र, 360 डिग्री, बहु आयामी होगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, साइकोमोटर डोमेन में विकास का बारीकी से किए गए विश्लेषण का विस्तृत विवरण, विद्यार्थी की विशिष्टताओं सहित दिया जाएगा। इसमें स्व मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन, प्रोजक्ट कार्य और खोज आधारित अध्ययन में प्रदर्शन, क्विज, रोल प्ले, समूह कार्य, पोर्ट फोलियो और शिक्षक मूल्यांकन शामिल होगा। यह स्कूल, माता-पिता एवं शिक्षक के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करेगा।
32. ग्रेड 10 व 12 की बोर्ड परीक्षाएँ जारी रहेगी, कोचिंग की आवश्यकता को खत्म करने के लिए बोर्ड परीक्षाओं को आसान बनाया जाएगा। कोई भी छात्र जो नियमित स्कूल जाता है तथा प्रत्येक शिक्षण गतिविधि में भाग लेता है वह आसानी से बोर्ड की परीक्षा बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के पास कर सकेगा।
33. सभी विद्यालयी वर्षो के दौरान, न केवल ग्रेड 10 व 12 के अन्त में प्रगति को ट्रेक करने के लिए छात्रों और पूरी स्कूली शिक्षा प्रणाली के लाभ के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में सुधार करने के उद्देश्य से सभी विद्यार्थियों को एक उपयुक्त प्राधिकरण की ओर से संचालित ग्रेड 3, 5, व 8 में स्कूल की परीक्षा देनी होगी।
34. शिक्षा में विद्याथियों की प्रतिभाओं और रुचियों की पहचान कर इन्हें बढ़ावा देने के तरीके शामिल होंगे। एनसीईआरटी और एससीटीई प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा के लिए दिशा निर्देश विकसित करेंगे।
35. देशभर में विभिन्न विषयों में ओलंपियार्ड और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा, यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक छात्र जिसमें उसने क्वालीफाई किया है, उसमें वह भाग ले। व्यापक भागीदारी के लिए ये प्रतियोगिताएँ ग्रामीण क्षेत्रों और क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध होंगी।
36. एक बार इंटरनेट, स्मार्टफोन या टेबलेट सभी घरों में, स्कूलों में उपलब्ध होंगे तो क्विज प्रतियोगिताओं, आंकलन, संवर्धन सामग्री वाले आनलाइन एप साझा किए जा सकेंगे।
37. स्कूलों में चरणबद्ध तरीके से स्मार्ट कक्षा-कक्ष विकसित किए जाएँगे ताकि डिजिटल शिक्षण-शास्त्र का उपयोग

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समृद्ध करने में किया जा सके।

38. उत्कृष्ट विद्यार्थी ही शिक्षण पेशे में प्रवेश कर सकें यह सुनिश्चित करने के लिए उत्कृष्ट 4-वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए बड़ी संख्या में मेरिट आधारित छात्रवृत्ति देशभर में स्थापित की जाएगी। 4 वर्षीय बी.एड. डिग्री को पूरा करने बाद स्थानीय इलाकों में निश्चित रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएँगे। ग्रामीण स्कूलों में पढ़ाने के लिए शिक्षकों के लिए स्कूल परिसर में या उसके आस-पास स्थानीय आवास का प्रावधान होगा तथा स्थानीय आवास रखने में मदद करने के लिए आवास भत्ते में वृद्धि होगी।
39. शिक्षक और समुदाय, छात्र और शिक्षक के मध्य संबंध बनें इसके लिए स्थानान्तरण की हानिकारक प्रक्रिया पर रोक लगाई जाएगी।
40. स्कूल शिक्षा के सभी स्तरों (बुनियादी, प्रारम्भिक, मिडिल और माध्यमिक) के शिक्षकों को शामिल करते हुए टीईटी (टीचर्स एन्ट्रेस टेस्ट) को विस्तृत किया जाएगा।
41. अगले दो दशकों तक की शिक्षकों की आवश्यकता का अनुमान कर रिक्तियों को भरने की एक व्यापक व्यवस्था की जाएगी।
42. सेवाकालीन प्रशिक्षण में स्कूलों में कार्यस्थलों पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर इनपुट होंगे। ताकि सभी शिक्षक इन आवश्यकताओं पर संवेदनशील हों।
43. शिक्षकों को आगे बढ़ाने सीखने के लिए प्रभावी सामुदायिक वातावरण बनाने में मदद करने के लिए स्कूल कॉम्पलेक्स में परामर्श दाताओं, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ताओं आदि से साझा कर सकेंगे।
44. अभिभावकों एवं अन्य सभी हितधारकों के साथ सहयोग ले शिक्षक भी स्कूल कॉम्पलेक्स के प्रशासन में स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्य के रूप में शामिल होंगे।
45. शिक्षकों को गैर शैक्षणिक कार्यों में समय व्यतीत करने की अनुमति नहीं होगी।
46. शिक्षकों को पाठ्यक्रम और शिक्षण के उन पहलुओं को चयनित करने के लिए ज्यादा स्वायत्तता होगी जिससे वे उन तरीकों से पढ़ा सकें जो उनके छात्रों के लिए अधिक प्रभावी हों।
47. शिक्षकों को पेशे से संबंधित आधुनिक विचार और नवाचार सीखने के लिए सतत अवसर प्रदान किए जाएँगे। उनसे यह अपेक्षित होगी कि वे स्वेच्छा से वर्ष में एक बार 50 घण्टों के सीडीपी कार्यक्रम में भाग लें।
48. स्कूल के प्रधानाचार्य के लिए लीडरशिप कौशल को विकसित करने के लिए कार्यशालाएँ और ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित होंगे।
49. एक सशक्त मेरिट आधारित पदोन्नति और वेतन व्यवस्था का निर्माण किया जाएगा जिससे बेहतरीन शिक्षकों को प्रोत्साहन और पहचान मिल सके।
50. योग्यता के आधार पर वर्टिकल मोबिलिटी भी सर्वश्रेष्ठ होगी, ऐसे शिक्षक जिन्होंने लीडरशिप और मैनेजमेंट के कौशलों को दर्शाया होगा, को समय के साथ प्रशिक्षित किया जाएगा। शिक्षकों को वरिष्ठता के बजाय सिर्फ निर्धारित मानकों के आधार पर पदोन्नति और वेतन वृद्धि दी जाएगी।
51. दिव्यांग छात्र जिन्हें विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है, उनके अधिगम के लिए विषय शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।
52. वर्ष 2030 तक बी.एड. डिग्रियाँ केवल चार वर्षीय एकीकृत बीएड उपलब्ध कराने वाले मान्यता प्राप्त बहुविषयक उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा ही प्रदान की जा सकेंगी।
53. सभी बीएड प्रशिक्षणों में जाँची परखी तकनीकों के साथ नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें बुनियादी साक्षरता, संख्याभ्यास, बहुस्तरीय शिक्षण, मूल्यांकन, दिव्यांग बच्चों का शिक्षण आदि शामिल होगा।
54. सभी बीएड कार्यक्रमों में विषय की पढ़ाई के दौरान भारतीय संविधान के मौलिक कर्त्तव्यों और अन्य प्रावधानों के पालन पर जोर दिया जाएगा।
55. कुछ अल्प अवधि के स्थानीय शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम स्कूल परिसरों में भी उपलब्ध होंगे।
56. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्तों के आधार पर एक नवीन पाठयचर्या शिक्षक-शिक्षा हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एनसीएफटी 2021 तैयार की जाएगी।
57. यह नीति ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ेगी। जिससे भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म स्थान या पृष्ठ भूमि बाधक न बने।
58. यह नीति विशेष आवश्यकता वाले बच्चों या दिव्यांग बच्चों को किसी भी अन्य बच्चे के समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अधिकार एवं अवसर प्रदान करती है।
59. इस नीति में लक्षित छात्रवृत्ति, माता-पिता को अपने बच्चे को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सशर्त नकद हस्तान्तरण, परिवहन के लिए साइकिल प्रदान करना आदि विभिन्न योजनाएँ हैं।
60. स्कूल पहुँचने के लिए साइकिल या पैदल समूहों का आयोजन करना महिला भागीदारी की सुरक्षा की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
61. यह नीति मानती है कि लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उनकी वर्तमान व आने वाली पीढ़ियों के शैक्षिक स्तर को ऊपर उठाने का सर्वोत्तम तरीका है।
62. इस शिक्षा नीति में लड़कियों के साथ ही ट्रांसजेंडर छात्रों को गुणवत्तापूर्ण और न्याय संगत शिक्षा प्रदान की करने की दिशा में देश की क्षमता का विकास करने हेतु एक जेंडर समावेशी निधि का गठन होगा।
63. ऐसे स्थान जहाँ स्कूल आने के लिए छात्रों को अधिक दूरी तय करनी पड़ती है वहाँ जवाहर नवोदय विद्यालयों की तर्ज पर निशुल्क छात्रावासों का निर्माण किया जाएगा।
64. दिव्यांग बच्चों को प्रारम्भिक स्तर से

उच्चतर स्तर तक की शिक्षण प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने के लिए सक्षम बनाया जाएगा। स्कूलों में जाने में असमर्थ गंभीर और गहन दिव्यांगता वाले बच्चों के लिए गृह आधारित शिक्षा के रूप में एक विकल्प उपलब्ध कराया जाएगा।

65. बच्चों को अपनी गति के अनुरूप काम करने की स्वतंत्रता देना। प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का लाभ लेने की दृष्टि से पाठयक्रम को सक्षम व लचीला बनाना।
66. एसईडीजी के अन्तर्गत अनुसूचित जाति और जनजातियों के शैक्षणिक विकास में असमानताओं को दूर करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए विभिन्न छात्रवृत्तियों के साथ छात्रावास आदि की सुविधा भी उपलब्ध करायी जाएगी।
67. राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश की सरकारों द्वारा 2025 तक स्कूलों के समूह बनाने या उनकी संख्या को समुचित रूप देने के लिए एक नवीन प्रक्रिया अपनायी जाएगी। जिससे आस-पास के सभी स्कूल आपस में अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। एक माध्यमिक विद्यालय में पाँच से दस किमी. तक के समस्त निम्नतर स्तर के विद्यालय व आँगनबाडी केन्द्र सम्मिलित होंगे।
68. स्कूलों, स्कूल प्रमुखों, शिक्षकों, छात्रों, सहयोगी स्टाफ, माता-पिता और स्थानीय नागरिकों के बड़े और जीवन्त समूहों के आधार पर संसाधनों का कुशल उपयोग करते हुए पूरी शिक्षा व्यवस्था ऊर्जावान व समर्थ बनेगी।
69. निजी और सरकारी स्कूलों के बीच परस्पर तालमेल बनाने के लिए एक सरकारी स्कूल के साथ एक निजी स्कूल को सम्बद्ध किया जाएगा।
70. हर राज्य/जिले में बाल भवन स्थापित किया जाएगा। जहाँ हर उम्र के बच्चे जाकर कला, खेल और कॅरियर संबंधी गतिविधियों में भागीदारी कर सकें।
71. स्कूल शिक्षा विभाग जो स्कूल शिक्षा में सर्वोच्च राज्य स्तरीय निकाय है, सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के निरन्तर सुधार और समग्र निगरानी के लिए जिम्मेदार होगा। सम्पूर्ण राज्य के सार्वजनिक विद्यालयी प्रणाली के सेवा प्रावधान और शैक्षिक संचालन की जिम्मेदारी स्कूल शिक्षा निदेशालय की होगी।
72. प्री स्कूल शिक्षा, निजी, सार्वजनिक और परोपकारी सहित गुणवत्ता मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के सभी चरणों के लिए एक प्रभावी गुणवत्ता विनियमन या मान्यता प्रणाली स्थापित की जाएगी। सार्वजनिक निगरानी और जबाबदेही के लिए एसएसएसए. द्वारा निर्धारित सभी बुनियादी विनियामक सूचनाओं का पारदर्शी सार्वजनिक प्रकटीकरण बड़े पैमाने पर किया जाएगा।
73. राज्य में अकादमिक मानकों और पाठ्यक्रम सहित शैक्षणिक मामले एससीईआरटी के माध्यम से होंगे, जो कि एक सुदृढ़ संस्थान के रूप में विकसित किया जाएगा।
74. स्कूलों, संस्थानों, शिक्षकों, अधिकारियों, समुदायों और हितधारकों को सशक्त बनाने और इन्हें संसाधनों से परिपूर्ण बनाने का काम करने वाली सांस्कृतिक, संरचनाएँ और व्यवस्थाएँ इन सबकी जबाबदेही को भी सुनिश्चित करेगी। सभी व्यक्तियों की पदोन्नति, मान्यता और जबाबदेही प्रदर्शन मूल्यांकन पर आधारित होगी।
75. सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना होगा ताकि यह अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में माता-पिता के लिए आकर्षक विकल्प बन सके।

उपयुक्त वर्णन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग-1 के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के बारे में हैं इसके अतिरिक्त भी नीति में बहुत कुछ है जो भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक विशेष प्रयास है जिससे न केवल भारतीयता की पहचान बनेगी अपितु आधुनिक भारत के निर्माण में यह नीति एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगी।

12 ए/36/2 राम कुटी, चर्च रोड,
ग्वालटोली, कानपुर, 208001
मो: 9509618194

जीतेंगे हम

❐ **मंगल कुमार जैन**

घर में ही ठहर कर
सुरक्षित रहना है।
कोरोना को हरा कर
भारत को जिताना है।।

दिन ब दिन बढ़ रहा है
कोरोना का संक्रमण।
मानवता के दुश्मनों से
फैल रहा ये संक्रमण।।

काली करतूतें अभी भी
कुछ लोग किए जा रहे हैं।
इसी कारण से रह-रह कर
नए संक्रमित बढ़ते जा रहे हैं।।

किसी से भी नहीं डरें हम
मिलकर एक साथ लड़ें हम।
हर मोड़ पर पहरा मिलेगा
पर आपस में नहीं भिड़ें हम।।

छोटी-छोटी जरुरतों पर
घर से बाहर नहीं निकलना है।
पुलिस रोके किसी मोड़ पर
तो हमको नहीं अकड़ना है।।

इस सफर में चिकित्सा कर्मी
भगवान का रूप है धरती पर।
जो-जो भी करे दुर्व्यवहार इनसे
बख्शना नहीं है उनको रत्ती भर।।

इंसानीयत को खतरे में डाल कर
भेष बदले नए रहनुमा पाएंगे हम।
फिर भी हारेगा कोरोना, जीतेंगे हम
कोरोना पर विजय पाएंगे हम।।

विश्व के हर कोने-कोने में
कोविड-19 की ही बात है।
डटकर मुकाबला कर रहे हम
यही भारत की खास बात है।।

सबको हंसना-हँसाना है
फिर से खिल-खिलाना है।
पीड़ितों के आंसू पोंछ कर
फिर से भारत को हँसाना है।।

वरिष्ठ अध्यापक, संस्कृत
रा.उ.मा.वि. गुपड़ी (भीण्डर), मु.पो. कुण,
वाया कानोड़, उदयपुर (राज.) 313604
मो. 9928496264

शैक्षिक चिन्तन

शैक्षिक चिन्तन की दिशा

❐ रमाकान्त वर्मा

मानव जीवन के अस्तित्व के साथ ही शिक्षा की आवश्यकता और अभिधारणा का अस्तित्व हुआ है। जीवन यापन की आवश्यकता से लेकर अस्तित्व संघर्ष में इसका बहुविद्य प्रकार से उपयोग होता रहा है। कालखण्ड के विभिन्न विचार, जरूरतों एवं विकास के आयामों के साथ ही शिक्षा को परिभाषित किया जाता रहा है और मानव के लिए यह निरन्तर परिवर्तनशील रही है। विशेषकर सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में शिक्षा के स्वरूप को संशोधित किया जाता रहा है। किसी भी कालखण्ड में एक ही स्थायी स्वरूप नहीं रहा है। आवश्यकतानुसार शैक्षिक ढाँचे के बारे में बौद्धिक सोच विचार होते रहे हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक चिन्तन समाज में एक निरन्तर प्रक्रिया है।

अस्त्र-शस्त्र के परिचालन की निपुणता यदि पुरातन काल में विद्या और कौशल का एक रूप मानी जाती रही है तो शास्त्रार्थ व उसके अध्ययन की यात्रा से होते हुए वर्तमान में तकनीकी ज्ञान-विज्ञान आधुनिक शिक्षा का पर्याय हो गया है परन्तु यह विकास के नए आयाम सृजित करने के साथ दोषों का समुच्चय भी प्रस्तुत करता है, जिसका निराकरण करने के लिए देशी-विदेशी शिक्षाविदों ने पर्याप्त मंथन किया और एक ऐसी प्रणाली विकसित करने का प्रयास किया जिसकी सहजता के साथ स्वीकार्यता रहे।

इस दिशा में अरस्तु, सुकरात, फ्रायड, मैकाले, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, आचार्य विद्यासागर सरीखे कई नाम अग्रगण्य हैं। यहाँ व्यापक अध्ययन के बाद मेरा मत है कि पूर्ववर्ती शिक्षा प्रणालियों को गुण-दोषों के साथ स्वीकार किया जाता रहा है परन्तु अधिकतम गुणयुक्त शिक्षा सम्बन्धी चिन्तन के लिए स्वामी विवेकानन्दजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक चिन्तन की विचारधारा को आगे बढ़ाना चाहिए। इससे एक सशक्त भारत के साथ ही राष्ट्रीय चारित्रिक मूल्यों का विकास तो होगा ही साथ ही आधुनिक वैश्विक जरूरतों के अनुरूप शिक्षा पद्धति का विकास होगा। यदि स्वामी जी के विचारों का अध्ययन करे तो पाएँगे कि स्वामी जी ने भारत व विश्व के उत्थान के लिए सर्वाधिक बल शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर ही दिया है।

भारत के आध्यात्मिक गौरव तथा पाश्चात्य के विज्ञान के समन्वय की बात कही है, जिसमें न तो एकल दिशा का चिंतन है और न ही केवल जीवन जरूरत है। यह जानना बेहद जरूरी है कि शिक्षा क्या है? शिक्षक की भूमिका किस प्रकार होनी चाहिए? क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को अर्जित करने में सफल है? क्यों समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास होने के दृष्टान्त देखने में आते हैं? क्या राष्ट्र के विगत कुछ कालखण्ड और सूचनाओं का संग्रह जान लेना ही शिक्षा का लक्ष्य रह गया है? तमाम प्रकार के प्रश्न शिक्षाविदों के मन को नए सिरे से सोचने के लिए निःसंदेह बाध्य करेंगे।

उक्त प्रश्नों के संदर्भ में ही विचार करते हैं तथा कतिपय उदाहरणों को यहाँ दृष्टिगत करते हैं। स्नातकोत्तर स्तर के प्रामाणिक रूप से शिक्षित व्यक्ति जब बेरोजगारी की पंक्ति में खड़ा दिखाई दे और परम्परागत कौशल से सम्पन्न व्यक्ति की समाज में माँग रहे तो व्यवस्था विचारणीय हो जाती है। वह शिक्षा जिससे स्वावलंबन आए, राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो सके, प्रसन्नता एवं दुःख जो कि केवल मन की एक अवस्था मात्र है से अतिशय प्रभावित हो जाए तथा विषम परिस्थिति में शाँत भाव से अनुकूल कल्याणकारी निर्णय निर्णित न कर सके तब शैक्षिक चिन्तन की जरूरत होती है।

शैक्षिक चिन्तन में हमें यह जानना और प्रतिष्ठित करना होगा कि हम एक शरीर मात्र नहीं है हम दिव्य स्वरूप हैं तथा वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप बेहतर ज्ञान विज्ञान को ग्रहण करने योग्य बनें और समृद्ध दोषमुक्त समाज रचना का हिस्सा बनें। साथ ही समाज में जीवन यापन कर रहे गरीब, मध्यम और सम्पन्न तबका का जो विषम स्तर है उनके संशोधनों को ध्यान में रखकर सभी सहजता के साथ शिक्षा ग्रहण कर सकें, इसको भी प्रमुखता से चिन्तन में शामिल करना होगा।

शिक्षा के साथ ही एक और विषय जुड़ा है वह है शिक्षक की भूमिका। यहाँ प्रासंगिक उल्लेख में शिक्षक ज्ञानार्जन में एक प्रेरक व मार्गदर्शक मात्र हो सकता है, ज्ञान प्रदाता नहीं। शिक्षा प्रत्येक मनुष्य में असीम क्षमताओं के साथ विद्यमान है। केवल जरूरत है उसके प्रभावी प्रकटीकरण करने तथा उसको जीवन में ग्राह्य करना। जिस प्रकार एक पेड़ के बीज में उसके समस्त गुण पहले से मौजूद होते हैं तथा कोई भी यह कहने में सक्षम नहीं है कि मैं पेड़ की वृद्धि कर सकता हूँ।

अपितु वृद्धि विकास स्वाभाविक है। यह भूमिका सुनिश्चित हो सकती है कि पेड़ के विकास के लिए अनुकूल स्थिति बनाना और उन कारकों का निराकरण करना जो पेड़ के विकास में बाधक होते हैं। ठीक ऐसी ही भूमिका शिक्षार्थी के प्रति शिक्षक की होती है।

अब आइए चिंतन की महत्ता को जानने के बाद इस पर भी विचार करें कि शैक्षिक चिंतन की दिशा क्या होनी चाहिए। पूर्व में अपनाई गई शिक्षा प्रणालियों के गुणों का विश्लेषण करना, वर्तमान वैश्विक माँग, आत्मनिर्भरता, परम्परागत कौशल का विकास व संवर्धन, पुरातन गौरवमयी मूल्यों पर गर्व करना एवं उनको जीवन चरित्र में अपनाने पर बल देना, जीवन में शिक्षा से धनार्जन को एकमात्र लक्षित नहीं करना अपितु खुशहाल जीवन कैसे जीया जाए यह सीखने का माहौल तैयार करना एवं स्वाध्याय के साथ नवीन अन्वेषण के प्रति रुचि के अनुरूप अधिकतम अवसरों का सृजन करना हमारे शैक्षिक चिन्तन का ढाँचा होना चाहिए और इसमें शिक्षार्थी एवं शिक्षकों की सहभागिता भी तय होनी चाहिए। जिससे हम एक बार फिर गार्गी, मैत्रेयी, याज्ञवलक्य, स्वामी विवेकानन्द, टैगोर, आचार्य विद्यासागर, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. कलाम के सुनहरे स्वप्न के अनुरूप राष्ट्र को साकार करने के दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

अध्यापक लेवल-2
जयसिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
खेतड़ी, झुंझुनूं (राज.)
मो: 8114467895

शैक्षिक चिन्तन

आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतन

❒ चैनाराम सीरवी

सा विद्या या विमुक्तये–अर्थात् विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे जैसे ध्येय वाक्य को आधार मानने वाले भारतीय संस्कृति, दर्शन और शिक्षा को मुक्ति का निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने वाली प्रक्रिया मानने वाली भारतीय चिंतकों की एक लंबी परम्परा है। उन्होंनें शिक्षा के विविध पक्षों पर अपने सारगर्भित विचारों की एक अमूल्य विरासत वर्तमान में हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। प्रत्येक स्तर पर शिक्षक को शिक्षा देते समय इनका ज्ञान हो तो निश्चय ही हमारी शिक्षा एक सार्थक दिशा की ओर जाएगी। अतः इस लेख में भारतीय चिंतकों, शिक्षाविदों और उनके शैक्षिक विचारों से परिचय कराया जा रहा है। इन महापुरुषों के विचारों से हमें सीख एवं प्रेरणा मिलेगी।

गिजू भाई बधेका : बाल साहित्य के जनक आधुनिक भारतीय शिक्षा जगत के प्रथम शैक्षिक विचारक हैं। जिन्होंने विद्यालय को बाल मंदिर का नाम दिया। गिजूभाई मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानते हैं। वे धर्म, सत्य, अहिंसा, प्राणी मात्र के प्रति करुणा, परोपकार, नैतिकता को मानव जीवन का आधार मानते हैं। वे बालक का सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसमें सृजनात्मक शक्ति का विकास करना शिक्षा का अंतिम ध्येय मानते हैं। उनका मानना है कि विद्यालय में बच्चे के साथ ऐसा व्यवहार हो कि विद्यालय में जाने की ललक पैदा हो। वह मुस्कुराता हुआ विद्यालय आए और मुस्कुराता हुआ ही विद्यालय से वापस जाएँ। उनका मानना था कि बालक का शिक्षण मातृभाषा में हो। उन्होंने शारीरिक विकास इंद्रिय-प्रशिक्षण पर जोर दिया। ज्ञानेन्द्रियों के शिक्षण हेतु उन्होंने मांटेसरी द्वारा, किंडर-गार्डन उपकरणों को महत्त्वपूर्ण माना है। उन्होंने स्वयं करके स्वयं सीखना, खेल-खेल में सीखना व सिखाना, नाटक एवं कविता कहानी के माध्यम से सिखाने की शिक्षण विधियों व प्रविधियों पर बल दिया।

गिजूभाई ने शिक्षक को शिक्षा के पुजारी की संज्ञा दी। शिक्षक समाज के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों से संबंधित होता है। शिक्षक के लिए आवश्यक है कि उसे बालक की प्रकृति का ज्ञान व बालक की शिक्षण विधि से पूर्ण परिचित हो। बालकों की अपनी दुनिया होती है। उन्हें उन्हीं की दुनिया में रखते हुए शिक्षण दिया जाना चाहिए। गिजूभाई ने अपना जीवन बाल शिक्षा साहित्य को पूर्ण समर्पित कर दिया। उन्होंने शिशु शिक्षा संबंधी अनेक तथ्यों की खोज की। बाल साहित्य का सर्जन भी किया जो आज भी पूर्णतया सार्थक व प्रासंगिक है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर : रवीन्द्रनाथ टैगोर उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री थे। बालक के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय भावना का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। उनके अनुसार सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करें। अतः शिक्षा का कार्य बालक की समस्त सुषुप्त शक्तियों को विकसित करके, उसे परम पुरुष बनाना है। बालक को वास्तविक जीवन के तथ्यों, परिस्थितियों, पर्यावरण से अवगत कराते हुए उनके अनुकूल करना तथा उसके मस्तिष्क का विकास करना शिक्षा का परम ध्येय होना चाहिए। इस प्रकार शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है।

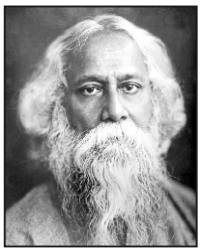

वे बच्चों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें शिक्षा देने की वकालत करते हैं। शिक्षक को बालक की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर उसे शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षक को हमेशा अपने बालक को प्राकृतिक वातावरण में प्राकृतिक सिद्धांतों द्वारा ही शिक्षा दी जानी चाहिए। बालक को प्रकृति के संपर्क में रहकर प्रकृति से सीखने का प्रयत्न करना चाहिए। शिक्षक एक दीपक के समान है उसे निरंतर सीखते हुए और अध्ययन करते हुए बालक को शिक्षा देनी चाहिए। बालक को अधिक से अधिक स्वयं सीखने का अवसर प्रदान करना चाहिए। बालक को संगीत, कला, अभिनय, व्यवसायिक शिक्षा, हस्तशिल्प, कृषि कौशल के साथ कोई न कोई दस्तकारी भी अवश्य सीखनी चाहिए ताकि आर्थिक रूप से सुदृढ़ बन सके। वे आवासीय विद्यालयों के पक्षधर थे। उनके द्वारा स्थापित शांति निकेतन गुरुकुल प्रणाली का आधुनिक रूप है।

स्वामी दयानंद सरस्वती : स्वामी दयानंद सरस्वती ने शिक्षा के संदर्भ में क्रांतिकारी विचार दिए। आर्य समाज के रूप में उन्होंने पुनः वैदिककालीन ज्ञान, सत्य एवं जीवनचर्या को भारतीय समाज में स्थापित करने का प्रयत्न किया। वे ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति को अनादि मानते हैं। निराकार ईश्वर की उपासना की प्रेरणा दी। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक घोषित किया। मूर्तिपूजा, रुढ़िवादिता, श्राद्ध, तर्पण, अवतारवाद, कर्मकांड, तीर्थ, अंधविश्वास का विरोध किया।

शिक्षा द्वारा वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान, बालकों का शारीरिक, मानसिक विकास, बालक में समाज सुधारक की शक्ति, सद्ज्ञान, सद्गुणों का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य माना है। उनकी प्रेरणा से डीएवी विद्यालय की विशाल शृंखला पूरे देश में फैली। उनके विचार आज भी पूर्णतया सार्थक हैं। छात्रों को संध्योपासना, यज्ञ, प्राणायाम, नैतिक कार्य की शिक्षा देना, यज्ञों की विधि से परिचित कराना, शिक्षक का कर्त्तव्य मानते हैं। साथ ही शिक्षक को सर्व शिक्षा से विभूषित, सर्वकौशलपूर्ण, शिष्ट, शिक्षण की विधियाँ, प्रविधियों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षक का स्वभाव मृदु एवं व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द : स्वामी विवेकानंद का कहना है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें व्यक्ति का चरित्र बने, बुद्धि का विकास हो, मानसिक शक्ति बढ़े, अच्छे विचारों का निर्माण

हो और वह अपने पाँव पर खड़ा हो सके। वे शिक्षा द्वारा बालक की बुद्धि का विकास कर, मानसिक शक्ति को बढ़ाना, स्वावलंबी बनाना, अच्छे विचारों का निर्माण करना, दीनहीनों की सहायता का भाव एवं बालकों को उत्पादन एवं उद्योग कार्य एवं अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। वे विद्यालयों को पर्यावरण शुद्ध रखने एवं व्यायाम, खेलकूद, अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ प्राणायाम, योग की क्रियाएँ कराने के समर्थक थे। बालकों को मातृभाषा में शिक्षण, साहित्य, काव्य, कला एवं विश्व के सभी विषयों को व्यवहारिक ढंग से पाठ्यक्रम में शामिल करने के हिमायती थे। उनके अनुसार शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशमान, उच्चतम आदर्शों की सजीव मूर्ति, निष्पक्षता एवं त्याग की भावना वाला होना चाहिए। साथ ही बालक को भी मन, वचन, कर्म से पवित्र होना चाहिए। ज्ञान का पिपासु, जिज्ञासा वाला और लगन के साथ परिश्रम करने की इच्छाशक्ति अपने शिक्षक के प्रति अटूट विश्वास, श्रद्धा एवं स्वतंत्र चिंतन की शक्ति वाला होना चाहिए। वे विद्यालयों को व्यक्ति के शारीरिक बौद्धिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक विकास का केन्द्र मानते हैं। शिक्षा में राष्ट्रवाद का समर्थन, स्वावलंबन, मूल्य आधारित शिक्षा, आत्मानुशासन, नारी शिक्षा, जन-जन को शिक्षित करना, बालक की अंतर्निहित सुप्तशक्तियों का विकास करना स्वामी जी के शिक्षा चिंतन के मौलिक तत्व हैं और यह आज भी पूर्णतया प्रासंगिक हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी : भारत के आधुनिक स्वरूप के जनक महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा पर केन्द्रित है। वे सत्य को ही ईश्वर, ब्रह्म, शिवम एवं सुंदर की संज्ञा देते हैं। उनकी दृष्टि में शिक्षा का अर्थ बालक का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास करने से है। वे बालक को स्वावलंबी, श्रम के प्रति आदर का भाव जगाना, उसे जीविकोपार्जन के लिए योग्य बनाना शिक्षा के मुख्य उद्देश्य मानते हैं। शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह अपने बालक को यथार्थ एवं वस्तुज्ञान की शिक्षा दे जो उसके जीवनोपयोगी हो। शिक्षक बालक को सच्चा जीवन जीना सिखाए। शिक्षक अपने आचरण से बालक का चारित्रिक विकास करे। राजनीति से दूर रहकर, शिक्षक के हृदय में अपने बालकों के लिए प्रेम, करुणा, ज्ञान, अनंत निष्ठा एवं तटस्थता का समन्वय होना चाहिए। बालक को अपने अंदर अभय का भाव विकसित करना चाहिए। उसे हमेशा विनम्र, परोपकारी सेवा भाव के कार्य में तत्पर होना चाहिए। सत्य और अहिंसा को साधन के रूप में पवित्र मानने वाला, कृषि एवं श्रम को महत्त्व देने वाला, बुनियादी शिक्षा, गाँधी दर्शन आज भी पूर्ण समसामयिक एवं उपयोगी है।

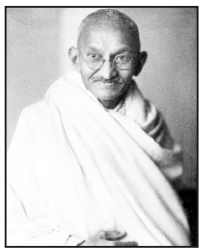

आचार्य विनोबा भावे : आचार्य विनोबा भावे गाँधीजी के प्रथम सत्याग्रही थे। विनोबा जी ने अपने दर्शन को सर्वोदय का नाम दिया। सर्वोदय का अर्थ है सब का उदय। अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, प्रेम को ही उनका संपूर्ण जीवन समर्पित रहा। विनोबा संपूर्ण शिक्षा को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ते हैं। यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। उनका मानना है कि आदर्श शिक्षा पद्धति वही है जिसमें ना तो शिक्षक का यह अनुभव करे कि बालक को शिक्षा दे रहा है, ना ही बालक यह अनुभव करे कि उसे शिक्षा दी जा रही है। विनोबा का जीवन दर्शन एवं शिक्षा दर्शन दोनों ही अनुभव एवं कर्म पर आधारित हैं। सहज ज्ञान प्राप्ति व ज्ञान की शक्ति से समाज के विकास में विश्वास रखते हैं। विनोबा ने अहिंसा एवं सत्य के आधार पर स्थापित वर्ग हीन, जातिहीन, शोषण विहीन, समाज की कल्पना को यथार्थ में उतारने के व्रत का जीवन भर पालन किया। यह विश्व बंधुत्व की भावना के ठोस आधार हैं। कर्म करते-करते ज्ञान प्राप्त किया जाए तभी शिक्षा पूर्ण हो सकती है। शिक्षक को विनोबा जी ने उच्च स्थान प्रदान किया है। उनकी दृष्टि में सच्चा शिक्षक ही समाज का नेतृत्व कर सकता है। शिक्षक को हमेशा अध्ययनशील होना चाहिए। वे शिक्षक को राष्ट्र निर्माता मानते हैं। विनोबा के मौलिक विचार आज भी प्रासंगिक एवं व्यवहारिक हैं।

श्री महर्षि अरविन्द : श्री अरविन्द यथार्थवादी विचारक थे। वे शिक्षा का अर्थ करते हुए कहते हैं कि प्रत्येक जीव की आत्मा में ज्ञान सदैव सुषुप्तावस्था में रहता है। शिक्षा का कार्य है कि उस ज्ञान को जाग्रत करें। बालक के अंतःकरण का विकास करना, उसकी सुषुप्त शक्तियों को जाग्रत करना, प्रकृति की सर्वोत्तम शक्ति को विकसित करना, बालक के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सर्जन करना, बुद्धि, भावना, इच्छाशक्ति का समान रूप से विकास करना, स्नायु शुद्धि, मानस शुद्धि एवं चित्त शुद्धि पर मानव की प्राणशक्ति का विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते है। वे मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा पर जोर देते हैं। साथ ही एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के ज्ञान को भी आवश्यक मानते हैं। शारीरिक, धार्मिक, नैतिक शिक्षा के साथ-साथ काव्य, कला, संगीत, विज्ञान के विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि बालकों की ज्ञानेन्द्रियों को सबल बनाएँ। इंद्रियों के समुचित प्रयोग को प्रोत्साहित करें। शिक्षक बालकों में तर्क करने की, निर्णय करने की, निरीक्षण करने की एवं ध्यान केन्द्रित करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उनके अनुसार राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। यह मानव आत्मा एवं सार्वभौम आत्मा के बीच की कड़ी है। अतः शिक्षा राष्ट्रीयता पर आधारित होनी चाहिए। संसार की समस्त संस्कृतियों का समागम कर एक आदर्श साझा संस्कृति का विकास अरविंद द्वारा स्थापित आश्रम का स्वप्न है।

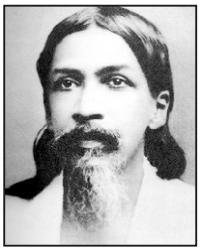

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् : डॉ. राधाकृष्णन् का संपूर्ण जीवन ही शिक्षा को समर्पित रहा। उनके अंदर का शिक्षक रूप इतना स्पष्ट था कि उनके जन्मदिन को ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। वे शिक्षा को मानव का दूसरा जन्म मानते हैं। वे विद्यालय,

विश्वविद्यालय को राष्ट्र की सर्वोच्च एवं पवित्रतम सामाजिक संस्था मानते हैं। शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की सतत प्रक्रिया का नाम है। वे शिक्षा को आत्मिक विकास का प्रबल साधन मानते हैं। उन्होंने शिक्षा की प्रक्रिया में बालक को समुचित आदर करते हुए उनके स्वतंत्र विकास पर बल दिया और उनके साथ व्यवहार करने में स्वतंत्र चिंतन, उदारता व मानवीयता का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य मात्र ज्ञान देना ही नहीं वरन अधिक ज्ञान प्राप्त करने की प्यास को पैदा करना एवं बनाए रखना है। शिक्षा द्वारा जीवन से अनुचित मूल्यों को हटाना एवं दया, प्रेम, करुणा, सत्य आदि उचित मूल्यों को स्थापित करता है। वे शिक्षक को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक मानते हैं। शिक्षक को ज्ञानी, जिज्ञासु अपने बालकों से प्रेम करने वाला होना चाहिए। उसे प्रगतिशील विचारों वाला एवं आधुनिक दृष्टिकोण वाला होना चाहिए। शिक्षक का प्रमुख गुण अध्यापन कुशलता ही नहीं उसे अध्यापन प्रिय भी होना चाहिए। शिक्षकों को शिक्षण कार्य व्यवसाय न मानकर धर्म मानना चाहिए। विद्यार्थी को एक सार्थक जीवन, सामाजिक सेवा, राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बंधुत्व का आदर्श रखना चाहिए। राधाकृष्णन् ने तर्क विद्या के साथ सहज ज्ञान का समन्वय किया वे मानव जाति की एकता में विश्वास करते हैं। जिसका एकमात्र आधार वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत है। उनके संपूर्ण विचार आज के संदर्भ में भी पूर्णतया प्रासंगिक है।

जे. कृष्णमूर्ति : जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षा जो मनुष्य को आत्मज्ञान कराने में समर्थ हो। वे शिक्षा का अर्थ वैज्ञानिक बुद्धि एवं आध्यात्मिकता के समन्वय को मानते हैं। उनके अनुसार विद्यालय शांत वातावरण में व विद्यार्थियों की संख्या भी सीमित होनी चाहिए। वे जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा के समर्थक हैं। ऐसी शिक्षा हो जो दूसरे व्यक्तियों वस्तु एवं प्रकृति के विषय में सही समझ पैदा करे एवं स्वतंत्र बुद्धि का विकास कर सके। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बालकों को पूर्वाग्रह एवं पूर्व धारणाओं से मुक्त कर एवं नवीन संस्कृति का निर्माण करने से है। ऐसी नवीन संस्कृति जो मानव मात्र के कल्याण को ही अपना अंतिम लक्ष्य माने। उनका कहना है कि शिक्षक जब बालकों को शिक्षा दें, तब उसे ध्यान श्रवण एवं भयमुक्त वातावरण, शांति, प्रेम, सौहार्द को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षक का कार्य सीखने में सहायता करना है। उसे अपनी शक्तियों को पहचानने में बालक की अपनी समस्याओं का स्वयं हल निकालने में सहायता करनी चाहिए। निरीक्षण, परीक्षण, अनुभव एवं स्वाध्याय को ही वास्तविक शिक्षण विधि माना जाना चाहिए। उनका शैक्षिक चिंतन एक आदर्श चिंतन है। जो सदैव ही प्रासंगिक है। उनके द्वारा स्थापित विद्यालय आज भी आदर्श विद्यालय माने जा सकते हैं।

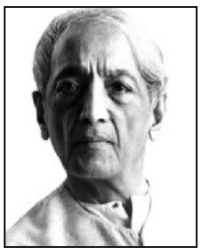

सर सैय्यद अहमद खाँ : सर सैय्यद के शिक्षा संबंधी विचार विज्ञान सम्मत व नैतिक मूल्य केन्द्रित हैं। उनका मानना है कि संपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक स्थिति को सुधारने का एकमात्र माध्यम शिक्षा है। स्त्री-पुरुष दोनों की समान शिक्षा के समर्थक हैं। ना केवल सैद्धांतिक रूप से बल्कि व्यवहारिक रूप से अपने प्रयासों और कृतियों द्वारा उन्होंने जनसाधारण में शिक्षा के प्रसार का कठिन कार्य पूरा किया। भारतीय मुस्लिम समाज में पाश्चात्य ज्ञान और शिक्षा के प्रसार की ओर सर्वप्रथम इन्होंने ही ध्यान दिया। विशेष रूप से विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, दस्तकारी शिक्षा, यांत्रिकी विज्ञान के पक्षधर हैं। उनका मानना है कि शिक्षक को उदारवादी नई सोच वाला एवं अध्ययनशील होना चाहिए। वे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में एवं उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम को उचित मानते हैं।

डॉ. एनी बेसेन्ट : डॉ. एनी बेसेन्ट ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार दिए हैं। भारतीय भाषा एवं संस्कृति को वे शिक्षा का आधार मानती हैं। शिक्षा का अर्थ बालक में अंतर्निहित उन समस्त शक्तियों का विकास करना, जिन्हें बालक अनेक जन्मों के संस्कारों को अपने साथ लेकर इस संसार में आता है। शिक्षा के द्वारा बालक में योग्यता उत्पन्न की जानी चाहिए जिससे वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें। बालक को उसके प्राकृतिक गुणों को विकसित एवं पल्लवित करने का अवसर मिलना चाहिए। केवल बाहर से उसमें ज्ञान भरना अज्ञानता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास के साथ तर्क, विवेक, निर्णय क्षमता, स्मृति के विकास का अवसर देना, तार्किक शक्ति, विविध विषयों को समझने की योग्यता का विकास करना, विविध परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का विकास करना है। बालक की शिक्षा राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिए। शिक्षक को बालकों में निहित मौलिकता, सृजनात्मकता का हमेशा सम्मान करना चाहिए। बालक को अलग कुछ सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त होने चाहिए। जिससे वह स्वयं के गुणों को विकसित व पल्लवित कर सके। बालक को उसकी प्रकृति के विरुद्ध कोई भी दी गई शिक्षा अपूर्ण होगी। प्रारंभ से ही उसे ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे वह अपने को देश का एक अंग समझे एवं उसमें विद्यालय मातृभूमि के प्रति सेवा भाव जाग्रत हो। शिक्षा बालक की मातृभाषा में हो। खेल एवं क्रिया विधि, प्रायोगिक विधि से शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

डॉ. जाकिर हुसैन : डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा तो मानव मस्तिष्क के पूर्ण विकास का नाम है। सच्ची शिक्षा संस्कृति एवं राष्ट्रीय चरित्र से ही राष्ट्रीय पुनर्जागरण संभव है। वे कहते हैं कि शिक्षा एक सतत गतिशील प्रक्रिया है। जिसमें साध्य और साधन दोनों महत्त्वपूर्ण हैं। मस्तिष्क, हृदय और कर्म इन तीनों पक्षों के विकास में ही व्यक्ति का विकास छुपा हुआ है। वे जीवन की सरसता, व्यापकता, विविधता और यथार्थता

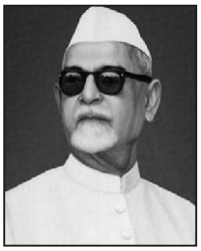

को विद्यालयों का अंग बनाने के पक्षधर थे। उनका मानना है कि शिक्षा वही बेहतर है जो उद्योग केन्द्रित, समाज केन्द्रित एवं प्रकृति केन्द्रित हो। वे शिक्षा को कर्म से जोड़ना चाहते थे ताकि मस्तिष्क स्वतंत्र रूप से विकसित हो सके। उन्होंने कार्य को शिक्षा के साथ जोड़ने की पद्धति पर जोर दिया। स्वानुभव क्रियाविधि, स्वाध्याय, प्रयोग विधि, प्रोजेक्ट एवं खेल विधि के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षक का प्रथम दायित्व राष्ट्र के प्रति है। शिक्षक विद्यार्थी में सत्य एवं पूर्णता की खोज के लिए प्रेरणा, उत्साह पैदा करे। शिक्षक को चाहिए कि बालक की मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का विकास करे। बालक में यथार्थता एवं पूर्णता लाने के लिए उनका कार्य का सिद्धांत आज भी सार्थक है।

सभी शिक्षाविदों की विचारधारा पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न परिवेश, जाति, धर्म और प्रांत के होने के बावजूद हमारे इन सारे मनीषियों के विचारों की धुरी भारतीय चिंतन एवं दर्शन है। शिक्षा का मानवता, प्रेम, सद्भावना, सत्य, अहिंसा जैसे मूल्यों एवं आत्मसाक्षात्कारों को जीवन का अंतिम लक्ष्य स्वीकार किया है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को सभी ने स्वीकार किया है। शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण एवं उदात्तीकरण करती है। भावी जीवन की तैयारी में मदद करती है। उसके व्यक्तित्व का संतुलित विकास करती है। शिक्षा जैविक सामाजिक मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के योग्य बनाती है। उसके अंदर छुपी व्यावसायिक कुशलता का विकास करती है। भौतिक संपन्नता की प्राप्ति में सहायक होती है। व्यक्ति का चरित्र निर्माण, नैतिक विकास एवं उसे आत्मनिर्भर बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को वातावरण से अनुकूलित व अनुभवों का पुनर्गठन एवं पुनर्रचना कराती है उसे व्यावहारिक ज्ञान कराती है।

व्याख्याता
महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय,
जावाल, सिरोही (राज.)
मो: 9983449410

शैक्षिक चिन्तन

परिणामोन्मुखी शिक्षा

❐ कुमार पाल सिंह

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। शिक्षा ही शिक्षक का अस्त्र है और शिक्षा ही शस्त्र अर्थात् 'राष्ट्र का स्वरूप शिक्षा के स्वरूप पर निर्भर है। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु अनेक आयोगों व समितियों का गठन किया गया। यथाः राधाकृष्णन् आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, बुच समिति, जी. राम रेड्डी समिति, यशपाल समिति, लिंगदोह समिति आदि। परन्तु हम शिक्षा में वांछित सुधार कर पाए हैं या शिक्षा के भारतीयकरण के प्रयास में सफल हो पाए हैं; इसमें संदेह है। यदि सफल हुए होते तो सामयिक भारत में जो समस्याएँ विद्यमान हैं, उनमें से अनेक समस्याएँ दृष्टिगोचर नहीं होती। समाधान ढूँढ़ने हेतु कुछ प्रश्नों के उत्तर तलाश करने होंगे।

शिक्षा का स्वरूप क्या होः यजुर्वेद कहता है, 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाए। मुक्ति किससे? वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार, बेईमानी, अपराध, द्वेष, भूख, गरीबी, अज्ञान, रोग, बेकारी आदि से मुक्ति दिलाए वह शिक्षा है। साथ ही शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो भारतीय जीवन मूल्यों को आत्मसात करने में सहायक हो और उन शाश्वत मूल्यों पर हमें गर्व की अनुभूति करवाता हो। इस हेतु सभी स्तरों पर प्रयास करने होंगे। समाज में व्याप्त विकृतियों का उन्मूलन करने के लिए समाज को अपने स्तर पर गंभीर प्रयत्न करने होंगे। राजनीति को नीति निर्माण के स्तर पर जिम्मेदारी का निर्वाह करना होगा। राजनीति में क्षुद्र स्वार्थों को तिलांजलि देनी होगी। स्वार्थपूर्ण घोषणाओं में सावधानी बरतनी होगी एवं महानायकों से प्रेरणा लेकर दलीय हित पर देशहित को प्राथमिकता देनी होगी। समाज में भी यह संदेश जाना चाहिए कि देश से हम हैं हम से देश नहीं। समाज से स्वार्थ की सीख लेकर आया बालक विद्यालयों में परोपकार की शिक्षा कैसे ग्रहण करेगा? वास्तविक शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। विद्वानों के उक्त कथन को स्वीकार कर इस दिशा में आगे बढ़ना होगा। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य तो देश के

लिए श्रेष्ठ नागरिक तैयार करना ही होना चाहिए।

शिक्षा व शाश्वत मूल्यः स्थानाभाव सभी शाश्वत भारतीय जीवन मूल्यों का वर्णन करने की स्वीकृति प्रदान नहीं करता परन्तु परिचय देना आवश्यक है। संप्रति भारतीय जीवन में व्याप्त अनेक समस्याओं का मूल कारण है। हम भारतीयों द्वारा प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों का विसर्जन एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों का ग्रहण। कर्त्तव्य पर अधिकार की प्राथमिकता। भारतीय जीवन दर्शन बहुत ही व्यापक है परन्तु उसे व्यापक संदर्भों में समझने की आवश्यकता है। भारतीय, जीवन दर्शन का मूल है सन्तोष और त्याग। सुनने में ये दो मामूली शब्द लगते हैं परन्तु हृदयंगम करने से अधिक सामाजिक, शारीरिक व मानसिक समस्याएँ हल हो जाती हैं; अनेक झगड़े समाप्त हो जाते हैं। एक ओर शिवि और दधीचि हैं जो जीते जी अपने शरीरों को दान कर देते हैं; दूसरी ओर आज हम लोग हैं जो परायी सम्पत्ति पर नजर गढ़ाए रहते हैं कि कब स्वामी की नजर हटे और कब हम अपने अधिकार में लें। यह प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों का विसर्जन का ही परिणाम है। इनके दुष्परिणामों से अवगत करवाकर विद्यार्थियों को सचेत करना होगा।

शिक्षा व नैतिकता : नैतिक शिक्षा पूर्व में विद्यालयी शिक्षा का अंग रही है परन्तु कहना अनुचित न होगा कि प्रयास अधूरे मन से किया गया था। सिर्फ कुछ कहानियाँ सुनाकर नैतिक

शिक्षा नहीं दी जा सकती। अफसोस लम्बे समय से वह भी पाठ्यक्रम का अंग नहीं है। अनेक समस्याओं का जन्म यहीं से होता है। एक समय था जब लोगों में देश पर सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना थी और आज प्रत्येक व्यक्ति देश से कुछ न कुछ प्राप्त करना चाहता है। यही नहीं जहाँ से भी; जैसे भी; कुछ प्राप्त करने की सोच व्याप्त है। साधन की पवित्रता का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। आश्चर्य होता है यह वही देश है जहाँ माँगने को मरने के समान माना जाता था। हमारा इतना पतन कैसे हुआ। उत्तर सहज है। पाश्चात्य प्रभाव से नैतिकता के क्षरण के कारण; अपनी संस्कृति को भुलाने के कारण। इसलिए नैतिकता को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाकर विद्यार्थियों के मन में प्राचीन मूल्यों की पुनर्स्थापना करनी ही होगी। वह भी केवल सैद्धांतिक न होकर प्रायोगिक हो।

शिक्षा व स्वावलम्बन : शिक्षा परमुखापेक्षिता उत्पन्न न करे बल्कि स्वावलंबन सिखाने वाली हो। सर्वप्रथम हमें मैकाले की परछाई से मुक्त होना होगा। सिर्फ बाबू तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य नहीं हो सकता। सरकारी नौकरी प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य होगा तो प्रगति कैसे सम्भव है। स्वरोजगार को अपनाना होगा। विविध क्षेत्रों में विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचान कर उसका परिमार्जन करना होगा ताकि अपनी रुचि के अनुरूप क्षेत्र में विद्यार्थी अपना भविष्य सँवार सके। इस हेतु डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, जापान आदि देशों से प्रशिक्षण लेना चाहिए। किसी अन्य देश से कुछ अच्छा सीखने में कोई बुराई नहीं है। बुराई अविवेकपूर्ण अनुकरण में है। विदेशों से नवाचार सीखें परन्तु उन्हें अपने परिवेश के अनुकूल परिवर्तित करके ही प्रयोग में लाया जाए। बिना विचारे प्रत्येक क्षेत्र में अमेरिका का अंधानुकरण श्रेष्ठ फलदायी नहीं हो सकता। हमें तो मानवीय गुणों से भरपूर ऐसी शिक्षा पद्धति चाहिए। जो भाई चारा सिखाती हो, परस्पर सहयोग करना सिखाती हो; निज हित पर परहित को प्राथमिकता देना सिखाती हो; लालच से दूर रहना सिखाती हो; ऐसा होते ही अनेक समस्याएँ समाप्त हो जाएंगी।

शिक्षा व श्रम का महत्त्व: हमारे जीवन में श्रम के घटते महत्त्व को शिक्षा द्वारा पुनर्स्थापित करना होगा। अनेक माध्यमों से श्रम को हेय दृष्टि से देखने का जो चलन बन गया है उसे बन्द करना होगा। धन कमाने का सीधा मार्ग खोजने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना होगा। सीमित संसाधनों के समुचित प्रयोग से भी आनन्दित रहा जा सकता है। यह विचार विद्यार्थियों के मन में अंकुरित करना होगा। भोगवादी पाश्चात्य विचारधारा के दुष्परिणामों से अवगत कराना होगा। अपने संस्कारों व उनके सुखद परिणामों से परिचित कराते हुए बालकों के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करनी होगी। पाठ्यक्रम का अंग होने पर यह सब कुछ किया जा सकता है। आधुनिक तरीकों को अपनाकर कृषि को प्रकृति का जुआ बनने से रोकना होगा ताकि कृषि पर निर्भर लोग उसका समुचित लाभ ले सकें। आज कृषि पर निर्भर लोग अभाव में जी रहे हैं अतः आय के लिए कुछ और भी करना चाहते हैं इससे अन्य क्षेत्रों पर दबाव बढ़ता है।

शिक्षा एवं अतीत व वर्तमान में सन्तुलन: उपर्युक्त परिच्छेदों को पढ़कर शायद ये विचार घर करने लगे कि मैं पुरातन सोच से बाहर नहीं आ पाया हूँ अतः इन विचारों का वर्तमान में कोई महत्त्व नहीं है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि पुरातन विचारों का उपयोग नवीन परिप्रेक्ष्य में भी समीचीन हो सकता है। धृति, क्षमा, सत्य आदि दस व्रत जो भारतीय संस्कृति में धर्म के लक्षण माने जाते हैं; क्या ये कभी अप्रासंगिक हो सकते हैं? क्या इन गुणों के विस्मरण के कारण ही वर्तमान में सभी क्षेत्रों में असंतोष व्याप्त नहीं हैं? यदि सत्य, कर्त्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी को धारण कर लिया जाए तो क्या अधिकांश समस्याओं का समाधान नहीं हो जाएगा! इनका लोप होने से ही समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। शिक्षा में इनका समावेश अति आवश्यक है। जब तक इन्हें व्यवहार में अपनाया नहीं जाता है तब तक कोई भी नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों को ये गुण नहीं सिखा सकती।

हाँ, मैं एक शिक्षक हूँ।
संस्कारों का संरक्षक हूँ।।
राष्ट्र-रथ का हविष्य तैयार करता हूँ।
मैं भारत का भविष्य तैयार करता हूँ।।

शिक्षा नीति में यदि ये शामिल कर लिए जाते हैं तो शिक्षक बहुत कुछ योगदान कर सकता है।

शिक्षा व पर्यावरण संरक्षण: मनुष्य और प्रकृति परस्पर पूरक हैं। पश्चिम द्वारा इस तथ्य को नकार देने से ही समस्त समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। पश्चिम की भोगवादी विचारधारा ने पर्यावरण के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। जबकि भारतीय संस्कृति में वृक्षों, नदियों, पर्वतों आदि को पूज्य बताया जाना मानव व प्रकृति के परस्पर सहअस्तित्व की स्वीकार्यता को सिद्ध करता है परन्तु हम भी पाश्चात्य रंग में रंगने लगे हैं। अतः इस सोच के हावी होने से यहाँ भी उन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बालकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों के सीमित उपयोग को दृढ़ता से प्रोत्साहित करना होगा। परस्पर होड़ करने की प्रवृत्ति को त्याग कर आवश्यकताओं को सीमित करने में प्रशिक्षित करना होगा। पर्यावरण संरक्षण को विद्यालयी शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाकर उन क्रियाओं में प्रशिक्षित किए जाने पर विद्यार्थी इन गुणों को सहज ही दैनिक जीवन में अपना सकेंगे।

शिक्षा एवं विकास बनाम विनाश: शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को उसका व्यापक हित समझाना भी है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण प्रायः विद्युत व अन्य संसाधनों के अधिक उपयोग को विकास का पैमाना माना जाता है जबकि भारतीय विचार कम लागत में अधिकतम परिणाम प्राप्त करना रहा है। हमारी सोच रही है कि हमें जितनी आवश्यकता हो सिर्फ उतना ही संग्रह करना चाहिए। अतिरिक्त होने पर अन्य के उपयोग हेतु त्याग की भावना रही है। परन्तु पाश्चात्य प्रभाव से वह सन्तोष समाप्त होता जा रहा है उसे फिर से जगाना होगा तथा समझाना होगा कि संसाधनों का मितव्ययता पूर्वक प्रयोग नहीं किया तो अति शीघ्र न केवल संसाधन समाप्त हो जाएँगे बल्कि अनेक दुष्प्रभाव भी सामने आएँगे जिनसे मनुष्य का सामान्य जीवन संकट में पड़ जाएगा अतः हमें विकास और विनाश के अन्तर को समझ कर विनाश को रोकना होगा।

प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
फियावड़ी, राजसमंद
मो: 9414526365

शैक्षिक चिन्तन

महावीर स्वामी और महात्मा गाँधी

❒ शबनम भारतीय

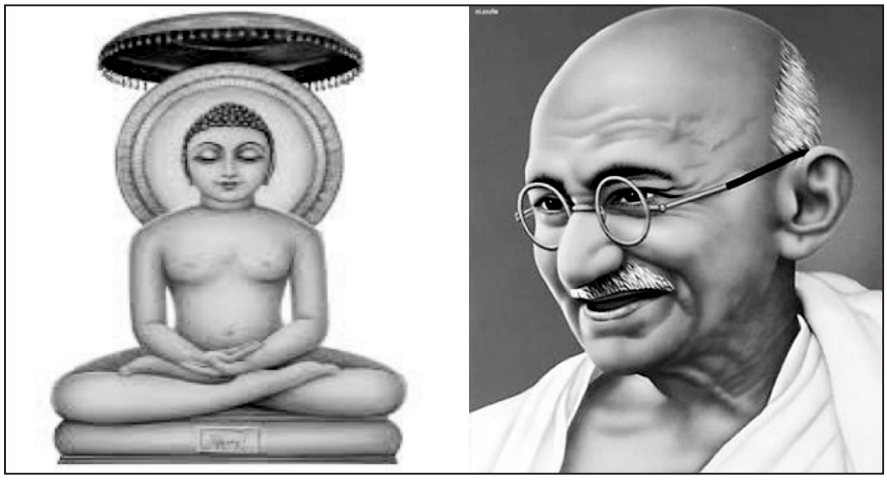

महावीर स्वामी और महात्मा गाँधी दो आदर्श और पवित्र आत्मा, जिनके जीवन काल में सदियों का अंतराल है। एक सतयुग में अवतरित हुए तो दूसरे का कलियुग में अवतरण हुआ। एक ने हिंसा, पशु बलि, कर्मकांड, पाखंड, जात-पांत, छूआछूत, आडंबर जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों से ग्रस्त समाज में जन्म लेकर समाज को नई दशा और दिशा दी तो दूसरे ने राजनीतिक और सामाजिक बुराइयों की बेड़ियों से त्रस्त मानवता को पराधीनता की जंजीरों से मुक्त कर नवजीवन दिया। एक जैन धर्म के प्रवर्तक बने तो दूसरे स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपिता लेकिन हम अगर इन दोनों ही महान विभूतियों के जीवन, कर्म, आचार-विचार या यू कहें कि कृतित्व और व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करें तो जो समानताएँ हमें नजर आती हैं, वे निसंदेह आश्चर्यजनक प्रतीत होती हैं। इस दृष्टि से जहाँ एक ओर महावीर स्वामी जैन धर्म के अनुयायियों का मार्गदर्शन करते नजर आते हैं तो दूसरे भारतवर्ष के परतंत्र नागरिकों का। एक विहंगम दृष्टिपात के उपरांत हम कह सकते हैं कि महात्मा गाँधी महावीर के अनुगामी प्रतीत होते हैं। दूसरे शब्दों में हम अगर ये कहें कि महावीर स्वामी महात्मा गाँधी के आध्यात्मिक गुरु थे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि स्वयं महात्मा गाँधी ने भी कई बार कई अवसरों पर इस बात को खुले मन से स्वीकार किया है। यही कारण है कि जब गाँधी जी के आध्यात्मिक विचारों की बात होती हैं, सिद्धांतों की बात होती हैं तो महावीर स्वामी का नाम पहले आता है। एक बार गाँधी जी ने कहा था कि आज महावीर स्वामी की जो पूजा होती है वह उनके द्वारा दिए गए अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों जैसे महान विचारों के कारण ही होती है। उनके विचार समाज में सद्भाव का, भाईचारे का वातावरण बनाने में सहायक हैं। गाँधी जी अहिंसा को मानसिक शक्ति, आत्मशक्ति और तन-मन की शुद्धि को रामबाण औषधि मानते थे। उन्होंने जैन धर्म की धार्मिक आचार संहिता को राजनीति की व्यवहार संहिता बनाया। महावीर स्वामी की तरह उन्होंने कहा कि अहिंसा कायरों का नहीं बल्कि वीरों का आभूषण है। अपने विचारों एवं जीवन पर महावीर स्वामी का प्रभाव गाँधी जी ने कई बार खुले मन से स्वीकार किया और कहा कि महावीर स्वामी के विचार विरोधियों को भी अपना बनाने में सक्षम हैं। महावीर स्वामी सत्य के विचार अनुगामी थे। गाँधी जी ने भी सत्याग्रह पर जोर दिया और उसे जन आंदोलन बना दिया। इस आध्यात्मिक अस्त्र से उन्होंने अंग्रेजों के लाठी-डंडों और बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों को काट कर हवा में उड़ा दिया। महावीर स्वामी की तरह उन्होंने एक ऐसे राज्य की कल्पना की जिसमें कोई छोटा-बड़ा ना हो और अमीर-गरीब ना हो किसी को कोई कष्ट न हो, सभी को समान अधिकार हो और ऐसे ही राज्य को उन्होंने रामराज्य कहा। महावीर स्वामी के सत्य, अहिंसा को अपनाकर गाँधीजी ने उसे नया रंग रूप देकर अनंत असीम ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। महावीर स्वामी के सार्वकालिक विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का जो कार्य गाँधी जी ने किया वह अप्रतिम है, अनुपम है, अतुलनीय है। यही कारण है कि जब अहिंसा की बात आती है तो महावीर स्वामी और गाँधी जी की चर्चा-परिचर्चा साथ-साथ होती है। महावीर स्वामी ने बरसों तपस्या की और जो बात वह दुनिया को कहना चाहते थे उसे पहले उन्होंने स्वयं पर लागू करके देखा।

अपनी देह को कष्ट और तपस्या की भट्टी में तपाकर देखा और फिर संसार को संदेश दिया। गाँधी जी ने भी अहिंसा, सत्याग्रह, अपरिग्रह, भाईचारा, समता, आत्म नियंत्रण को पहले अपनी जीवन कसौटी पर परखा। हर प्रयोग पहले स्वयं पर करके देखे कि वह स्वयं इस बात को अपने जीवन में, कर्म में उतार सकते हैं कि नहीं, सहन कर सकते हैं कि नहीं। उसके बाद लोगों को इस राह पर चलने, अनुगमन करने के लिए प्रेरित किया। एक तरह से गाँधी जी ने महावीर स्वामी के विचारों के ही व्यावहारिक जीवन की कसौटी पर उतारा। उनका जीवन सत्य अहिंसा के साथ महावीर स्वामी के अपरिग्रह संदेश का भी साक्षात दर्शन करवाता है, उदाहरण प्रस्तुत करता है। महावीर स्वामी की तरह गाँधीजी भी मानते थे कि सच्चे मन से, आत्मा की पूर्णता तक सहा गया दुःख पत्थर जैसे व्यक्ति के मन में भी दया, करुणा, प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित कर सकता है। उसे दयावान बना सकता है और एक हैवान को भी इंसान बना सकता है लेकिन आवश्यक है कि इस दुःख की पीड़ा आत्मा से निकलकर आत्मा तक पहुँचे क्योंकि दुःख सहन करना भी एक तपस्या है और सत्याग्रह का प्राण है। युगों-युगों से प्रमाणित है कि मानव और दानव में अहिंसा ही भेद करती है। गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसा और सत्य का आधार लेकर एक नया और अनूठा

प्रयोग किया था जो संसार के लिए नव प्रयोग था क्योंकि अब तक संसार ने तीर, भाला, तलवार और बंदूक तोपों की ही ताकत देखी थी।

प्रथम बार विश्व ने सत्य और अहिंसा की ताकत को प्रत्यक्ष प्रमाणित देखा कि किस तरह से स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्याग्रही लाठी-डंडे, गोली खाते रहे लेकिन उफ तक नहीं की ना ही प्रतिकार किया जिसे देखकर अपने समय की सबसे ताकतवर अंग्रेजी सरकार को भी हथियार गिराने पड़े, नतमस्तक होना पड़ा और देश को मुक्त करने के लिए मजबूर एवं बाध्य होना पड़ा। गाँधीजी की इस अहिंसा सत्याग्रह की जंग की प्रेरणा-अमृत महावीर स्वामी के अतुलनीय विचारों से ही प्राप्त हुई और इसी प्रेरणा-अमृत ने स्वतंत्रता संग्राम रूपी वट-वृक्ष की जड़ों को जीवनदान प्रदान किया।

महावीर स्वामी ने विश्वशांति का संदेश दिया था। आत्मा पर, मन पर विजय का संदेश दिया था। उन्होंने कहा कि किसी प्राणी को मत मारो, पीड़ा मत दो यहाँ तक किसी का बुरा भी मत सोचो क्योंकि हर प्राणी जीने की कामना रखता है। इस दृष्टि से भी महावीर स्वामी महात्मा गाँधी के अग्रदूत दिखाई देते हैं क्योंकि उन्होंने भी अपने तीन बंदरों के माध्यम से संदेश दिया है कि बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो। शांति से जिओ और दूसरों को भी जीने दो क्योंकि सारे विश्व का कल्याण इसी सद्विचार में है। उनका यह कृत्य महावीर स्वामी के संदेश को ही आगे बढ़ाने वाला जन विचार बन गया और पूरे विश्व के लिए विश्वशांति, दया, करुणा जैसे सुविचारों का आदर्श बन गया।

गाँधी जी ने सत्याग्रह, अपरिग्रह के जिन सिद्धांतों को लेकर जीवन भर कार्य किया। वह मुख्य रूप से महावीर स्वामी की ही धरोहर है, संदेश है जो उन्होंने संसार को दिया था। अपरिग्रह जैसे विचार को गाँधी जी ने प्रत्यक्ष प्रयोग करके विश्व मानवता के सामने एक बड़ा आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका जीवन इस विचार का श्रेष्ठ रूप प्रस्तुत करता है कि एक धनी मानी परिवार से होते हुए भी और वकालत जैसे उच्च पैसे से संबंध होने के बावजूद भी उन्होंने सादा जीवन अपनाया और एक आधी धोती को उन्होंने अपना वस्त्र बनाया ताकि बाकी की आधी धोती से कोई और भारत माता का सपूत अपना तन ढक सके ऐसे आदर्श प्रेरणादायी जीवन की प्रेरणा भी गाँधी जी को महावीर स्वामी से ही मिली थी जिसे जिन्होंने अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से अपनाया। इसी प्रकार से प्रेम, भाईचारा, एकता, करुणा, दया, समता जैसे मानवीय गुण उन्होंने महावीर स्वामी से ग्रहण कर उन्होंने अपने जीवन में उतार कर पीड़ित, पराधीनता से त्रस्त मानवता को प्रेम और भाईचारे के जल से अभिषिक्त किया और दिखा दिया कि धार्मिक उपदेश, संदेश, सिद्धांत, विचार सिर्फ उपदेश के लिए नहीं होते बल्कि उनको अपनाकर व्यक्ति भी बड़ी सत्ता के शक्तिशाली वट वृक्ष को अपनी आत्मिक शक्ति से उखाड़ सकता है, युगों-युगों तक जन प्रेरणा का शक्तिपुंज, प्रकाश पुंज बन सकता है।

वर्तमान संसार जिस प्रकार नस्लवाद, जातिवाद, आतंकवाद असाध्य रोगों से पीड़ित है, ग्रस्त है, चारों और भय, आतंक का माहौल है तनाव चिंता ने भी संसार को जकड़ रखा है ऐसे में विश्व में महावीर स्वामी के विचारों को एक बार फिर गाँधी जी की तरह अपनाकर न सिर्फ अपनी समस्याओं को दूर करता है बल्कि विश्व शांति में, आत्मिक शांति में अपना योगदान दे सकता है। विश्व मानवता को बचा सकता है क्योंकि आज विश्व का कल्याण इन्हीं विचारों, सिद्धांतों में हैं। यदि मानवता को बचाना है तो यही सबसे श्रेष्ठ रास्ता है जो महावीर स्वामी ने बताया और जिनको अपनाकर गाँधी जी ने देश को परतंत्रता की जंजीरों से मुक्त करवाया था।

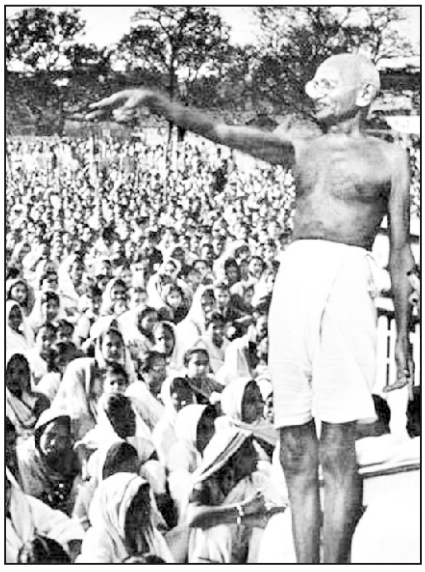

वर्तमान कालखंड में जिस प्रकार से एक छोटे से वायरस ने, विषाणु ने पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले रखा है, भयभीत कर रखा है। जल, थल, नभ पर विजय पाने वाले मनुष्य को परिंदों की तरह घरों में बंद कर रखा है। महाशक्तियों को सोचने पर बाध्य कर रखा है। अर्थव्यवस्था के पहिए को रोक रखा है। लॉकडाउन के लिए भारत सहित संपूर्ण विश्व को मजबूर कर रखा है। जिस तरह मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च के कपाट बन्द हैं। इस सम्पूर्ण परिदृश्य ने दिखा दिया है कि संपूर्ण भौतिक और वैज्ञानिक उन्नति के पश्चात भी मनुष्य की क्षमता अधिक नहीं है क्योंकि वह एक छोटे से विषाणु के सामने नतमस्तक हो गया है। आज संपूर्ण मानव जाति का जीवन खतरे में है नाश की ओर अग्रसर है। मनुष्य तमाम भौतिक उन्नति के पश्चात भी फिर से अपनी वास्तविक स्थिति पर पुनः दृष्टि डालने पर विवश हुआ है कि वह उसे किस रास्ते पर चलना था और वह किस रास्ते पर चल रहा है, ये रास्ता उसे कहाँ ले जा सकता है?

जिस प्रकार प्रकृति संतुलन बिगड़ रहा है, पर्यावरण चक्र दूषित हो रहा है। प्राकृतिक प्रकोपों के माध्यम से प्रकृति अपना रुद्र रूप दिखा कर चेतावनी दे रही है, ऐसे में संसार को फिर से महावीर स्वामी के विचारों की तरफ फिर से लौटने के लिए विवश कर दिया है जिनको अपनाकर गाँधीजी, महात्मा गाँधी बने। महावीर स्वामी के विचार काल और भूगोल की सीमाओं से परे शाश्वत थे, मानव मात्र के पृथ्वी पर चिर कालिक अस्तित्व के लिए थे, उसके कल्याण के लिए थे, उसकी आत्मिक और भौतिक उन्नति के लिए थे, मानसिक शान्ति और भौतिक उन्नति के लिए थे जो कल भी प्रासंगिक थे और आज भी हैं। आवश्यकता है तो गाँधीजी की तरह उनको मन, वचन और कर्म से अपनाने की। बेशक आज के वक्त की ये सबसे बड़ी आवश्यकता है।

D/o सदीक भारतीय
गफार खाँ अस्पताल के पास,
वार्ड नं. 13, भारतीय हाउस, फतेहपुर
शेखावाटी, सीकर (राज.)-332301
मो: 8619896258

शैक्षिक चिन्तन

वर्चुअल शिक्षा : स्कूली शिक्षा का बदलता स्वरूप

❐ प्रियंका जैन

वर्चुअल शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा–ये वे शब्द हैं जिनके बारे में हम सुनते आ रहे थे परन्तु परम्परागत शिक्षण व्यवस्था का ये स्थान ले पाएँगे इसके बारे में हम आश्वस्त नहीं थे क्योंकि भारत जैसे देश में जहाँ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण, समाज कल्याण एवं ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास रहा है में वर्चुअल शिक्षण अपनाना स्वयं में एक अस्वीकार्य सा था परन्तु कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने सामाजिक, राजनीतिक एवं व्यक्तिगत जीवन तथा अर्थव्यवस्था में बड़े बदलाव कर दिए हैं। साथ ही जिस क्षेत्र को सर्वाधिक प्रभावित किया है वह है– शिक्षण व्यवस्था व पठन–पाठन। अतः इस संकट के उत्तरोत्तर प्रभाव को देखते हुए शिक्षा व्यवस्था को समायोजित करना बेहद आवश्यक है इसी क्रम में वर्चुअल शिक्षा एक विकल्प के रूप में कक्षा–कक्ष को पदस्थापित कर सकती है।

वर्चुअल शिक्षा शिक्षण की एक शिक्षा आधारित पद्धति है जो मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है। यह शिक्षा एक शैक्षिक वातावरण में निर्देश को संदर्भित करती है। जहाँ शिक्षक और छात्र/छात्राएँ समय या स्थान या दोनों से अलग हो जाते हैं और शिक्षक पाठ्यक्रम प्रबंधन अनुप्रयोग, मल्टीमीडिया संसाधनों जैसे– इंटरनेट, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि के माध्यमों से पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करता है। छात्र/छात्राएँ सामग्री प्राप्त करते हैं एवं संवाद करते हैं तथा समस्या होने पर समाधान प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम पूरी तरह से ऑनलाइन पढ़ाया जाता है।

शिक्षक व छात्रों के बीच शारीरिक दूरी कम हो जाती है। वर्चुअल क्लासेज ऑनलाइन माध्यमों जैसे जूम, गूगल क्लासरूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम, स्काइपे आदि तथा व्हाट्सअप, यू ट्यूब जैसी सोशल साइट्स से साकार हो रही है। आज हमारे देश में इसकी माँग व प्रासंगिकता मुखर हुई है क्योंकि इस संकट की घड़ी में वास्तविक कक्षाओं का संचालन संभव नहीं हो पा रहा है एवं इसके खत्म होने के बाद भी शिक्षण व्यवस्था का स्वरूप क्या रहेगा कहा नहीं जा सकता। अतः भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षण

व्यवस्था को जारी रखना अत्यन्त आवश्यक है जो कि वर्चुअल शिक्षण से ही संभव हो सकती है।

वर्चुअल शिक्षण हमारी परम्परागत शिक्षण पद्धति से भिन्न है। सर्वप्रथम 1968 में यूनिवर्सिटी ऑफ अलबर्टा ने मेडिकल साइंस में विद्यार्थियों हेतु इसें शुरू किया। 1989 में यूनिवर्सिटी ऑफ पॉनिक्स ने सर्वप्रथम ऑनलाइन कार्यक्रम संचालित किया जिसे पूर्ण सफलता मिली। इसके बाद ग्लोबल स्तर ऑनलाइन कॉर्सेज ड्यूक यूनिवर्सिटी ने 1996 में यूरोप, एशिया एवं लेटीन अमेरिका आदि देशों में शुरू हुआ। इसी क्रम में आज विश्व की अधिकतर प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी व कॉलेज ऑनलाइन कार्यक्रम उपलब्ध करवा रही है जिससे दूरस्त विद्यार्थी जिनके लिए इन विश्वविद्यालयों में दाखिला लेना व डिग्री हासिल करना एक सपना था जो आज हकीकत बन गया है।

भारत में इसकी शुरूआत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हुई परन्तु आज सभी तरह की शिक्षा प्रणालियों में इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है और वर्तमान परिस्थितियों में इसकी उपादेयता एकाएक बढ़ गई है। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना, घर पर रहना और शिक्षण व्यवस्था को सुचारू रखना आदि कई समस्याएँ हमारे सामने चुनौतियाँ हैं जिनका विकल्प डिजिटल प्लेटफार्म से ही संभव हो सकता है। इस माध्यम से विद्यार्थी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर सकते हैं, संवाद व अपने अनुसार विषयाध्यापकों से परिसंवाद भी कर सकते हैं। यह दूरस्त विद्यार्थियों को उच्च स्तर के पाठ्यक्रमों तक पहुँच सुनिश्चित करता है। यह एक लचीली शिक्षण पद्धति है जो छात्र केन्द्रित है। इसमें छात्र समय, स्थान, वर्ग भेद से ऊँचा उठ साम्प्रदायिक सद्भावना से अपनी पढ़ाई पूर्ण मनोयोग से करता है।

यह शिक्षण पद्धति सीखने की वर्तमान पीढ़ी की परिवर्तित जरूरतों और आकांक्षाओं व सीखने में सहायता करने के लिए कारगर सिद्ध हो सकती है। यह वास्तविक डेटा (Upto date) प्रदान करता है ताकि छात्र तथाकथित ज्ञान प्राप्त कर सके तथा जो छात्र सीखने में संघर्ष कर रहा हो तो त्वरित हस्तक्षेप की अनुमति भी प्रदान करता है। यह आज की अपेक्षा इंटरनेट आधारित व्यापार की दुनिया हेतु छात्रों को तैयार करेगा ताकि वैश्विक स्तर पर उन्हें पिछड़ेपन का लेबल ना मिले। यह शिक्षण हमारे भविष्य का सपना Smart क्लासरूम का भी स्थान ले रहा है तथा आने वाले समय में Study from your home की संकल्पना को भी संभव बनाएगा।

भारत में ऑनलाइन शिक्षण की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं शिक्षा विभाग राजस्थान ने अनेक कार्यक्रम चला रखे हैं जो शिक्षक व विद्यार्थी दोनों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। स्वयं, दीक्षा पोर्टल, ई–बस्ता, नेशनल रिपॉजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज, शोध गंगा, विद्वान, ई–पीजी पाठशाला कार्यक्रम आदि कक्षीय पठन–पाठन के लिए तथा 'युक्ति' कार्यक्रम उन अध्यापकों के लिए जो ऑनलाइन पाठ्य सामग्री तैयार करना चाहते हैं। वे स्वयं अपने को रजिस्टर करवा सकते हैं। ये सभी शैक्षिक पोर्टल निःसंदेह लाभकारी हैं जिनसे प्राप्त ई–कन्टेन्ट से विद्यार्थी अपनी पढ़ाई सुचारू कर रहे हैं।

राजस्थान में भी राजस्थान सरकार व शिक्षा विभाग ने 'स्माइल' प्रोग्राम (सोशल मीडिया फार लर्निंग मेनेजमेंट) जिसका शाब्दिक आशय सोशल मीडिया के संयोजन से विद्यार्थियों में अधिगम सक्रियता को बनाए रखना है को आरम्भ किया। इस नवाचारी कार्यक्रम में राज्य स्तर पर विद्यार्थियों एवं अध्यापकों हेतु उपयोगी शैक्षिक सामग्री को चयनित करने के पश्चात संभाग/जिला माध्यम से ग्राम पंचायत स्तर तक प्रेषित किया जाता है।

ग्राम पंचायत स्तर पर P.E.E.O. इस

शैक्षिक सामग्री की व्हाट्सअप पर बनें ग्रुपों के माध्यम से अभिभावकों से विद्यार्थियों तक प्रेषित किया जा रहा है। साथ ही शिक्षा दर्शन व शिक्षा वाणी जैसे दूरदर्शन व रेडियो आधारित कार्यक्रम भी नियमित प्रसारित किए जा रहे हैं जिसमें विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रत्येक कक्षा हेतु पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाया जा रहा है। शिक्षकों हेतु हाल ही में शिक्षा पोर्टल पर ऑनलाइन प्रशिक्षण की सुविधा पर दी जा रही है जो कि वर्चुअल शिक्षा पद्धति की सफलता का द्योतक है। इससे पहले Eduset नामक उपग्रह प्रणाली भी विकसित की जा चुकी है जो नियमित विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाता आ रहा है।

आज गूगल फॉर्म, गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम एवं अन्य माध्यमों के द्वारा विद्यार्थी अपने घर पर रहते हुए विषयाध्यापकों से आमने-सामने वार्तालाप, प्रश्नोत्तरी हल करना, समस्या साझा करना, असाइनमेंट पूरा करना, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ जैसे चित्रकारी, नृत्य, गायन आदि भी कर सकते हैं। इन माध्यमों में छात्र/छात्राएँ पढ़ने हेतु स्वतंत्र रहते हैं तथा वे इसे सुलभ व सुगम्य अपने मोबाइल या कम्प्यूटर के माध्यम से पा सकते हैं। परन्तु यह भी ध्यातव्य है कि अभिभावक भी इसमें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें व बच्चों को अपनी देखरेख में इनका इस्तेमाल करने दें।

राजस्थान राज्य में जहाँ इंटरनेट सेवाएँ माकूल नहीं है तथा हर बच्चे या अभिभावक के पास मोबाइल (एंड्राइड) उपलब्ध नहीं है में ये सभी संभावनाएँ एक समस्या है परन्तु परिवर्तनशील समय में सब समयानुकूल बन सकता है। वर्चुअल शिक्षा का बढ़ता वर्चस्व आने वाले समय में इसकी सफलता की नई मुरीद बनेगा तथा आने वाली विकट परिस्थितियों में एक सेतु का काम करेगी जिससे शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन देखने को मिलेंगे एवं वैश्विक दुनिया में अपने अस्तित्व को बचाने में कारगर सिद्ध होगी। राजस्थान में इसकी सफलता की बहुत गुंजाइश है तथा इस क्षेत्र में भी नवीन रूपरेखा व योजना बनाने की महती आवश्यकता है।

अंग्रेजी (लेवल-2)
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कल्याणपुरा,
दूदू, जयपुर (राज.)
मो: 7689079584

शैक्षिक चिन्तन

ज्ञान वर्तमान शिक्षा

❐ डॉ. रिंकू सुखवाल

'शिक्षा सिर्फ तथ्यों का अध्ययन नहीं है बल्कि सोचने के लिए दिमाग का प्रशिक्षण है।'

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा हर युग, समय और काल में रही है। जन्म से मृत्यु तक यह निरन्तर चलती रहती है। शिक्षा से अभिप्राय केवल विद्यालयी शिक्षा से नहीं है। विद्यालय की शिक्षा तो केवल शिक्षा का एक अंग है। शिक्षा तो सार्वभौमिक है, सर्वव्यापी है, विस्तृत है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है। संक्षेप में शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत-प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनर्स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति एवं समाज दोनों ही के विकास में परम आवश्यक है। शिक्षा को किसी एक परिभाषा में परिभाषित नहीं किया जा सकता। रेमॉण्ट ने लिखा है- ''शिक्षा उस विकास का नाम है जो शैशव अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता **है-''अर्थात शिक्षा वह क्रम है जिससे मानव अपने को आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।''**

परन्तु यहाँ हम बात कर रहे हैं विद्यालयी शिक्षा की। वह शिक्षा जो शिक्षार्थियों को विद्यालयों में दी जाती है। ज्ञान का अर्थ अगर सूचना या जानकारी के रूप में लिया जाए तो

ज्ञान का दायरा छोटा हो जाता है। ज्ञान अर्थात सूचनाओं का संकलन अपने आप में निर्जीव वस्तु सादृश्य है। बड़े-बड़े ग्रंथालय इसका प्रमाण है। यदि ग्रंथालय में ग्रंथ मात्र से वह ज्ञानी हो जाए तो ग्रंथालय से बड़ा विद्वान कौन होगा, फिर उसके सम्भालकर्ता-पुस्तकालयाध्यक्ष, सेवक आदि निरन्तर ग्रंथालयों में रहते हैं, ग्रंथों का स्पर्श कर उनके सम्पर्क में रहते हैं, वे सब विद्वानों की श्रेणी में माने जाने चाहिए पर ऐसा होता नहीं है, हाँ पुस्तकालय के वे कार्यकर्ता जिन्हें अध्ययन के प्रति रुचि हो वह ज्ञानवान हो सकते हैं। ज्ञान से ज्यादा आवश्यक है ज्ञान के रचनात्मक उपयोग की। जिसके मस्तिष्क में जितनी अधिक सामग्री भर दी गई, वह उतना ही बड़ा विद्वान माना जाने लगा। आखिर इन सूचनाओं की बालक के जीवन में कितनी उपयोगिता है? जिसके पास जिनती डिग्रियाँ है वह उतना ही ज्ञानी है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था ''आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएँ पास कर ली हो तथा अच्छे भाषण दे सकता हो पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण का जीवन-संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं कर सकती, जो समाज सेवा की भावना को विकसित नहीं कर सकती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ है।'' विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल उन सूचनाओं से नहीं है जो बालकों के मस्तिष्क में बलपूर्वक ठूँसी जाती है। उन्होंने लिखा है- **''यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा**

विश्वकोष ऋषि बन जाते।''

उच्चतम स्तर तक की शिक्षा पाने वाला व्यक्ति वास्तव में ज्ञानी भी हो यह आवश्यक नहीं है, वह साक्षर हो सकता है। कई बार देखा गया है कि एक ग्रेजुएट धारक अपने प्राईमरी कक्षा के बालक के गृहकार्य में मदद करने में असमर्थ होता है। केवल अक्षर, अंकों और भाषा का ज्ञान ही वास्तविक अर्थों में ज्ञान नहीं है। एक बालक को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक की घटनाओं का ज्ञान होता है। रूस, अमेरिका के प्रधानमंत्री का नाम उसे रटा है, देशों की राजधानी के नाम उसे पता है परन्तु कई बार उसे यह नहीं पता होता है कि उसके गली मोहल्ले में रहने वालों के नाम क्या है?, शिक्षा द्वारा ऐसा ज्ञान प्रदान किया जा रहा है जिससे वह आगे चलकर प्रतियोगिता परीक्षाएँ पास करके अच्छी नौकरी प्राप्त कर सके। व्यवहार में शिक्षा को हम कमाई का साधन ही मान रहे हैं। बालक को शिक्षा के द्वारा ऐसा ज्ञान परोसना है जो उसे अच्छी जगह बिठा सकें, अच्छा पैकेज मिले, उसकी तरक्की बढ़ती रहे। इस ज्ञान के बल पर उसका पूरा भविष्य निश्चित हो जाए। क्या शिक्षा का उद्देश्य इतना है कि रोजगार के लिए विद्यार्थियों में ज्ञान ठूँसना। यह ज्ञान यह नहीं सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में किस प्रकार खड़े रहना है, समाधान निकालना है। वास्तव में ज्ञान वह है कि जो भी शिक्षा द्वारा ज्ञान (सूचनाएँ) हमें प्रदान किया जाता है उसका जीवन में उपयोग कैसे किया जाए, कैसे हम विपरीत परिस्थितियों में उस ज्ञान का प्रयोग करके अपने जीवन में सफल बन सकें, खुश रह सकें। ज्ञान को किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता, कोई निश्चित दायरा नहीं है ज्ञान का। ज्ञान हमें Short-Cut नहीं सिखाता, जीवन से पलायन करना नहीं सिखाता। वस्तुतः केवल ज्ञान का संकलन करना शिक्षा नहीं हैं, इस ज्ञान का अपने जीवन में उपयोग कर जीवन को बेहतर तरीके से जीना, अपना जीवन संवारना शिक्षा है।

मारवाड़ी में एक कहावत प्रचलित है-

'भण्यो तो है, पण गुण्यो नी है।'

'भण्यो' अर्थात पढ़ा लिखा तो है परन्तु 'गुण्यो' अर्थात जीवन में व्यवहार कुशल नहीं है। केवल किताबी ज्ञान शिक्षा नहीं है, बुद्धिमत्ता पूर्ण उस ज्ञान का उपयोग करके अच्छा जीवन जीने की कला शिक्षा है।

जे. कृष्णमूर्ति के शब्दों में, 'शिक्षा का कार्य तुम्हें एक पूर्णतया मित्र बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से संसार का सामना करने में सहायता करना है।' इसी प्रकार हरबर्ट स्पेंसर के अनुसार, **'पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।'**

प्राचीनकाल से अब तक भारत में ऐसे अनेक व्यक्तियों के उदाहरण है जिन्हें लिखना पढ़ना नहीं आता था, किन्तु मानवता के लिए उदाहरण है। निरक्षर किसान खेत की धरती जीव जन्तुओं के व्यवहारों में अन्तर, हवा का रूख और नमी तथा गर्मी-ठंडक आदि जलवायु को देख और महसूस कर बीज बोता है और सफलता से फसल उगाता है।

आज का विद्यार्थी पढ़ना-लिखना तो जानता है, परन्तु परिवार व समाज में कैसे 'रहना' क्या 'कहना' और करना है वह नहीं जानता। वर्तमान शिक्षा ऐसी है जिससे प्राप्त ज्ञान से बालक वर्तमान जीवन और समाज से तालमेल नहीं बैठा पाता है। ज्ञान के लिए ज्ञान निरर्थक है। व्यर्थ है। ज्ञान को जीवन में उतारना महत्त्वपूर्ण है। ज्ञान व्यवहार और आचरण में भी आनी चाहिए।

शिक्षा से हमेशा यह अपेक्षा की गई है कि उससे समूचे व्यक्तित्व का विकास हो, चरित्र निर्माण हो तथा शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न हो, शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को सम्मानजनक एवं भयमुक्त जीवन जीने का बोध कराता है। दूसरों को अपने ही समान समझना, दूसरों के दुःख-सुख में साथ देना, सबकी सहायता करना, चुनौतियों का सामना करना, जीवन जीने की कला आदि के लिए केवल ज्ञान नहीं बल्कि उसके व्यावहारिक अभ्यास की जरूरत है। वास्तव में ज्ञान का अभिप्राय केवल यह नहीं है कि अपने कितने स्तर तक की डिग्रियाँ प्राप्त की है। ज्ञान वह है कि जितना भी आपने सीखा है, जितना आपके पास है उसका उपयोग आप कैसे करते हैं, जीवन की परिस्थितियों, चुनौतियों का सामना किस प्रकार करते हैं, वही वास्तविक ज्ञान है। हर व्यक्ति की परिस्थितियों, चुनौतियाँ, अलग-अलग होती हैं। कई बार देखा गया है कि एक दसवीं पास व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त कर लेता है जबकि बड़े-बड़े डिग्री धारक उन स्थितियों में पलायन कर लेते हैं। अतः शिक्षा द्वारा दिया गया ज्ञान ऐसा हो जिसमें बालक समाज में रहते हुए, किसी भी परिस्थिति में अपनी बुद्धि का सदुपयोग करके प्रसन्नचित्त जीवन जी सके। वास्तव में विद्यार्थी का मूल्यांकन समाज में ही होगा। ज्ञान का विस्तार आज इतनी तेजी से हो रहा है कि यह असम्भव है कि कोई भी बालक, व्यक्ति सब कुछ पढ़ सके और याद रख सकें। इसीलिए विद्यालय, माता-पिता शिक्षक का यह प्रयास होना चाहिए कि बालक को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जिसमें उसके ज्ञान का सदुपयोग करना सिखाना ही प्रधान कार्य हो, दिमाग को विश्वकोश बनाना बेकार है। ज्ञान को अपने जीवन में उतारना महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान व्यवहार और आचरण में आनी चाहिए जिसके द्वारा वह अपने जीवन को अधिक उन्नत बना सके।

शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है इसे केवल येनकेन प्रकारेण अर्थोपार्जन का साधन बनाना उचित नहीं है। आचार्य रजनीश ने अपनी पुस्तक 'शिक्षा में क्रांति' में लिखा है-**''छात्रों को विचार मत दो, विचार करना सिखाओ। शिक्षक चित्र बनाने की कला सिखाएगा, चित्र नहीं, आचार्य कल्पना शक्ति विकसित करेगा, कल्पना नहीं देगा।''**

शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान पर आश्रित कर देना उचित नहीं है बल्कि बालक यह समझे कि मानव जीवन का सार क्या है? समाज की उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं? आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे प्राप्त ज्ञान हमारे अन्दर जीवन की समझ पैदा कर सके। विचारों में श्रेष्ठता व भावना में उत्कृष्टता ला सके। जीविकोपार्जन के साथ-साथ जीवन में समझदारी पैदा करने वाला ज्ञान ही वास्तविक शिक्षा है। अतः शिक्षा का उद्देश्य ऐसा ज्ञान प्रदान करना होना चाहिए जो बालक को जीवन व्यवहार सिखाती है तथा जीवन संघर्ष के लिए तैयार करती है। वस्तुतः प्रत्येक प्राणी के जीवन का अनुभव ही शिक्षा है।

एम.एड., एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी)
नेट, पीएच.डी सलोरा टावर, सलोरा काम्पलेक्स,
उदयपुर (राज.)-313001
मो: 8058460706

शैक्षिक चिन्तन

भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा

❒ विजय सिंह माली

''प्राचीन भारत ज्ञान से परिपूर्ण था। प्राचीन संस्कृत साहित्य वैज्ञानिक सिद्धांतों का भण्डार था। उसमें विशेषकर गणित, नक्षत्र विज्ञान और वैमानिकी पर अद्‌भुत जानकारी मिलती है।''

–डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा रही है। केवल गणित, नक्षत्र विज्ञान, रसायन, धातुकर्म, चिकित्सा विज्ञान का ही नहीं पशु चिकित्सा, कृषि, विज्ञान, जल प्रबंधन आदि क्षेत्रों में भी प्राचीन भारत की उल्लेखनीय उपलब्धि रही है। अथर्ववेद में प्रथम बार विज्ञान शब्द का प्रयोग हुआ था।

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय
सत्तासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत सत्यं यतरहजीव
स्तदित् सोयांऽवति हत्यासत्।।

अर्थात ज्ञानी पुरुष के लिए विज्ञान सुगम है। सच व असच एक दूसरे के विरोधी होते हैं। राजा, सत्य और सरल बात को स्वीकारता है और असत्य को नष्ट करता है।

प्रारंभिक वैदिक साहित्य में विकसित पशु चिकित्सा विज्ञान के प्रमाण मिलते हैं। सुश्रुत संहिता में शरीर रचना विज्ञान का विस्तृत अध्ययन मिलता है। वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन अनुसंधान की परम्परा प्राचीनकाल से चली आई है। अनेक ऋषियों ने इनके लिए अपना जीवन खपाया है। भृगु, वशिष्ठ, भरद्वाज, अत्रि, गर्ग, शौनक, शुक्र, नारद, चाक्रायण, कश्यप, अगत्सव, दीर्घतमस आदि हुए जिन्होंने विमान विद्या, नक्षत्र विज्ञान, रसायन विज्ञान, अस्त्र-शस्त्र रचना, जहाज निर्माण समेत जीवन के सभी क्षेत्रों में काम किया।

अगस्त्य संहिता में इलेक्ट्रिक सेल व विद्युत का उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग के लिए करने का विवरण मिलता है। महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन में कर्म शब्द का अर्थ गति (मोशन) से है। ईसा की प्रथम शताब्दी में लिखे गए प्रशस्तपाद भाष्य में उल्लेखित वेग संस्कार व न्यूटन द्वारा 1675 ई. में खोजे गए गति के नियमों में अद्‌भुत

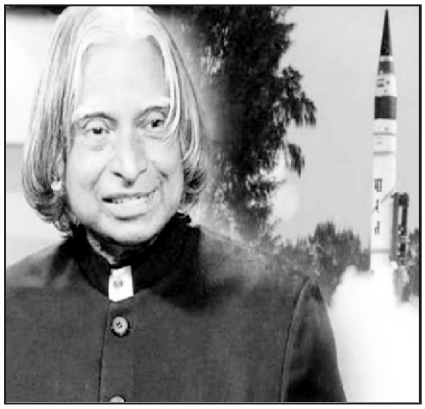

साम्य है। उदयन ने न्याय कारिकावली में प्रत्यास्थता (एलास्टीसिटी) का उल्लेख किया है। भास्कराचार्य (1114 ई.) के ग्रंथ सिद्धांत शिरोमणि के गोलाध्याय के यंत्राध्याय के श्लोक 53 से 56 में वाटर व्हील का वर्णन है। भोज द्वारा 1150 ई. में लिखित समरांगण सूत्रधार में यंत्रशास्त्र की जानकारी दी गई है तथा हाईड्रोलिक मशीन का वर्णन किया गया। इसी ग्रंथ में लकड़ी के वायुयान, यांत्रिक दरबान व सिपाही में रोबोट की झलक देखी जा सकती है।

चरक, सुश्रुत, नागार्जुन ने स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, अभ्रक, पारा आदि से औषधियाँ बनाने की विधि का वर्णन किया है। आसवन प्रक्रिया द्वारा कच्चे जस्ते से शुद्ध जस्ता निकालने की प्रक्रिया के जावर क्षेत्र में अवशेष मिले हैं। तेरहवीं सदी के ग्रंथ रसरत्न समुच्चय में जस्ता बनाने की जो विधि है, उसी की नकल ब्रिस्टल विधि है। दिल्ली स्थित लोह स्तंभ विश्व के धातु विज्ञानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। लगभग 1600 से अधिक वर्षों से यह खुले आसमान के नीचे सदियों से सभी मौसमों में अविचल खड़ा है। इतने वर्षों से आज तक उसमें जंग नहीं लगा। नागार्जुन पारे से सोना बनाना जानते थे। विदेशी लेखक अलबरूनी ने भी अपने ग्रंथ में भारतीयों द्वारा पारा बनाने व इसके उपयोग की विधि को विस्तार से लिखकर दुनिया को परिचित कराया। केरल के आरनमुडा स्थान पर आज भी अधिकांश परिवार हाथ से धातु के दर्पण बनाने में माहिर है।

ऋग्वेद के 36वें सूक्त के प्रथम मंत्र में कहा गया है कि ऋभुओं ने ऐसा रथ बनाया था जो अंतरिक्ष में उड़ सकता था। रामायण में पुष्पक विमान का वर्णन है। पुराण महाभारत भागवत् में भी विमानों का उल्लेख है। महर्षि भारद्वाज के यंत्र सर्वस्व ग्रंथ का एक भाग वैमानिक शास्त्र है। इस पर बौधानंद ने टीका भी लिखी। इस ग्रंथ में विमान की परिभाषा, विमान के पायलेट (रहस्यज्ञ अधिकारी) आकाश मार्ग, विमान के पुर्जे, ऊर्जा, यंत्रों का वर्णन है। 5वीं सदी में हुए वराहमिहिर कृत वृहत संहिता व 11 वीं सदी के राजा भोज कृत युक्ति कल्पतरू में जहाज निर्माण पर प्रकाश डाला गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नावाध्यक्ष प्रकरण में नौसेना और राज्य की ओर से नावों के पूरे प्रबन्ध के संदर्भ में जानकारी मिलती है।

भारत में वस्त्र उद्योग काफी विकसित था। 13 वीं सदी में आए मार्कोपोलो ने अनूठी घोषणा की कि विश्व के किसी भी कोने में प्राप्त सुन्दर व बढ़िया सूती वस्त्र का निर्माण स्थल कोरोमण्डल और मछली पट्टनम के किनारे होंगे। ढाका की मलमल विश्वविख्यात है। गणित की परम्परा भारत में बहुत प्राचीन काल से ही प्रचलित है। भारत गणित शास्त्र का जन्मदाता रहा है। शून्य का आविष्कार गणना की दृष्टि से व गणित के विकास की दृष्टि से अप्रतिम रहा है। अंकों का विवेचन यजुर्वेद में मिलता है। भास्कराचार्य ने गणित के आठ मूल कार्य- जोड़, घटाना, गुणा करना, भाग करना, वर्ग, वर्गमूल व घन घनमूल निकालने को माना है। भास्कराचार्य ने 1150 ई. में सिद्धांत शिरोमणि नामक ग्रंथ लिखा है जिसके चार भाग है- लीलावती, बीजगणित, गोलाध्याय, ग्रह गणित। पाँचवी शताब्दी में आर्यभट्ट ने ज्यामितीय गणित का उपयोग व पाई के मान की गणना व उपयोग शुरू कर लिया था। भारत से अरब और अरब से यूरोप होते हुए पाश्चात्यों ने शून्य व संख्याओं का उपयोग सीखा। अरबी भाषा में 0 से 9 तक की गिनती को आज भी हिन्दसा कहा जाता है। बौद्धायन सूल्व सूत्र में पाईथागोरस प्रमेय और वर्गमूल के सूत्र मिलते हैं।

हमारी कालगणना भी अत्यन्त प्राचीन,

वैज्ञानिक व खगोल सम्मत है। इस काल का सूक्ष्मतम अंश परमाणु व महतम अंश ब्रह्म आयु है। परमाणु, अणु, त्रुटि, वेध, लव, निमेष, क्षण, काष्टा लघु नाडिका, मुहूर्त, दिनरात, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु, अयन व वर्ष इसी के अन्तर्गत है। खगोल विज्ञान को वेद का नेत्र कहा गया है। वेदांग ज्योतिष में खगोल विज्ञान के अन्तर्गत समय गणना, मौसम, ऋतुएँ, ज्वारभाटा, युग, ग्रह, नक्षत्र, सूर्य और चन्द्रगतियों, महीनों की गणना के साथ-साथ अधिक मास की गणना की गई है। आर्यभट्ट के समय पाटलीपुत्र में वेधशाला थी। जिसका प्रयोग कर आर्यभट्ट ने कई निष्कर्ष निकाले। आर्यभट्ट ने सूर्योदय-सूर्यास्त का समय, चन्द्र, सूर्य ग्रहण का कारण, विभिन्न ग्रहों की दूरी के बारे में बताया है। विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र, कश्यप शिल्प व भृगु संहिता में स्थापत्य शास्त्र का उल्लेख है। मोहनजोदड़ो, द्वारिका, लोथल, वाराणसी, कांजीवरम का नगर नियोजन अनुपम है। भारत में अजंता ऐलोरा, एलीफेंटा की गुफा, लिंग राज मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, खजुराहों के मंदिर, मदुरै का मीनाक्षी मंदिर शिल्प के बेजोड़ नमूने हैं।

वाग्भट्ट ने रस रत्न समुच्चय ग्रंथ में महारस, उपरस, सामान्य रस, रत्न, धातु, विष, क्षार, अम्ल, लवण, लौहभस्म का उल्लेख किया है। इसी ग्रंथ में रसशाला यानि प्रयोगशाला का वर्णन है। जिसमें 32 से अधिक यंत्रों का प्रयोग किया जाता था। वराहमिहिर ने वज्र संघात का वर्णन किया है। नागार्जुन गोविन्दाचार्य भी प्रमुख रसायनज्ञ हुए। चरक ने 9 प्रकार के आसवों को बनाने का वर्णन किया। अथर्ववेद में पौधों को आकृति तथा अन्य लक्षणों के आधार पर सात उप विभागों में यथा वृक्ष, तृण, औषधि, गुल्म, लता, अवतान, वनस्पति में बाँटा। महाभारत के शांति पर्व के 184 वें अध्याय में महर्षि भरद्वाज व भृगु के संवाद में भी वृक्षों के चैतन्य होने का प्रमाण मिलता है।

महर्षि चरक व उदयन आचार्य ने भी वृक्षों में चेतना तथा चेतन होने वाली अनुभूतियों के संदर्भ में वर्णन किया जाता है। महामुनि पराशर द्वारा रचित ग्रंथ वृक्ष आयुर्वेद में बीजोत्पति कांड, वानस्पत्य कांड, गुल्म कांड, विरूधवल्ली कांड व चिकित्सा कांड के रूप में भारतीय विज्ञान की गौरवमयी गाथा का वर्णन है। चरक ने चरक संहिता में वनस्पति का चार प्रकारों में वर्गीकरण किया है। सुश्रुत ने भी शाकों को दस वर्गों में बाँटा है। वराहमिहिर की वृहत्संहिता में चार प्रकार की वनस्पतियों के रोगों का वर्णन है। जगदीश चन्द्र बसु ने तो वृक्षों के ऊपर गहराई के साथ प्रयोग किए। क्रेस्कोग्राफ के माध्यम से उनकी संवेदनाओं को जाना तथा उनमें जीवन को सिद्ध किया।

विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में कृषि का गौरवपूर्ण उल्लेख मिलता है। कृषि के संदर्भ में नारद स्मृति, विष्णु धर्मोत्तर, अग्नि पुराण आदि में उल्लेख मिलते हैं। कृषि पराशर कृषि का संदर्भ ग्रंथ बन गया। इस ग्रंथ में बीजवपन व वर्षामापन का भी वर्णन किया गया है। वराहमिहिर ने वृहत्संहिता में उपरोपण (ग्राफ्टिंग) की विधियों का उल्लेख किया है।

चरक ने प्राणियों को जन्म के आधार पर जरायुज, अंडज, स्वेदज, उद्भिज वर्गों में विभाजित किया है। सुश्रुत संहिता, पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, पतंजलिकृत महाभाष्य, अमरसिंह कृत अमर कोष में प्राणियों के वर्गीकरण के विस्तृत विवरण मिलते हैं। शालिहोत्र संहिता में अश्व चिकित्सा का विवरण है। योग वशिष्ट में रोगों का विश्लेषण किया गया है। पुराणों में अश्विनी कुमार देवताओं के चिकित्सक के रूप में प्रसिद्ध है। आत्रेय परम्परा में काय चिकित्सा की प्रधानता है जिसमें आचार्य चरक हुए। धनवंतरि परम्परा में शल्य चिकित्सा की प्रधानता रही। आचार्य सुश्रुत की सुश्रुत संहिता प्रसिद्ध है। आचार्य सुश्रुत को विश्व का पहला शल्य चिकित्सक माना जाता है।

सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा के उपकरणों व यंत्रों का भी वर्णन किया है। शतपथ ब्राह्मण में हृदय द्वारा होने वाली सम्पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद में रोग निदान तथा चिकित्सा का आधार त्रिदोष सिद्धांत को माना गया है। धनवंतरि को आयुर्वेद को जन्मदाता माना जाता है।

सचमुच नागार्जुन, चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, जगदीश चन्द्र बसु, श्री निवास रामानुजम, चन्द्रशेखर वेंकेटरमन, बीरबल साहनी, मेघनाद साहा, डॉ. सत्येन्द्र, होमी जहांगीर भाभा तथा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे भारतीय वैज्ञानिकों पर हमें गर्व है। जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान की परम्परा वाले देश में हम विज्ञान चार्ट व प्रयोगों के रूप में विज्ञान मेलों का आयोजन करें। विज्ञान क्विज व सेमीनार आयोजित करें। वैज्ञानिकों की जीवनियों से बच्चों को परिचित कराएँ, उनके जीवन से जुड़ें प्रेरक सुनाएँ, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण व वैज्ञानिक अभिरुचि उत्पन्न करें। इसमें विद्यालय में कार्यरत विज्ञान के शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं व अपनी कक्षा में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के आयोजन को लेकर विद्यार्थियों से चर्चा संवाद कर सकते हैं। वे विज्ञान किट का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं। अपनी प्रयोगशाला का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं। अपना स्वयं का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि जगा सकते हैं।

बाल वैज्ञानिक ही भारत का भाग्योदय करेंगे। अतः बाल वैज्ञानिकों को भारत के विज्ञान के उज्ज्वल परम्परा से परिचित कराना भी हमारी जिम्मेदारी है, यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो हमारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाना सार्थक रहेगा।

प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
सादड़ी, पाली (राज.)
मो: 9829285914

भाव-पुष्प

अपनी बात में तू असर पैदा कर,
तू समंदर सा जिग़र पैदा कर।
बात थी जो रहिमन-कबीर में,
अपनी बात में वो असर पैदा कर।।
काम नहीं बनेगा बड़े बनने से,
इक बच्चे-सी नज़र पैदा कर।
बात इकतरफा न बनेगी 'भंवर',
जो इधर है वो उधर पैदाकर।।

भंवर लाल कासणियां
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
खजवाना (नागौर)
मो. 8946880781

शैक्षिक चिन्तन

पद्मभूषण श्री अनिल बोर्दिया

❒ चम्पालाल उपाध्याय

श्री अनिल बोर्दिया भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठतम अधिकारियों में थे। वे मेवाड़ के प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री केशरीलाल बोर्दिया के सुपुत्र थे। 1962 से 1965 तक राजस्थान की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के निदेशक पद पर आसीन रहे। उस अवधि में अनेक शिक्षण संस्थाओं के कार्य से उनसे निरन्तर मिलना होता था। कालान्तर में भारत सरकार के शिक्षा सचिव रहे। फिर यूनेस्को के महानिदेशक पद तक पहुँचे। यूनेस्को ने श्री बोर्दिया को सर्वोच्च सम्मान स्वर्ण कमल पदक से अलंकृत किया। यूनेस्को से आने के बाद भारत सरकार ने उनको पद्मभूषण से सम्मानित किया।

शिविरा पत्रिका का प्रकाशन उनके कार्यकाल में श्री शिवरतन थानवी के सुझाव पर प्रारम्भ हुआ। श्री थानवी शिविरा पत्रिका के प्रथम सम्पादक थे। इससे पहले विभाग का एक मासिक पत्र निकलता था जिसका नाम शिक्षा गजट था। श्री बोर्दिया के कुशल मार्गदर्शन तथा श्री थानवी की सूझबूझ एवं अथक परिश्रम से शिविरा पत्रिका देशभर में विख्यात हुई। शिविरा पत्रिका के प्रथम सम्पादक श्री थानवी को उसी पद पर रहते हुए निरन्तर पदोन्नति की गई।

राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी श्री बोर्दिया का महत्त्वपूर्ण स्थान था। उनके कार्यकाल में ही बीकानेर प्रौढ़ शिक्षा समिति के भव्य भवन का निर्माण हुआ। प्रौढ़ शिक्षा का एक लाख रुपये का राष्ट्रीय वार्षिक पुरस्कार भी श्री बोर्दिया की देन थी। सबसे पहला पुरस्कार बीकानेर प्रौढ़ शिक्षा समिति के सचिव श्री सत्यनारायण पारीक को मिला।

यूनेस्को से सेवानिवृत्त होने के बाद राजस्थान को पुनः अपना कार्यक्षेत्र बनाया तथा प्रौढ़ शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा में अतुलनीय योगदान दिया। उस समय मैं राजस्थान खादी बोर्ड का उपाध्यक्ष एवं सेवा/चयन समिति का अध्यक्ष था। जयपुर मुख्यालय था इसलिए उनसे पुनः सम्पर्क का सुअवसर मिला। मेरे निजी सहायक ने फोन पर मेरे नाम का उल्लेख किया तो तुरन्त पहचान लिया और काफी आत्मीयता से बात की। वर्षों बाद मिलने पर भी शिक्षा निदेशक के कार्यकाल के अनुभवों का उनको स्मरण था।

बाल भारती राजलदेसर के स्वर्ण जयन्ती समारोह पर बोर्दिया साहब राजलदेसर पधारे तब मैं मोंटेसरी प्रशिक्षण समिति का अध्यक्ष था। उस समय भी पुरानी याद ताजा की। उनकी सादगी और सरलता का एक प्रमुख प्रकरण मुझे अब तक याद है। भोजन के बाद एक कार्यकर्ता थाली उठाने लगा तब श्री बोर्दिया ने बहुत मार्मिक बात कही 'थाली उठाने का तो प्रश्न ही नहीं है, मुझे तो यह बताओ कि इसको साफ कहाँ करना है?' फिर वास्तव में उन्होंने खुद ही थाली को साफ भी किया।

उनके शिक्षा निदेशक कार्यकाल की एक घटना अब भी याद है। तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय ने उनको मेरे शिक्षा संबंधी कार्यों के बारे में जानकारी दी थी। उस समय श्री गाँधी बाल निकेतन, रतनगढ़ की विशिष्ट मोंटेसरी विद्यालय की मान्यता, स्टाफ की स्वीकृति तथा अनुदान के आदेश उन्होंने तत्काल जारी कर दिए। परन्तु चूरू जिले के अन्य बाल मन्दिरों को आवश्यक मान्यता तथा स्टाफ की स्वीकृति नहीं मिली थी। इसलिए कुछ दिनों बाद मैं फिर बोर्दिया साहब से मिला तब मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया जी के सहायक सचिव एवं मेरे मित्र श्री के.एल. कोचर ने उनसे फोन पर बात की और अन्य संस्थाओं के कार्य करने का भी अनुरोध किया। इसी संदर्भ में श्री बोर्दिया से मैं मिला तो उन्होंने कहा कि आपकी संस्था का काम तो मैंने पहले ही कर दिया था, अन्य संस्थाओं की आपने कोई एजेंसी ले रखी है क्या? ये शब्द सुनते ही मैं आवेश में आ गया और उनको अंग्रेजी में कहा कि मैं ऐसे शब्द नहीं सुनना चाहता, आपको कार्य करना हो तो करें अन्यथा मत कीजिए। यह कहते हुए मैं उठने लगा। तब उनको मेरे सेवाकार्यों की बात समझ में आई। तत्काल शिक्षा निदेशालय स्तर के दो तीन अधिकारियों को बुलाया और उनसे पूछा कि आप इन्हें जानते हैं क्या? इस पर उन्होंने कहा कि एडवोकेट होने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका अच्छा योगदान है। तब श्री बोर्दिया ने कहा कि इनका असली परिचय यह है कि जो कार्य हम वेतन लेकर करते हैं वही कार्य ये सेवा भावना से करते हैं। इसलिए इनके सारे काम सुनकर आज ही आवश्यक आदेश जारी कर दें। तब मैंने चूरू जिले के बाल मन्दिरों की मान्यता, अनुदान, स्टाफ स्वीकृति आदि समस्याएँ बताई। उन अधिकारियों ने सब नोट करके कुछ ही समय में आदेश जारी कर मुझे सौंप दिए। उस एक घटना के अतिरिक्त मैंने अपने दीर्घ समाजसेवा काल में किसी भी अधिकारी से इस प्रकार आवेश में बात नहीं की।

तत्काल निर्णय का एक और प्रसंग भी याद है। गौतम ग्राम्य विद्यालय मेहरासर उपाधियान के प्रधानाध्यापक पद पर शिक्षा विभाग के अधिकारी श्री हरीराम शर्मा को मेहरासर में डेप्यूट करने का मैंने कहा तो सामान्य प्रक्रिया की बजाय मुझे कहा कि आप लिख दें, मैं आदेश कर देता हूँ। मैंने वहीं हाथ से कागज लिखा और उन्होंने उसी पर आदेश जारी कर दिए। इसी प्रकार की एक घटना जोधपुर की भी है। जोधपुर बाल निकेतन प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ संस्था थी परन्तु संस्था के संचालक श्री बन्धु जी ने नियम बना रखा था कि संस्थाप्रधान से चपरासी तक सबको एक समान दौ सौ रुपये मासिक वेतन तथा आवास, बिजली, पानी आदि की निःशुल्क व्यवस्था हो। श्री बोर्दिया ने उस संस्था का अवलोकन किया तो अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने बन्धुजी को कहा कि इस तरह इतनी अच्छी संस्था नहीं चल सकेगी। समुचित स्टाफ तथा अनुदान आवश्यक है। श्री बोर्दिया ने वहीं बैठकर बाल निकेतन का विशिष्ठ विद्यालय की मान्यता, 90 प्रतिशत अनुदान तथा संस्थाप्रधान सहित अलग-अलग पदों की स्वीकृति जारी कर दी। शिक्षा के क्षेत्र में श्री बोर्दिया का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

एडवोकेट,
गाँधी बाल निकेतन के पास, रतनगढ़, चूरू
मो: 9414776051

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षक एक बहुआयामी शिल्पकार

❒ कुलदीप सिंह

शिक्षा देने वाले को शिक्षक कहा जाता है। शिष्य के मन में सीखने की इच्छा को जाग्रत करना और भलीभाँति सिखाना ही शिक्षक का मूल कार्य है। भारतीय समाज में शिक्षक का स्थान भगवान से भी ऊँचा माना गया है, क्योंकि एक शिक्षक ही हमें सही मार्ग पर चलना सिखाता है। भारतीय संस्कृति में 'शिक्षक' और 'गुरु' को एक दूसरे का पर्याय माना गया है। कबीरदास जी ने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है 'गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पांय। बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।' शिक्षक की भूमिका को शिष्य को ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में बताना ही काफी नहीं है, शिक्षक अपने शिष्यों को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ समाज में विभिन्न प्रकार की मार्गदर्शक भूमिकाओं में रहकर समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है। सच्चे अर्थों में एक शिक्षक की समाज में क्रियाशीलता का गहराई से अवलोकन किया जाए तो पता चलता है कि शिक्षक समाज का एक भरोसेमंद मार्गदर्शक एवं परिवर्तनकारी विचार है। एक अच्छा शिक्षक सुसंस्कृत समाज का शिल्पकार होता है। शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं पर प्रकाश डालने के लिए हम निम्न बिन्दुओं की सहायता ले सकते हैं-

1. शिक्षण अधिगम क्रिया में शिक्षक के रूप में:- अध्यापक शिक्षण क्रिया का अभिन्न अंग है। अध्यापक के बिना शिक्षण अधिगम क्रिया सफलतापूर्वक संचालित नहीं हो सकती। शिक्षक अपने ज्ञान को शिक्षार्थी की क्षमता व आवश्यकतानुसार कुशलतापूर्वक शिक्षार्थी के लिए स्थानांतरित करता है। शिक्षक अपने अध्यापन कौशल से हर पल तय करता है कि कक्षा में क्या पढ़ाना है? किस विधि से पढ़ाना है? क्या गतिविधि करवानी है? किस-किस विद्यार्थी को क्या-क्या तरीका अपनाना है? शिक्षक कक्षा का नेतृत्व करते हुए शिक्षण अधिगम क्रिया को संपन्न करता है। अधिगम क्रिया पश्चात शिक्षक ही यह पता लगा सकता है कि अधिगम कितना सफल रहा। अतः शिक्षक अधिगम क्रिया का नेतृत्वकर्त्ता, संचालक व मूल्यांकनकर्त्ता होता है।

2. भरोसेमंद परामर्शदाता के रूप में:- शिक्षक का स्थान समाज में गरिमामयी होता है। यूं तो समाज में भाँति-भाँति के व्यवसाय वाले और योग्यताधारी व्यक्ति रहते हैं, परंतु उन सब में शिक्षक सबसे अधिक भरोसेमंद व्यक्तित्व होता है। समाज में किसी व्यक्ति को जब कोई सलाह मशविरा की जरूरत होती है तो शिक्षक ही उसे सबसे अधिक भरोसेमंद परामर्शदाता के रूप में नजर आता है। शिक्षकों के प्रति समाज में ऐसा भरोसा बनने के पीछे शिक्षक समुदाय का समाज में ईमानदारी पूर्वक किया गया कार्य है। समाज में सक्रिय रहकर एक शिक्षक समय-समय पर लोगों को विभिन्न प्रकार के परामर्श देकर उनकी समस्याओं को कम करता है। साथ ही शिक्षक समाज में सहज रूप से उपलब्ध और विनम्र व्यक्तित्व है।

3. संबल प्रदाता के रूप में:- समाज में बहुत लोगों के सामने ऐसी विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है कि वे उनका सामना करने के बजाय भयभीत होकर अपने मार्ग से विमुख हो जाते हैं। बहुत से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की पारिवारिक विषम परिस्थितियों के सामने विवश होकर पढ़ाई छोड़ देते हैं, ऐसे मौकों पर बहुत बार शिक्षकों ने बेबश विद्यार्थियों की पीड़ा को जाना, समझा और उनको आगे बढ़ाने के लिए संबल प्रदान किया। समाज में बहुत से उदाहरण हमें देखने को मिल जाते है कि शिक्षक ने गरीब एवं असहाय विद्यार्थी की पढ़ाई का खर्च वहन किया, रास्ते की छेड़छाड़ से तंग आकर पढ़ाई छोड़ चुकी छात्राओं को संबल प्रदान किया और पढ़ाई से जोड़ा, अनाथ बच्चों को गोद लेकर शिक्षकों ने उनका जीवन संवारने के कार्य किए। इस प्रकार शिक्षक समाज में एक संबल प्रदाता के रूप में भी अपनी भूमिका निभाता है।

4. समाज सुधारक के रूप में:- समाज में फैली हुई बुराइयों और कुरीतियों को मिटाने के लिए शिक्षकों ने बहुत बार कार्य किया है। शिक्षक जब भी समाज में कोई कुरीति को देखता है तो शिक्षक ने अपनी क्षमतानुसार उस बुराई को मिटाने के लिए कार्य जरूर किया है। समाज में शिक्षकों के इन प्रयासों से बाल विवाहों में कमी आई है, बेटियों के नामांकन में बढ़ोतरी हुई है, छात्राओं का विद्यालय में ठहराव बढ़ा है एवं विद्यालयी जीवन में छात्र-छात्राओं में किए जा रहे भेदभाव में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार शिक्षक एक समाज सुधारक की भूमिका में भी सक्रिय है।

5. चमत्कारी प्रेरणास्रोत के रूप में:- शिक्षक समाज में एक सफलतम प्रेरणास्रोत होता है। शिक्षक शब्द अपने आप में सम्माननीय व सुसंस्कृत है। विद्यार्थी अपने शिक्षक से नित नई प्रेरणा प्राप्त करते हैं तथा समाज के अन्य व्यक्ति भी शिक्षक को एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व मानकर प्रेरित होते हैं। एक अच्छा शिक्षक अपने व्यवहार से पल-पल समाज को प्रेरित करता रहता है।

6. शिक्षक एक अनुकरणीय व्यक्तित्व:- शिक्षक एक दर्पण की भाँति है, जैसा शिक्षक होगा वैसा ही वह समाज होगा। शिक्षक को हमारे समाज में एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व माना जाता है। शिक्षक की वेशभूषा, भाषा, शैली, खान-पान, रहना-सहना, आचरण आदि सभी समाज में अनुकरणीय होते हैं। इसलिए एक अच्छा शिक्षक कुछ भी न कहते हुए समाज को बहुत कुछ सिखाता है।

अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षक सिर्फ विद्यालय में पढ़ाने वाला एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि समाज के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसमें समाज अपना प्रतिबिंब देखकर अपने आप में सकारात्मक परिवर्तन कर सकता है। शिक्षक का व्यक्तित्व इसलिए चमत्कारी है कि शिक्षक किसी से कुछ न कहते हुए भी समाज को बहुत कुछ सिखा देता है। इस प्रकार शिक्षक हमारे समाज का एक बहुआयामी शिल्पकार होता है। एक अच्छा शिक्षक अच्छे सुसंस्कृत समाज का शिल्पी होता है।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय कवई,
नदबई, भरतपुर (राज.)
मो: 9983288679

शैक्षिक चिन्तन

राष्ट्रीय भावात्मक एकता एवं शिक्षक

❐ बिहारी लाल जाँगिड़

इक्कीसवीं सदी वैज्ञानिक विकास एवं विश्व कल्याण को समर्पित समय है जिसमें शिक्षा वह सोपान है जिसके बलबूते मानव समग्र विकास की असीम ऊँचाइयों का स्पर्श कर सकता है। शिक्षा के सतत विकास हेतु त्रिआयामी स्तंभ–शिक्षक, शिक्षार्थी एक शिक्षण आवश्यक है। इन सब में शिक्षक की महत्ती आवश्यकता है।

1. शिक्षक की भूमिका : सर्वप्रथम भावात्मक एकता को परिभाषित करने में शिक्षक अत्यन्त प्रासंगिक है। राष्ट्रीय भावात्मक एकता वह कड़ी है जिसमें एक राष्ट्र को मन, वचन, कर्म एवं वाणी से परस्पर गूँथकर एक भावना पैदा की जाती है जिसमें भिन्न–भिन्न धर्मावलंबियों, जातियों, भाषाओं, क्षेत्रों एवं संकीर्णताओं की सीमाओं को लाँघकर सदैव 'चरेवैति–चरेवैति आगे बढ़ा जाता है। आदिकाल से ही इसमें चाणक्य, द्रोणाचार्य, याज्ञवलक्य, गौतम, गुरुनानक, आचार्य संदीपनी, गुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द सरस्वती, गोपालकृष्ण गोखले, मौलाना अबुल कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, रविन्द्र नाथ टैगोर जैसे शिक्षकों के हाथों से ऐसी विभूतियाँ शिष्यों के रूप में तैयार हुई है जिन्होंने राष्ट्र को भावात्मक एकता के रूप में पिरोया है। शिक्षक अपने आदर्शों, अनुसरणों से ऐसा वातावरण विकसित करता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय भावना पैदा होती है, तत्पश्चात 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का प्रचार–प्रसार होता है। शिक्षक का उज्ज्वल चरित्र, आदर्श रहन–सहन एक उच्च विचार को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षक तमाम संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सोचता है जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय भावात्मक एकता के बीज प्रस्फुटित होकर कालान्तर में विशालकाय वृक्ष का रूप ले लेते हैं। शिक्षक के व्यक्तित्व की अमिट छाप विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष रूप से असरकारी होती है। शिक्षक लक्ष्य निर्धारण करता है, जिसके बल पर विद्यार्थी का भविष्य खड़ा होता है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि ''लक्ष्यों के ज्ञान के बिना, शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपनी मंजिल को नहीं जानता। उसके शिष्य उस पतवार विहीन नौका के समान हैं, जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर चली जाएगी।'' अतः शिक्षक को पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सर्वधर्म समभाव की बातें करनी चाहिए। उसके आचरण से सौम्यता, सौजन्यता एवं व्यावहारिकता मुक्त आदर्शवादिता झलकनी चाहिए जिससे समाज उसका अनुसरण कर, राष्ट्रीय भावात्मक एकता विकसित कर सके।

2. राष्ट्रीय भावात्मक एकता की आवश्यकता : वर्तमान समय में एक विश्वव्यापी महामारी कोविड–19 ने सम्पूर्ण राष्ट्र ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता को एकता के सूत्र में पिरोया है, वैज्ञानिक प्रगति एवं परस्पर प्रतिस्पर्धाओं ने मानव को आज एक ईकाई के रूप में ला खड़ा किया है जहाँ एक देश में घटित घटनाओं का दूसरे देश पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता है। अतः सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि चाहे जो हो हम कोई भी भाषा–भाषी, सबसे पहले हैं भारतवासी वाली भावना पैदा की जानी चाहिए। राष्ट्र कोई ईंट, पत्थर, चूने अथवा मिट्टी से नहीं बनता है। राष्ट्र बनता है विचारों में सौम्यता, राष्ट्रीय हित, वफादारी एवं संकट के समय सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहने से, चाहे युद्ध, बाहरी आक्रमण, आपातकाल, प्राकृतिक आपदा, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय महामारी आदि संकटों में एकजुटता प्रदर्शित करना ही राष्ट्रीय एकता कहलाती है।

3. राष्ट्रीय भावात्मक एकता के उपाय : राष्ट्रीय भावात्मक एकता पैदा करने हेतु शिक्षकों को जो महत्त्वपूर्ण कार्य सौंपा जाता है, वो है–राष्ट्र निर्माण का पुनीत कार्य। शिक्षक ही वो व्यक्ति होता है जो सभी लोक सेवकों का अग्रदूत होता है। चाहे प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस अधिकारी, राजस्व अधिकारी सभी अपने–अपने क्षेत्राधिकार में स्वयंभू होते हैं किन्तु शिक्षक सर्वोपरि इसलिए होता है, क्योंकि वह अनुकरणीय होता है। वह अपने कर्मों से सत्यनिष्ठा, परिश्रम, आदर्शवादिता एवं सौजन्यता झलकाता है। इस हेतु वह सांस्कृतिक एकता स्थापित करने हेतु राष्ट्रीय समारोह, तीज त्योहार, जयन्तियों एवं महान पुरुषों की यशोगाथा सुनाकर उत्सवों का आयोजन कर, अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से छात्रों को एक नई दिशा प्रदान करता है। राज्य सरकार द्वारा पारित विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं, नारी शिक्षा, वृक्षारोपण, पर्यावरण सुधार, मानव अधिकार आदि दायित्वों में शिक्षक ही सहयोग करता है तभी उपर्युक्त राष्ट्रीय कार्यक्रम आगे बढ़ पाते हैं।

राष्ट्रीय भावात्मक एकता पैदा करने हेतु शिक्षक ही सभी धर्मों एवं संस्कृतियों से समान रूप से पूजनीय होता है। अतः शिक्षक का यह दायित्व है कि वह उन तत्वों को उजागर करे जो सभी धर्मों एवं संस्कृतियों में समान रूप से पूजनीय है। इसके अतिरिक्त उसे उन बातों पर भी जोर देना चाहिए जो बाह्य भिन्नता होते हुए भी सबको को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती हो, जैसे सम्पूर्ण राष्ट्र की एक भाषा, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय कर्त्तव्य, राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व, राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न आदि। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह अपने शिक्षण में उन विधियों प्रविधियों को अपनाएँ जिसमें अधिकतम राष्ट्रीय भावात्मक एकता प्रस्फुटित एवं पल्लवित हो सके। इस हेतु वह उद्धरणों एवं उदाहरणों का सहारा ले सकता है। शिक्षक को स्वयं अध्ययनशील एवं सहगामी प्रवृत्तियों में लीन रहना चाहिए उसे अपने राष्ट्र की समस्त गतिविधियों, नवाचारों से अद्यतन रहना चाहिए ताकि वह अपने विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सके।

4. उपसंहार: निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं भावात्मक एकता के निर्माण हेतु अध्यापक के कंधों पर अतिरिक्त भार है जो उसे सहर्ष ढोना चाहिए ताकि राष्ट्रीय एकता की विकिरणें समूचे राष्ट्र में प्रस्फुटित हो सके। यदि उक्त मनोभावों से शिक्षक नहीं जुड़ पा रहा है तो वह एक राष्ट्रीय दायित्व को निर्वहन करने से चूक रहा है, जो राष्ट्रीय दुर्भाग्य से कम नहीं है। शिक्षक की मेहनत सम्पूर्ण राष्ट्र एक मानव जाति का विकास करती है इसलिए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा था कि 'शिक्षक वह बने जो आजीवन विद्यार्थी बना रह सके' अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय भावात्मक एकता पैदा करने में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

व्याख्याता, लाठ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मण्ड्रेला, झुंझुनूं (राज.)–333025
मो: 9982410994

शैक्षिक चिन्तन

तुम्हारे पास कौन आता है?

❒ नरेश जाँगिड़

''अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़ता पूर्वक मानना है कि समाज के तीन लोग ये कर सकते हैं माता-पिता और गुरु।''-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हे भारत के भविष्य निर्माता, तम को हर कर चहुँओर ज्ञान का आलोक फैलाने वाले-शिक्षक तुमने यह तो निश्चित तौर पर अपने मन को गहराइयों तक समझा दिया होगा कि तुम्हारा पथ अन्य से भिन्न व उत्तम कोटि का है। क्योंकि प्रकृति स्वयं का सृजन तो कर लेती है परन्तु ब्रह्माण्ड में अंधकार को मिटाने हेतु शिक्षक पर निर्भर है तथा शिक्षक की वास्तविक खुशी उनके शिष्यों के सफल होने व उनके उत्थान में है शिक्षक की सफलता इसी बात में निहित है कि वो अपने शिष्यों को ऐसा बनाएँ कि वे शिक्षक की अनुपस्थिति में भी वही व्यवहार करें जो उसकी उपस्थिति में किया जाता है।

मनोवैज्ञानिक मारिया मॉन्टेसरी ने कहा है कि एक शिक्षक के लिए सफलता का सबसे बड़ा संकेत यह कहना है कि ''बच्चे अब ऐसा काम कर रहे हैं जैसे कि मेरा कोई अस्तित्व ही ना रहा हो।''

हे शिक्षक! शायद तुम्हें आभास नहीं रहा कि तुम्हारे पास कौन आता है? सदैव विद्यालय में प्रवेश करते समय हमारे दिल में यह प्रश्न आना चाहिए।

तुम्हारे पास माता-पिता की वर्षों तक की गई अपने-अपने भगवान की आराधना रूपी फल उनकी सन्तानें, माता-पिता की पैदल यात्राओं, उनके उपवास, व्रत, कई रातों की आध्यात्मिक जागरण, कठोर प्रतिज्ञा एवं उनके फल तथा इस प्रकार प्राप्त फल के अधूरे सपने इसी के साथ देश के भाल को चमकाने वाले कोरे कागज रूपी मन एवं मस्तिष्क जिनमें ज्ञान का रंग केवल शिक्षक ही भर सकता है।

माता-पिता प्रकृति की उपासना से सन्तान तो प्राप्त कर लेते हैं परन्तु स्वयं प्रकृति अपने आप में असीम शक्तियों से युक्त होते हुए भी उस बालक को विद्यावान एवं सर्वगुण सम्पन्न नहीं बना सकती, यह प्रकृति की सीमा है। यहीं

से प्रारम्भ होता है शिक्षक का कार्य।

बौद्ध धर्म के अनुसार **''दस लाख लोगों में से सिर्फ एक व्यक्ति बिना गुरु के प्रबुद्ध हो सकता है।''**

इस बात से हम प्रकृति में शिक्षक की आवश्यकता समझ सकते हैं। अतः जब बालक हमारे सामने बैठा होता है तो हम सोचें कि यह भगवान की आराधना, कठोर प्रतिज्ञा, उपवास, व्रत के प्रतिफल है, हमें इनको ज्ञान से सिंचित एवं परिपूर्ण कर प्रकृति की सीमा से परे जाकर शिक्षक होने की सार्थकता सिद्ध करनी है।

भारत के महान राष्ट्रपति अब्दुल कलाम साहब के कथनानुसार भी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सुन्दर देश का निर्माण शिक्षक एवं माता-पिता ही कर सकते हैं। इस बारे में उन्होंने स्वयं की सफलता का समस्त श्रेय अपने शिक्षकों को दिया है।

बाड़मेर जिले के पूर्व मुख्य जिला शिक्षा अधिकार श्री हरीकृष्ण आचार्य जो मूलतः बाँसवाड़ा के रहने वाले हैं, जब भी शिक्षकों से रूबरू होते थे तो सदैव कहते थे ''कि शिक्षक के सामने एक बालक नहीं आता है बल्कि 70-80 वर्ष तक का एक जीवन आता है। जैसे एक पौधे को जल से बालकों द्वारा सींचा जाता है तो कालान्तर में वही पौधा महावृक्ष के रूप में कई सालों तक जीवित रह कर निःस्वार्थ कई पशु-पक्षियों एवं प्राणिमात्र का आश्रय बनकर प्रकृति को फल, फूल, छाया व प्राणवायु प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार एक बालक युवा, प्रौढ़ व वृद्धावस्था से गुजरता है तथा इस दौरान वह समाज को अपना योगदान देता है, परन्तु इसका योगदान शिक्षक के योगदान पर निर्भर करता है। इस बालक को यदि शिक्षक ने सद्ज्ञान से सींचा है तो वह समाज के लिए कल्याणकारी होगा अन्यथा अराजकतावादी।''

अर्थात बालक समाज के साथ कैसा व्यवहार करेगा यह शिक्षक द्वारा दी गई शिक्षा उसके आदर्शों तथा प्रेरणा पर निर्भर करती है।

विलियम आर्थर वार्ड के अनुसार ''एक औसत दर्जे का शिक्षक बताता है, अच्छा शिक्षक समझाता है, एक बेहतर शिक्षक करके दिखाता है, एक महान शिक्षक प्रेरित करता है।''

अतः बिना प्रेरणा के दिया गया अक्षर ज्ञान बालक को सुयोग्य व आदर्श नागरिक नहीं बना सकता। क्योंकि होरेसमन के अनुसार ''एक शिक्षक जो शिष्यों को बिना सीखने के प्रेरित किए सिखाने का प्रयास करता है वो ठण्डे लोहे पर चोट करता है।''

जिस वातावरण में आज हम हैं उसमें हमारी आने वाली पीढ़ियाँ जीवन निर्वाह करेगी, अतः उनको शान्त एवं सुन्दर मन वाले लोगों का देश देकर जाना ही सच्ची विरासत है।

हालांकि वातावरण से भी बालक सीखता है परन्तु सर्वाधिक सीख शिक्षक से ही प्राप्त करता है। एण्डी रूनी के अनुसार ''हम में से अधिकांश लोगों को सिर्फ 5 से 6 लोग ही याद रख पाते हैं, लेकिन एक शिक्षक को हजारों लोग जीवन पर्यन्त याद रखते हैं।''

आप शिक्षक भी सामाजिक प्राणी हो, अतः जब आप अपने क्षेत्र में सकारात्मक पहल करेंगे तो आपके सामने कई कठिनाइयाँ आएगी क्योंकि एक अच्छा शिक्षक बनना बहुत कठिन कार्य है। ''सब कठिन कार्यों में से एक जो सबसे कठिन कार्य है, वो है अच्छा शिक्षक बनना'' मेगी गेलघर के ये शब्द मेरे मत का समर्थन कर रहे हैं। फिर भी मैं तो यही कहूँगा कि

सुख दुःख जो कुछ भी आ पड़े,
धैर्यपूर्वक सहते रहना।
मिलेगी जरूर सफलता तुमको
कर्त्तव्य पथ पर डटे रहना।।

कार्यक्रम अधिकारी
समग्र शिक्षा, बाड़मेर
मो: 9649344152

शैक्षिक चिन्तन

एक आदर्श अध्यापक

❒ सत्यनारायण पंवार

अधिकतर सभी विद्यालयों में सभी अध्यापकों की योग्यता (प्रशिक्षित/स्नातक/स्नातकोत्तर) आवश्यकतानुसार तो होती है और उनका चयन भी अनुभवी शिक्षाशास्त्रियों से बने सलेक्शन बोर्ड के द्वारा होता है लेकिन क्या वे विषय-शिक्षण को प्रभावी, सुग्राह्य सुस्पष्ट, जिज्ञासा वर्द्धक, रोचक एवं नवीन ज्ञान को सम्प्रेषणीय बनाने में सक्षम होते हैं या नहीं? अतः शिक्षण-अधिगम एक दक्षता परक क्रिया है जिसकी सुसम्पन्नता अध्यापक को अपनी कुशल भूमिकाओं का निर्वाह करना होता है। कुशल शिक्षक अपनी शिक्षण कला अधिकाधिक निखारने और उद्देश्यों की संप्राप्ति के लिए शिक्षण करते समय विविध कौशलों का उपयोग करता है, शिक्षण संस्थितियां जुटाता है, विविध युक्ति और उपायों को खोजता है जैसे कक्षा में पहुँचते ही बालकों में सीखने की ललक जगाने वाला, उत्प्रेरण उपक्रम, पाठ के शिक्षण में छात्र संभागिता के अवसरों की अनदेखी न करके अच्छे स्तरीय प्रश्न करने की दक्षता, विविध उत्तेजनों का उपयोग, पुनर्बलन द्वारा उत्साहवर्द्धन तथा पाठ के सजीव समापन से उद्देश्यनिष्ठ मूल्यांकन आदि।

शिक्षण को प्रभावी बनाने से पहले अध्यापक को आदर्श शिक्षण व्यवस्था के लिए अपने शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाना चाहिए क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। इतना ही नहीं स्वस्थ शरीर द्वारा ही लोक कल्याण के लिए समग्र कार्य कलाप संभव है यानि स्वच्छता प्रिय स्वस्थ अध्यापक स्वस्थ मस्तिष्क से अपने पढ़ाने का कार्य उत्साह पूर्वक कर सकता है। अपने पढ़ाने के कार्य को करने के लिए अध्यापक में आत्मविश्वास होना चाहिए जिससे वह दूसरों के कार्यों की सराहना कर सकता है और विफलताओं को स्वीकार कर सकता है। अध्यापक स्वच्छता और सुस्वास्थ्य में पूर्ण आस्था रखकर आदर्श शिक्षण व्यवस्था कर सकता है। सत्यनिष्ठ व्यवहार में आस्था रखने वाला अध्यापक ही उच्च कोटि का कर्त्तव्यपरायण होता है। जिस विद्यालय के अध्यापकों में कर्त्तव्यपरायणता विद्यमान हो वही अत्युत्तम विद्यालय बना सकता है।

आदर्श शिक्षण व्यवस्था के लिए अध्यापकों में परिश्रमशीलता होनी चाहिए। प्राचार्य, अध्यापक और अभिभावक सभी अत्यधिक परिश्रमी हों तो समस्त विद्यार्थी वर्ग में परिश्रम के प्रति प्रबल इच्छा उत्पन्न होगी। आदर्श शिक्षा संस्था में अध्यापक वर्ग विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देगा बल्कि छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास की ओर भी ध्यान देना होगा। इतना ही नहीं अध्यापक छात्रों को आत्मनिर्भर और परोपकारी बनाएगा।

आदर्श शिक्षा व्यवस्था तभी सम्भव होगी जब प्रत्येक अध्यापक अपने विद्यार्थियों में रचनात्मक व्यक्तित्व का विकास सामाजिक न्याय में आस्था रखते हुए भलीभाँति कर सकते हैं। सभी अध्यापकों का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि भावी पीढ़ी (छात्रों) के समक्ष श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करके शिक्षण व्यवस्था प्रदान करके अत्युत्तम विद्यालय बनाने के भरसक प्रयत्न करें।

अध्यापक उपर्युक्त कर्त्तव्यों को ध्यान में रखते हुए अगर प्रतिदिन सोने से पहले आत्मनिरीक्षण करे तो अवश्य ही अपने कार्य को कुशलता से कर सकेगा। आत्मविश्लेषण करते समय निम्नलिखित प्रश्न पूछे-

1. क्या मैं अपने विद्यार्थियों को अपना विषय पढ़ाने के पहले अपना पाठ तैयार करता हूँ?
2. क्या मैं अपना पाठ पढ़ाते वक्त आवश्यक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करता हूँ?
3. क्या मैं अपना विषय पढ़ाते समय प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करता हूँ?
4. क्या मैं अपने पढ़ाए पाठ पर गृह कार्य देता हूँ और उसे ध्यान से जाँचता हूँ?
5. क्या मैं अपनी कक्षाओं के लिए यूनिट 'यूनिट टेस्टों', अर्द्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा के प्रश्न पत्र को मेहनत और ध्यान से बनाता हूँ?
6. क्या मैं ईमानदारी और परिश्रम से अपना विषय सभी छात्रों को कक्षा में पढ़ाता हूँ?
7. क्या मैं प्राचार्य के दिए हुए काम और निर्देशों का ईमानदारी से पालन करता हूँ?

उपर्युक्त प्रश्नों को अपने मन से पूछकर अध्यापक अपने कार्यों का मूल्यांकन करें और लगातार अपने आप में सुधार करें तो अवश्य ही विद्यालय के छात्रों के व्यवहारों में अपेक्षित परिवर्तन नजर आएगा और अध्यापक अति उत्तम विद्यालय का निर्माण कर सकेंगे।

सीखने की निरन्तरता, सम्बन्धों की निरन्तरता और अनुभव की निरन्तरता में शिक्षक एक उत्प्रेरक है। यदि यह उत्प्रेरण जारी रहता है तो संभवतया उससे सम्बन्धों की निरन्तरता बनती है। उससे शिक्षक के सोच में एक क्रांति होती है। वास्तव में शिक्षक किताबों के पाठों को पढ़ाने के बजाय बच्चों को पढ़ाए।

सफल शिक्षण के लिए शिक्षक को विषय का पर्याप्त ज्ञान हो, उसमें विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्यता हो, पढ़ाने में रुचि हो और वह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करे। इतना ही नहीं कक्षा में अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करे। निरपेक्ष व्यवहार अध्ययन वातावरण निर्माण की भूमिका अदा करता है। आदर्श विद्यालय में एक शिक्षक को अपने छात्रों के प्रति उच्चाकांक्षी होना चाहिए। तभी श्रेष्ठ विद्यालय बनेगा।

हमारे देश को लाखों अध्यापकों की आवश्यकता है जिनके दिमाग प्रशिक्षित हों और जिन्होंने अपने लिए यह सोचना सीख लिया है- मैं स्वतंत्र भारत का अच्छा नागरिक हूँ। मैं अपने देश को महान देखना चाहता हूँ। मैं अपने देश की जनता को ज्ञानी और सुसंस्कृत देखना चाहता हूँ। स्वतंत्र भारत का जिम्मेदार नागरिक और अध्यापक होने के नाते मेरा कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं राष्ट्र की आवश्यकताओं और जिम्मेदारियों को प्रभावशाली तरीके से पूरा करूँ यानि मेरे पास आने वाले सभी छात्रों को मानव बनाने, चरित्र निर्माण करने और राष्ट्र का विकास करने की शिक्षा प्रदान करूँ।

68, गोल्फ कोर्स स्कीम,
जोधपुर (राज.)-342011

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा में बाल रंगमंच : एक विमर्श

❒ डॉ. रवीन्द्र मारू

"All the world is a stage, And all the men and women merely player, they have their exits and their entrances, And one man in his time play many parts....'' (play 'as you like it' 16th Century)

महान साहित्यकार विलियम शेक्सपीयर ने रंगमंच/नाटक के संदर्भ कहा है कि पूरी दुनिया एक रंगमंच है। ये रंगमंच विश्व जगत में प्राचीन काल से ही अपने विविध रंग और रूप में विद्यमान रहा है। इसका प्राचीन स्वरूप क्या था? आज यह किस रूप में है? और भविष्य में इसकी संरचना क्या रहेगी? इस बात पर हम विमर्श नहीं करेंगे। वैसे भी विविध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्लेटफार्म पर इन क्षेत्रों में बहुत विमर्श पहले ही हो चुका है और अब भी लगातार जारी है। अतः विशुद्ध नाटक की बात करने की अपेक्षा बाल नाट्य पर ही विमर्श किया जाना चाहिए।

आज वैश्विक स्तर पर 'बाल नाट्य' पर भरपूर साहित्य उपलब्ध है, किन्तु भारत के सन्दर्भ में इस विषय पर कुछ खास बात नहीं हो पाई है। यद्यपि कुछ संस्थाएँ इस क्षेत्र में लगातार सक्रिय रूप से कार्य कर भी रही हैं, जिनके नाम बहुत आदर से लिए जा सकते हैं। किन्तु हमारे देश में बालकों के सम्पूर्ण विकास के लिए इस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उपकरण को जितना गंभीरता पूर्वक लिया जाना चाहिए था, उतना नहीं लिया गया। बाल नाट्य विमर्श के संदर्भ में कहने को बहुत सी बातें हैं, जो हमारे व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित हैं। ये अनुभव हमारे लिए उतने ही सत्य हैं जितने किसी और के अनुभव उनके लिए होंगे। इसीलिए मेरा यही सुझाव है कि बच्चों के साथ कार्य करते समय कुछ उपयोगी बातों को जान लेना चाहिए और इस आलेख में हम बच्चों के रंगमंच से जुड़े कुछ खास, लेकिन मूलभूत संदर्भों पर विमर्श जरूरी प्रतीत होता है।

नाट्य खेल जिन्हें शिक्षा में तकनीक के रूप में एक सम्भावना की तरह देखा जा सकता है इसमें मुख्य रूप से कौन-कौन से खेल-खेले जाते हैं? इन्हें कब? क्यों? और कैसे? उपयोग में लिया जाना चाहिए इत्यादि पर गहन चिन्तन किया जाना चाहिए। एक अच्छा शिक्षक बच्चों

की उम्र, स्थान, माँग और परिस्थिति के अनुसार इन तकनीकों को परिवर्तित करते हुए काम में ले सकता है।

बाल रंगमंच के द्वारा बच्चों में स्व-अभिव्यक्ति, सक्रिय सहभागिता, कल्पनाशीलता, मन एवं शरीर का सम्बन्ध, समूह गत्यात्मकता, नेतृत्व क्षमताओं का विकास, सामाजिक समायोजन, समूह भावना का विकास, सहनशीलता, धैर्य एवं स्थिरता आदि कलाओं की अद्वितीय विशेषताएँ हैं। नाट्य कला का शैक्षिक संसाधन के रूप में उपयोग करना ही नाट्य शिक्षा है जिसके उद्देश्य आत्म चेतना में वृद्धि एवं समन्वय एवं सहानुभूति, विचारों के शाब्दिक एवं अशाब्दिक सम्प्रेषण में रचनात्मक एवं स्पष्टता को बढ़ावा, मानव व्यवहार अभिप्रेरणा, विविधता, संस्कृति एवं इतिहास की गहरी समझ में बढ़ावा प्रदान करना है।

बाल रंगमंच के बहुत सारे व्यवहारिक एवं तकनीकी क्रियाकलाप हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को समग्र रूप से विकसित किया जा सकता है। मसलन नाटकीय खेल, दैहिक अभ्यास, वाचिक अभ्यास, अभिनय, कहानी निर्माण, साज-सज्जा, सुर ताल और संगीत कंठस्थ करने का कौशल निर्माण, एकाग्रता लाने के लिए अभ्यास, प्रकाश व्यवस्था, मुखौटा निर्माण, आत्मविश्वास को जगाने की शिक्षा, तार्किकता के खेल, किसी भी जटिल पथ को नाट्य प्रदर्शन द्वारा आसान बनाना, नृत्य की विभिन्न भाव-भंगिमा द्वारा याद्दाश्त को वृहद् और तीव्र करने की नाट्य कार्यशाला, किसी भी निबन्ध, उपन्यास, कविता या कहानी का नाट्य रूपान्तर और प्रस्तुति तथा मस्तिष्क का विकास सृजनात्मक आदि। ये ऐसी नाट्य कला की गतिविधियाँ हैं जिनको शिक्षण में व्यवहारिक रूप से लागू करने से विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों का विकास सम्भव होता है। नाटक-खेल, नाट्यीकरण प्रक्रियाओं से कक्षा के माहौल को खुशनुमा बनाने की ताकत रखता है और ये सीखने-सिखाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। न केवल नाटक अपितु शैक्षिक लक्ष्यों की एक विस्तृत विविधता के साथ पूरा करने का सरल एवं लागत प्रभावी तरीका है। थियेटर कला के मूलभूत कौशल को विकसित करने के साथ-साथ ये साक्षरता विकास, शैक्षिक सफलता और सामाजिक सम्पर्क पर भी जबरदस्त सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। यह खेल सहज ही स्कूल के विषयों या पाठ्य सामग्री के साथ सामंजस्य बैठाने की क्षमता रखते हैं आवश्यकता केवल इस रचनात्मक प्रक्रिया को समझने की है।

प्रत्येक शिक्षक को अपने शिक्षण की समीक्षा करते रहना चाहिए। यदि समीक्षा में नीरसता या बालकों की अरुचि महसूस की जा रही है तो पाठ्यक्रम में आए रंगमंच योग्य विषयवस्तु को चिह्नित कर उसको लेकर बालकों कुछ नया करने हेतु प्रस्ताव रखें। बालक स्वयं ही इसे विभिन्न रूपों में जैसे नाटक, नुक्कड़ नाटक, कहानी, गीत आदि के रूप में प्रस्तुत करने के प्रस्ताव देंगे। शिक्षक को एक निर्देशक की भाँति योग्य छात्रों (पात्रों) का चयन कर काम सौंपना है। बच्चों के लिए एक रंगमंच का प्रयोग विभिन्न गतिविधियों का सामूहिक प्रस्तुति हो जाएगी और आपका शिक्षण न केवल प्रभावी व रोचक बल्कि गुणवत्तापूर्ण होकर शिक्षा की सार्थकता सिद्ध करेगा।

भुवनेश बाल विद्यालय केम्पस,
बारां रोड, पुलिस लाईन, कोटा-324001
मो: 9413941921

शैक्षिक चिन्तन

शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व

❐ सुरेश कुमार

शारीरिक शिक्षा भी एक प्रकार की शिक्षा ही है। यह एक ऐसी शिक्षा है, जिसमें शारीरिक शिक्षा कलापों के माध्यमों से बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास) से है और इस प्रकार का विकास करने के लिए शारीरिक शिक्षा में यह आवश्यक है कि बच्चे का मानसिक, नैतिक और सामाजिक उत्थान किया जाए, बच्चे को अपनी परिस्थितियों का ज्ञान कराया जाए। जिससे उसमें सतर्कता, मन की स्थिरता, साधन-सम्पन्नता, अनुशासन, सहयोग आदर की भावना, सहानुभूति और दूसरों के प्रति उदारता, अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता आदि गुणों का विकास कर इस स्वतंत्र एवं लोकतंत्रात्मक संसार में सुखी और सुव्यवस्थित जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक है और इस प्रकार शारीरिक शिक्षा हमारे राष्ट्र के जीवन एवं विकास में अमूल्य योगदान दे सकती है।

प्राचीन काल में भी शारीरिक शिक्षा को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता था क्योंकि मनुष्य आदि काल से ही सभी प्राणियों में सबसे अधिक क्रियाशील प्राणी था, जो विभिन्न शारीरिक क्रियाओं द्वारा भोजन, आवास एवं रक्षा आदि के लिए क्रियाशील रहा है और जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ। जैसे- बड़े-बड़े शहरों में बसावट, व्यक्ति को एक ही स्थान पर रोकने वाले उद्योग, मानसिक कार्यों की वृद्धि, स्वाभाविक विकास में बाधक रुढ़िवादी धारणाएँ एवं मान्यताएँ, जीवन की गतिशीलता आदि सभी शारीरिक शिक्षा की आवश्कता को बढ़ाती है और सभ्यता के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा में वृद्धि हुई एवं शारीरिक शिक्षा के तरीकों में विकास हुआ। शारीरिक शिक्षा शब्द सुनते ही मनुष्य समझ जाता है कि मानव शरीर के विषय में बात होगी या खेल, योग, क्वायद, जिम्नास्टिक, शारीरिक प्रशिक्षण आदि के बारे में बात होगी और वह उसके मन में भ्राँति उत्पन्न कर देती है। लेकिन वास्तव में शारीरिक शिक्षा क्या है? और इसका कार्यक्रम क्या होना चाहिए? आदि के बजाय पाठ्यक्रम पर अधिक जोर दिया जाता है जिसके कारण शारीरिक शिक्षा क्रियाकलापों के लिए कोई समय ही नहीं बचता जिससे उसकी नेतृत्व क्षमता प्रभावित होती है।

हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जिस क्रिया का पालन करते हैं उसे शारीरिक शिक्षा कहते हैं। भारत में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय व्यायाम का प्रमुख स्थान है। यह विश्व की सबसे पुरानी व्यायाम प्रणाली है। आधुनिक युग में मानव शारीरिक श्रम पर कम तथा मानसिक योग्यताओं द्वारा निर्मित यंत्रों पर अधिक निर्भर हो गया है। जिससे शारीरिक श्रम की कम आवश्यकता पड़ती है। जिसके कारण बड़े-बड़े शहरों में Active Participation की बजाय युवकों में Aggressive Participation बढ़ता जा रहा है इसके परिणामस्वरूप मनुष्य विभिन्न रोगों से ग्रसित होने लगा है। क्योंकि वर्तमान समय में लोगों की दिनचर्या में मशीनी यंत्रों ने अपनी जगह बना ली है। शहरी जीवन की बजाय ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी शारीरिक श्रम अधिक किया जाता है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र में व्यक्तियों का स्वास्थ्य अधिक स्वस्थ रहता है एवं इन व्यक्तियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अधिक होती है। जिसका नमूना हाल ही फैली वैश्विक महामारी कोरोना कोविड-19 से लड़ने की क्षमता से मिला है। विद्यालय हो या महाविद्यालय स्वस्थ शरीर का होना असंभव है। जिसके परिणामस्वरूप सरकारी स्तर पर शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। जैसे- विद्यालयों में प्रार्थना सभा में भी यौगिक क्रियाओं का संचालन करना एवं प्राथमिक स्तर की शिक्षा को खेल गतिविधि आधारित बनाना, विद्यार्थियों में बढ़ते तनाव को कम करने के लिए राज्य सरकार द्वारा शनिवार को 'नो बैग डे' जैसी क्रियाकलाप घोषित करना है, जिससे विद्यार्थी तनाव मुक्त हो सके और उनका सर्वांगीण विकास हो सके। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि-'आज भारत को भगवद् गीता की नहीं बल्कि फुटबाल के मैदानों की आवश्यकता है।' अतः हम कह सकते हैं कि शारीरिक शिक्षा सामान्य पाठ्यक्रम शिक्षा के कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार ने भी शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए विभिन्न शारीरिक गतिविधियों पर आधारित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करवा रही है। जैसे-1987 से नेहरु युवा संगठन केन्द्र, 21 जून 2015 से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, 31 जनवरी से 8 फरवरी 2018 से खेलो इंडिया योजना, 31 अक्टूबर 2018 से 'रन फॉर यूनिटी' 29 अगस्त 2019 से 'फिट इंडिया मूवमेंट', 3 से 6 जनवरी 2020 से प्रथम।

राजस्थान खेल आदि की स्थापना एवं विभिन्न स्तरों पर खेल की प्रतियोगिताओं एवं ओलम्पिक खेलों आदि का आयोजन करवाना। भारतीय व्यायाम की सबसे बड़ी खुशी यह है कि इससे शरीर, ध्यान, एकाग्र, मन शांत, स्मरण शक्ति चरित्र का निर्माण आदि गुणों का विकास होता है। इसी विशेषता से आकर्षित होकर अन्य देशों में भी इन व्यायामों का बड़ी तीव्र गति से प्रचार और प्रसार हो रहा है। इसलिए हमें भी शारीरिक शिक्षा के महत्त्व को समझना होगा और यदि हमें स्वस्थ रहना है और एक अच्छा सद्चरित्र नागरिक बनना है, तो हमें शारीरिक शिक्षा एवं खेलों की छात्र-छात्रा में अवश्य आना पड़ेगा क्योंकि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है। अगर यह खो दिया तो सब कुछ खो दिया। स्वस्थ शरीर से ही एक विकसित राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

सारांशः विद्या अध्ययन तब तक सम्पूर्ण नहीं होती जब तक विद्यार्थी का स्वास्थ्य सकुशल न हो इसके लिए प्राचीन काल में गुरुकुलों में योग और स्वस्थ आहार व शारीरिक गतिविधियों की व्यवस्था विद्यार्थियों के लिए की जाती थी। कहा जाता है 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विद्या का निवास होता है।' आज के इस वैश्वीकरण युग में अनेक प्रदूषणों आदि से निजात पाने के लिए विद्यार्थियों को शारीरिक शिक्षा के माध्यम से ही स्वस्थ बनाया जा सकता है। अनेक शोधों के अनुसार यह परिणाम निकलकर आया कि विद्यार्थी के मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए स्वस्थ शरीर, आहार और योग की महत्ती आवश्यकता है। इस शोध पत्र के माध्यम से आज के इस आपाधापी युग में विद्यार्थियों को सही दिशा में लाने के लिए शारीरिक शिक्षा की महत्ती आवश्यकता है।

शारीरिक शिक्षक
श्री शिवलाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मण्डावरा, झुंझुनूं
मो: 9887499300

शैक्षिक चिन्तन अवसर को पकड़ना ही, व्यक्ति को महान बनाता है

❐ हंसराज 'हंस' तंवर

जीवन में सभी को आगे बढ़ने के लिए अनगिनत अवसर मिलते हैं मगर अपनी खामियों, अरुचियों व आलस्य के कारण हम उन्हें गंवा बैठते हैं। संसार में जितने भी महान लोग हुए हैं। उनकी इंटेलीजेंसी में समानता दिखाई देती है पर एक बात जो सब में समान होती है वह है अवसरों को पहचान कर, मौके का फायदा उठाना। अवसर को अधिक से अधिक भुनाना चाहिए। हमारे समाज में एक कहावत भी है 'मौका नहीं चूकना चाहिए।' मौके का फायदा उठाना चाहिए। फायदा उठाना द्विअर्थी शब्द है। बहुत सारे व्यक्ति किसी की गरीबी, अशिक्षा, नासमझी, मजबूरी व लाचारी का फायदा उठाते हैं। मैं इस आलेख में ऐसे व्यक्तियों के कामों की बात नहीं करूँगा। मैं उन अवसरों से फायदा उठाने की बात करूँगा जिनसे आपने अपना जीवन बदला है। चुनौतियों का सामना किया है। संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है। हमारी जिंदगी में हमें परिवार, विद्यालय, समाज, व्यवसाय, रिश्ते-नाते, राजनीतिक व सामाजिक कई क्षेत्रों में कई सारे मौके, अवसर मिलते हैं पर हम उनका फायदा नहीं उठा पाते हैं और जिंदगी की दौड़ में पीछे रह जाते हैं। हमें हर अवसर की पहचान करना आना ही चाहिए। समय निकलने के बाद, अवसर निकलने के बाद, पछताने के अलावा हमारे पास कुछ भी विकल्प नहीं रहता है।

मैंने मेरे जीवन में दो ही बातें सीखी हैं जब भी जैसा भी अवसर मिले, मौका मिले, उसको सकारात्मक सोच के साथ चुनौती पूर्ण तरीके से उसका लाभ उठाने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ। इसके हमें फायदे मिलते हैं अवसर को पहचानकर आपने उसका फायदा उठाया तो आप या तो सफल होंगे या असफल। दोनों ही बातों में आपका नुकसान बिल्कुल भी नहीं है। सफल होते हैं तो बहुत ही अच्छा है और यदि किसी कारणवश असफल भी हो गए, तो आपको चिंता नहीं करना है। क्योंकि आपका सीखना तो हुआ ही है। फिर आप सीख कर नए अवसर की बाट में रहते हैं और निश्चित ही एक दिन आपको जरूर सफलता मिलती है। इसके

कई उदाहरण हम हमारे समाज में भी देख सकते हैं। जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं उन्होंने इस बात को बड़े अच्छे तरीके से समझा है और उसका ही परिणाम है कि बिल्कुल नीचे के स्तर से उठकर देश के प्रथम नागरिक तक पहुँचे हैं। जैसे डॉक्टर अब्दुल कलाम, लाल बहादुर शास्त्री, रतन टाटा, बिरला और अंबानी की भी यही कहानी है। जीवन में अवसरों को छोड़ना मूर्खतापूर्ण कार्य होता है। एक बात और जब उस अवसर या मौके का कोई दूसरा व्यक्ति फायदा उठाकर सफलता प्राप्त कर लेता है तो हम बाद में सोचते हैं कि ऐसे तो मैं भी कर लेता पर अब आपके पास समय, अवसर नहीं है। अब केवल पछताने व आत्मग्लानि के अलावा आप कुछ नहीं कर सकते। इसलिए सभी को अवसरों को नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा भी नहीं करना व सोचना चाहिए कि आगे और अवसर आएँगे जब देखा जाएगा।

वह देखो पास खड़ी मंजिल
इंगित सी तुम्हें बुलाती है
साहस से बढ़ने वालों के
माथे पर तिलक लगाती है
साधना न व्यर्थ कभी जाती
चलकर ही मंजिल मिल पाती
फिर क्या बदली क्या धाम है
बढ़ना ही अपना काम है।

ऐसा सोचना, करना भी अपने जीवन की उन्नति के द्वार बंद करना ही है। इसकी एक प्रेरणास्पद कहानी से मैं मेरा आलेख पूरा करूंगा। एक बार एक युवक व एक युवती दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे। दोनों ने तय किया कि हमें शादी कर लेनी चाहिए। शादी के लिए लड़के ने लड़की के पिताजी से बात की। पिताजी बुद्धिमान थे। उन्होंने लड़के से कहा कि मैं तुम्हारी एक छोटी सी परीक्षा लूँगा। उसमें उत्तीर्ण हो गए तो मैं मेरी लड़की का हाथ तुम्हें सौंप दूँगा और पास नहीं हुई तो यह शादी नहीं हो सकती। लड़के ने कहा मुझे क्या करना होगा? तुम्हें एक छोटा सा काम करना होगा। मैं मेरी गोशाला में से तीन सांड बारी-बारी से बहार निकालूंगा, तुम्हें किसी भी एक सांड की पूंछ को पकड़ना है। बस यह काम है। लड़का बड़ा खुश हुआ। ठीक है मैं तैयार हूँ। पहला सांड निकला, सांड हट्टा-कट्टा, ताकतवर था। देखते ही लड़का डर गया। लड़के ने सोचा अरे बाप रे! यह तो मुझे मार देगा। इसको तो जाने दो। दूसरे को देखते है, जब दूसरे की बारी आई तो वह उससे भी ज्यादा ताकतवर और हट्टा-कट्टा था, उसके तो तीखे-तीखे, नुकीले सींग भी थे। लड़के ने देखा अरे बाप रे! यह तो मेरी जान ही निकाल ले लेगा। इसको भी जाने दो। तीसरे को बिल्कुल नहीं छोड़ूँगा, उसकी तो मैं हर हाल में पूंछ को पकड़ूँगा। चाहे कुछ भी हो जाए। तीसरा सांड बाहर आया तो लड़का दौड़कर उसकी पूंछ पकड़ना चाहा, लेकिन वह देखता है कि इसके तो पूंछ ही नही है, अब में क्या करूँ? लड़का क्या करता उसके पास पछताने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। इस कहानी से हमें यह समझना चाहिए कि अवसर को कभी भी छोड़ना नहीं चाहिए। जब भी अवसर मिले, उसी को तुरन्त पकड़ो और उससे फायदा उठाओ, उसको ही भुनाओ। कहानी हमें प्रेरणा देती है कि जीवन में जो भी, जब भी अवसर मिले, उसको भुनाना है और जीवन में सफलता प्राप्त करना है।

शिक्षक
मु.पो. बनेठा, तह. उनीयास,
टोक (राज.)-304024
मो: 9829434517

शैक्षिक चिन्तन

डॉ. राधाकृष्णन् का शिक्षा दर्शन

❐ राकेश

डॉ. राधाकृष्णन् उन समकालीन भारतीय दार्शनिकों में से हैं जिन्होंने शिक्षा के रूप में और शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न पदों पर लम्बे अर्से तक कार्य करके शिक्षा व जीवन की समस्याओं को बहुत ही निकट से समझा और देखा, अपनी विशिष्ट बहुमुखी प्रतिभा, अध्ययनशील प्रवृत्ति एवं प्रभावकारी अद्भुत व्यक्तित्व के कारण शिक्षा के क्षेत्र में उतना ही विवेकपूर्ण योगदान दिया जितना कि भारतीय दर्शन की धारा को विश्व में प्लवित करने में। शिक्षा में डॉ. राधाकृष्णन् की गहरी अभिरुचि थी और वे मूलतः शिक्षक ही थे। यही कारण है कि देश में उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में ही मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा तो वह है जो राष्ट्र की युवा शक्ति को स्वाभिमानी और संस्कारवान बनाए। शिक्षा वह जो नैतिकता को उभारे-सँवारे। डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा को गहराई से, एकनिष्ठता से, सोद्देश्यता से, अखण्डता से और आचार से जोड़ना चाहते थे। उनका कहना था-'हम लोगों में गहराई की कमी है। हम चाहे विद्वान अथवा कुशल व्यक्ति बन जाएँ, लेकिन जब तक जीवन के प्रति हमारा स्पष्ट उद्देश्य नहीं होगा। तब तक हमारा जीवन कटुता, अंधकार और गलतियों (Bitterness, blindedness and blundering) से भरा रहेगा। एक शिक्षित और सुसंस्कृत दिमाग में उद्देश्य की एकनिष्ठता होती है। असंस्कृत (असंस्कारित) दिमाग वाले व्यक्ति का जीवन कई दिशाओं में भटकता रहता है।'

उनके विचारों में स्पष्टता की छाप है। जो कुछ है सीधा, सच्चा, स्पष्ट और साहसिक है। वे शिक्षा को महज आदर्श नहीं मानकर एक जीवन्त शक्ति मानते थे। कहते थे, 'शिक्षा जीवनदायिनी होती है, विमुक्तकारी होती है- यह आत्मिक जड़ता को तोड़ती है, आत्म-नियंत्रण सिखाती है और ....करुणा का विस्तार करती है। यदि वह ऐसा नहीं करती तो वह शिक्षा तो नहीं है, चाहे और कुछ भी क्यों न हो।'

डॉ. राधाकृष्णन् के इन विचारों की सच्चाई और साहसिकता से कौन इन्कार कर सकता है? वे एक ऐसे युगपुरुष थे जो भविष्य में अटल आस्था रखते थे। सांस्कृतिक विरासत को कायम रखते हुए भी परिवर्तन के हामी थे। घोर आध्यात्मिक होते हुए भी विज्ञान की शक्ति में भरोसा करते थे।

उनके अनुसार 'हमारा देश अपने सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन में निरंतरता के सिद्धांत का एक महान उदाहरण है। परिवर्तन न हो और केवल निरन्तरता बनी रहे तो वह निस्तेज और निष्क्रिय होगी। उधर यदि परिवर्तन होता रहे और निरन्तरता टूट जाएँ तो उससे अराजकता और बेचैनी पनपेगी किसी भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का आशय है अतीत से भविष्य की ओर होने वाला विकास।'

'मानव इतिहास हमेशा से गतिमान रहा है ऐसे समय जबकि मनुष्य अंतरिक्ष में परिभ्रमण कर रहा हो चाँद तक पहुँचने के प्रयास में हो, हम यदि समय को यों ही गंवाते रहे तो हम पीछे छूट जाएँगे। यदि हम केवल अतीत से चिपके रहे तो हमारा अस्तित्व ही अनिश्चित हो जाएगा। यदि उन्नति में अवरोध आया तो हम अवश्य पिछड़ जाएँगे।'

'जीवन को तो निरंतर आगे बढ़ना है। ऐसी कई बातें हैं जो अतीत से चली आई हैं और हम उन्हें परम पावन मानते रहे हैं। आज आवश्यकता है कि हम या तो उनकी पुनः रचना करें या फिर उन्हें त्याग दें। समाज को जगाने के लिए सामाजिक चेतना को उभारना ही होगा।'

विश्व मानव डॉ. राधाकृष्णन निरंतरता के नाम पर अतीत की अनावश्यक पूजा के हिमायती नहीं थे। उन्हें भविष्य में अटूट आस्था थी। वे जानते थे कि भारत में एक अद्भुत क्षमता है। हजारों वर्षों से यह देश अपने आप को पुनर्नवीन करता रहा है। अपनी गहन अन्तर्दृष्टि, प्यार और करुणा से यह देश आज तक जीवित रहा है आगे भी रहेगा। जब कभी कोई महान आह्वान हुआ, भारतवासियों ने तत्परता से उसे स्वीकार किया, जरूरत हुई तो संकटों का भी सामना किया और जीवन को न्यौछावर करने में भी नहीं झिझके।

डॉ. राधाकृष्णन ज्ञान को एक सम्पूर्ण इकाई मानते थे। ज्ञान के घटक परस्पर विरोधी नहीं होते, वे मिलकर एक सम्पूर्ण और अखण्ड ज्ञान की रचना करते हैं। उनमें विरोधाभास है ही नहीं। ज्ञान का घटक चाहे विज्ञान के रूप में अथवा साहित्य या कला के रूप में, वह ज्ञान ही है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने इस बिन्दु पर शिक्षा जगत के सामने अपना सुस्पष्ट चिन्तन रखा है। उनका कहना था-'हमारे लिए ऐसा सोचना आवश्यक नहीं है कि विज्ञान हमें यह देता है, कला वह देती है और साहित्य कुछ तीसरी ही चीज देता है ज्ञान के भवन को अपने स्वयं के विरुद्ध विभाजित नहीं किया जा सकता, वह तो अविभाज्य है। सारे विज्ञान वास्तविकताओं के रहस्य की खोज में लगे हुए हैं। विज्ञान का मतलब ही है कल्पनाशील साहसिकता। यही काम साहित्य भी करता है। यह हमें नैतिक अन्तर्दृष्टि देता है, मनुष्य की भावनाओं और मनोवेगों को समझने में हमारी मदद करता है बताता है कि हमें क्या कुछ अपनाना चाहिए और किसे टालना चाहिए। जहाँ हर विज्ञान हममें निष्ठा, अनुशासन पूर्वाग्रहों से मुक्ति का संचार करता है, वहाँ हर कला हमें वास्तविकता को अन्तर्दृष्टि देती है। इन दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।'

मनुष्य में आचार की कमी है। वह संग्रहशील बन गया है। संग्रह की इस वृत्ति ने इसकी सहनशीलता को तो कुण्ठित किया ही, उसकी चेतना को भी पंगु बना दिया। ज्ञान जहाँ प्रकाश देता है, आचार की यह कमी अन्धकार का ऐसा वातावरण पैदा करती है जो उस ज्ञान रश्मि को निगलकर ही दम लेता है। डॉ. राधाकृष्णन ने चेतावनी के स्वरों में कहा था, 'संग्रहशील दिमाग एक रुग्ण समाज की रचना करता है। यदि हमें इस रुग्णता से बचना है तो हमें अपनी शिक्षा को आचार से जोड़ना होगा। आचरण पक्ष पर जोर देना ही होगा। शिक्षा की सही प्रणाली के लिए जहाँ प्रकाश आवश्यक है वहीं आचार का होना भी जरूरी है। ज्ञान हो लेकिन उसमें दिव्यता नहीं हो तो फिर वह बेकार है।'

डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में 'हमें ऐसे बन्द समाजों की आवश्यकता नहीं है जो एक-दूसरे

के शत्रु हों। हमें ऐसे समाज की जरूरत है, जहाँ हर व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति के प्रति जुड़ाव का भावना रखता हो। आज की शिक्षा समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, प्रजातंत्र, सांस्कृतिक मूल्यों के रखरखाव, सामाजिक एकता और विश्व बंधुत्व पर आधारित है। डॉ. राधाकृष्णन ने इनमें से प्रत्येक बिन्दु पर अपने सारगर्भित विचार प्रकट किए थे। साक्षरता के प्रसार को उन्होंने राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता समझा था। शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की हिमायत की थी। उनकी दृष्टि में शिक्षा की गुणवत्ता के बिना कोरी शाब्दिक या किताबी शिक्षा का कोई अर्थ नहीं था।

उन्होंने कहा था, 'धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म की उपेक्षा नहीं है न उसका नकार ही है। इसका आशय है कि सभी धर्मों का सम्मान किया जाए। यह धर्म के प्रति उदासीनता नहीं वरन सभी विश्वासों के प्रति आदर भाव है। 'समाजवाद क्या है? आज हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या यदि कोई है तो वह विराट दरिद्रता की समस्या है हम औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के द्वारा देश की सम्पत्ति को बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन हम यह भी देखना चाहते हैं कि उस सम्पत्ति का समान बंटवारा हो। सम्पत्ति कुछ सीमित सुविधा-भोगियों के हाथों में केन्द्रित न हो जाए। बढ़े हुए उत्पादन का लाभ साधारण लोगों तक पहुँचे।

'हम प्रजातांत्रिक समाज व्यवस्था में विश्वास करते हैं। यह व्यवस्था मनुष्य की आत्मा की स्वतंत्रता पर जोर देती है। हम दुनियाँ को जीत लें, लेकिन अपनी आत्मा को हार जाएँ तो फिर जीत में धरा ही क्या है? यदि हम व्यक्ति की गरिमा, उसकी प्रतिष्ठा, उसकी चेतना से कट जाए तो फिर सारे विश्व की विजय बेमानी और अर्थहीन होने के सिवाय कुछ नहीं है।'

आज के व्यक्ति को चेतना के स्तर पर यदि विकलांग नहीं रहना है तो उसके लिए जरूरी है कि वह अपने मनोभावों को शिष्टता से जोड़े और उद्वेगों का परिष्कार करना सीखे। यह काम शिक्षा ही कर सकती है और कोई नहीं सकता। शिक्षा राष्ट्र की धमनियों का रक्त प्रवाह है और उसके हृदय की धड़कन।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उदावास,
झुंझुनूं (राज.) **मो:9413547530**

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा में आई.सी.टी. की भूमिका

❐ सुभाष चौधरी

'सीखो अथवा नष्ट हो जाओ' प्रख्यात शिक्षाविद् ए.जे. टोयनबी का यह कथन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में और अधिक प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि द्रुतगामी विकास और प्रतिस्पर्धा के युग में यदि नागरिक वर्तमान चुनौतियों और माँग के संदर्भ में स्वयं को सूचनायुक्त, सजग और दक्ष नहीं बनाते हैं तो वे विकास की मुख्य धारा से वंचित हो जाते हैं। यदि किसी राष्ट्र में यह स्थिति लम्बे समय तक बनी रहती है तो सम्पूर्ण सभ्यता ही नष्ट हो जाती है। अतः निरन्तर सीखते रहने की जिज्ञासा और प्रवृत्ति को मानव की प्रगति और अस्तित्व के लिए अपरिहार्य माना गया है। निरन्तर सीखते रहने की जिज्ञासा और प्रवृत्ति को मानव की प्रगति और अस्तित्व के लिए अपरिहार्य मान गया है।

निरन्तर सीखने और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। यह हमारे सामाजिक विकास का अभिन्न हिस्सा रही है। आज उच्च शिक्षा का दायरा तेजी से फैल रहा है। लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसलिए आज इस बात की जरूरत महसूस हुई है कि उच्च शिक्षा में नए-नए प्रयोग तो हो लेकिन शिक्षा के मूल गुण प्रभावित न हो। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी शिक्षा के उन्नयन में तीन गुणों उच्च विचार, आचार एवं संस्कार का होना जरूरी बताया है। यदि शिक्षा में अच्छे संस्कार न हो तो वह सृजन की ओर नहीं बल्कि विध्वंस की ओर ले जाएगी।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है कि- ''शिक्षा को मनुष्य और समाज का कल्याण करना चाहिए। इस कार्य को किए बिना शिक्षा अनूर्वर और अपूर्ण है।'' शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह विकास का मूलाधार है। आज के बदलते परिवेश में परिवर्तन की धारा ने शिक्षा को विशेष रूप से प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर मानवी संबंधों में बदलाव आया है, वहीं विज्ञान के बढ़ते चरण ने शिक्षा व दिशा दोनों में परिवर्तन किया है। मनुष्य ने तकनीकी उन्नति के माध्यम से स्वयं का जीवन उन्नत किया है।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के प्रतिवेदन में लिखा गया है कि उच्च शिक्षा के प्रसार एवं गुणवत्ता हेतु सूचना सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) आधारित तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए अन्यथा हम जन-जन तक इसका प्रसार करने का लक्ष्य हासिल नहीं कर पाएँगे। वर्तमान में हमारे देश में उच्च शिक्षा के लिए अच्छा माहौल और अनुकूल वातावरण निर्मित हो रहा है फिर इस क्षेत्र का संकट बहुत गहरा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली हमारी 18-24 वर्ष के आयुवर्ग की आबादी का अनुपात लगभग 7 है जो एशिया के औसत का सिर्फ आधा है। केन्द्र सरकार का जोर इस बात पर है कि शिक्षा को सूचना, संचार तथा प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाए।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का व्यापक क्षेत्र है जिसमें सूचना के संचार के लिए हर तरह की प्रौद्योगिकी समाहित है। यह प्रौद्योगिकी के संचालन (रचना, भंडारण और उपयोग) की योग्यता रखता है तथा संचार के विभिन्न माध्यमों (रेडियो, टेलीविजन, सेलफोन, कम्प्यूटर और नेटवर्क, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, सेटेलाइट सिस्टम, विभिन्न सेवाओं और अनुप्रयोग) से सूचना के प्रसारण की सुविधा प्रदान करता है। आई.सी.टी. वर्तमान में हमारे जीवन का अविभाज्य तथा स्वीकृत अंग बन गया है। कृषि, स्वास्थ्य, शासन प्रबंध और शिक्षा जैसे क्षेत्रों के विकास का आधार है। आई.सी.टी. एक विविध संग्रह है जिसमें विभिन्न प्रौद्योगिकी उपकरण निहित है। साथ ही साथ वीडियो कॉन्फ्रेसिंग और इलेक्ट्रॉनिक मेल आदि जैसे प्रोटोकॉल और सेवाएँ भी सम्मिलित हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का महत्त्व निम्नानुसार है-

1. यह सेवा अर्थतंत्र (Service Economy) का आधार है।
2. पिछड़े देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए यह उपयुक्त तकनीक है।

3. निर्धनता उन्मूलन में सहायक है। (गरीब जनता को सूचना सम्पन्न बनाकर)
4. सूचना सम्पन्नता सशक्तीकरण का आधार है।
5. प्रशासन और सरकार में पारदर्शिता लाई जा सकती है।
6. इसका प्रयोग योजना बनाने, नीति निर्धारण तथा निर्णय लेने में होता है।
7. रोजगार सृजन में सहायक है।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में आई.सी.टी. की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। निवेश से लेकर प्रबंधन, दक्षता, शिक्षाशास्त्र, गुणवत्ता, अनुसंधान और नवाचार के प्रमुख मुद्दों से निपटने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्रौद्योगिकी तक यह प्रभाव डालती है।

उच्च शिक्षा में यह निम्नानुसार सहायक है–

1. दूरवर्ती स्थानों में पढ़ाई की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है।
2. उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिक पारदर्शिता प्रणाली लाने में उनकी प्रक्रियाओं और अनुपालन मानदण्डों को मजबूती मिलती है।
3. यह छात्रों के प्रदर्शन, नियुक्ति, वेबसाइट एनालिटिक्स और ब्रांड के ऑडिट के लिए सोशल मीडिया मैट्रिक्स का विश्लेषण करने के लिए उपयोगी है।
4. इंटरनेट (वर्चुअल क्लासरूम), उपग्रह और अन्य माध्यमों द्वारा पाठ्यक्रम वितरण के साथ दूरस्थ शिक्षा को सुविधाजनक बनाने में उपयोगी है।

शिक्षण में कम्प्यूटर आधारित शिक्षा तकनीक का उपयोग हमारे देश के प्रसिद्ध शिक्षा संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। शब्दों और प्रतीको की विविधता कम्प्यूटर की महान शक्ति है जो शैक्षणिक प्रयास का केन्द्र है। ई-लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षक अधिक रोचक और आसान हो रहा है। इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से शिक्षक अपने विद्यार्थियों तक पहुँच सकते हैं। उन्हें घर बैठे पढ़ा सकते हैं। इंटरनेट मानव ज्ञान का उच्चतम संग्रह है। आई.सी.टी. डिजिटल पुस्तकालय जैसे डिजिटल संसाधनों के सृजन की अनुमति देता है, जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और व्यवसायी शोध सामग्री तथा पाठ्यक्रम सामग्री तक पहुँच सकते हैं। आई.सी.टी. शैक्षणिक संस्था के दिन-प्रतिदिन के प्रशासनिक गतिवधियों को आसान और पारदर्शी तरीके से नियंत्रित करने तथा समन्वय और निगरानी के लिए अवसर प्रदान करता है। पंजीकरण/नामांकन, पाठ्यक्रम आवंटन, उपस्थिति की निगरानी, समय-सारणी/वर्ग अनुसूची, प्रवेश के लिए आवेदन, छात्रों के दाखिले में जाँच इस तरह की जानकारियाँ ई-मीडिया द्वारा पाई जा सकती है।

आई.सी.टी. के संदर्भ में यदि हम सकारात्मकता के साथ प्रयास करें तो निश्चित रूप से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं, क्योंकि आई.सी.टी. के परिपालन से जीवन के हर क्षेत्र में प्रबल उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है तो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में क्यों नहीं?

व्याख्याता एवं (शोधार्थी शिक्षा)
राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भीनासर, बीकानेर (राज. 334401)
मो: 8114489352

ई-शिक्षा

❐ सीमा शर्मा

भारत में स्कूल, कॉलेज समेत तमाम शैक्षणिक संस्थान अपने शैक्षिक सत्र पूरे कर पाते, इससे पहले ही कोरोना सकंट के चलते 25 मार्च 2020 से बंद कर दिए गए, जिससे शिक्षा के लिए ई-शिक्षा की आवश्यकता हुई। ई-शिक्षा को समय, संसाधन और दूरी की बचत वाला माध्यम माना जाता है।

वस्तुत: भारत मे ई-शिक्षा से शिक्षक और विद्यार्थी दोनो प्रभावित हैं। ई-शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की गयी शिक्षा है। ई-शिक्षा ने संपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था में अपना स्थान बना लिया है। ई-शिक्षा को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:-**(1) सिंक्रोनस (Synchronous) (2) असिंक्रोनस (Asynchronous)**

(1) सिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था में विद्यार्थी और शिक्षक अलग-अलग स्थानों से एक ही समय एक-दूसरे से शैक्षिक संवाद करते हैं। इस तरह से किसी विषय को सीखने पर विद्यार्थी अपने प्रश्नों का तत्काल उत्तर जान पाते हैं। जिससे उस विषय से संबंधित संदेह भी दूर हो जाते हैं। इसलिए इसे रियल टाइम लॉगिन भी कहा जाता है।

(2) असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था में पाठ्यक्रम संबंधित जानकारी पहले ही उपलब्ध होती है। उदाहरण के लिए वेब आधारित कोर्स, ब्लॉग, वेबसाइट, विडयो, ट्यूटोरिअल्स, ई-बुक्स आदि की मदद से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी किसी भी समय, जब चाहे तब शैक्षिक पाठ्यक्रमों तक पहुँच सकते हैं। यही कारण है कि छात्रों का एक बड़ा वर्ग असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था के माध्यम से अपनी पढ़ाई करना पंसद करता है।

राजस्थान में लॉक डाउन के दौरान राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा एक अभिनव नवाचारी 'स्माइल कार्यक्रम' प्रारम्भ किया गया जिसके माध्यम से राज्य में लॉकडाउन में लाखों विद्यार्थियों को घर पर रहते हुए उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई है। SMILE का आशय Social Intertace for Learning Engagement- है इसका शाब्दिक अर्थ सोशल मीडिया के संयोजन से विद्यर्थियों की अधिगम सक्रियता को बनाए रखना। राजस्थान स्कूल शिक्षा ने इस नवाचारी कार्यक्रम को आरम्भ कर विद्यार्थियों के ऑनलाइन अध्ययन का कार्यारम्भ किया है। इसके द्वारा विद्यार्थियों और शिक्षकों मध्य सीखने-सिखाने के प्रक्रिया की निरन्तरता बनायी रखी जा सकती है। स्माइल कार्यक्रम अभिभावकों की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका है, उनके माध्यम से बच्चों को शिक्षण सामगी उपलब्ध करवाने के साथ-साथ वे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि तथा अधिगम से भी परिचित हो सकेंगे।

ऑनलाइन शिक्षा की कुछ सीमाएँ भी हैं, जैसे इंटरनेट का स्पीड कनेक्टिविटी की समस्या, लाकॅ डाउन के समय में कोई साथ उपस्थित होकर सिखाने एवं बताने वाला नहीं होने से भी, घर में सीमित संसाधनो का होना आदि।

प्रधानाचार्य
राउमावि. जयसिंहपुरा (सांगानेर), जयपुर
मो. 9460069730

शैक्षिक चिन्तन

भारतीय वाङ्मय में-योग-प्रबोधन

❐ सतीश चन्द्र श्रीमाली

हमारे राष्ट्र में 'योग' का प्रचलन वैदिककाल से चला आ रहा है। यह हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है, इस कारण इसका विस्तार हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ है। हमारी शिक्षा पद्धति हो अथवा कर्म पद्धति सभी में 'योग' का योगदान उन्हें श्रेष्ठतम बनाने में है। अतः इसे मानव मात्र से जोड़ने का प्रयास समय-समय पर अनेक योगियों ने इसको प्रचारित करके किया, ताकि व्यक्ति इससे लाभान्वित होकर श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर सके तथा अपने जीवन के उद्देश्य को सार्थक बना सके।

'पातञ्जल योग प्रदीप' नामक पुस्तक में परम पूज्यपाद योगिराज श्री स्वामी सियाराम जी महाराज के विचारों एवं प्रयासों को उद्धृत किया है, जिसमें वे कहते हैं कि-'मेरा यह लक्ष्य था कि मैं पुरुषों तथा स्त्रियों में इस बात की जाग्रति करा दूँ कि वे व्यवहार को शुद्ध और आहार को सात्विक बनाकर शरीर को ठीक ही रखें और विषयों से मन को हटाकर अन्तर्मुख करें तो उनको अपने भीतर के खजाने का पता लग सकता है।'

श्री सियाराम महाराज के उक्त कथन से उनके विचार देशवासियों को आज से सैंकड़ों वर्ष पूर्व 'योग के माध्यम से जाग्रत कर उनके मूल्यवान जीवन को कैसे सार्थक बनाया जाए, उस चिन्तन से भरे थे। परिणामस्वरूप 'पातञ्जल योग प्रदीप' जैसा योग शिक्षा देने वाला ग्रन्थ समाज को उपलब्ध हुआ। 'योग' के सम्बन्ध में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई उनमें 'पतंजलि योग सूत्र', 'श्री चरणदास अष्टाङ्ग योग', 'योग याज्ञवल्क्य', 'नारद भक्ति सूत्र', 'हठ योग प्रदीप', 'घेरण्ड संहिता', 'श्रीमद्भगवत गीता' आदि प्रमुख हैं।

सभी ग्रन्थों में योग क्रिया की प्रक्रिया, उसके नियम, लाभ के साथ-साथ आचार-विचार एवं आहार-विहार की शिक्षा भी पढ़ने से प्राप्त होती है। इन ग्रन्थों में प्रमुखता से निम्नलिखित विषय को सूत्र रूप में बताकर उसकी विस्तृत व्याख्याएँ की गई हैं, जिसका पारायण करना चाहिए। इसमें योग के वास्तविक स्वरूप को समझाया गया है। 'योग' स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर ले जाता है। चित्त की वृत्तियों द्वारा हम स्थूलता की ओर जाते हैं अर्थात् बहिर्मुख होते हैं। जितनी वृत्तियाँ बहिर्मुख होती हैं उनमें 'रज' और 'तम' की मात्रा बढ़ती है, इसके विपरीत वृत्तियाँ अंतर्मुख होती है उतना ही 'रज' और 'तम' का तिरोभावपूर्वक 'सत्त्व' का प्रकाश बढ़ता जाता है। इसलिए कहा गया है 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः- निर्मल सत्त्व प्रधान चित्त की जो अङ्गाङ्गिभाव से परिणत वृत्तियाँ हैं उनका निरोध अर्थात जो बाहर को चित्तवृत्तियाँ जाती हैं उन बहिर्मुख वृत्तियों को सांसारिक विषयों से हटाकर उससे उल्टा अर्थात् अन्तर्मुख करके अपने कारण चित्त में लीन कर देना योग है।

योग के तीन अन्तर्विभागों का उल्लेख किया गया है- **ज्ञान योग, उपासना योग और कर्म योग।** इनकी संक्षिप्त व्याख्या में कहा गया है कि **ज्ञान योग**-भौतिक पदार्थों का ज्ञान लेना अर्थात् सांसारिक ज्ञान-विज्ञान ज्ञानयोग नहीं है। बल्कि तीनों गुणों और उनसे बने हुए सारे पदार्थों से परे अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर तथा स्थूल, सूक्ष्म और कारण जगत अथवा अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोष अथवा शरीर, इन्द्रियों, मन, अहंकार और चित्त से परे गुणातीत शुद्ध परमात्मा तत्व को जिसके द्वारा इन सबमें ज्ञान, नियम और व्यवस्थापूर्वक क्रिया हो रही है, संशय, विषयरहित पूर्णरूप से जान लेना ज्ञान योग है।

उपासना योग- एक प्रत्यय का प्रवाह करना अर्थात चित्त की वृत्तियों को सब ओर से हटाकर के एक लक्ष्य पर ठहराने का नाम उपासना है। यह भी कहा गया है कि किसी सांसारिक विषय की प्राप्ति के लिए इस प्रकार का एक प्रत्यय का प्रवाह करना उपासना कहा जा सकता है। उपासना योग नहीं। उपासना योग में चित्त को किसी विशेष ध्येय पर ठहराकर शुद्ध परमात्म स्वरूप को प्राप्त करने का यत्न किया जाना ही उपासना योग है। इसमें इन्द्रियों को बाहर के विषयों से हटाकर चित्त के साथ अन्तर्मुख करना आवश्यक है। फिर यह देखना आवश्यक है कि अन्तर्मुख होने के लिए किस स्थान को लक्ष्य बनाया जाए। वैसे तो परमात्मा सर्वत्र व्यापक है; किन्तु उनके शुद्ध स्वरूप तक पहुँचने के लिए अपने ही शरीर में किसी स्थान को लक्ष्य बनाने में सुगमता रहती है। इसका भी विस्तृत विवरण दिया गया है। इसके साथ यह भी कहा गया है कि कौनसा स्थान अधिक उपयोगी हो सकता है, वह इस मार्ग के अनुभवी ही बतला सकते हैं। अतः उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए।

कर्मयोग- कामों में लगे रहने का नाम कर्म योग नहीं है। शरीर, इन्द्रियों, धन, सम्पत्ति आदि सारे साधनों, उनसे होने वाले कर्त्तव्य रूप सारे कर्मों को तथा उनके फलों को भी ईश्वर को समर्पण करते हुए अनासक्त निष्काम भाव से व्यवहार करने का नाम कर्मयोग है। जैसा कि श्रीमद्भगवतगीता में कहा गया है-

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये।।
(5-11)

कर्म योगी, ममत्व बुद्धि रहित केवल इन्द्रिय, मन, बुद्धि और शरीर द्वारा भी आसक्ति को त्यागकर अन्तःकरण की शुद्धि के लिए कर्म करते हैं।

उक्त स्थिति यह भी स्पष्ट करती है कि कर्म योग की सिद्धि भी उपासना योग की सहायता से ही हो सकती है। अतः ये तीनों किसी न किसी अंश में बने ही रहते हैं। यह अवश्य है कि कहीं उपासना की प्रधानता होती है, तो कहीं कर्म की और कहीं ज्ञान की। यह भी कहा गया है कि इन तीनों में दो मुख्य भेद सांख्य और योग नाम से किए गए।

उपर्युक्त योग को श्रीमद्भागवत गीता में योग के आठ अंगों सहित सविस्तारपूर्वक अठारह अध्यायों में वर्णित किया गया है जो पारायण और आत्मसात करने योग्य है। यह ग्रन्थ इसलिए भी विशिष्ठ है कि 'योग' के विषय को इसमें संवाद-शैली में प्रस्तुत किया गया है जो जिज्ञासु को समझने में सहज है। इसकी विशिष्टता के संदर्भ में आदिशंकराचार्य ने 'चपर्ट मंजरी' में लिखा है- 'ज्ञेयं गीता' अर्थात गान करना है तो गीता का कर।

सांख्य योग- कर्मयोग के इस अनुपम वाङ्मय को 'योग-शिक्षा' के विषय के रूप में विद्यालयों में सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए ताकि 21 जून को मनाए जाने वाला योग दिवस में योग प्रबोधन के स्वरूप का अधिकाधिक विस्तार हो सके।

जस्सूसर गेट रोड, धर्म काँटे के पास,
बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षण सूक्तियाँ एवं प्रभावी अध्ययन

❒ मूलाराम परिहार

शिक्षा के क्षेत्र में आज विभिन्न प्रकार के परीक्षण किए जा रहे हैं। अनेक नवीन प्रवृत्तियों तथा कार्य पद्धतियाँ शिक्षण के क्षेत्र में प्रचलित हो रही हैं। अब पढ़ाने की अपेक्षा सीखने पर अधिक जोर दिया जा रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी के उच्चतम विकास के फलस्वरूप आज शिक्षण को एक उच्चतम व्यावसायिक क्रिया समझा जाने लगा है। शिक्षक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य अपने छात्रों के लिए शैक्षिक लक्ष्य तथा विशिष्ट उद्देश्यों की रचना करना और उन्हीं के अनुसार छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने की चेष्टा करना। इस हेतु अध्यापकों को शिक्षण की उचित व्यवस्था करनी होती है। शिक्षण की व्यवस्था के अन्तर्गत अध्यापक को विभिन्न कार्य करने होते हैं। यथा उपयुक्त शिक्षण युक्तियों का चयन, उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री का चयन, उपयुक्त सम्प्रेषण नीतियों का चयन तथा उपयुक्त कक्षा-आकार का चयन।

शिक्षण युक्तियों का चयन– शिक्षण युक्तियाँ लक्ष्य से संबंधित होती हैं और शिक्षक के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। शिक्षण युक्तियों के अन्तर्गत वे सभी बातें आ जाती हैं जो पढ़ाते समय परिस्थितियों के अनुसार शिक्षक को करनी पड़ती हैं। अच्छी शिक्षण विधि से छात्र पाठ्यवस्तु को भली-भाँति हृदयंगम कर लेते हैं। ये युक्तियों को रोशनी देकर स्थिर बनाने का प्रयास करती हैं और शिक्षण के स्वरूप को सरल एवं स्पष्ट करती हैं। शिक्षक के शिक्षण में सबसे पहले पाठ्यवस्तु को विभिन्न इकाइयों में विभाजित कर देना चाहिए। इसके पश्चात प्रत्येक इकाई को पाठ्यवस्तु विश्लेषण के आधार पर विभिन्न उप इकाइयों में विभाजित कर लिया जाए।

प्रभावी अध्यापन में शिक्षण युक्तियों का प्रयोग– शिक्षण हेतु उपयुक्त युक्तियों का चयन करके उनका प्रभावी शिक्षण हेतु यथासंभव प्रयोग किया जावे। वर्तमान समय का विद्यार्थी जीवन वैज्ञानिक तकनीकों के दौर से गुजर रहा है। अतः परम्परागत शिक्षण उसके लिए निरर्थक साबित हो रहा है। अतः प्रभावी अध्यापन के

लिए दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। नवीन पाठ्यचर्या समिति-2005 के अनुसार अब शिक्षण कार्य शिक्षण नहीं होकर सीखने की प्रक्रिया है। शिक्षक केवल मात्र एक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है। अतः शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए दृश्य सामग्री के रूप में- श्यामपट्ट, फलालैन पट्ट, लपेट फलक, चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, चार्ट, संग्रहालय, प्रतिकृति (मॉडल), पत्र-पत्रिकाएँ, एटलस, शैक्षिक भ्रमण, वास्तविक पदार्थ, कठपुतली तथा समय रेखा सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार दृश्य सामग्री में यांत्रिक सामग्री के रूप में चित्र विस्तारक यंत्र, प्रक्षेपण यंत्र, ओवर हेड प्रोजेक्टर, फिल्म स्ट्रिप प्रोजेक्टर, स्टिरियोस्केप, एपीडायस्कोप का प्रयोग किया जा सकता है।

ठीक इसी प्रकार श्रव्य सामग्री के रूप में रेडियो, ग्रामोफोन तथा टेपरिकॉर्डर का प्रभावी व उपयुक्त प्रयोग किया जा सकता है। दृश्य-श्रव्य सामग्री के रूप में दूरदर्शन, फिल्म, नाटक, संगणक, इंटरनेट, टेलीटीचिंग, मोबाइल एवं टेलीकॉन्फ्रेंसिंग का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रभावी अध्ययन में सम्प्रेषण नीतियों का प्रयोग- उपयुक्त शिक्षण युक्ति का प्रयोग करके प्रभावी अध्यापन के लिए उपयुक्त सम्प्रेषण नीति का प्रयोग आवश्यक है। शिक्षण के संगठन को प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इसमें सम्प्रेषण होता रहे। अर्थात् एक विचार का दूसरे के द्वारा ग्रहण करना। अतः शिक्षक पाठ्यवस्तु का विश्लेषण करके प्रकरण सम्बन्धी जानकारी कैसे छात्रों तक सम्प्रेषित की जाए या पहुँचाई जाए तथा सम्प्रेषण के लिए कौनसी युक्तियाँ अधिक उपादेय होंगी कौनसी नहीं। अतः शिक्षक को सभी सम्प्रेषण नीतियों का ज्ञान होना चाहिए तथा यथास्थान पर उपयुक्त युक्ति का प्रभावी प्रयोग किया जाए।

प्रभावी अध्यापन में उपयुक्त कक्षा का आकार-शिक्षण में कक्षा के उपयुक्त आकार अथवा अधिगम समूह का निर्णय महत्त्वपूर्ण होता है। प्रायः विद्यालयों में कक्षा का आकार बड़ा होता है। उसमें स्थान की अपेक्षा छात्रों की संख्या अधिक होती है। जिससे छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना सम्भव नहीं है। सर्वोच्च स्तर की प्राप्ति के लिए छात्र व शिक्षक का अनुपात नियत होना आवश्यक है।

निष्कर्ष– निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षण की व्यवस्था में दृश्य-श्रव्य सामग्री का विशेष महत्त्व है। इनके प्रयोग द्वारा छात्रों को ज्ञान की वास्तविकता का बोध होता है। अतः यथास्थान उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए। हाल ही में कोरोना महामारी के कारण विद्यालयों में शिक्षण कार्य बन्द रहा। लेकिन विद्यार्थियों के अपने घर से शिक्षण कार्य को जारी रखने हेतु विभाग द्वारा स्माइल, हवामहल, शिक्षा दर्शन, शिक्षा वाणी व शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण करवाया गया, जिसे विद्यार्थियों ने मोबाइल, टी.वी. व रेडियो के माध्यम से साझा किया। फीडबैक में इसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री के अतिरिक्त उपयुक्त नीतियों के चयन एवं उपयुक्त कक्षा आकार के चयन का ध्यान रखना चाहिए। ताकि प्रभावी अध्ययन से शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भाटून्द,
पाली (राज.)-306707
मो: 9460902092

शैक्षिक चिन्तन

विद्यालयी शिक्षा में समाजीकरण लैंगिंक समता के अवसर

❐ दिनेश कुमार गुप्ता

आमतौर पर विद्यालय और समाज के संबंध को एकतरफा रूप से देखा जाता है। यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षा के माध्यम से सभी प्रकार के परिवर्तन हो जाएँ लेकिन शिक्षा, समाज से अलग-थलग चलने वाली प्रक्रिया नहीं है। समाज में पूर्व-स्थापित मूल्य चेतना और वांछनीय मूल्य चेतना के बीच की खाई बच्चे के सीखने में भी द्वन्द्व उत्पन्न करती है। शिक्षा समाज की उप-व्यवस्था है जो कि समाज में उपस्थित मूल्य चेतना से अप्रभावित नहीं रह सकती। इसका आशय यह भी नहीं है कि शिक्षा की यह प्रक्रिया द्वन्द्व रहित हो जाएगी। बेहतर स्थितियों की प्राप्ति के लिए द्वन्द्व तो रहेगा ही लेकिन बेहतर स्थितियों की प्राप्ति में समाज का योगदान भी महत्त्वपूर्ण होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चा सोचने-समझने के तौर तरीके, मूल्य चेतना और यहाँ तक कि महसूस करने की क्षमता भी समाज से ही प्राप्त करता है। एक तरफ तो विद्यालय एक आधुनिक संस्था है जिससे यह उम्मीद की जाती है कि वह अपने छात्रों को न्यायसंगत एवं वृहत्तर विकल्प प्रदान करेगा। दूसरी ओर उसके सदस्य, जो इसी समाज की उपज हैं, अपनी पूर्वाग्रहयुक्त मान्यताओं एवं मूल्यों का असर अवश्य डालते हैं। ये मान्यताएँ व मूल्य लड़कियों एवं लड़कों के लिए भिन्न प्रकार के होते हैं; यहाँ तक कि ये परस्पर विपरीत भी होते हैं। भले ही इस प्रकार के समाजीकरण का खामियाजा सभी को किसी न किसी रूप में भुगतान पड़ता है परन्तु लड़कियों के लिए इसका असर अधिक प्रतिगामी दिखाई पड़ता है और समाजीकरण की खूबी भी यही है कि बहुधा उन्हें इसका अहसास भी नहीं होता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया : शिक्षा पर बच्चों के समाजीकरण का इतना गहरा और व्यापक दबाव रहा है कि शिक्षा को समाजीकरण के जरिए से अलग समझने में अक्सर समाज वैज्ञानिकों को दिक्कत होती है। लेकिन वास्तव में समाजीकरण वह सहज प्रक्रिया है जो इंसान के इस दुनिया में कदम रखने के बाद ही शुरू हो जाती है। बच्चा समाज में रहते हुए समाज के नियम-कायदों, विश्वासों, आस्थाओं, आचार-व्यवहारों और मूल्यों आदि को सीखता और आत्मसात् करता है- यही समाजीकरण है। बर्जर एवं लकमैन (1991) के अनुसार समाजीकरण दो प्रकार का होता है- प्राथमिक समाजीकरण एवं द्वितीयक समाजीकरण। एक बच्चे के जन्म के बाद उसके पारिवारिक सदस्य (माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी इत्यादि) उसके लिए 'सार्थक अन्य' की भूमिका निभाते हैं। बच्चे के समाजीकरण का दायित्व 'सार्थक अन्य' के ऊपर होता है। बच्चा नियम-कायदों, विश्वासों, अस्थाओं, आचार-व्यवहारों और मूल्यों आदि को 'सार्थक अन्य' से सीखता और आत्मसात् करता है जिससे उसकी एक पहचान का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त 'सामान्यीकृत अन्य (जिसमें समाज के अन्य लोग जैसे- पड़ौसी आदि शामिल है) भी बच्चे के समाजीकरण में अपनी भूमिका निभाते हैं। यही प्राथमिक समाजीकरण की प्रक्रिया है। बर्जर एवं लकमैन के अनुसार समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चा इतने सहज रूप से निष्क्रिय नहीं होता, लेकिन खेल के सारे नियम वयस्क ही तय करते हैं। द्वितीयक समाजीकरण संस्थागत भूमिकाओं को आत्मसात् करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत मनुष्य समाज में अपेक्षित भूमिकाओं को निभाने के लिए आवश्यक कौशलों को सीखता है। इस कथन को हम दुर्खीम के 'डिवीजन ऑफ लेबर' की संकल्पना के आलोक में देख सकते हैं। दुर्खीम (2008) के अनुसार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिससे उसके सदस्य उन सारी अवधारणाओं, विश्वासों एवं नियमों का निर्माण करते हैं जिससे वह समाज सुचारू रूप से कार्य कर सके।

विद्यालय में समाजीकरण : दुर्खीम के अनुसार कई समाज काफी जटिल हैं और वे टिके रहेंगे, लेकिन अगर वे वाकई टिके रहना चाहते हैं तो शिक्षा इसमें एक भूमिका निभा सकती है। कम-से-कम विद्यालय लोगों का समाजीकरण करने का काम तो कर ही सकते हैं। यहाँ उनका आशय यह नहीं है कि शिक्षा हर समाज में वास्तव में यही काम करती है और केवल यही काम वह कर सकती है, अपितु उनका मानना है कि अगर समाज को टिके रहना है तो शिक्षा को ये काम करना ही चाहिए। यहाँ दुर्खीम समाज की चली आ रही व्यवस्था को बनाए रखने के लिए शिक्षा का होना निहायत ही जरूरी मानते हैं; बल्कि उनका तो मानना है कि शिक्षा का काम ही इसे बनाए रखना है जो वह एक पीढ़ी के मूल्यों, विश्वासों तथा आस्थाओं को दूसरी पीढ़ी में संचारित करके करती है।

यदि समाज में कदम रखने वाले प्रत्येक प्राणी का समाजीकरण नहीं होगा तो इस दुनिया में रहना उसके लिए मुश्किल हो जाएगा। समाजीकरण 'जो है' उसे जानने-समझने और ग्रहण करने का मामला है। यह प्रक्रिया मानव में जन्म के साथ ही अचेतन रूप से प्रारम्भ हो चुकी होती है। जो है उसे जानने-समझने और ग्रहण करने भला किसी को क्या दिक्कत हो सकती है। परन्तु समाजीकरण सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है, वरन् इसमें यह अवधारणा निहित है कि 'जो है' अन्तिम सत्य और वांछनीय है और उसे ही बनाए रखना चाहिए। साथ ही जिन मान्यताओं, विश्वासों, नियम-कायदों और मूल्यों आदि को ग्रहण करने की बात की जाती है, उन्हें ऐसे देखा, समझा जाता है जैसे कि वे मानव समाज के उद्भव से ही अनवरत अपरिवर्तनशील रूप से चले आ रहे हैं। लेकिन शिक्षा अपनी प्रकृति से ही एक सचेतन प्रक्रिया है जो कि प्रश्न-प्रति प्रश्न पर टिकी रहती है और इसीलिए यह समाजीकरण से भिन्न है। प्रश्न-प्रति प्रश्न आलोचनात्मक चिंतन को जन्म देते हैं। और आलोचनात्मक चिंतन कभी भी यथास्थिति को स्वीकार करके नहीं चलता। विद्यालयी कक्षा के बारे में बातें करते हुए टॉलकॉट पार्सन्स (2010) कहते हैं; भविष्य में निर्धारित भूमिकाओं के लिए आवश्यक प्रतिबद्धता और क्षमता का विकास व्यक्तियों में करना

समाजीकरण का मुख्य प्रकार्य है। प्रतिबद्धताओं को प्रमुख अंगों में बाँटा जा सकता है। समाज के व्यापक 'मूल्यों' को क्रियान्वित करने की प्रतिबद्धता और समाज की संरचना में विशिष्ट प्रकार की भूमिकाओं के लिए प्रतिबद्धता... जहाँ, एक तरफ, विद्यालयी कक्षाएँ प्रतिबद्धताओं और क्षमताओं के विविध अंगों को विकसित करने वाली प्रमुख एजेंसी हैं वहीं दूसरी तरफ, समाज के परिप्रेक्ष्य से यह 'मानवशाक्ति' का वितरण करने वाली एजेन्सी है। शिक्षा और समाजीकरण के बीच एक अन्तर्संबंध को देखा जा सकता है परन्तु समाजीकरण की संकल्पना और शिक्षा की संकल्पना हमेशा आपस में मेल नहीं खाती। शिक्षा के द्वारा 'जो है' उसे जानने व समझने की बात तो सदैव की जाती है (जैसे कि समाजीकरण में की जाती है) लेकिन जो है उसी से संतुष्ट हो जाना शिक्षा का काम नहीं है। इसी प्रकार समाज की विकासमान अवधारणा भी समाजीकरण से भिन्न दृष्टिकोण रखती है। समाजीकरण से ऐसा प्रतीत होता है जैसे समाज किसी स्थिर अवस्था में रहता है, लेकिन मानव समाज की अभी तक के इतिहास को देखने पर ऐसा प्रतीत नहीं होता। यहीं प्रश्न उठता है कि यदि शिक्षा का काम समाजीकरण करना है तो फिर 'सामाजिक परिवर्तन' का कार्य किसका है?

शिक्षा और समाजीकरण में एक घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा को समाज से अलग करके नहीं देखा जा सकता। शिक्षा पर समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग का वर्चस्व रहता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य द्वितीयक समाजीकरण करना है और यह उद्देश्य तब-तक पूरा नहीं हो सकता जब तक एक विद्यार्थी को उसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में रखकर न देखा जाए। एक विद्यार्थी अपने साथ कक्षा में विश्वास, संस्कृति, विचार, मूल्य आदि लेकर प्रवेश करता है। स्कूल का कार्य उस विद्यार्थी के साथ काम करना होता है जिसका व्यक्तित्व काफी हद तक पहले ही बन चुका होता है। स्कूल के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि बच्चा अपने सामाजीकृत अन्तस् को विवेकशील एवं सशक्त रूप से बढ़ा सके।

लड़कियों का समाजीकरण तथा विद्यालयी अवयव : समाजीकरण की उपर्युक्त समझ के पश्चात् अब हम इस बात को जानने का प्रयास करेंगे कि लड़कियों के संदर्भ में द्वितीयक समाजीकरण अपनी भूमिका किस प्रकार निभाता है? पाठ्यचर्या, प्रच्छन्न-पाठ्यचर्या तथा शिक्षकों के दृष्टिकोण समाजीकरण की इस प्रक्रिया में किस प्रकार अपनी भूमिका निभाते हैं? समाज के दलित-वंचित एवं अल्पसंख्यक समुदाय के साथ पाठ्यचर्या के बर्ताव पर टिप्पणी करते हुए यंग, बर्न्सटीन एवं कैडी ने अपने शोध के आधार पर यह प्रतिपादित किया कि पाठ्यचर्या समाज के दबंग तबकों को वह जरिया मुहैय्या करवाती है जिसके सहारे वह अधीनस्थ समूह पर नियंत्रण कायम करते हुए अपनी बढ़त वाली स्थिति को बरकरार रखते हैं। आज दुनियाभर में इस विचार को तेजी से मान्यता मिल रही है कि जिस प्रकार राजनीति वर्गीय होती है उसी प्रकार शिक्षा भी वर्गीय होती है। इवान इलिच, पाउलो फ्रेरे, मार्टिंग कारनॉय, माइकल एप्पल एवं हैनरी गीरू आदि विद्वानों के शैक्षिक विमर्श में इसे साफ तौर पर देखा जा सकता है। इन्होंने अपने विमर्शों में वर्तमान शिक्षा पद्धति पर टिप्पणी करते हुए इसे कुल मिलाकर नकारात्मक प्रभाव वाली, मौन की संस्कृति रचने वाली तथा थोड़े से लोगों को बहुतों के जीवन पर नियंत्रण कायम करने में सहायता पहुँचाने वाली माना है। एफ.डी. यंग का मानना है कि समाज का शक्तिशाली वर्ग ही यह तय करता है कि किसे ज्ञान के रूप में लिया जाए। एप्पल का कहना है कि यही तबका किसी समूह से संबंधित ज्ञान को सबसे ज्यादा वैध और कार्यालयी ज्ञान के रूप में लिया जाए। एप्पल का कहना है कि यही तबका किसी समूह से संबंधित ज्ञान को सबसे ज्यादा वैध और कार्यालयी ज्ञान के रूप में मान्यता देता है एवं स्थापित करता है जबकि दूसरे तबके से संबंधित ज्ञान शायद ही प्रकाश में आता है।

शिक्षा को एक निरपेक्ष साधन नहीं माना जा सकता क्योंकि विद्यालय में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ कुछ विश्वास, मूल्यों, संस्कृति आदि को लेकर प्रवेश करता है और शिक्षक भी इसका अपवाद नहीं है। इसी प्रकार पाठ्यचर्या को भी निरपेक्ष रूप में नहीं देखा जा सकता। इस संदर्भ में मालिनी घोष (2002) का यह वक्तव्य तर्कसंगत प्रतीत होता है कि पाठ्यचर्या जिसमें विषयवस्तु भाषा, पाठ्यपुस्तक में दर्शाए गए चित्र शामिल है और इसी प्रकार अध्यापकों की समझ एवं दृष्टिकोण वह ताकत है जो पितृसत्तात्मक संरचना को और अधिक मजबूत करती है। एक शैक्षिक कार्यक्षेत्र 'घरेलू कार्यक्षेत्र' की तरह एक सीमित (बंद) कार्यक्षेत्र बन जाता है जहाँ भेदभाव सामान्य एवं शान्त है। इस संदर्भ में शिक्षकों के साथ हुए वार्तालाप से कई बातें सामने निकलकर आईं। वार्तालाप के दौरान कुछ ऐसे मुद्दे निकलकर आए जो विमर्श में देखने को नहीं मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर एक शिक्षक के अनुसार ''किसी चीज का नहीं होना भी एक बड़ा संदेश देना है। सामान्यतः स्कूलों में मनाए जाने वाले उत्सवों/जयंतियों में किसी महिला पात्र की अनुपस्थिति को देखा जा सकता है।'' शिक्षक की उक्त बात सच है कि विद्यालय में कई प्रकार के उत्सव मनाए जाते हैं जो किसी न किसी पुरुष से ही संबंधित होते हैं। सिवाय 'सरस्वती पूजा' के ऐसा कोई भी उत्सव नहीं मिलता जो किसी स्त्री रूप से संबंधित हो और सरस्वती पूजा का भी आयोजन स्त्री विमर्श की दृष्टि से इसलिए महत्त्वपूर्ण नहीं है क्योंकि यह मिथक के रूप में अधिक और इतिहास बोध के रूप में कम जाना जाता है।

संबोधन को भी शिक्षकों ने लैंगिक-पूर्वाग्रह को पुख्ता करने का जरिया बताया। उनके अनुसार लड़कों एवं लड़कियों को भिन्न रूप से संबोधित किया जाता है। जैसे कि- लड़कों को उनके नाम से या बेटा कहकर पुकारना, वहीं लड़कियों को बिटिया, गुड़िया आदि कहना जिसमें नाजुकता या कोमलता का भाव निहित है। एक अध्यापक के अनुसार ''स्वयं सरकार के द्वारा स्वीकृत या चलाई जा रही योजनाओं में इन नामों (लाडली, नन्हीं कली, लक्ष्मी आदि) को रखा गया है। हालांकि ये योजनाएँ लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बनाई गई है परन्तु उनमें इस्तेमाल की गई शब्दावली उनकी राजनीति को कुन्द कर देती है।''

आधुनिक समाज में सैद्धान्तिक रूप से महिलाओं की स्थिति और सहभागिता पुरुष के समान है। यह बात आधुनिक कथानकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया

जाता है। लेकिन अक्सर इसके लिए बहुत सजगता की जरूरत है। कृष्ण कुमार (1989) के शब्दों में ही कहें तो–लिंग आधारित पूर्वाग्रह वास्तव में अवचेतन में इतनी गहराई तक चला गया है कि परम्परागत विषयवस्तु विश्लेषण उसे बाहर निकालकर प्रदर्शित नहीं कर सकता। स्कूलों में बच्चों के ठहराव की समस्याओं को अक्सर स्कूल के बाहर स्थित कारणों में खोजने का चलन रहा है। यही वजह है कि इस विषय पर आयोजित तमाम अध्ययन उन आर्थिक–सामाजिक कारणों को ही केन्द्र में रखते हैं जिनसे वास्तविकता का आंशिक पक्ष तो उजागर होता है परन्तु परिघटना की पूरी तस्वीर सामने नहीं आती। बच्चों के ठहराव की समस्या भी मध्यमवर्गीय समस्या नहीं है। यह समस्या उन इलाकों समूहों और वर्गों के बच्चों की ज्यादा है जिनकी पहली पीढ़ी विद्यालयी शिक्षा में दस्तक दे रही है और इनमें भी दूरदराज के ग्रामीण इलाकों या अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के बच्चे एवं खासतौर पर लड़कियों के सन्दर्भ में अधिक गम्भीर है।

रोजमर्रा के विद्यालयी जीवन में औरतपन व मर्दपन को गढ़ने वाले व्यवहारों के प्रतिरूप लैंगिकता के छिपे हुए शिक्षाक्रम के लिए पृष्ठभूमि का काम करते हैं। ये प्रतिरूप एक तरह के नियम कायदे गढ़ते हैं। ये लैंगिक कायदे किसी खास विद्यालय के अंदर सभी सामाजिक अभिनेताओं के लिए 'लैगिक तौर पर वाजिब' व्यवहार के संकेतों को मुहैया करवाते हैं। विद्यालयी बच्चों के लिए, लैंगिक नियम–कायदों के 'सुरागों को तलाशने' में विद्यालय के अंदर सामाजिक मेलजोल के संदर्भों में लैंगिकता को देख–सुन कर समझना शामिल होता है। बच्चा अपनी लैंगिक पहचान को संस्थागत तौर पर विद्यालय की छोटी–सी दुनिया में 'लैगिक चश्में' की मदद से देखता है जो कि रोज–ब–रोज के विद्यालयी जीवन में आमतौर पर होने वाले व्यवहारों, रोजमर्रा के कामकाजों व रिवाजों से बनता है। लैंगिक समाजीकरण बेखबर विषयों पर लैंगिक नियम कायदों को 'कबूल कर लेने' से ही नहीं, बल्कि विद्यालय के लैंगिक नियम कायदों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी के जरिए भी होता है।

विद्यालय में लैंगिक समाजीकरण यह तय करता है कि लड़कियों को इस बारे में बताया जाए कि वे लड़कों से असमान या भिन्न हैं। हर समय विद्यार्थी सामाजिक–लिंग के आधार पर बैठते या पंक्तियों में खड़े होते हैं और शिक्षक इस बात की पुष्टि करते हैं कि लड़कों एवं लड़कियों के साथ भिन्न रूप से बर्ताव किया जाना चाहिए। एक शिक्षक ने यह रोचक जानकारी दी कि उनके तथाकथित सह–शिक्षा विद्यालय में लड़कों एवं लड़कियों के अलग–अलग अनुभाग बनाए गए थे। यहाँ पर सरकार की तरफ से भी समाज के इस संदेश को पुख्ता किया जा रहा है कि एक निश्चित समय ही लड़कियों के घर से बाहर रहने के लिए उपयुक्त है। वार्तालाप में सजा का प्रारूप भी एक मुद्दा उभरकर आया जो लैंगिक विभेद को जन्म देता है। हालांकि शारीरिक दंड को कानूनी रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। फिर भी आमतौर पर इसका उपयोग विद्यालयों में कुछ स्तर पर अभी भी किया जाता है। एक शिक्षक के अनुसार लड़कियों एवं लड़कों को दी जाने वाली सजा के प्रारूप में भी भिन्नता देखने को मिलती है। उनके अनुसार लड़कियों को कुछ प्रकार के व्यवहारों से इसलिए दूर रखा जाता है क्योंकि उन्हें नाजुक व कमजोर समझा जाता है। (इससे मुझे अपना बचपन का स्कूल याद आता है जहाँ लड़कों को अध्यापक द्वारा दण्ड के रूप में मुर्गा बना दिया जाता था वहीं लड़कियों को खड़े होने या ज्यादा से ज्यादा कुछ समय के लिए हाथ खड़े करने की सजा मिलती थी।)

भूमिका निर्वाह को भी लैंगिक रूढ़िबद्धता के साथ देखा जा सकता है। बातचीत में यह बात सामने आई कि किसी खास कार्य के लिए लड़कों को ही और अन्य के लिए लड़कियों को बुलाया जाता है। उदाहरण के लिए अगर गमला या कोई अन्य भारी सामान उठाना है तो लड़कों को बुलाया जाता है, वहीं अगर कार्य स्वच्छता का हो, रंगोली बनाना हो, कक्षा को सजाना हो, सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, स्वागतगान हो तो लड़कियों को इसका जिम्मा सौंपा जाता है। किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपलक्ष्य में स्वागत करने वाली लड़कियाँ भी कौन व कैसी होंगी इसका पैमाना भी उस लैंगिक–रूढ़िबद्धता को दर्शाता है। जिसमें लड़कियों को सुन्दरता के संकुचित मापदण्डों पर खरा उतरना होता है। ऐसे कार्यक्रमों में लड़कियों को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाता है न कि उनके कार्य को और स्वयं उन पर भी यह दबाव रहता है कि वे इस छवि में ढलें या इसके मापदण्डों का वर्चस्व स्वीकार करें। एक शिक्षक के अनुसार ''हमारे विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए छात्राओं को चुनने का कार्य एक महिला शिक्षक करती है और इससे यही साबित होता है कि स्वयँ महिलाएँ भी अपना आकलन पुरुषों की दृष्टि से करती हैं।''

कई शिक्षक खेल के मैदान को एक ऐसा स्थल मानते हैं जो प्राथमिक समाजीकरण के मूल्यों एवं मान्यताओं को और अधिक पुख्ता करता है। यह देखने में आया है कि खेल के मैदान पर अक्सर लड़कों का कब्जा रहता है जिसे प्राकृतिक तथ्य के रूप में मान्यता मिली हुई है। इस बात की चेष्टा नहीं की जाती कि कम से कम विद्यालय में तो लड़के एवं लड़कियों दोनों को खेलने के समान अवसर मिलें। बल्कि विद्यालय प्रांगण में भी खेलों का लैंगिक आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। इसका उदाहरण इस रूप में देखा जा सकता है कि किसको कौन–कौन से खेल खेलने को प्रोत्साहित किया जाता है। यह देखने में आता है कि खुले मैदान में खेले जाने वाले खेल खेलने का अवसर लड़कियों को नहीं दिया जाता है वरन् उनसे उम्मीद की जाती है कि वो 'लड़कियों वाले खेल' खेलें। अक्सर शिक्षकों का आपसी व्यवहार भी लैंगिक–पूर्वाग्रह को पुख्ता करता है। शिक्षक विद्यालय में कौन–कौन से प्रशासनिक दायित्व निभाते हैं? उदाहरण के तौर पर कौन बाहर का कार्य करेगा? अनुशासन की जिम्मेदारी किसकी होगी? सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन कौन करेगा? विज्ञान–मेला या विद्यालय के किसी उत्सव में 'खाने–पीने' का स्टॉल कौन लगाएगा? कार्य का बंटवारा विद्यार्थियों में कहीं न कहीं यह संदेश देता है कि कार्य विभाजन एवं भूमिका निर्वाह का एक निर्णायक आधार लैंगिक असमानता है। यहाँ पर विद्यालय अवलोकन की एक परिघटना की चर्चा करना रोचक होगा। ऐसी स्थितियों में भी जहाँ महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों की तुलना में औसतन अधिक आर्थिक रूप से सम्पन्न पृष्ठभूमि से हैं वहाँ यह तथ्य रोचक था कि जहाँ एक तरफ अधिकतर पुरुष विद्यालय आवागमन

के लिए अपने निजी वाहन का उपयोग करते हैं वहीं दूसरी ओर ऐसा करने वाली महिलाओं की संख्या न के बराबर है। (कुछ महिला शिक्षक जो निजी वाहन का इस्तेमाल करती भी हैं वो ऐसा यात्री की भूमिका में कर पाती हैं न कि चालक की भूमिका में!)

बातचीत के आधार पर मोटे तौर पर विद्यालयों में लड़कियों के समाजीकरण को निम्नलिखित संकेतकों के माध्यम से देखा जा सकता है- वर्ग विशेष की उपस्थिति-अनुपस्थिति; शिक्षकों का व्यक्तिगत संबोधन-व्यवहार, नीतियों में व्यक्त रूढ़िबद्धता, विद्यालयी जीवन में सांस्कृतिक मंच व खेल के मैदान के अवसर, विद्यार्थियों में रुढिबद्ध भूमिका निर्वाह को प्रोत्साहन, शिक्षकों की आपसी भूमिका व परस्पर व्यवहार, लैंगिक अलगाव, यौन हिंसा आदि।

उपसंहार : इस बात के भी प्रमाण देखे जा सकते हैं कि लड़कों के बजाय लड़कियाँ अकादमिक रूप से सफल रहती हैं। पिछले कई वर्षों की बोर्ड परीक्षाओं के परिणामों से यह प्रतीत हो सकता है कि स्कूलों में लड़कों एवं लड़कियों का समाजीकरण लैंगिक समानता के आधार पर हो रहा है। पर इस तथ्य को लैंगिक समानता के लिए संतोषजनक मान लेना भ्रम में रहना मात्र होगा वरन् यहाँ यह देखना आवश्यक है कि उच्च परिणाम प्राप्त करने के पश्चात् भी लड़कियों के व्यक्तित्व का निर्माण किस प्रकार हो रहा है? लैंगिक विभेद अस्पष्ट रूप से कक्षा के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों के चुनाव के द्वारा भी पढ़ाया जाता है। महिलाओं के योगदान को छोड़ने वाले पाठ इस्तेमाल करना और रूढ़िबद्ध लैंगिक भूमिका ये सब लैंगिक भेदभाव को विद्यालय की पाठ्यचर्या में शामिल करते हैं। शोध यह दर्शाते हैं कि लैंगिक-न्यायसंगत साधन विद्यार्थियों में अधिक लैंगिक-संतुलन के ज्ञान को बढ़ाते हैं। लैंगिक भूमिका के प्रति दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित करने के लिए और भूमिका-व्यवहार को अनुकरणीय बनाने क लिए विद्यालय लैंगिक-विभेदीय पाठ को जारी रखता है। स्पष्टतः लैंगिक भूमिका का समाजीकरण एवं लैंगिक-पूर्वाग्रहयुक्त प्रच्छन्न पाठ्यचर्या लड़कों एवं लड़कियों के लिए एक असमान शिक्षा को बढ़ाते हैं। सब बच्चों के लिए एक समान अधिगम का माहौल बनाने के लिए क्या परिवर्तन किए जाने चाहिए? पहला, शिक्षकों को लैंगिक-पूर्वाग्रह की प्रवृत्ति के प्रति सचेत किया जाना चाहिए। दूसरा, उन्हें इस व्यवहार को परिवर्तित करने के लिए सहायता (सामग्री, प्रशिक्षण आदि) प्रदान की जानी चाहिए और इस बात के प्रयास किए जाने चाहिए कि शैक्षिक सामग्री लैंगिक पूर्वाग्रह से मुक्त हो।

लिंग-भेद के आधार पर समानता के अवसर सुलभ हों, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शैक्षिक अवसरों की समानता और महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया गया है। इसके परिणाम स्वरूप पाठ्यचर्यागत कार्यनीतियों में परिवर्तन लाने की कोशिश भी की गई है जो हमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अन्तर्गत तैयार की गई पाठ्पुस्तकों में देखने को मिलती है परन्तु जैसा कि हम पहले भी जिक्र कर चुके हैं, यही पर्याप्त नहीं है। पाठ्यपुस्तकों को सिर्फ लैंगिक संदवेदनशीलता दर्शाने वाली बना देने से काम खत्म नहीं हो जाता अपितु यह तो कार्य की शुरुआत भर है। अधिक से अधिक बालिकाओं के लिए शिक्षा सुलभ कराने के अतिरिक्त विद्यालयी पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों और उन्हें पढ़ाने की प्रक्रिया में भी सभी प्रकार के लैंगिक भेदभाव और लैंगिक पूर्वाग्रहों को दूर करना अत्यावश्यक है। शिक्षकों से भी यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वे अपने सभी विद्यार्थियों की, चाहे वे लड़के हों या लड़कियाँ, श्रेष्ठतम विशेषताओं को पहचानें व मानें, साथ ही उन्हें समान रूप से पोषित करें। जरूरत इस बात की है कि लड़के व लड़कियाँ दोनों को ही ध्यान में रखकर ऐसी प्रभावशाली पाठ्यचर्या, कार्यनीति व सीखने-सिखाने के तरीके विकसित किए जाएँ जो समान रूप से सक्षम, एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील लड़के-लड़कियों की पीढ़ियों का निर्माण करें।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)-322201
मो: 09462607259

कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं।
जीता वही जो डरा नहीं।।

भारत माता

❐ कान्ता चाड़ा

भारत माता की जय
भारत माता की जय
कहाँ बसती कहाँ रहती कौन भारत माता है
भारत के छोटे से गाँव में खेतों में खलिहानों में
हल चलाती धान कूटती
करोड़ों जन-जन की खातिर
बाग लगाती अन्न जगाती
श्रम की आभा से झिलमिल
वो हीरे मोती निपजाती वही तो भारत माता है।
सड़क किनारे धूप में बैठी
चोट-चोट में रोड़ी कूटती
रोड़ी कूटती रेत उठाती
अपने नन्हे को झौली में
यहाँ-वहाँ कहीं भी डाले
श्रम के पैसे है गिनती
शाम को घर का चूल्हा जलाती
परिवार का पेट पालती
वही तो भारत माता है
विद्यालय में खड़ी बहन जी
क ख ग घ सिखा रही
ज्ञान की पोथी बांच रही
पैनी-पैनी छैनी की चोट से
बालक का जीवन है गढ़ती
वही तो भारत माता है।
वो पहाड़ों पर चढ़ जाती है
रस्सी से झूल जाती है
बर्फीले तूफानों में भी नहीं रूकती नहीं थमती
ऐवरेस्ट पर तिरंगा फहराती
हौंसलो को सलाम करती वही तो भारत माता है।
अंतरिक्ष की कल्पना वो चाँद तारों में रहती थी
संग-संग उनके चलती थी
चिन्दी-चिन्दी न्यौछावर हो गई
अंतरिक्ष में ही समा गई
समाधि उसकी हमारे दिलों में बस गई
वही तो भारत माता है।
भारत की माटी, पहाड़, जंगल
गंगा-जमना त्रिवेदी के धारें
घाट किनारे लगते प्यारे
मन्दिर, मस्जिद, काशी, गुरुद्वारे
धर्म संस्कृति के रखवारे
तूँ ही तो भारत माता है
मैं भी भारत माता हूँ
कोटि-कोटि जन-गण-मन गायें
भारत के अखण्ड भू-तल में जन-जन भारत माता है।

अध्यापक नगर निगम के सामने
हनुमान हत्था, बीकानेर **मो. 9782533208**

हिन्दी विविधा

समय का मोल

❒ विमला नागला

इन्द्रवन वन में भयंकर गर्मी पड़ती थी। इस बार तो, गजब की ही गर्मी थी और भंयकर लू के थपेड़े। धरती दिन चढ़ते-चढ़ते तो तवे सी तपने लगती। चीकू की मम्मी ने इस बार की गर्मी की छुट्टियों में अपनी बहिन के यहाँ जाने का प्लान बना लिया। वह उत्तराखंड में स्थित सुखवन में रहती थी। वहाँ का मौसम बहुत सुहावना रहता।

बस फिर क्या, छुट्टियाँ होते ही उसी रात की ट्रेन से ही उनका जाना तय हो गया था। चीकू की मम्मी ने तो अचानक सुबह ही सरप्राइज देते हुए बोला.... चीकू बेटा, जल्दी से सामान पैक कर लो, आज रात की ट्रेन से हम मौसी के यहाँ जा रहे हैं।

क्या....? हम सुखवन जा रहे हैं और वो भी आज। वाह.... ग्रेट सरप्राइज माँ, रियली लव यू माँ, चीकू माँ से भागकर लिपट गया। मौसी और मीकू से मिलने की खुशी में चीकू के पाँव जमी पर ही नहीं पड़ रहे थे। मीकू उसका हम उम्र था। दोनों में बहुत ज्यादा प्रेम था। वाह! मम्मी पापा और चीकू साथ-साथ खूब मजे करेंगे। माँ... वैसे भी पापा काम से बहुत विजी रहते हैं, चीकू खुशी से बोला। जब मम्मी से पता चला कि पापा को जरूरी काम होने से इस बार हमें अकेले ही जाना पड़ेगा। चीकू को पापा के बिना जाना बिल्कुल ठीक नहीं लग रहा था, पर मीकू और मौसी की याद आते ही उनसे मिलने की खुशी से वह झूम उठा।

चीकू! बेटा जल्दी से अपना सामान पैक कर लो, और हाँ ध्यान रखना सामान कम से कम ही पैक करना ताकि हमें सफर में परेशानी न हो।

जी माँ, कहकर चीकू भागते-नाचते, गाते-गुनगुनाते सामान पैक करने लगा। उसे इतना खुश देख मम्मी-पापा बहुत खुश हो रहे थे।

बेटा! सामान पैक हो गया हो तो, पहले नाश्ता कर लो।

बस मम्मी थोड़ी देर रूको न प्लीज.. चीकू ने कहा।

नाश्ता ठंडा हो रहा था, इसीलिए मम्मी नाश्ता लेकर चीकू के कमरे में ही पहुँच गई।

ओहह.. चीकू! यह क्या मना करने पर भी तुमने जरूरत से ज्यादा सामान बैग में भर लिया और ऊपर से यह क्या-क्या ठूंस रहे हो.. मम्मी ने थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए कहा, 'निकालो इन्हें बाहर, फालतू कोई भी सामान नहीं रखना और सुनो ओनली एक ही बैग पैक करना है तुम्हें।

जी मम्मी, कहकर चीकू पहले नाश्ता करने बैठ गया और मम्मी के जाते ही सामानों की छँटनी करने लगा। परन्तु फिर भी उसे जो बहुत जरूरी लगा चुपचाप जमा लिया।

शाम को ही पापा उनको लेकर रेल्वे स्टेशन के लिए निकल गए क्योंकि उनके वहाँ से स्टेशन थोड़ा दूर था। वहाँ पहुँच कर पता लगा कि ट्रेन भी राइट टाइम है। रिजर्वेशन ए.सी कोच में था। पापा ने ट्रेन में तो बैठा दिया पर अकेले जाने के कारण बहुत सारी हिदायतें भी दी। रात गहराने लगी, दोनों आराम से सो गए। सुबह होते-होते वो सुखवन रेल्वे स्टेशन पर पहुँच गए। वहाँ मौसी और मीकू कार लेकर उनको लेने आ गए। मीकू को देखते ही चीकू खुशी से उछल गया। दोनों गले मिले और मम्मी और मौसी भी मिलकर बहुत खुश थे। मौसी को कार चलाते देख तो उन दोनों को बहुत अच्छा लग रहा था। चीकू पहली बार इतने बड़े शहर में आया। वह तो उचक-उचक कर खिड़की से बाहर देखकर रोमांचित हो रहा था। मौसी का घर बहुत सुन्दर था। चारों तरफ पहाड़ व घर के पीछे कल-कल बहती नदी। चारों तरफ बड़े-बड़े देवदार के पेड़। उसे वहाँ के प्राकृतिक दृश्य बहुत अच्छे लगे। दिन भर आराम करने के बाद शाम को सब घूमने निकल पड़े। बहुत सुन्दर स्थान देखे। म्यूजिकल फाउंटेन और प्राकृतिक झरने देख तो चीकू ताली बजा बजाकर उछल रहा था। मौसी ने उसे प्यार करते हुए कहा... बेटा! हम इसी तरह रोज नई-नई जगह चलेंगे।

वाह! मौसी आपका शहर तो सचमुच स्वर्ग सा है। शानदार पहाड़ी इलाका था। चारों तरफ सुन्दर-सुन्दर झरने, फूल पौधे देख चीकू बहुत खुश हो सबकी फोटो और अपनी सेल्फी ले रहा था। वह हर पल को अपने लिए यादगार बना रहा था। मौसी ने उसे स्ट्राबेरी, खुबानी और लीची खाने को दी। उसे यहाँ के फल बहुत अच्छे लगे। दिनभर सब घूम-घाम कर शाम को घर आ गए। खाना खा-पीकर सब टी.वी के आगे बैठ गपशप करने लगे। चीकू अपने कमरे में चला गया। बहुत देर हो गई उसे जब वह बाहर नहीं आया तो मीकू ने सोचा थककर सो गया होगा। वह उसके पास पहुँचा... ओहह! यह क्या... आश्चर्य से मीकू देखता ही रह गया।

चीकू बैठा अपनी डायरी में कुछ लिख रहा था। पास में कुछ बुक्स और पेपर रखे थे। अरे भाई... क्या लिख पढ़ रहे हो, कल कोई पेपर देना है.. हँसते हुए मीकू बोला।

अरे नहीं यार, मैं अपनी डायरी लिख रहा हूँ। मैंने आज दिन भर में क्या-क्या किया और क्या-क्या देखा।

ओह!... इसको लिखने की क्या जरूरत है, हम कल फिर दूसरी जगह चलेंगें...

मेरे प्यारे मीकू, इसकी जरूरत सच में है। देखो, हमारे हिन्दी के सर, हर शनिवार को नई-नई प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाते हैं। जब सर यात्रा वृत्तांत की प्रतियोगिता करवाएँगे, तब देखना मैं ही प्रथम आऊँगा। यह सब बातें लिखकर और यदि डायरी में नोट नहीं करूँगा तो मैं सब भूल जाऊँगा न।

ओके... ओके यह ठीक है परन्तु यह बुक्स... तुम्हें पढ़ाई से छुट्टियों में भी चैन नहीं, वैसे ही अव्वल आते हो अब कौनसी पोजीशन लाओगे। मीकू अपनी ही धुन में बोले जा रहा

था। तभी बात काटता चीकू बोला... बस यार वो खास उपहार मिल जाए।

खास उपहार... ओह तेरे लिए खास उपहार लेकर कोई परी आएगी क्या ... हँसते हुए मीकू बोला।

नहीं भाई... यह बात नहीं हैं... सुन मैं हवाई यात्रा करूँगा तो वह बड़ा और खास उपहार नहीं होगा क्या...?

क्या...? हवाई यात्रा... वो कैसे मीकू अचरज से बोला।

भाई मीकू, हमारे इन्द्रवन के महाराज शेरसिंह जी बहुत विद्वान व नेकदिल हैं। वह प्रतिभाशाली जानवरों के लिए प्रतिवर्ष नए-नए उपहारों की घोषणा करते हैं। इस बार उन्होंने तीन सबसे प्रतिभाशाली जानवरों को राजकोष से हवाई यात्रा कराने के 'खास उपहार' की घोषणा की। इस कारण, इस बार सभी छुट्टियों में पुस्तकालय से लेकर खूब पुस्तकें पढ़ रहे हैं और इसके साथ ही हर क्षेत्र में मेहनत करने में अपना दमखम लगा रहे हैं।

अरे वाह! यह तो बड़ा मजेदार कॉम्पीटिशन है... इससे तो सभी खूब मेहनत करेंगे और बुक्स भी पढ़ेंगे। सच यह तो छुट्टियों का अच्छा उपयोग भी है यार। चीकू की मम्मी भी उनकी बातें सुन रही थी... वह चीकू को प्यार करती बोली... तो यह बात है, चुपके से बुक्स लेकर आने की।

सच बैटा! तुम सचमुच प्यारे से व समझदार बच्चे हो, समय अनमोल होता है और जो बच्चे अवसर को पहचानते हैं, वे ही सचमुच जीवन में ऊँची उड़ान भरते हैं और जिनकी हौंसलों की उड़ान मजबूत होती है न तो सममुच उन्हें आसमान की उड़ान 'खास उपहार' में जरूर मिलती है। सभी बच्चों को तुम्हारी तरह ही पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर गर्मियों की छुट्टियों में जरूर पढ़नी चाहिए। पुस्तकें जीवन की सबसे अच्छी व सच्ची दोस्त होती हैं।

चीकू, इस बार तुम हवाई यात्रा का खास उपहार जरूर जीतोगे। मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा और मैं भी बुक्स पढ़ूँगा। मीकू खुश होते हुए बोला और दोनों ताली मार हँसते हैं।

15 दिव्यांशालय राजपुरा रोड़, सुन्दर कॉलोनी,
केकड़ी, अजमेर (राज.)
मो: 9214960689

हिन्दी विविधा

विश्वास की कड़ी

❐ सीमा पोपली

आप अभी तक यहीं बैठे हैं, फोन किया या नहीं-पत्नी संगीता बोली। नहीं.. मैने बोला।

क्यों?

अरे क्या सोच रहे हो? मैं तो कहती हूँ, उनको बस सूचना दे दो की हमें होमटाउन आने की परमिशन मिल गई हैं हम सब परसों गाँव आ रहे हैं - संगीता बोली।

मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम्हें यहाँ क्या तकलीफ है?

कोई एक हो तो बताऊँ।

इस दो कमरे के मकान में हम एक महीने से कैद हैं। मेरा तो यहाँ दम घुट रहा है। ऊपर से जो सामान लाते हैं, उसे धोओ फिर दिन में 10 बार हाथ धोओ और तो और मैड सर्वेंट का सहयोग भी नहीं है, ऑफिस की कॉल अटेंड करो सो अलग, संगीता ने अपनी सारी दिक्कते एक ही सांस में कह डाली।

पर मैं अभी भी माँ को फोन करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

संगीता के बार बार आग्रह करने पर माँ को फोन लगाया लम्बी घंटी के बाद उधर से माँ की आवाज़ आई।

हेलो... नरेंद्र बेटा मैं माँ बोल रही हूँ।

हाँ... माँ मैं नरेंद्र बोल रहा हूँ चरणस्पर्श करता हूँ।

हाँ... खुश रहो बेटा कैसे हो।

माँ मैं बिल्कुल ठीक हूँ आप कैसी हो।

ठीक हूँ बेटा।

माँ वो यहाँ कोरोना बीमारी के चलते कई दिनों से कर्फ्यू लगा हुआ है। सभी कार्यालयों में वर्क फ्रॉम होम हो गया है मेरा मतलब घर पर रह कर ही काम करना है मैं सोच रहा था कुछ दिन परिवार को साथ ले के आपके साथ रह लूं।

हाँ, हाँ, क्यों नहीं बेटा, ये तो तूने बहुत अच्छा सोचा।

तो ठीक है माँ, मैं परसों शाम तक कार से घर पहुँच जाऊँगा।

ठीक है बेटा मैं इंतज़ार करुँगी। मैंने फोन काट दिया।

फोन कट होते ही संगीता ने पूछा कि माँ ने क्या कहा।

माँ ने कहा है कि आ जाओ... मैंने बोला।

तो बस सामान लगभग पैक है, हम परसों सुबह जल्दी ही निकल चलेंगे... संगीता बोली।

दो दिन झट पट निकल गए।

दूसरे दिन शाम को हम गाँव पहुँच गए।

माँ दरवाजे पर इंतज़ार ही कर रही थी।

दादी, दादी, कहते हुए मेरे दोनों बेटे धीरज और नीरज दादी से लिपट गए।

हम दोनों ने भी माँ के चरण स्पर्श किए। ढेर सारे आशीर्वाद के साथ माँ प्यार से बोली- चलो हाथ मुँह धोलो, भूख भी लगी होगी, खाना तैयार है। जल्द ही हम फ्रेश होकर रसोई के बाहर बने हुए बरामदे में आ गए। खाने में बच्चों की पसंद की चाऊमीन, आलू के चिप्स साथ में पिज्ज़ा भी था। मेरी थाली को तो मैं निहारता ही चला गया खीर, आलू की सब्जी, पूरी, हरी मिर्च का आचार ढेर सारी सब्जियों से भरा पुलाव...

आँखों में आंसू आ रहे थे। दिल में सवाल भी थे, रोज रेस्टोरेंट की कड़ाई पनीर, डोमिनोस का पिज्ज़ा या बाई के हाथ की दाल और तेज रफ्तार की जिन्दगी मैंने क्या खोया, क्या पाया।

नरेंद्र बेटा, क्या सोच रहा है? खाना शुरू कर, माँ की आवाज़ से मैं चौंका।

हाँ माँ कहते हुए मैंने खाना शुरू कर दिया और भर पेट खाया। खाना खाने के बाद थके होने के कारण हम जल्द ही सोने चले गए।

सुबह माँ की आवाज़ से ही नींद खुली। बेटा नरेन्द्र....।

हाँ माँ कहते हुए मैं कमरे से बाहर आया।

बेटा वैसे तो काफी सामान घर पर है परन्तु बंसी बाजार जा रहा है बच्चों को और बहू को कुछ सामान चाहिए तो इसे बता दे ये ले आएगा।

जी माँ कहते हुए मैं वापिस कमरे में लौटा और संगीता को उठाकर पूछा तुम्हें कोई सामान चाहिए तो बता दो।

हाँ सामान तो चाहिए परन्तु बाजार सामान लेने आप जाना।

क्यों?

मैंने कह दिया ना बस आप ही... मैंने उसकी बात बीच में ही काटी तुम जानती हो ना

में अभी 18 दिन घर से बहार नहीं जा सकता।

मुझे नहीं पता अब आप ही देख लो कैसे करना है?

लेकिन आखिर क्यों?

देखो वो बंसी सामान लेने जाएगा, ना जाने वो कितनी एतिहात बरतता है अगर वो कोरोना ग्रसित हो गया तो हम सब फंस जाएँगे।

संगीता तुम भी न क्या क्या सोचने लगती हो। पहले भी तो वही जा रहा था।

पहले की बात और थी अब आप हो, मैं हूँ, बच्चे भी हैं, आप तो कुछ सोचते नहीं हो।

अच्छा बाबा तुम जीती मैं हारा कहते हुए मैं कमरे से बाहर आ गया।

बाहर आते ही मैंने देखा आँगन में बंसी मेरा इंतजार कर रहा था। भैया जी कुछ सामान लाना है... वो बोला।

हाँ लाना तो है, माँ सुन नहीं ले इसलिए मैं उसे बहाने से घर के बाहर ले आया, बाहर आने के पश्चात् मैं उसे बोला कि थैला मुझे दे दो सामान मैं ले आऊँगा।

ठीक है भैया जी, लेकिन हाँ आप यहाँ आइए कहते हुए वह मुझे सामने रखी हुई एक अलमारी के पास ले गया। अलमारी खोलकर उसने मुझे कुछ सामान दिया... ये लो भैया जी नया मास्क इसे मुँह पे लगाना है ये दस्ताने भी ले लो और हाँ ये छोटी शीशी इस से बार-बार हाथ भी धोने हैं। मैं उसे निहारता चला गया और वो बोलता चला गया। देखो भैया जी, वो जो सामने पानी की टंकी है ना सामान लाकर पहले वहाँ रखना है, उसे धोना है, फिर कुछ देर धूप में भी रखना है, वहीं से पानी लेकर खुद भी अच्छे से हाथ मुँह धोना है, फिर घर के भीतर आना है।

हाँ भैया जी, बड़ी बेटी हिमानी ने मुझे समझाया है ये सब जरूरी है करना।

अच्छा और क्या बताया है... उस ने बताया है कोरोना बीमारी के चलते यह सब करना होगा और हाँ अगर हमें कोरोना हो भी गया तो हम फिर भी बच सकते हैं क्यूकिं हमारी उमति ठीक है। अरे उमति नहीं इम्युनिटी मैंने उसे बीच में टोका... हाँ हाँ भैया जी वही।

पर हिमानी कहती है अम्मा जी कमजोर हैं, वृद्ध हैं, साथ में उनको सांस की थोड़ी तकलीफ भी है, उनके लिए ये ऐतियात बरतना जरूरी भी है और कभी-कभी तो हिमानी मेरे साथ बाजार भी जाती है। दुकान पर जाकर लोगों को इस कोरोना बीमारी के बारे में बताती है। दुकान के बाहर चॉक से गोले लगाकर दूर-दूर खड़ा रहने को भी कहती है, उसकी बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि मैंने थैला उसके हाथ में थमा दिया और साथ-साथ सामान की पर्ची भी।

क्या हुआ भैया जी... वो बोला।

कुछ नहीं तुम ही सामान ले आओ, वो चला गया।

उसके जाने के बाद मैं घर के अंदर आया परन्तु ज्यादा अंदर ना जाकर दरवाजे के पास बनी हुई छोटी दरसाल से पास के घर में चला गया। आँगन में बंसी की पत्नी बैठी सब्जी काट रही थी। अचानक मुझे वहाँ देखकर वह थोड़ी सक-पका गई।

कुछ चाहिए था भैया जी।

नहीं, वो मुझे हिमानी बिटिया से मिलना था।

भैया जी वो यहाँ नहीं है, अम्मा जी के पास वाले कमरे में रहती है। शायद! अभी पढ़ रही होगी, बुलाऊँ क्या उसे? ... वो बोली।

नहीं, आप काम करो मैं उससे वहीं मिल लूँगा कहते हुए मैं घर के भीतर आ गया। माँ के पास वाले कमरे के बाहर खड़े होकर मेने आवाज लगाई हिमानी... आवाज़ के साथ ही कमरे के बाहर आई एक कोमल, प्यारी सी 16-17 साल की लड़की।

क्या तुम्हारा नाम हिमानी है?

हाँ भैया जी...

क्या मैं तुम्हारे कमरे में आ सकता हूँ?

हाँ, हाँ भैया जी आइए ना।

मैं भीतर कमरे में उसके साथ चला आया।

साफ सुथरा कमरा पीछे की खिड़की से तेजी से छनती धूप आशा का प्रकाश बखुबी बिखेर रही थी। पास मैं रखी कुर्सी खीच कर मैं उस पे बैठ गया।

वार्तालाप का सिलसिला हम दोनों के बीच मैंने शुरू किया और वह एक मेधावी छात्रा के रूप में हर प्रश्न का जवाब देती गई।

तुम कौनसी कक्षा में पढ़ती हो?

बारहवीं कक्षा में आई हूँ।

क्या सब्जेक्ट है तुम्हारे पास?

आर्ट्स.. वह बोली।

अच्छा अभी कैसे पढ़ाई कर रही हो? अपने आप? मेरा मतलब सेल्फ स्टडी।

हाँ पढ़ाई तो वैसे ही कर रही हूँ परन्तु सहयोग सबका है।

किसका?

भैयाजी हमें स्माइल प्रोग्राम और शिक्षा दर्शन कार्यक्रम के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है, बच्चों को व्हाट्सएप्प पर ग्रुप बना कर जोड़ा गया है। जिसमें प्रत्येक दिन पाठ से सम्बधित लिंक भेजा जाता है, यू-ट्यूब के माध्यम से हम उसमें पढ़ाए गए टॉपिक को पढ़ते हैं और हाँ भैयाजी अब तो डी.डी. राजस्थान से टी.वी. पर भी घर बैठे पढ़ाया जा रहा है। रेडियो पर शिक्षा वाणी कार्यक्रम भी सरकार द्वारा चलाया जा रहा है और हाँ स्कूल के टीचर भी अपने अथक प्रयासों के माध्यम से हमारी पढ़ाई में सहयोग कर रहे हैं।

तो तुम स्मार्ट फोन का उपयोग कर रही हो।

हाँ भैयाजी।

अच्छा 2 मिनिट रुको मैं अभी आता हूँ... मैं झटपट अपने कमरे में गया वापस आया तो मेरे हाथ में मेरा लैपटॉप था, मैंने लैपटॉप उसकी तरफ बढ़ा दिया ये लो अब तुम अपनी पढ़ाई में इसका इस्तेमाल करना, वह थोड़ा सा हिचकिचाई और बोली भैयाजी ये तो बहुत महँगा है।

अरे सायानी बिटिया यह महँगा जरूर है लेकिन तुम्हारी पढ़ाई से ज्यादा नहीं... इसे चलाने में कोई दिक्कत आए तो तुम बेझिझक मेरे से पूछ लेना... ठीक है न कहते हुए मैं कमरे से बाहर आ गया।

आँगन में माँ को बैठा पाया, मैंने माँ का हाथ अपने हाथों में ले लिया, उसकी आँखों में प्यार और विश्वास था। वैसा ही विश्वास जैसा कुछ क्षण पहले बंसी की आँखों में मैंने महसूस किया था। माँ ने मेरे चेहरे को लाड प्यार से अपने हाथों में लिया और अपने मुस्कुराते होठों से बोली परिवार में इस विश्वास को यूहीं बना के रखना। माँ के प्रति और इस जन्मभूमि के प्रति मैं सोच रहा हूँ सरकार इतने अथक प्रयास कर रही है तो में गाँव के प्रत्येक बोर्ड कक्षाओं से जुड़े बच्चों को स्मार्ट फोन देकर एक भामाशाह के रूप में सहयोग करना चाहता हूँ। ताकि सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा चलाए गए स्टडी एट होम प्रोग्राम में अपना कुछ सहयोग दे सकूँ।

मेरी पत्नी संगीता और दोनों बच्चे पीछे खड़े मुस्कुरा रहे थे।

पुस्तकाल्याध्यक्ष
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
इ.गा.न.पा. बीकानेर (राज.)
मो: 9414283454

हिन्दी विविधा

विद्यार्थी जीवन की यादें

❒ सुधा रानी तैलंग

बचपन की यादें कितनी मधुर होती हैं जिन्हें चाहकर भी हम नहीं भुला सकते। समय इतनी तेजी से गुजर जाता है कि पता ही नहीं चलता। बचपन के दिन भी कितने सुहाने होते हैं कि न कोई चिंता न कोई जिम्मेदारी। फिर विद्यार्थी जीवन की तो बात ही अलग है। आज भी उसकी मधुर धुंधली सी स्मृतियाँ मेरे मानस-पटल पर प्रतिबिम्बित हैं। आज से लगभग पैंतालीस साल का लम्बा अन्तराल। उस समय की पढ़ाई आज की तरह औपचारिक नहीं थी। उस समय न तो भारी भरकम बस्ते का बोझ, न पाठ्यक्रम की जटिलता थी, न ही होमवर्क की चिन्ता। कितना सीधा-सादा सरल छात्र जीवन था। मेहनत, लगन व अनुशासन व गुरु के प्रति आदर की भावना आज से कहीं बेहतर थी।

बीकानेर के दाऊजी रोड स्थित एक प्राइमरी सरकारी स्कूल में मैं पढ़ती थी। वो स्कूल उसके प्रधानाध्यापक के नाम से ही पहचाना जाता था-बी.के. व्यास स्कूल। क्योंकि उन्होंने ही उस स्कूल की नींव डाली थी। छोटा सा साफ-सुथरा स्कूल। दो कमरे, दो बरामदे व एक छोटा-सा स्टाफ रूम, जो साधारण मगर कलात्मक करीने सजाया गया था। प्रधानाध्यापक जी को मिलाकर स्कूल में कुछ चार ही शिक्षक थे पर सब अपने विषयों के अच्छे जानकार।

उस समय स्कूलों में आज जैसी भीड़ नहीं थी, न ही ऐसी प्रतिस्पर्धा। हमारे स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ एक पीरियड क्राफ्ट का भी लगता था। तकली से सूत कातने के प्रशिक्षण के साथ-साथ कागज के फूल, मालाएँ, गत्तों से झोंपड़ी, मकान, खिलौने बनाना सिखाया जाता था। हेडमास्टर जी खुद एक अच्छे कलाकर थे। बड़े शौक से हमें चित्र बनाना सिखाते थे। जो कुछ छात्र-छात्राएँ बनाते, उसकी प्रदर्शनी भी साल में एक बार लगती थी।

उस समय पढ़ाई के साथ गिनती, पहाड़े, बाहरखड़ी को रटने पर बहुत ज्यादा जोर दिया जाता था। याद न करने पर डंडों की मार या मुर्गा बनने की सजा भुगतनी पड़ती थी। सुलेख व डिक्टेशन का अभ्यास करवाया जाता था। उस

वक्त अंग्रेजी का विषय पाठ्यक्रम में प्राइमरी स्तर तक नहीं था। फिर भी खाली समय में अंग्रेजी का प्रारंभिक ज्ञान हमारे स्कूल में कराया जाता था। सभी शिक्षकों का हम सभी बेहद सम्मान करते थे। वे सभी हमें अपार स्नेह करते थे। पर अनुशासन व कड़ाई का भी ध्यान रखते थे। अंतिम पीरियड में हम सभी लड़के-लड़कियाँ, खो-खो, कबड्डी खेलते व कुछ बच्चे बागवानी का काम भी करते थे। हमारे प्रधानाध्यापक जी ने स्कूल के पिछवाड़े एक छोटा सा बगीचा बना रखा था। उसमें सब बच्चों ने मिल कर गेंदा, गुलाब, तुलसी के पौधे लगाए थे।

स्कूल के पीछे ही शिवजी का एक मंदिर था जिसका दरवाजा स्कूल के पिछवाड़े भी खुलता था। इन्टरवल में हम कुछ बच्चे मंदिर में दर्शन करने जाते। परिक्रमा लगाकर पंडितजी से भोग लेकर स्कूल वापिस आ जाते। पंडितजी से हमारी दोस्ती केवल प्रसाद पाने की लालच में थी। जिस दिन वो प्रसाद नहीं देते हम सभी बच्चे बहुत शोर मचाते।

स्कूल एक किराए की बिल्डिंग में चलता था। इसलिए उसकी मकान मालकिन स्कूल में बार-बार चक्कर लगाती थी। उसका अच्छा खासा रौब था। हम सभी बच्चे उसे शेरिया की बाई कहकर पुकारते थे। वो हम सभी बच्चों को प्यार करती थी। हमारी मदद भी करती। कभी-कभी उन्हें पढ़ाने का शौक लगता था तो वो कक्षा में आकर पढ़ाने भी लगती।

स्कूल में घर-परिवार जैसा ही वातावरण था। आज की तरह औपचारिकता न होकर बेहद अपनापन लगता था। पूरे पीरियड पढ़ाई होती थी। पर एक कमी जरूर खलती थी कि कोई लेडी टीचर हमारे स्कूल में नहीं थी। स्कूल में शिक्षकों को पढ़ाते देख मेरे मन में इच्छा होती कि मैं बड़ी होकर टीचर बनूँगी। कभी क्लास खाली होने पर मैं कुर्सी पर बैठ कर पढ़ाने लगती। मैं क्लास की मॉनीटर तो थी इसलिए बच्चे पढ़ भी लेते।

एक दिन प्रधानाध्यापक जी ने मुझे कुर्सी में बैठकर पढ़ाते हुए देख लिया। उन्होंने मुझे बहुत डाँट लगायी और कहा, तुम्हें शौक है पढ़ाने का, अच्छी बात है, पर इसके लिए तुम्हें मेहनत करनी पड़ेगी, पढ़ाई करनी पड़ेगी। तब तुम बड़ी होकर जरूर टीचर बनोगी।

जब भी क्लास खाली हो तुम बच्चों को पाठ पढ़वाओ, प्रश्न पूछो, पर कुर्सी पर बैठकर नहीं। क्योंकि गुरु का आसन बड़ा होता है। मैंने अपनी गलती पर माफी माँगी पर उनके शब्दों ने मुझे पढ़ाई करने व मेहनत करने को प्रेरित किया और मैं आगे जाकर उनके आशीर्वाद से टीचर ही बनी।

प्रति वर्ष हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव भी होता था, जिसकी तैयारियाँ हम जोर-शोर से एक डेढ़ महीने पहले से ही कर देते थे। उसकी तैयारी कराने दूसरे स्कूलों से मैडम को बुलाया जाता था। वार्षिकोत्सव देखने भारी भरकम भीड़ उमड़ पड़ती थी। क्योंकि उस समय टीवी वगैरह मनोरंजन के साधन तो थे नहीं। इसलिए ऐसे कार्यक्रम से सभी को अच्छे लगते थे। वार्षिक उत्सव में नाटक, प्रहसन, नृत्य, मोनोएक्टिंग के साथ-साथ फैन्सी-ड्रेस का आइटम भी जरूर किया जाता था। मैं डाँस में जरूर भाग लिया करती थी।

वार्षिकोत्सव का मुझे बेसब्री से इंतजार होता था, क्योंकि इसमें कक्षा में फर्स्ट आने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार मिलता था। हम सभी बच्चों में बहुत एकता व लगाव था किन्तु कक्षा में कुछ बड़ी उम्र के छात्र होने के कारण

पढ़ाई में बहुत डिस्टर्ब होता था। क्लास में लड़कियों की संख्या ज्यादा होने के कारण लड़के हम से डरते थे। आगे सीट मिलने की लालच में हम सभी जल्दी स्कूल पहुँच जाते थे।

हर शनिवार को स्कूल में बाल सभा होती थी, जिसमें भाषण, वाद विवाद, अंत्याक्षरी, गीत, डाँस, व मोनोएक्टिंग के कार्यक्रम होते। बाल सभा में मैं हमेशा भाग लेती हमारे प्रधानाध्यापक जी को पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, सभी प्रकार के कार्यक्रमों में रुचि थी। वे खुद बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलते, भाग लेते। वे स्कूल को एक आदर्श विद्यालय बनाना चाहते थे और इसमें वो सफल भी हुए।

हमारा वो सरकारी प्राइमरी स्कूल बड़े-बड़े पब्लिक स्कूलों से भी अच्छा था। हिन्दी माध्यम से पढ़कर भी उस स्कूल के छात्र आज कोई कार्टुनिस्ट, कोई डॉक्टर, तो कोई वकील, अभिनेता, आई.ए.एस. अधिकारी तक के पदों पर हैं। सचमुच कितना फर्क है आज की व पुरानी पढ़ाई में स्कूलों की।

इसे सुखद संयोग ही कहा जा सकता है कि मेरे उन्हीं गुरुजी से मेरे छोटे भाई व मेरे बेटे को भी पढ़ने का परम सौभाग्य मिला। 31 जनवरी 17 को 35 साल म. प्र. स्कूल शिक्षा विभाग में अपनी सेवायें देने के बाद अपने बीकानेर प्रवास के समय लगभग 54 वर्षों की लम्बी अवधि के बाद अभी फरवरी 18 में मुझे अपने गुरु से मिलने का सुअवसर भी मिलना एक चमत्कार से कम नहीं। मेरे प्रेरणा के स्त्रोत गुरु को मेरा शत शत नमन प्रणाम।

संस्कृत शिक्षक (सेवानिवृत्त)
ई-2, सिमरन अपार्टमेन्ट-II, प्लाट-16-17,
त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.) **मो: 09301468578**

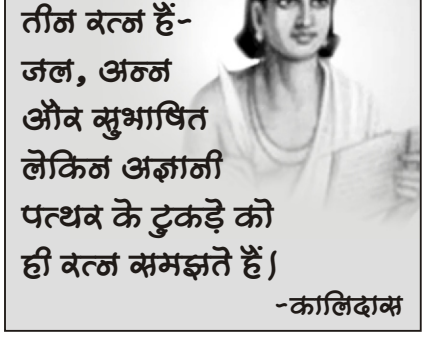

हिन्दी विविधा

हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी

❒ डॉ. गिरीश दत्त शर्मा

मनुष्य जन्म से जिस परिवेश एवं वातावरण में रह रहा है वह उसी के अनुरूप अपने भावों, विचारों, संवेदनाओं एवं कार्यों को संबंधित परिवेश में व्याप्त बोली एवं भाषा में व्यक्त करता है जो उसने जन्म से सहज और सरल रूप से प्राप्त की है। इस प्रकार की स्वाभाविक रूप से प्राप्त भाषा उसकी मातृभाषा कहलाती है। इस प्रकार व्याप्त किसी भी भाषा को जब राज कार्यों में प्रयुक्त किया जाता है, उसके द्वारा प्रशासनिक, व्यावसायिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्य सम्पन्न किए जाते हैं जब यही राष्ट्रभाषा कहलाती है।

भारत में स्वतंत्रता से पूर्व अंग्रेजी शासन था। शासन के समस्त कार्य अंग्रेजी में होने के कारण अंग्रेजी यहाँ की राजभाषा थी। सभी सरकारी, व्यावसायिक, तकनीकी, शासकीय कार्य अंग्रेजी भाषा में किए जाते थे। शिक्षण व्यवस्था में भी अंग्रेजी का प्राधान्य था। परिणामस्वरूप यहाँ की मातृभाषा हिन्दी को अंग्रेजी शासन में प्रोत्साहन नहीं मिला। परन्तु जन सामान्य में इसका महत्त्व कम न हुआ। बोलचाल में उसका व्यवहार यथावत होता रहा। साहित्य में हर जाति, धर्म, वर्ग तथा प्रान्तों में इसके भण्डार में वृद्धि होती रही। परन्तु राजकार्य में उसे अपेक्षित सम्मान नहीं मिला। इससे भारत के देशभक्तों एवं राष्ट्र प्रेमियों को बहुत आघात पहुँचा। अतः वे राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के प्रयत्नों के अतिरिक्त भाषा के उत्थान और पुनः प्रतिष्ठित करने का भी उपक्रम करते रहे। इसी क्रम में स्वतंत्रता पूर्व एक अधिवेशन में महात्मा गाँधी जी ने कहा था-'अगर हम भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है क्योंकि सर्वाधिक प्रचलित एवं स्वेच्छा से आत्मसात् हिन्दी भाषा ही राष्ट्र भाषा हो सकती है।' देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में राजकाज चलाने में समर्थ हिन्दी भाषा को इस प्रकार 14 सितम्बर 1949 को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया तथा 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने पर हिन्दी को विधिवत् राष्ट्र भाषा और उसकी लिपि देवनागरी को मान्यता दी गई। इसी समय

भारतीय अंकों को भी मान्यता दी गई। इस समय प्रचलित अंग्रेजी भाषा के राज कार्यों को हिन्दी भाषा में परिवर्तित करने के उद्देश्य से अंग्रेजी भाषा को प्रशासनिक भाषा में प्रयोग करने के लिए 26 जनवरी 1965 तक छूट प्रदान की। 14 सितम्बर 1949 को लिए गए निर्णय के अनुसार राष्ट्र भाषा प्रचार समिति ने 14 सितम्बर 1953 से हिन्दी दिवस पर्व के रूप में मनाना प्रारम्भ हुआ जो आज तक विधि विधान से मनाया जा रहा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से 'हिन्दी दिवस' पर सरकार की ओर से आयोजन के निमित्त एक लाख रुपये का अनुदान और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को समान प्रतीक दिए जाते हैं।

हिन्दी भाषा हमारे राष्ट्र का गौरव है। इसकी महत्ता के संबंध में अनेक राष्ट्र प्रेमियों ने समय-समय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था-''जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं, वह उन्नत नहीं हो सकता। अतः आज देश के सभी नागरिकों को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वे हिन्दी के स्नेह को अपनाकर सभी कार्य क्षेत्रों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर उसको राजभाषा और राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करें।''

हिन्दी सरल, सहज और सुस्पष्ट भाषा तो है ही व्याकरण की दृष्टि से भी एक समृद्ध भाषा है। इसमें शब्दों की विविधता और उनका एक विशाल भण्डार है। भारतीय संस्कृति के संरक्षक, संवर्द्धक और संवाहक के रूप में भी हिन्दी भाषा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी स्वरूप को देखते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.

अब्दुल कलाम ने कहा था–''वर्तमान समय में विज्ञान के मूल कार्य अंग्रेजी में होते हैं इसलिए आज अंग्रेजी आवश्यक है किन्तु मुझे विश्वास है कि अगले दो दशकों में विज्ञान के मूल कार्य हमारी भाषाओं में होने शुरू हो जाएँगे और हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे।'' कविवर टैगोर ने तो हिन्दी को मणि का रूप देते हुए कहा था– 'भारत की सारी प्रान्तीय बोलियाँ, जिनमें सुन्दर साहित्यों की रचना हुई है अपने घर या प्रान्त में रानी बनकर रहें, प्रान्त के जनगण को हार्दिक चिंतन की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।' कविवर भारतेन्दु जी ने तो निज (हिन्दी) भाषा को तो उन्नति का मूल ही बता दिया। उनके विचार में–''**निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।**''

वस्तुतः हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे सरल, सुगम, सहज और सुस्पष्ट है। इसलिए देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस भाषा का उद्‌गम यद्यपि संस्कृत भाषा से हुआ है परन्तु व्याकरण की जटिलता से दूर आसान और बोधगम्य है। इसके व्याकरण एवं शब्द विन्यास भी बोधगम्य है। इसमें तत्सम एवं तद्भव शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता है। यही कारण है कि भारत की विभिन्न बोलियाँ एवं भाषाओं के अनेक शब्दों को हिन्दी ने आत्मसात कर ही वृद्धि की है। शब्दों की इस प्रकार की सार्वभौमिकता से देश में एकता और अखंडता की भावना में मजबूती आएगी।

हिन्दी भाषा की लिपि देवनगरी है जो सरल, सुन्दर एवं बोधगम्य है। उसके स्वरूप के विषय में राहुल सांस्कृत्यायन ने कहा है कि हिन्दी की हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है। इसमें प्रयुक्त अक्षरों का उच्चारण मुख के विभिन्न अवयवों के अनुरूप वर्गीकृत किए गए हैं। जिनके उच्चारण में किसी प्रकार की त्रुटि की संभावना नहीं रहती। हिन्दी के इस सरलतम स्वभाव के कारण न केवल भारत में अपितु विश्व में भी अंग्रेजी, रूसी और चीन की राष्ट्र भाषा के बाद चतुर्थ स्थान पर है।

इतना सब सकारात्मक एवं प्रभावोत्पादक स्वरूप होने के पश्चात भी भारत में हिन्दी को अभी तक अपना वास्तविक राष्ट्रभाषा का स्वरूप नहीं मिल पाया है। कारण– भारत सदियों से गुलामी की जंजीरों से जकड़ा रहा। अतः अभी तक अंग्रेजी दासता से ग्रस्त उसका मोह नहीं छोड़ पाया है। दूसरे, अभी तक भारत के लोग अंग्रेजी भाषा को श्रेष्ठ मानते हुए उसके व्यवहार प्रयोग आदि को गर्व की दृष्टि से देखते हैं और हिन्दी के प्रति सम्मान की उपेक्षा करते हैं। यहाँ पद, योग्यता आदि की दृष्टि से भी अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी जाती है और हिन्दी को हीनता की दृष्टि से देखा जाता है। अंग्रेजी में बातचीत, परस्पर व्यवहार, कार्य आदि को अधिक सम्मान दिया जाता है। परिणाम स्वरूप लेखक, प्रवक्ता, प्रशासनिक कार्यों में संलग्न, व्यावसायिक एवं तकनीकी कर्मचारी नियुक्ति आदि की दृष्टि से अंग्रेजी की ओर अधिक झुकाव रखते हैं और हिन्दी भाषा को व्यवहार में लाने की उपेक्षा करते हैं। समस्त प्रकार के लिखित कार्य भी अंग्रेजी भाषा में ही व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

यही कारण है कि आज स्वतंत्रता के अनेक दशकों के बाद भी हिन्दी को उसका वांछनीय स्वरूप नहीं मिल पाया है। वह राष्ट्र भाषा होते हुए भी अभी तक व्यवहार एवं राजकार्यों में उपेक्षित है। इसी उपेक्षा के कारण आज हम 14 सितम्बर को राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस को एक पर्व रूप मनाकर इतिश्री कर लेते हैं और आगामी वर्ष तक के लिए उसे पुनः उपेक्षित कर देते हैं। अतः वास्तव में हम यदि राष्ट्र भाषा को समृद्ध एवं समुन्नत करना चाहते हैं तो हमें इसके आवश्यक नियमों का निर्माण एवं अनुपालन करना होगा। शिक्षा, व्यवसाय, तकनीकी कार्य, प्रशासन एवं समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में हिन्दी का ही निःसंकोच प्रयोग करना समीचीन होगा। हिन्दी बोलना, उसका रीति–रिवाज, धर्म, दर्शन आचरण में प्रयोग को सम्मान देना अपेक्षित होगा तभी हम अन्य देशों की भाँति विश्व में हिन्दी में व्यवहार करने में गर्व अनुभव कर सकेंगे और तभी 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकेगी।

4/82, चौटाला रोड, वार्ड 23, संगरिया
(राज.)–335063
मो: 8561069369

संघर्ष

❒ गोविन्द लाल

जीव विज्ञान के एक अध्यापक अपने छात्रों को पढ़ा रहे थे कि सूँडी तितली में कैसे बदल जाती है। उन्होंने छात्रों को बताया कि कुछ ही घण्टों तितली अपनी खोल से बहार निकलने की कोशिश करेगी। उन्होंने छात्रों को आगाह किया कि वे खोल से बाहर निकलने में तितली की मदद न करे। इतना कहकर वह कक्षा से बाहर चले गए। छात्र इंतजार करते रहे। तितली खोल से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगी। छात्रों को उस पर दया आ गई। अपने अध्यापक की सलाह न मानकर उन्होंने खोल से बाहर निकलने की कोशिश कर रही तितली की मदद करने का फैसला किया। उन्होंने खोल को तोड़ दिया। जिसकी वजह से तितली को बाहर निकलने के लिए और मेहनत नहीं करनी पड़ी। लेकिन वह थोड़ी देर में मर गयी। वापस लौटने पर शिक्षक को सारी घटना मालूम हुई तब उन्होंने छात्रों को बताया कि खोल से बाहर आने के लिए तितली को जो संघर्ष करना पड़ता है उसी की वजह से उसके पंखों को मजबूती और शक्ति मिलती है। यही प्रकृति का नियम है। तितली की मदद करके छात्रों ने उसे संघर्ष करने का मौका नहीं दिया। नतीजा यह हुआ कि वह मर गई।

ईश्वर सभी जीवों को संघर्ष करने का अवसर प्रदान करता है, ताकि वे मजबूत हो सके तथा जीवन में और बड़ी समस्या के लिए संघर्ष का सफलता पा सकें। हमारा जीवन इन्हीं छोटे–छोटे संघर्षों से शुरू होता है। जब हम पहली बार चलने का प्रयास करते हैं तो गिर जाते हैं और हमारे माता–पिता दूर खड़े देखते रहते हैं, जब वे हमारे पास नहीं आते तो हम फिर उठकर चलने का प्रयास करते हैं। इसी संघर्ष का परिणाम है हम अब दौड़ सकते है।

व्याख्याता (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भांवता,
कुचामन सिटी, नागौर
मो: 9602972809

हिन्दी विविधा

जीने का हक

❐ अरनी रॉबर्ट्स

हरिओम दूबे की नागौर राजस्थान में एक जनरल स्टोर की छोटी सी दुकान थी। यूं तो हरिओम 12वीं उत्तीर्ण था पर पिता की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाया था। यद्यपि उसकी अत्यधिक इच्छा थी कि वह भी काम करे और बैंक, डाकघर या रेलवे की कोई नौकरी करे, पर इंसान के चाहने मात्र से कुछ नहीं होता। परिस्थितियाँ जब तक अनुकूल न हों, चाहतें वक्त की गर्दिश में दब सी जाती है। फिर पिता की असामयिक मृत्यु ने उसे बुरी तरह तोड़ दिया था। उससे बड़े भाई अमरीश ने पिता की मौत के बाद घर पर कब्जा कर लिया था। एकमात्र बड़ी बहिन का विवाह एक सम्पन्न परिवार में पहले ही से हो चुका था। यदा-कदा वह भाईयों से मिलने आ जाती थी। हरिओम ने कुछ पैसों का जुगाड़ करके नई बस्ती उदय नगर में एक गुमटी डालकर रोजगार की जरूरत वाली वस्तुओं की दुकान डाल ली थी। आगे चलकर गुमटी वाली जगह को उसने खरीद लिया और ईंटों की दीवारें खड़ी करके पक्की दुकान बना ली। काफी परिश्रम के बाद वह इतना ही कमा पाता कि अपनी दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर ले।

उदय नगर का विस्तार हुआ। खूब सारे पक्के मकान, डामर की सड़कें, स्कूल आदि खुल गए। उसका धंधा थोड़ा बेहतर चलने लगा। उसकी दुकान से कुछ ही दूर पर बिजली का सामान बेचने वाले विजय श्रीमाल की दुकान थी। दोनों के विचार मिलते थे अतः उनकी दोस्ती हो गई। दुकान खोले हरिओम को पाँच वर्ष हो गए थे अब वह चौबीस वर्ष का था। कभी-कभी हरिओम विजय के घर चला जाता। विजय की पत्नी अमिता पढ़ी-लिखी अच्छे स्वभाव की युवती थी। प्रायः वह हरिओम को बगैर खाना खाए नहीं आने देती थी। मकान के एक पोर्शन में उसके माता-पिता और उसकी छोटी बहिन सरल रहती थी।

सरला बी.ए. बी.एड. थी और हाल ही में उसकी जॉब अध्यापिका पद पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय आसना में लगी थी। आसना गाँव नागौर से पश्चिम की ओर दस किलोमीटर

दूर था। विजय और उसके घरवालों को सीधे सादे हरिओम से अपनी बहिन सरला से विवाह करने का प्रस्ताव उसके सामने रखा। सुंदर हंसमुख और राजकीय सेवा में कार्यरत सरला से विवाह के लिए वह तैयार हो गया। सरला भी हरिओम को मन ही मन चाहती थी दोनों पक्षों की सहमति से विवाह हो गया। यद्यपि पुश्तैनी मकान पर बड़े भाई का कब्जा था फिर भी हरिओम दो कमरों में रह रहा था। विवाह के बाद सरला और हरिओम की गृहस्थी वहीं चलने लगी। कभी-कभी बड़ा भाई अमरीश कह देता अब तुम्हारी गृहस्थी है इसलिए छोटा-मोटा प्लॉट लेकर दो कमरे बनवा लो और वहाँ आराम से रहो।''

जब थोड़ा बहुत पैसा हरिओम और सरला ने जमा कर लिया तो किश्तों पर 30"x44" का एक प्लॉट नव विकसित होते हुए उदयनगर में ले लिया और धीरे-धीरे दो कमरे वहाँ उठा लिए। इसी बीच उनके यहाँ एक कन्या ने भी जन्म लिया। विजय और सरला की गृहस्थी की गाड़ी अच्छे से चलने लगी। विजय ने अपनी दुकान को आधुनिक रूप दे दिया और सामान भी बहुत कुछ बढ़ा लिया। पहले से दुकान की बिक्री भी बढ़ गई।

जीवन समस्याओं का दूसरा नाम है। एक समस्या खत्म नहीं होती कि दूसरी समस्या आ खड़ी हो जाती है। विजय के मकान के आसपास एक दिन कुछ चमचमाती कारें आकर रूकीं। उनमें से कुछ सूटेड-बूटेड लोग उतरे और वहाँ के मकानों और लोकेशन को लेकर आपस में बातचीत करने लगे। वहाँ रहने वाले आम लोग शंकित हो उठे कि ये लोग वहाँ क्यों आए हैं और क्या चाहते हैं। जफर भाई की स्कूटी-साइकिलों की मरम्मत व पंचर बनाने की दुकान थी। वे जल्दी से विजय के पास आए और बोले,'' ये लोग कौन हैं और हमारे मकानों की ओर इशारा करके क्या कह रहे हैं। हरिओम भाई जरा पता तो करो। बाईं ओर रहने वाले कारखाने में कार्यरत प्रेम सिंह भी घर से निकलकर आ गए। ''मुझे तो मामला कुछ गड़बड़ लग रहा है। पता नहीं क्या चाहते हैं ये लोग?''

हरिओम ने कुछ सोचकर कहा'' हो सकता ये सरकारी अफसर हों और यहाँ कुछ चौड़ी रोड़ बनाने या आसपास कहीं सामुदायिक भवन बनाने की कोई योजना हो। थोड़ा सा धैर्य रखो अभी पता चल जाएगा।'' वहाँ जमा लोग शायद हरिओम की इस बात से संतुष्ट नहीं हुए। उनके चेहरों पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट देखी जा सकती थी। लोगों की चिंता और जिज्ञासाएँ अब घबराहट में बदल चुकी थी। मन ही मन हरिओम भी कुछ चिंतित हो गया था। अचानक वे चार लोग इन्हीं लोगों के पास आ गए। उनमें से मोटा व्यक्ति जिसने मोटे फ्रेम वाला सुनहला चश्मा लगाया हुआ था बोला'', क्या ये तीन-चार मकान आप लोगों के हैं?''

जफर भाई बोले, 'जी हाँ श्रीमान ये हम लोगों के ही हैं। क्यों क्या बात हो गई।'

उनमें से जिस व्यक्ति ने डायरी और हैंडबैग उठा रखा था बोला, 'ये साहब बहुत बड़े बिल्डर हैं। यहाँ शहर में बहुत से मकान सिनेमा घर और मल्टी बिल्डिंग इन्हीं के द्वारा बनाई गई हैं।'

''तो साहब यहाँ...? लक्ष्मण लोधा ने पूछना चाहा।

इस बार साथ आए अन्य व्यक्ति ने कहा- 'यहाँ साहब शॉपिंग मॉल बनवाना चाहते हैं। इसी जगह जहाँ तुम्हारे मकान हैं। इन्हें यह लोकेशन बहुत पसंद आ गई और जो जगह इन्हें पसंद आ जाती है उसे यह खरीद लेते हैं।''

यह सुनते ही हरिओम समेत अन्य सभी लोग जो वहाँ मौजूद थे सब हक्का-बक्का रह गए।

इस बार स्वयं उस बिल्डर ने कहा- 'घबराने और डरने की कोई बात नहीं है फ्रेन्ड्स! मेरा नाम विनय पंजवानी है और मैं इस वक्त राजस्थान के पाँच शहरों में मल्टी स्टोरी बिल्डिंग्स का निर्माण करवा रहा हूँ। नागौर में मुझे यह जगह बहुत पसंद आई है। यहाँ उदयनगर विकसित होने के बाद भानुपुरा कॉलोनी भी बनने वाली है। मैं आपको लागत राशि का डेढ़ गुना भुगतान करूँगा। इस जगह के पूरे दस मकानों की जमीन मुझे चाहिए। राजी हो तो ठीक है वरना मैं छीनना भी जानता हूँ। तब आप नुकसान में रहेंगे। यह कहकर वह अजीब ढंग से मुस्कराया और हरिओम से बोला- 'तुम.... अपने इन साथियों को समझाओं... मैं दो चार दिन में वापस आऊँगा... तुम्हारे प्लॉट्स के हिसाब से भुगतान कर दूँगा।' यह सुनकर हरिओम सहित सभी लोगों के होश उड़ गए।

'आप लोग आपस में सलाह कर लें, मैं अपने इन वर्कर्स के साथ आस-पास की जगह का मुआयना कर लेता हूँ। आम आदमी की हैसियत रखने वाले इन लोगों के तो जैसे होश उड़ गए। हरिओम ने कहा, ''मेरे साथियों और पड़ोसियों आप धीरज रखिए... इसकी लल्लोचप्पो वाली बातों में नहीं आना है। मुझे तो यह पक्का फ्रॉड लगता है यह कुछ नहीं कर पाएगा। हमारे जीने के अधिकार को यह तो क्या कोई नहीं छीन सकता।'

जफर चाचा ने पूछा 'हमें क्या करना होगा?'

'देखो ऐसा करते हैं दिखावे के लिए हम हाँ भर देते हैं और एक सप्ताह का समय माँगते हैं। इस बीच हम जिला कलेक्टर से मिलते हैं या अच्छा सा वकील कर लेते हैं। इसकी चाल में इसे ही फंसा देते हैं।'

सबने हरिओम की बात ध्यान से सुनी और उन्हें लगा वह ठीक कह रहा है। थोड़ी देर बाद जब पंजवाणी अपने गुर्गों सहित वापस आया तो हरिओम ने कहा- 'ठीक है साहब हमें आपका प्रस्ताव मंजूर है। हमें पैसा मिल जाएगा तो हम कहीं और घर बनवा लेंगे आप हमें एक सप्ताह का समय दें।'

'वैरी गुड डिसिजन... ठीक है आज 25 तारीख है हम अगले माह की 3 तारीख को मिलते है।' यह कहकर पंजवाणी ने अपने एक साथी को इशारा किया और वह लपकते हुए गया और कार में से मिठाई का डिब्बा ले आया! पंजवाणी ने सबको मिठाई का एक एक पीस खिलाया और बॉय कहता हुआ वहाँ से चला गया।

हरिओम के साथ आशीष नाम का एक लड़का पढ़ता था। दोनों में गहरी दोस्ती थी। आजकल वह आशीष खन्ना नागौर का एक जाना माना वकील था। यदा-कदा उसकी मुलाकात आशीष में किसी प्रकार का घमंड नहीं था और वह प्रेमभाव से हरिओम से मिलता था। हरिओम ने आशीष से हो जाती थी और दोनों मिलकर बचपन की यादें ताजा कर लेते थे। बड़ा वकील होने के बाद भी आशीष में किसी प्रकार का घमंड नहीं था और वह प्रेम भाव से हरिओम से मिलता था। हरिओम ने आशीष के समक्ष बिल्डर की दी गई धमकी का जिक्र किया। आशीष ने गौर से हरिओम की बात सुनी। सब कुछ सुनने के बाद आशीष ने कहा, 'संविधान ने हमें कुछ अधिकार दिए हैं। उनका पालन अवश्य होना चाहिए। साथ ही मानवाधिकार के अन्तर्गत भी, राइट टू लिव' हमारा सबसे प्रमुख अधिकार है। तुम ऐसा करो हरि उस बिल्डर से कहो कि तुम और तुम्हारे पड़ौसी किसी हालत में अपने मकान उसे नहीं बेचेंगे। जब वह तुम्हें किसी प्रकार की धमकी दे और बल प्रयोग करे तब मुझे फोन कर देना... बाकी सब मैं देख लूँगा। 3 तारीख को मुझे तुरन्त सूचित करना हरिओम।'

'पूरे सप्ताह बाद अपने लोगों के साथ पंजवाणी हरिओम और उसके पड़ोसियों के मकान के अधिकार लेने आया।' हाँ तो मिस्टर हरिओम आप लोग मकान मुझे बेच रहे हैं? हरिओम ने निर्भीक होकर कहा 'कौन सा मकान? और हम क्यों बेचेंगे अपने मकान? और आप होते कौन हैं हमें बेदखल करने वाले?'

यह सुनते ही पंजवाणी का माथा घूम गया। गुस्से भरी लाल आँखों से घूरकर हरिओम को बोला, 'तुम्हे शायद मेरी हैसियत का अंदाजा नहीं है तुम लोगों के मकान पर अब मैं कब्जे करूंगा ही और फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा। तुम्हारा सामान भी सड़कों पर नहीं फिकवा दिया तो मेरा नाम विनय पंजवाणी नहीं।' पंजवाणी हो या खटवाणी... जाओ अपना काम करो।' यह सुनते ही पंजवाणी गुस्से से भर उठा और अपने साथियों को इशारा किया। वे उनके घरों का सामान उठा पटक व तोड़ फोड़ करने लगे। ऐसी स्थिति देखते ही हरिओम ने आशीष को फोन कर दिया। मोहल्ले के ढेरों लोग वहाँ जमा हो गए। कुछ ही देर में वकील आशीष पुलिस की टोली सहित वहाँ पहुँच गया। यह क्या हो रहा है? तुम इन भोले लोगों को क्यों तंग कर रहे हो? पंजवाणी अचकचा गया, बोला 'मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ ये अपनी मर्जी से ही मकान बेच रहे हैं...'

'शटअप... इन गरीब लोगों को धमकाते हो, इन से जीने का अधिकार छीनना चाहते हो, कानून की दृष्टि में यह महा अपराध है। मैंने स्वयं तुम्हे इन लोगों को घरों को बेदखल करते देखा है। तुम्हारी शिकायत इन्हीं लोगों ने की है तभी तो मैं तुम्हारी आरती उतारने पुलिस को लेकर आया हूँ।'

विनय पंजवाणी अपने गुंडों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। हरिओम और उसके पड़ोसियों ने राहत की साँस ली। बाद में पता चला विनय पंजवाणी कोई बिल्डर-विल्डर नहीं है, वरन् शातिर बदमाश है जिसके खिलाफ पहले भी कब्जे, अपहरण, मारपीट के अपराधिक केस थाने में दर्ज हो चुके हैं।

अब हरिओम और उसके पड़ोसी शांतिपूर्वक रह रहे हैं। उन्हें अब इस बात का अहसास हो गया है कि संविधान ने हम सभी भारतीय नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार दे रखे हैं और इन मौलिक अधिकारों से उन्हें कोई वंचित नहीं कर सकता है और वे लोग यह बात भी अच्छी तरह समझ गए हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने इन अधिकारों का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि कोई भी व्यक्ति न उन्हें परेशान कर सके और न उन्हें डरा-धमकाकर उनसे अनुचित लाभ उठा सके। ऐसे गुंडे-बदमाश हमेशा इस फिराक में रहते हैं कि कब किसको अपने झाँसे में ले लें और मनमानी करके अपना उल्लू सीधा कर लें।

पोस्ट ऑफिस रोड़, भीमगंज मंडी
कोटा जंक्शन (राज.)-324002
मो: 09414939850

हिन्दी विविधा

सकारात्मक सोच की उद्भावना

❐ सुशीला चौधरी

सकारात्मक सोच कस्तूरी मृग है। मृग और मानव की स्थिति समान है। यह विषय अध्यात्म व व्यावहारिक मनोविज्ञान का सुन्दर समन्वय स्पष्ट करता है। जीवात्मा बनी है देह व आत्मा के संयोजन से। यह देह चर्म चक्षुओं से देखी जा सकती है। यह आत्मा अति सूक्ष्म दिव्य चक्षुओं से अनुभव की जा सकती है। आत्मा की शक्तियाँ हैं- मन, बुद्धि व संस्कार। 'मन' का कार्य है विचार करना, संकल्प करना व सोचना। अब मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण भी जान लीजिए। अमेरिका के व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक डॉ. जोसेफ मर्फी के अनुसार 'मानव मस्तिष्क एक है, लेकिन इसके दो स्पष्ट और विशिष्ट कार्यकारी भाग होते हैं। मस्तिष्क के ये दोनों हिस्से, एक दूसरे से अलग होते हैं। इन दोनों के विशिष्ट गुण और शक्तियाँ हैं।' मस्तिष्क के दोनों कार्यों में भेद करने के लिए प्रायः चेतन और अवचेतन मन, जाग्रत एवं सुषुप्त मन का प्रयोग प्रचलन में हैं। यही मस्तिष्क का मूल द्वैत है। बस सही सोच का उद्गम स्थल है। यह मस्तिष्क ही विचारों का जनक और स्वामी है। इससे ही विचार उपजते हैं। पंच कर्मेन्द्रियों के झरोखों से ये विचार मस्तिष्क तक पहुँचते हैं और सोच का जन्म होता है। यह मानव पर निर्भर है कि किस दृष्टिकोण से सोच को स्वीकार करे। शरीर और मस्तिष्क का स्वामी होने पर भी इस तथ्य से मानव अपरिचित है। अतः बाह्य साधनों को सोच का बीज समझता है। सोच का उद्गम स्थल है तो मानव मस्तिष्क हुआ कस्तूरी मृग।

विचार मनुष्य की मूल्यवान थाती है, खजाना है, इसके अथाह व असीम सागर में मनुष्य निवास करता है। विचारों की संभाल करना अत्यावश्यक है एक दिन में 86,400 पल श्वासों के साथ विचार जन्मते हैं और पनपते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ये विचार ही सकारात्मक व नकारात्मक होते हैं। सकारात्मक सोच या विचार करने के लिए मनुष्य को परिश्रम करना पड़ता है। इनकी गति बहुत मंद होती है और इनका ध्यान न रखा जाए तो ये शीघ्र अदृश्य और विस्मृत हो जाते हैं। इस प्रकार एक मिनट में तीस नकारात्मक विचार मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं। नकारात्मक विचारों का प्रवाह व वेग तीव्र होता है। इसकी बेसिर-पैर की शृंखला कैंसर कोशिकाओं की भाँति विकसित हो जाती हैं। दोनों का परिणाम एक ही होता है। विनाश इसी प्रकार एक दिन में 30,000 से 60,000 तक नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। ये विचार अवचेतन मन में पनपकर सकारात्मक विचारों को समाप्त कर देते हैं। सकारात्मक विचारों की मृग तृष्णा तृप्त करने के लिए प्रार्थना, सत्संग, धर्म-कर्म, दान-पुण्य द्वारा अल्प समय के बहिर्मुखी साधनों को अपनाकर, फिर वही नकारात्मकता हावी होने लगती है। इस प्रकार सकारात्मक विचारों में डूबने का समय कम है, नकारात्मक विचारों में गोते खाने का अधिक है। फलतः अवचेनत मन में चिन्ता, भय, डर, ईर्ष्या, क्रोध, दुःख असफलता के कालिमा युक्त दीपक जल उठते हैं और आत्मा का चैतन्य दीपक नकारात्मकता का प्रकाश देने लगता है। परिणाम होता है अनिद्रा, तनाव, अवसाद, शक्तिहीनता, दरिद्रता, मानसिक व शारीरिक रोग।

एक उदाहरण से मस्तिष्क के दो तरफ कार्यों को स्पष्ट किया जा सकता है। मस्तिष्क एक बगीचा है और मनुष्य उसका माली। माली हर पल विचार के बीज बोता है पर उसे पता नहीं है क्योंकि यह मन की सामान्य आदत है। अपने चेतन मन द्वारा अवचेतन मन में जैसे विचार बीज बोता है, उसे अपने शरीर व परिस्थितियों द्वारा वैसी फसल काटनी होती है 'जो बोओगे सो काटोगे' कहावत यहाँ चरितार्थ होती है। प्रत्येक मनुष्य सोच का जनक है, सोच को सकारात्मक व नकारात्मक रूप में स्वीकारना मनुष्य पर निर्भर हुआ, न कि किसी अन्य व्यक्ति, परिस्थिति या घटना पर। अतः अवचेतन मन की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। यह सभी तरह के बीजों को उपजाने में सहायक है, अच्छे व बुरे। सर्वविदित व मान्य है कि काँटे बोने पर अंगूर नहीं मिल सकते। इस तरह प्रत्येक विचार एक कारण है और प्रत्येक परिस्थिति उसका परिणाम इस कारण आवश्यक है कि विचारों का निरन्तर प्रहरी बन उनका निरीक्षण कर नियंत्रण किया जाए। तभी वांछित परिस्थिति व परिणाम पा सकते हैं।

मनःस्थिति, परिस्थिति, भोजन, संगत ऐसे घटक हैं जो विचारों को सदैव प्रभावित करते हैं। इन घटकों का विस्तार अति व्यापक है। इन्हीं पर चेतन और अवचेतन मन कार्य करता है। अवचेतन मन, चेतन, विचारों के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। यह चेतन विचार वास्तव में सच है। इनमें बुद्धि, असीमित ज्ञान, ऊर्जा सदैव प्रवाहित होती है। इन्हें जीवन में अपनाकर जीवन बदला जा सकता है। यह सत्य है आज हम जो भी हैं अपने सकारात्मक व नकारात्मक विचारों के कारण हैं। इन्हें बदलना हमारे हाथ में है। अतः इन्हें तत्काल बदल सकते हैं और इसी समय शांति, खुशी, श्रेष्ठकर्म, सद्भावना, समृद्धि और स्वास्थ्य के विचारों के बीच बोना आरंभ करें। इन्हें स्वीकार करें तो विचारों की सकारात्मक फसल काटकर जीवन सुखमय बनाने का मंत्र मिल सकता है। ऐसा ही है विचारों का जादू। विचारों को केन्द्रित कर निरन्तर अभ्यास से मन वांछित परिणाम प्राप्त होते हैं। इसी का नाम आस्था है। अधिकांश मनुष्य इस रहस्य को न जानने के कारण ईश्वर, समय, व्यक्ति, परिस्थिति, भाग्य पर दोष का निशाना साधते हैं। परिस्थितियाँ व स्थितियों से संघर्ष कर उन्हें बदलने की कोशिश में समय व परिश्रम व्यर्थ करते हैं। इस तरह कारण को बदलने पर परिणाम बदलना आसान है।

न्यूटन के तीसरे सिद्धांत के अनुसार हर कार्य की समान व विपरीत प्रतिक्रिया सदैव होती रहती है। मानव मस्तिष्क संसार का सबसे बड़ा चुम्बक है, जो चाहे उसे अपनी ओर खींच सकता है। इसलिए सकारात्मकता के प्रति निरन्तर सजग रहकर जीवन को सफल, सुखी, समृद्ध व स्वस्थ बनाया जा सकता है। यही सकारात्मकता का नियम व परिणाम है। 'सकारात्मकता' आस्था और अध्यात्म का ही पर्याय है। इसे जीवन का अनिवार्य गुण साथी बनाकर जीवन को बदला जा सकता है। हानिकारक व नकारात्मक विचारों को त्याग दें। सकारात्मकता का उद्भव, स्वरूप, विधि, प्रमाण स्पष्ट होने के बाद केवल इसका प्रयोग शेष है, करके देखें। श्रेष्ठ विचारों की कस्तूरी की उद्भावना को पहचान कर प्रयोग करते ही सुख, शांति, समृद्धि, सफलता, स्वास्थ्य पकड़ में आ गए तो भटकना क्यों? यही व्यावहारिक सत्य है।

कान्ता खतूरिया कॉलोनी, डी.पी.एस. के पास, बीकानेर (राज.)
मो: 9602442645

हिन्दी विविधा

महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन

❒ मुकेश प्रजापत

बड़े शौक से सुन रहा था जमाना
तुम्हीं सो गए दास्ताँ कहते कहते।

उस महान आत्मा की दासताँ को जिसे देश के गरीब और अमीर सभी ने एक भाव होकर सुना और मनन किया, उनके गहनतम दार्शनिक विचारों को जिन्हें विश्व के बड़े से बड़े दार्शनिक जो कि उनके बाद के और पहले के जीवन दर्शन और कर्म दर्शन को समझने में अंत तक उलझे रहे, सत्य और अहिंसा के आधार पर जिसने विश्व को शान्ति के साथ रहना सिखाया, सत्याग्रह के सिद्धांतों के द्वारा जिसने विश्व दर्शन को एक नया मार्ग दिखाया, उस महामानव की पवित्र भस्मी जब भारत के कण-कण में मिला दी गई, तब यह निश्चय किया गया कि ऐसे उपाय किए जाएँ जिनमें युगों तक विश्व उस महापुरुष की महान विचारधाराओं से प्रेरणा लेकर सद्भावना के मार्ग पर चलता रहे और विनाश से अपनी रक्षा कर सके।

अहिंसा प्रचंड शस्त्र है। इसमें परम पुरुषार्थ है। यह भीरू से दूर-दूर भागती है, वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। यह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ है पर चेतनमय है। यह आत्मा का विशेष गुण है। इसलिए इसका वर्णन परम धर्म के रूप में किया गया है। भारतीय इतिहास के युग प्रवर्तक सक्रिय दार्शनिकों की श्रेणी में महात्मा गाँधी का शीर्ष स्थान है। सत्याग्रह के प्रणेता, आजादी की लड़ाई के सिपाही, विधायक दृष्टि युक्त समाज सुधारक तथा धर्म और नीति में एकता की दुहाई देने वाले आधुनिक संत के रूप में वे विख्यात हैं। गोपाल कृष्ण गोखले कहते हैं, 'जो लोग प्रत्यक्षतया गाँधी जी के निकट सम्पर्क में आए, वे ही उनके व्यक्तित्व की विशालता को आँक सके। वीरों और हुतात्माओं को आकार प्रदान करने वाले रसायन से गाँधीजी का व्यक्तित्व विकसित हुआ है; बल्कि अपने समीप आए किसी भी सामान्य व्यक्ति को वीर या हुतात्मा बनाने की शक्ति उनमें है..ऐसे व्यक्ति के सामने कोई भी ओछा या अशोभनीय काम करने में संकोच होता ही है, साथ ही उनके निकटता के उन क्षणों में अपने में बुरे विचार न आने देने के प्रति भी दिमाग सचेत रहता है। यह

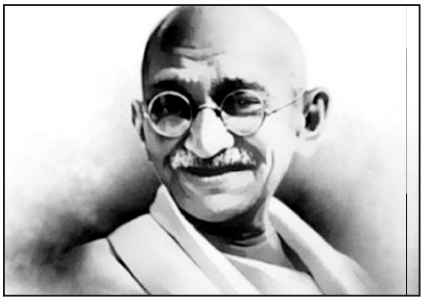

चिन्ता भीतर से कचोटती रहती है।
वे माखनचोर कहाते थे, तुम नमक चोर कहाते हो।
वे सुदर्शन चक्रधारी थे, तुम चरखाधारी होते हो।।

अध्यात्मनिष्ठ मानवतावाद

गाँधीजी जिन्दगी भर राजनीति से जुड़े रहे, तथापि उन्हें जॉर्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन, जोजफ मैजिनी, डीवे आदि विश्वविख्यात राजनीतिज्ञों की पंक्ति में नहीं बिठाया जा सकता क्योंकि मूलतयाः वे गौतम बुद्ध, ज्ञानेश्वर, कबीर आदि धर्मात्माओं के रसायन से बने थे आत्मानुभूति, प्रभु-दर्शन सत्य की खोज को उन्होंने अपना अंतिम लक्ष्य बनाया था। राजनीति को वे अपनी अध्यात्म साधना और सत्य के परीक्षणों का एक अंग मानते थे। इसीलिए राजनीतिक आंदोलन में उन्होंने तत्वनिष्ठा और साधन शुचिता पर अधिक बल दिया। गीता, बाइबिल, तुलसी, रामायण आदि धर्मग्रन्थों के संस्कार उनके दिल में गहरे बैठ गए थे; तथापि किसी भी प्राचीन और मध्ययुगीन संप्रदायों की चहारदीवारी में उन्होंने अपनी धर्म भावनाओं को कैद नहीं होने दिया, बल्कि उनके धर्म विचारों में आधुनिक भौतिकता व उदारता की छाप यदा-कदा दिखाई पड़ती है। गाँधी के सैद्धांतिक विवेचन के केन्द्र में सदा मानवता की प्रतिष्ठा ही रही है। संसार नियामक नीतिगत है और नैतिकता की ललक इन्सान की अविभाज्य विशेषता है, इस पर गाँधीजी की दृढ़ श्रद्धा थी। गाँधीजी की परिभाषा के अनुसार यह शक्ति ही सत्य या परमात्म तत्व है। विश्व-प्रशासन की नैतिकता, इन्सान की सद्भावना और अंतःशक्ति में अटूट विश्वास, सभी तरह के अ-शिव एवं अन्य के साथ जूझने की प्रेरणा और साधन-शुचिता का आग्रह। इस चतुःसुत्री पर ही गाँधीजी का मानवतावादी सिद्धांत आधारित है। यह सिद्धांत ही उनके सत्याग्रह दर्शन का मुख्य आधार बन गया है।

विश्व समाज के स्वप्न द्रष्टा

महात्मा गाँधी के बिना आधुनिक भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। गाँधीजी ने अफ्रीका से 9 जनवरी,1915 को भारत लौटकर 30 जनवरी, 1948 तक भारतीय समाज को जीवन के सभी क्षेत्रों में जो नेतृत्व प्रदान किया। वह भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को तो अहिंसा एवं सत्याग्रह आधारित रूप दिया ही साथ ही व्यक्ति और, व्यक्ति और समाज के तथा व्यक्ति और राजनीति के रिश्तों में मानवता को मूल आधार में रहे। उससे न केवल भारतीय उपमहाद्वीप बल्कि तत्कालीन विश्व समाज भी प्रभावित हुआ। व्यक्ति की कथनी और करनी में, व्यक्ति के जीवन के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तथा व्यक्ति और समुदाय के संबंधों में किसी प्रकार का भेद नहीं रहना चाहिए, संगति बैठानी चाहिए। यह दुर्लभ पाठ उनके जीवन से सहज ही सीखा जा सकता है। भारतीय इतिहास में वे सत्यनिष्ठ, समाज सुधारक, विचारक तथा मुक्त मनुष्य के रूप में स्थापित हुए। उन्होंने हमारी प्राचीन दर्शन एवं संस्कृति से प्रेरणा प्राप्त की, समकालीन विश्व ज्ञान एवं तकनीक को समझा तथा भावी विश्व की कल्पना भी की।

पश्चिमी और पूर्वी संस्कृति का संगम

गाँधीजी के विचारों में हिन्दू धर्म के अध्यात्मवाद तथा पश्चिमी संस्कृति के भौतिकताजनित मानवतावाद का संगम हुआ है। उनके मन पर हिन्दू धर्म के गहरे संस्कार थे। लेकिन पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने अपनी पुरानी धारणाओं में धीरे-धीरे नया भौतिकवादी आशय भर दिया। चिरवादी भारतीय दार्शनिकों ने अपने विचार में देह और आत्मा, प्रकृति और पुरुष, भौतिक और आध्यात्मिक स्थितियों को एक-दूसरे से बिलकुल ही अलग कर दिया है। इस दर्शन के प्रभाव से गाँधी जी ने मोक्ष सिद्धि को ही मानव

जीवन की चरम उपलब्धि माना। लेकिन मध्यकालीन सन्तों की तरह उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिकता के बीच किसी मूलभूत विरोध की कल्पना नहीं की। जब तक सामान्य आदमी की मूलभूत जरूरतें पूरी नहीं हो जाती, वह अध्यात्म के बारे नहीं सोचेगा इसीलिए वे पुरजोर समर्थन करते हैं, आर्थिक ही आध्यात्मिक होगा। समाज से कटकर, गिरि कंदराओं में जाकर ईश्वर चिन्तन में मग्न हो जाने से आदमी की आध्यात्मिक प्रगति नहीं हो सकती; बल्कि अपने परिवेश से तदाकार होकर जनता की समस्याओं को हल करना, उनकी जिन्दगी के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना ही ईश्वर भक्ति का असली रूप है, इसी मानवतावादी यथार्थता को गाँधीजी अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। इसी पृष्ठभूमि पर धर्मनिष्ठ होने के बावजूद उन्होंने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या को हल करने की दृष्टि से व्यापक जन आन्दोलन खड़ा किया। शारीरिक स्वास्थ्य की दुहाई वे जरूर देते थे तथापि सुख नसीब कतई पसन्द नहीं था। आम आदमी की प्रतिदिन बढ़ती जा रही भौतिक आवश्यकताएँ और इसके लिए जिम्मेवार उद्योग-प्रधान संस्कृति का उन्होंने धिक्कार ही किया है। अपने शुद्ध स्वार्थ से परे हटकर सामूहिक कल्याण के लिए जो जीता है उसे उच्च कोटि के आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। गाँधीजी ऐसे व्यक्ति को ही यथार्थ रूप से धर्मनिष्ठ मानते थे।

हिन्दू धर्म ग्रंथ और भारतीय परम्पराओं के बारे में गाँधीजी के मन में आदर भाव था; तथापि धर्मग्रंथों या परम्पराओं की श्रेष्ठता को समग्र रूप से उन्होंने कभी भी स्वीकार नहीं किया। माना कि ईश्वरीय प्रेरणा से ही प्रत्येक धर्म का उदय हुआ है, तथापि ईश्वरीय सन्देश इन्सान के जरिए ही हमारे पास पहुँचता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आदमी कितना ही बड़ा महापुरुष क्यों न हो, उसकी सीख अधूरी ही रहेगी। गाँधीजी के अनुसार अन्याय और अनीति का विरोध करना ही प्रत्येक धर्मनिष्ठ आदमी का कर्तव्य होना चाहिए। गाँधीजी पहले ऐसे भारतीय धर्म सुधारक थे जिन्होंने धर्म को आधार बनाकर संगठित रूप से अन्याय का विरोध करने की सीख आम आदमी को दी।

महात्मा गाँधी के विषय में महत्त्वपूर्ण इतिहासकार अरनॉल्ड टॉयनबी ने लिखा है- ''हमने जिस पीढ़ी में जन्म लिया है, वह न केवल पश्चिम में हिटलर और रूस में स्टालिन की पीढ़ी है, वरन् वह भारत में गाँधीजी की पीढ़ी भी है। यह भविष्यवाणी बड़े विश्वास के साथ की जा सकती है कि मानव इतिहास पर गाँधी का प्रभाव स्टालिन या हिटलर से कहीं ज्यादा और स्थायी होगा।' महात्मा गाँधी के चिन्तन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में सत्य और अहिंसा, सत्याग्रह, धर्म और राजनीति, आचरण, व्यवहार, अस्पृश्यता, अछूतोद्धार, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, आर्थिक दृष्टि, यंत्रीकरण, औद्योगीकीकरण और शिक्षा इत्यादि विषयों का महत्त्वपूर्ण योगदान था।

याद करेगा भारत का इतिहास तुम्हें।
याद करेगा भारत का बलिदान तुम्हें।।
याद रहेगा महाकाल का रूप तुम्हारा।
याद रहेगा शत्रु का विमर्दन काम तुम्हारा।।

गाँधी : आज के भी और कल के भी :

आज भी गाँधीजी के विचार सत्य के अनुभव पर आधारित हैं। वे शुद्ध-बुद्ध आत्मा का दर्शन कराते हैं तथा जीवन में आध्यात्मिकता एवं नैतिकता को प्रमुख स्थान देते हैं। हम यदि समझते हैं कि व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में प्रेम, निर्भयता, स्वतंत्रता, अपरिग्रह, विश्व-मैत्री आदि उदात्त गुण आवश्यक हैं तो हमारे लिए गाँधीवाद प्रासंगिक हो उठता है। युद्धों से मँड़ गए इस विश्व में प्रत्येक देश विश्व शान्ति का स्वप्न देखता है। इस स्वप्न को साकार करने का एक ही रास्ता है कि हम अहिंसा को अपनाएँ, हर व्यक्ति और राष्ट्र का सम्मान करें और सबका विकास करें। अहिंसा के द्वारा ही हम आण्विक अस्त्रों और उनके आतंक से मुक्त हो सकते हैं। गाँधीवाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हृदय परिवर्तन स्थायी विकास का मार्ग दिखाता है और मानवीय मूल्यों के आधार पर प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। गाँधीवाद आज के समाज का साथ ही भविष्य के समाज का भी जीवनदर्शन है।

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल

वरिष्ठ सहायक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोगड़ा कलाँ,
जोधपुर (राज.)
मो: 9829153455

अनुत्तरित

❐ मनमोहन गुप्ता

एक तरफ आंटी थी, दूसरी तरफ भुआ, मौसी, चाची, मामी और ताई के संबोधन का मोर्चा खड़ा था। आंटी कह रही थी कि तुम्हारी इतनी लंबी फौज, जो मेरे सामने खड़ी है, वह सब मेरे ही एक संबोधन में अपना अस्तित्व खो देती है।

'आंटी' के संबोधन ने छाती फुलाकर के संबोधनों पर अपना रौब जमाया था। उस पर भारतीय संबोधनों में से 'चाची' ने कहा कि आंटी केवल मेरी ध्वनि के संबोधन का एहसास करा सकती है, अन्य सभी संबोधनों की बराबरी नहीं कर सकती।

इतने में ही 'अंकल' संबोधन भी संबोधन के इस बहस-मंच पर आ चुके थे उनका तर्क था कि मैं 'अंकल' ऐसा संबोधन हूँ, जो हर स्थानों पर काम आता हूँ। किसी भी ऑफिस में कुछ काम हो, आप बाबूजी को अंकल कहेंगे तो काम आसानी से हो जाएगा। किसी से कोई भी काम कहीं भी निकालना हो तो, बस 'अंकल' कह दो, वह अपने आप तुम्हारे सम्मुख समर्पित हो जाएगा और तुम्हारा काम हो जाएगा।

अंकल और आंटी शब्दों के संबोधन अपनी धाक जमाकर भारतीय संस्कृति के संबोधनों का मुँह बंद कर रहे थे। तभी भारतीय संबोधनों के बीच में से आवाज आई 'चाची तो चाची ही रहेगी, लेकिन ताई को आंटी कहकर मामी, मौसी आदि भुआ को इन संबोधनों से उसकी वास्तविकता का एहसास नहीं होता है।

'ठीक इसी तरह ताऊ, फूफा, मौसा को हम अंकल कहेंगे तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा!' भारतीय संबोधनों के सम्मुख पाश्चात्य संबोधन 'अंकल-आंटी' पराजित होकर मंच से जा चुके थे। वे अनुत्तरित थे।

गुप्ता सदन
एस.बी.के. गर्ल्स हा. सैकण्डरी स्कूल के पास
मण्डी अटलबन्द, भरतपुर-321001
मो: 6378262325

हिन्दी विविधा

भोला की कामयाबी

❐ दीपक कुमार गुर्जर 'दीप'

भोलाराम एक निर्धन असहाय व्यक्ति था, जो शहर के दूर-दराज के एक गाँव में रहता था। गाँव में पानी की समस्या होने पर उसे अपने परिवार का लालन-पालन करने में कठिनाई होने लगी, वह कई दिनों तक काम की तलाश में यहाँ-वहाँ भटकता रहा, लेकिन काम नहीं मिलने पर वह बहुत निराश हुआ। इस स्थिति में सात पुत्र व दो पुत्रियों का पालन करना, भोलाराम के लिए आसान नहीं था।

वह एक दिन काम की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। भोलाराम को काम नहीं मिलने पर वह बहुत निराश हो गया था। थोड़ा आगे चलने पर भोलाराम को रास्ते में एक महात्मा जी के दर्शन होते हैं। भोलाराम उनको हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। महात्मा जी की दृष्टि भोलाराम पर पड़ती है। वह भोलाराम को निराश देखकर निराशा का कारण पूछते हैं? भोलाराम की आँखों से आँसूओं की धारा फूट पड़ी, फिर भोलाराम ने अपनी आँखे पोंछते हुए, सारा घटनाक्रम सुनाया। सारी बातें सुनने पर महात्मा जी भी थोड़ा भावुक हो गए।

थोड़ी देर के लिए सन्नाटा सा छा गया। फिर महात्मा जी भोलाराम को जीवन के मूल्यों का उपदेश देने लगे। उन उपदेशों को सुनकर भोलाराम बहुत प्रभावित होता है। वह अपने मन में कभी भी निराश नहीं होने का प्रण लेता है। भोलाराम महात्मा जी को प्रणाम कर वापस अपने घर कर आ जाता है। भोलाराम अपना व अपने परिवार का जीवनयापन करने के लिए अपना पुस्तैनी घर छोड़कर गाँव के समीप थोड़ी दूर खेत में आ जाता है। वहाँ उसने एक झौपड़ी बनाई और उसमें अपने परिवार के साथ रहने लगा। झोपड़ी के पास एक छोटे खेत को साफ करके उसमें बरसाती फसल की उपज करने लगा और उससे अपना जीवनयापन करने लगा।

जैसे-जैसे दिन निकलते गए वैसे-वैसे बच्चे बड़े होने लगे भोलाराम को अधिक खर्चा होने की चिन्ता सताने लगी। क्योंकि बरसाती फसल में इतनी ही उपज होती कि अगली बरसात तक दोनों समय के खाने के भी लाले पड़ते। भोलाराम के मन में अलग-अलग चिन्ता सताने लगी। जैसे उसके बच्चों को पढ़ाने की, पूरे परिवार के लिए कपड़ों की, घास फूस की तरह बड़ी हो रही पुत्रियों की शादी की इत्यादि।

वह फिर से चिन्तित रहने लगा। एक दिन वह गाँव के बाजार से घर का राशन लेकर घर वापस आ रहा था, तब रास्ते में भोलाराम को गाँव के सेठ लालजी मिल गए। सेठ जी ने भोलाराम का चेहरा देखकर चिन्ता का कारण पूछा। भोलाराम ने मन में उमड़ी रही बातों को लालाजी के सामने व्यक्त की, लालाजी को भोलाराम पर दया आ गई। भोलाराम के सरल व्यवहार को देखकर व गाँव में पानी समाप्त हो जाने पर भी मेहनत करना, लालाजी को अच्छा लगा।

सेठ ने भोलाराम को अपना बड़ा खेत खेती करने को दे दिया, लेकिन भोलाराम ने सेठ लालाजी के सामने फसल की सिंचाई का कोई साधन न होने की बात बताई। सेठ लालाजी ने भोलाराम की मेहनत व ईमानदारी को देखते हुए भोलाराम को कुएँ के निर्माण हेतु बिना ब्याज पर पैसे देने का वादा किया। अगली सुबह लालाजी ने अपने घर बुलाया। इस बात से प्रसन्न होकर भोलाराम अपने घर पहुँचा, इस खुशी में उसे पता ही नहीं चला कि गाँव के बाजार से घर का रास्ता कब निकल गया।

यह सारी बातें उसने अपनी पत्नी को बताई यह बात सुन चिन्ता में डूब रहे घर में खुशी की लहरसी दौड़ गई। अगली सुबह जब भोलाराम प्रातः सेठ लालाजी के घर पहुँचा, तो वहाँ सेठ जी दिखाई न देने पर वह घर की सीढ़ियों के पास लगी हरी घास में बैठकर इंतजार करने लगता है। जब लालाजी घर से बाहर आते हैं तो यह दृश्य देखकर वह दौड़कर भोलाराम को उठाकर बाहर पड़ी चारपाई पर अपने साथ बिठाते हैं। सेठ लालाजी की इतनी दयालुता देखकर भोलाराम के मन में और अधिक आदर भाव लालाजी के प्रति उमड़ने लगता है। बिना ब्याज के पैसे और इतना आदर सम्मान देने पर भोलाराम के मन लालाजी को धन्यवाद करता तथा ईश्वर से लम्बी उम्र की कामना करता है और पैसों को लेकर घर आ जाता है।

दूसरे दिन कुएँ के निर्माण हेतु दो मजदूरों को बुलाता है और स्वयं व मजदूरों सहित कुएँ की खुदाई शुरू कर देता है। दस से पन्द्रह दिन तक खुदाई करने पर भी पानी अर्थात गहराई पर होने के कारण जल धारा नहीं निकलती है।

भोलाराम थोड़ा निराश होता है। तो उसे महात्मा के सामने लिया प्रण याद आता है तो वह वापस कुएँ की खुदाई करने लगता है और दो दिन बाद जल धारा निकल आती है। भोलाराम की आँखों में खुशी के आँसू झलक आते हैं। फिर भोलाराम मेहनत व लगन से से खेती करता है और अच्छी फसलें उत्पादन करता है। दो-तीन वर्षों में खेती से अच्छी आय होने पर भोलाराम ने सेठ लालाजी को पैसे वापस लौटाकर लालाजी को हाथ जोड़कर धन्यवाद देता है। भोलाराम की मेहनत को देखकर वह भी बहुत प्रसन्न होता है।

इसी प्रकार भोलाराम धीरे-धीरे झोपड़ी की जगह पक्का घर (मकान) का निर्माण कराता है तथा अपने सातों पुत्रों व दोनों पुत्रियों की अच्छी परवरिश करता है तथा अपने बच्चों को गाँव परिवेश में होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त कराता है।

थोड़े दिनों बाद दो बड़े पुत्रों को सरकारी नौकरी मिल जाती है। भोलाराम धीरे-धीरे अपने पुत्रों और पुत्रियों की शादी कर देता है। कुछ समय बाद सबसे छोटे पुत्र को सरकारी नौकरी मिल जाती है। भोलाराम की जिन्दगी से दुख निकलकर खुशियाँ भर जाती हैं। भोलाराम सर्व सम्पन्न होने के बाद वह भी गरीब लोगों की सहायता करने लगता है।

भोलाराम गरीबों की सहायता करने के कारण सेठ भोलाराम जी के नाम से जाना जाने लगा।

शारीरिक शिक्षक
हनुमानपुरा, सेवापुरा, मोरीजा,
जयपुर (राज.)-303805
मो: 9079806668

हिन्दी विविधा

जैसी दृष्टि - वैसी सृष्टि

❐ गोमाराम जीनगर

ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना में मनुष्य की गणना की जाती है। भारतीय संस्कृति की मान्यता अनुसार संसार में 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ योनि संत-महात्माओं ने बतलायी है। क्योंकि ईश्वर ने शेष समस्त चर-अचर जगत के संरक्षण, संवर्धन और पोषण हेतु मनुष्य को अतिरिक्त क्षमताएँ प्रदान की है। साथ ही मनुष्य को विकल्प में से श्रेष्ठ का चयन करने का विवेक और सूझबूझ देकर मन के संकल्प को पूर्ण करने की अद्‌भुत सामर्थ्य भी प्रदान किया है। जिससे वह अपने जीवन को सुख-सम्पन्न बनाकर अन्यों की भी आवश्यकताएँ पूर्ण करके मन को संतुष्टि प्रदान कर जीवन को सार्थक बना सकता है।

मनुष्योचित्त गुणों द्वारा मनुष्य योनि को सर्वोपयोगी व सार्थक बनाने की शुरूआत बाल्यकाल से भी पहले (गर्भावस्था में) हो जाती है। ऐसा आजकल विज्ञान भी मानता है। अर्थात मानवोचित्त गुणों और सर्वकल्याणकारी भावनाओं का विकास जन्म के पश्चात ही नहीं बल्कि जन्म से पूर्व ही करना प्रारंभ किया जाना उपयोगी होता है। भारतीय सांस्कृतिक प्रवाह में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। यथा-वीर अभिमन्यु, भक्त प्रहलाद, ध्रुव, छत्रपति शिवाजी आदि। वीर अभिमन्यु के चक्रव्यूह-भेदन का कौशल माता सुभद्रा के गर्भकाल में ही सीख लेने का आख्यान हम सुनते ही आ रहे हैं। इसमें सुखद बात यह है कि आधुनिक विज्ञान के कई प्रकार के प्रयोगों द्वारा उक्त दृष्टांत की प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है। इससे स्पष्ट है कि हमें समाज-परिवार में ऐसी स्थितियाँ, वातावरण, माहौल बच्चे के जन्म से पूर्व ही निर्माण करना पड़ेगा ताकि जैसा नौनिहाल चाहते हैं वैसा संस्कारवान, क्षमतावान, ज्ञानवान, प्रज्ञावान, बलवान तथा नीतिमान मनुष्य प्राप्त कर सकें, जो बड़ा होने पर देश का सुनागरिक बनकर सकल मनोरथ पूर्ण करते हुए चराचर जगत के लिए वरदान साबित हो सके। इस प्रकार का मनुष्य निर्माण करने के लिए यथोचित वातावरण एवं स्थितियाँ जन्म से पूर्व अनुकूल होनी जितनी आवश्यक हैं, उतनी ही जन्म के पश्चात भी आवश्यक होती हैं। हमारे विद्यालयों में उक्त प्रकार के सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु जब कोई अभिभावक अपने नौनिहाल को लेकर आता है तो शिक्षक के नाते हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि वह बालक-बालिका सीखने के सबसे महत्त्वपूर्ण सोपान को आधारभूत रूप में चार-पाँच वर्ष तक परिवार में ही बहुत कुछ सीख चुका होता है। उसकी मानसिक, शारीरिक, रागात्मक, संवेगात्मक एवं भावनात्मक विकास की पीठिका निर्माण हो चुकी होती है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो बालक की अंतर्निहित सुषुप्त शक्तियों को जगाने और प्रकट करने का अवसर तथा वातावरण प्रदान करने की भूमिका विद्यालय-परिवार की रह जाती है। शिक्षक भी उसी ओर सकारात्मक पहल यदि करता जाता है तो निश्चित ही सुयोग्य नागरिक के निर्माण में शिक्षक बखूबी भूमिका निभा सकता है इसलिए विद्यालयों में विद्यार्थी का मन लगा रहे और वह घर से विद्यालय आने के लिए समय की प्रतीक्षा करता रहे। इस हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण करना ही आज की शिक्षा व्यवस्था के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

जीवन में असंभव से जान पड़ते कार्य को भी मन से व लगन से करने पर सफलता निश्चित ही मिलती है। यह बात विद्यार्थी के मन में भली प्रकार बिठाने से वह नित्य नूतन चिंतन, अनुसंधान करेगा, असफलता से घबराना छोड़कर परिश्रम की पराकाष्ठा कर, मन लगाकर, एकाग्रता पूर्वक समाधान हेतु जूझता हुआ अंततः सफलता प्राप्त करेगा ही और यशस्वी जीवन ही जीएगा। इस संदर्भ में मैं मेरे जीवन की एक सच्ची घटना को प्रस्तुत करना उचित समझता हूँ।

लगभग पाँच वर्ष पुरानी बात है। मैं मेरी पुत्री को चिकित्सार्थ अहमदाबाद लेकर गया था। रेलगाड़ी में आने-जाने का आरक्षण करवाकर यात्रा प्रारंभ की। गन्तव्य स्थान पर प्रातः लगभग 4 बजे पहुँचकर टैक्सी द्वारा एक रिश्तेदार के घर चले गए। घर पहुँचकर लगे हुए बिस्तरों पर आराम करने के लिए सो गए। प्रातः लगभग सात बजे जागकर स्नानादि से निवृत्त होकर तैयार हुए, तब तक चाय-नाश्ते का समय हो चुका था। गृह स्वामिनी के बुलावे पर सभी चाय-नाश्ते के लिए एकत्र हो बैठ गए। चाय नाश्ता करके उठते वक्त गृह स्वामिनी जी की नजर मेरी बिटिया के कानों पर पड़ी तो चिंताग्रस्त होकर पूछा- 'अरे तुम्हारे दायें कान के झुमके की लटकन कहाँ गिर गई?' मैंने कहा-'चिंता की कोई बात नहीं, कहीं गिर गई होगी। अभी तो जल्दी से डॉक्टर साहब के घर चलते हैं। देर हो जाएगी तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाएगी। लटकन गई तो गई। 'गृह स्वामिनी और परिवार के शेष सदस्यों के मन में कल्पनाधारित ग्लानि होने लगी कि लटकन उनके घर में गिर गई, वे सभी सदस्य समेटे हुए बिस्तरों को वापस उतारकर उलटफेर करते इस उम्मीद से देखने लगे कि शायद बिस्तरों में लटकन मिल जाए। खैर, लटकन नहीं मिली। मैं बिटिया को लेकर डॉक्टर साहब के पास होकर परामर्श और औषधियाँ लेकर आ गया। घर पहुँचा तो देखता हूँ कि उस परिवार को अभी तक उसी लटकन की चिंता थी। घर पर भोजन बना हुआ था। हमें ताजा भोजन कराया गया परंतु उनके चेहरे पर संतोष के साथ-साथ चिंता की लकीरें भी दिखाई दे रही थीं। घर-परिवार के किस्से और बातों ही बातों में दिन बीत गया। रात को हमारी वापसी की टिकिट बीकानेर के लिए थी। इसलिए रात का भोजन करने के बाद स्टेशन के लिए तैयारी करते वक्त तक उनके चेहरे पर बिटिया के झुमके की लटकन का उनके घर में खो जाने का पछतावा और उसके अनुरूप चिंता की रेखाएँ सहज ही परिलक्षित हो रही थी। टैक्सी में बैठते-बैठते मैंने उन्हें उस आत्म ग्लानि से मुक्त करने की कोशिश में कहा- 'चिंता मत करो, अपनी नेक कमाई की चीज है तो कहीं जाएगी नहीं, आपके घर वह लटकर गिरती तो मिल ही जाती, शायद रेल में आते वक्त ही रात को सोए हुए गिर गई होगी। आप व्यर्थ ही चिंता कर रहे हो, तनाव मुक्त रहो, मस्त रहो। अतिथि सत्कार के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, आप भी बीकानेर आना।' बाद में उनकी दो पुत्रियों को हाथ खर्ची देकर मुस्कुराते हुए टैक्सी को रवाना करवाया।

रेल्वे स्टेशन पहुँचने पर थोड़ी देर बाद दादर-बीकानेर रेलगाड़ी प्लेटाफॉर्म पर आकर रूकी, हम दोनों ने नियत स्थान पर बैठकर सामान रखकर स्वयं को व्यवस्थित कर लिया और बिस्तर लगाकर सो गए। सुबह लगभग 7 बजे अल्पाहार आदि करके बतियाते हुए मेरे मन में विचार आया कि यह तो वही ट्रेन है जिससे मैं

कल आया था। अतः उस नम्बर के कोच में उस सीट के पास जाकर ढूँढ़कर देखना चाहिए, शायद लटकन मिल जाए। मैंने जब ये विचार अपनी बिटिया को सुनाए तो उसे व अन्य यात्रियों को मेरी अक्लमंदी पर तरस आया। कहने लगे– ''इतनी बड़ी ट्रेन, इतनी दूरी तक जाकर आई है, सफाई भी हुई होगी, किसी और के ध्यान में भी लटकन आ गयी होगी, ऐसी स्थिति में छोटी सी लटकन को वहाँ ढूँढ़ने जाना, वहाँ बैठे यात्रियों को बताना एक तरह से अपनी हँसी कराने से अधिक कुछ नहीं है, आदि–आदि। थोड़ी देर तक मैं मौन होकर शांत बैठ गया क्योंकि बहुमत मेरे साथ नहीं था। किन्तु बैठे–बैठे मन में विचारों का ज्वार बार–बार उठ रहा था, मुझे उद्वेलित कर रहा था। ऐसे ही घूम फिर कर समय बिताने का कहकर आखिर मैं उठ खड़ा हुआ और उस कोच और सीट को देखने का निश्चय कर चल पड़ा। उस कोच में उस सीट पर एक दंपति बतियाते हुए अल्पाहार कर रहे थे उन्हें देखकर मैं वापस अपने स्थान पर बिटिया के पास आकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद मैंने बिटिया को वहाँ का दृश्य वर्णन करके बताया। बातों ही बातों में फिर उसे लटकन के बारे में चर्चा करते हुए मैंने कहा– ''कोई वस्तु खोने का व्यक्ति को दुःख होता है। मन अप्रसन्न होता है। किन्तु तुझे और मुझे ऐसा कोई महसूस नहीं हो रहा इसका सुखद संकेत है कि लटकन मिल जाएगी, जरूर मिल जाएगी। अतः वहाँ जाकर बातचीत करके ढूँढ़ने में हर्ज ही क्या है। मिलेगी तो ठीक अन्यथा ना तो है ही।'' इस तर्क को सुनकर तो बिटिया सहित पास बैठे यात्री आश्चर्य से मेरी तरफ देखते हुए मुझे घूरने लगे, जैसे मैंने कोई अपराध कर लिया हो। मैं शांतचित्त बैठा रहा। आधे घंटे बाद मैं झुमके की लटकन लाने की कहकर उठ खड़ा हुआ और चल पड़ा। उसी चिह्नित कोच व सीट पर पहुँच गया। उस सीट पर आमने–सामने बैठे दंपति से नमस्कार करते हुए पास में बैठने की अनुमति ली। उनकी अनुमति मिलने पर बैठ गया। थोड़ी देर गपशप के बाद मैंने उन्हें बताया कि ''मैं परसों इसी ट्रेन से बीकानेर से अहमदाबाद अपनी बिटिया के साथ गया था। यही कोच इसी सीट पर गया था। आमने–सामने सोये हुए हमने यात्रा की। कल सुबह पता चला कि बिटिया के एक कान के झुमके की लटकन शायद सोते वक्त गिर गई। आपको दिक्कत न हो तो आपका सामान हटाकर मैं सीट के नीचे ढूँढ़ना चाहता हूँ।'' मुझे व्यवहार और पहनावे को देखकर शायद उन्होंने विश्वास कर लिया और सामान निकालने की अनुमति देते हुए स्वयं भी सहयोग करने लग गए। मैंने झुककर सीट के नीचे देखा और गहराई तक हाथ ले जाकर टटोलना शुरू किया, कोई कचरा हाथ में आया। फिर थोड़ा और कोने में हाथ घुमाया तो एक धातु की चैन अनुभव हुई। हाथ में लेकर सीट से बाहर निकला और सीध होकर देखने लगा तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। यह चैन वही लटकन थी जो बिटिया के झुमके के टूटकर दो दिन पहले गिर गई थी। यात्री दंपति और अन्य भी आश्चर्यचकित हुए। सभी मेरी सूझबूझ, विश्वास और सकारात्मक प्रयास की सराहना करने लगे। उनका धन्यवाद ज्ञापित कर मैंने वापिस बिटिया के पास जाने की अनुमति ली और चल पड़ा। बिटिया के पास जाकर चुपचाप बैठ गया। निरुत्साह निराश बैठा देखकर बिटिया ने सहज ही कहा– ''मुझे तो पता था कि ऐसे कभी खोई हुई वस्तु नहीं मिल पाती, आप भी कैसा जुनून पाल रहे थे लटकन जैसी छोटी–सी चीज को इतनी बड़ी ट्रेन में दो दिन बाद ढूँढ़ने का। अब तो हो गयी– तसल्ली। अब इस तरह उदास बैठने से क्या होने वाला है पिताजी। छोड़ो, जाने भी दो, भूल जाओ उस लटकन को।'' वहाँ पास बैठे यात्री भी मुझे धीरज बंधाने लगे। मैं शांतचित्त सब कुछ सुन रहा था बिना किसी प्रतिक्रिया के।

थोड़ी देर बाद मैंने कहा कहा–''आप जो कह रहे हो वह एक नजरिया हो सकता है किन्तु मेरा नजरिया गलत है यह कहना ठीक नहीं है। जीवन में व्यक्ति यदि सकारात्मक चिंतन रखते हुए सकारात्मक प्रयास पूर्ण विश्वास के साथ करता है तो ईश्वर भी उसकी सहायता करता है। यह बात अपने बुजुर्गों से सुनी थी, आज पहली बार मौका मिला था आजमाइश करने का और मुझे उसमें सफलता मिल गई। यह लटकन तुम्हारे इसी झुमके की लगती है। यह कहते हुए हथेली खोलकर दिखाई तो सबके चेहरे विस्मयकारी प्रसन्नता से खिल उठे। सभी को लटकन मिलने का सुखद आश्चर्य तो हुआ ही, साथ ही मेरी कोशिश की सराहना करते हुए बहुत प्रभावित हुए। पास में बैठे अन्य दंपति ने भी अपने कटोरदान में से लड्डू निकालकर मेरा और बिटिया का मुँह मीठा कराया, ऐसा लग रहा था कि लटकन मिल जाने की खुशी उनको बिटिया से भी ज्यादा हुई और अब हम सभी सहयात्री से अधिक परिजन बन गए। मुझे ध्यान आया कि अहमदाबाद के रिश्तेदार को भी यह खुशखबरी तुरंत सुनानी चाहिए। क्योंकि वे इस घटना से काफी दुःखी थे, ग्लानि महसूस कर रहे थे। ज्यों ही फोन लगाकर उनको बताया तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने भगवान का शुक्रिया किया। खैर, यात्रा का अद्भुत अनुभवों के साथ सुखांत हुआ।

बंधुओं! हमारे जीवन में ऐसे क्षण हर कालखंड में उम्र के हर पड़ाव में आते रहते हैं, जब हमें ऐसे लगता है कि आसान समस्या का समाधान नहीं मिल रहा। तब भी निराश न होकर, हाथ पर हाथ धरे न बैठकर सकारात्मक चिंतन, समाधान के प्रयत्न करने के विकल्प तलाशकर एक विकल्प को संकल्प बनकर, परिश्रम और मेहनत करने के चरण निर्धारित कर संभावित सहयोग करने वालों का चयन, उनसे सहयोग लेने के क्षेत्र का निर्धारण और संयोजन–नियोजन करके एक तरफ से प्रयत्न प्रारंभ करने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। ऐसा करते समय कभी–कभार उपहास का पात्र भी बनना पड़ सकता है। किंतु घबराना नहीं, बिना प्रतिकार किए उसे सहन करते हुए धैर्यपूर्वक निरंतर परिश्रम करते रहने का हौसला ही सफलता का मंत्र है। विद्यार्थियों को प्रेरणा देने वाला शिक्षक इस प्रकार के सत्य प्रेरक प्रसंग सुनाकर 'परिश्रम की प्रतिष्ठा' करने का भाव जगा सकता है। यह सब कुछ मन की अवस्था पर ही निर्भर करता है। अतः मन में सदैव सकारात्मक विचारों का आवागमन होना आवश्यक है। सकारात्मक विचारों के आवागमन से ही सकारात्मक पहल होती है और रचनात्मक नई सृष्टि संभव हो पाती है। इस सत्य को विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क में भली प्रकार बिठाना ही शिक्षक का कार्य है। एक बार ऐसा करने पर शेष कार्य हेतु हमें केवल उन्हें प्रोत्साहन और अवसर देने की ही आवश्कता रहेगी। ताकि विद्यार्थी देश और समाज के लिए सुयोग्य नागरिक की भूमिका निर्वहन कर यश फैला सकें, दूसरों के लिए जी कर जीवन को सार्थक कर सकें। सम्यक दृष्टि रखते हुए उत्कृष्ट सृष्टि का निर्माण कर सकें। शिक्षक दिवस के अवसर पर यही मनोकामना है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय साईंसर,
ब्लॉक–पाँचू, बीकानेर
मो: 9413658894

हिन्दी विविधा

भाषा विकल्प नहीं संकल्प है

❒ रमेश जोशी

समय निरंतर गतिशील है और यही गतिशीलता समस्त परिवर्तनों की कारण-स्वरूप है। वैसे होने को तो हर क्षण और क्षणांश नया ही होता है और कभी लौटता नहीं है। हर दिन नया दिन हर महिना हर वर्ष दशक और शताब्दी या सहस्राब्दी सब नए ही होते हैं। सभी नश्वरों के लिए इसका बहुत महत्त्व है क्योंकि वे वस्तुतः इससे अपनी गणना करते हैं लेकिन प्रकृति और कालचक्र में यह कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता।

सो नई सहस्राब्दी और नई शताब्दी दोनों का यह दूसरा दशक है इसलिए हम हर बात की चर्चा इस 21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में करके पता नहीं क्या नया मूल्यांकन या नया सोच देना चाहते है? खैर!

भाषा मात्र संवाद का साधन : जीवनमात्र में संवाद की कोई न कोई भाषा होती है और संबंधित जीव अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उसका उपयोग और विकास करता है। चूँकि मानव अन्य जीवों से आगे बढ़कर शिकारी, भोजन संग्राहक, कृषक और अंततः मशीनों द्वारा विपुल उत्पादन कर सकने वाला प्राणी बन गया। इसी के अनुरूप उसकी भाषा की आवश्कता बदली और वह परिवर्तित हुई। भाषा में कोई विकास या विनाश नहीं होता। उसका काम संवाद है और संवाद की आवश्यकताएँ व्यक्ति के अनुसार बदलती हैं।

भाषा के अनेक रूप : एक भाषा में ही विभिन्न स्तर और शब्दावलियाँ होती हैं। वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत तथा प्राकृत, पालि, अपभ्रंश से होते हुए विभिन्न रूपों में विकसित भारत की विशेष रूप से उत्तर भारत की भाषाएँ एक ही भाषा के व्यक्ति की आवश्कताओं के अनुसार बदलते हुए रूप हैं।

एक ही भाषा में एक साथ ही व्यक्तियों के विभिन्न स्तरों, कार्यों और मनःस्थितियों के अनुसार कई रूप प्रचलित रहते हैं एक ही भाषा होते हुए भी वैज्ञानिक, विचारक, राजनीतिज्ञ, व्यापारी, वकील, अध्यापक की भाषा की शब्दावलियाँ भिन्न हो जाती है।

भाषा की यात्राएँ : इसी सन्दर्भ में हिंदी की बात करें तो व्यापार, संचार के साधनों, विज्ञापन आदि के कारण हिंदी ही नहीं, सभी भाषाओं के क्षेत्र का विस्तार हो रहा है। पहले भी विभिन्न देशों से, विभिन्न प्रकार के लोग, विभिन्न उद्देश्यों से यात्राएँ करते रहे हैं। हजारों वर्षों से विभिन्न भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान, धर्म, संस्कृति के क्षेत्र में विचारों और सूचनाओं के लिए आदान-प्रदान होता रहा है। अपने देश से दूसरे देशों में पर्यटन, व्यापार, अध्ययन, रोजगार या ज़बरन गुलाम बनाकर ले जाए जाने आदि कारणों से विस्थापन होता रहा है और इस तरह भाषाओं की यात्राएँ भी होती रही हैं।

अमरीका में हिन्दी : आज भारतीय श्रमिक, विषय विशेषज्ञ, व्यापारी अधिक मात्रा में विदेशों में हैं और अपनी सार्थक और प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज करवाए हुए अमरीका में ही लगभग 35 लाख भारत मूल के लोग हैं। चूँकि भारत एक बहुभाषी देश है इसलिए हिंदी भाषी लोगों की संख्या इससे काफी कम है। उनमें हिंदी के प्रति आकर्षण या चिंता के कई कारण हैं जिनमें पहचान का संकट प्रमुख है।

जब ये यहाँ आए थे तब उनके लिए अंग्रेजी और स्वयं का अमरीकीकरण अधिक महत्त्वपूर्ण था या राजनीतिक हितों के कारण अब भी जैसे कि बोबी जिंदल के अमरीकी बनने के सपने के सन्दर्भ में। लेकिन अब जहाँ अच्छी तरह से व्यवस्थित हो जाने के बाद जब वे यहाँ की अपनी दूसरी या तीसरी पीढ़ी से अपने कम होते भावनात्मक अलगाव को अनुभव करते हैं तो उन्हें हिंदी या अपनी मातृभाषा से अधिक बच्चों से अपने अलगाव की चिंता होती है।

अमेरिका में हिंदी का परिवेश : विदेशों विशेषकर अमरीका में रहने वाले प्रवासी भारतीयों को भारत में अपने जीवन के प्रथम 20-25 वर्षों तक सम्पूर्ण ध्यान अंग्रेजी और व्यावसायिक शिक्षा पर देते रहने के दौरान बिना किसी प्रयास के अपने परिवार और परिवेश में हिंदी अपने जीवंत रूप में उपलब्ध होती रही थी लेकिन यहाँ अमरीका में उनके बच्चों को घर से बाहर कहीं भी हिंदी या अपनी मातृभाषा का एक शब्द भी सुनने को नहीं मिलता और न ही हिंदी का कोई अखबार या रेडियो स्टेशन। यदि केबल पर टी.वी. के भारतीय कार्यक्रमों की बात करें तो उनमें पता नहीं किस देश की हिंदी बोली जाती है, वह हिंदी तो नहीं है जिसके द्वारा भारत या हमारी कोई पहचान बन सकती है या भारतीय संस्कृति प्रसारित होती है। रही बात परिवार की तो वहाँ भी माता-पिता हिंदी या किसी और भारतीय भाषा का प्रयोग कम ही करते हैं। भारतीय कार्यक्रमों में भी लोग अपनी कमजोर हिंदी के लिए झेंपने की अपेक्षा सहजता से अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। मंदिरों में भी एक कॉमन या संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी में ही प्रवचन को प्राथमिकता दी जाती है। ऐसे में बच्चों से बहुत आशा नहीं की जा सकती।

व्यवसायीकरण में भाषा की सीमाएँ : आज दुनिया में व्यवसायीकरण और बाज़ार के प्रभाव के कारण विभिन्न भाषाओं का जोर उभार दिखाई देता है वह हिंदी का भी है लेकिन हम जिस भाषा के लिए चिंतातुर हैं वह यह भाषा नहीं है। दिखने को तो बाज़ार का हस्तक्षेप हमें हर क्षण दिखाई देता है लेकिन वह हमारा भावनात्मक और विचारात्मक जीवन नहीं है। किसी भी उत्पाद का विज्ञापन या किसी वस्तु के साथ किसी न किसी भाषा में एक दो शब्द बोलता है तो यह अपने स्वार्थवश संबंधित पक्ष को लुभाने के लिए है। किसी पर्यटक को उसकी भाषा में समझाने के लिए गाइड यदि उसकी भाषा बोलता है या कोई दुकानदार किसी ग्राहक की भाषा में सामान बेचता है तो वह किसी भाषा की शक्ति या महत्ता नहीं बल्कि एक सामायिक आवश्यकता है। दुनिया में आतंकवाद के कारण दुनिया के बहुत से देशों में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विभिन्न देशों की भाषाएँ, विकसित देशों में पढ़ाई जा रही हैं। यह किसी भाषा की शक्ति नहीं बल्कि मज़बूरी है।

भारत और उसकी भाषाओं के विभिन्न स्तर : पहले बहुत से पश्चिमी विद्वान भारतीय वाङ्मय, दर्शन, भारतीयता सीखने आते थे और उसके लिए यहाँ के विद्वानों से विधिवत संस्कृत और हिंदी सीखते थे। कोलकाता के फोर्ट विलियम कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष बी

गिलक्रिस्ट ने 18 वीं शताब्दी के अंत में हिंदी का व्याकरण लिखा था। इसी तरह ग्रियर्सन, तेसीतेरी आदि ने यहाँ आकर भारतीय भाषाओं का गहन और ईमानदारी पूर्ण अध्ययन किया और भारतीय संस्कृति और वाङ्मय को विश्व में पहचान दिलाई। अब तक दुनिया अंग्रेजों और अंग्रेजी प्रचार के कारण शेक्सपीयर को ही विश्व का महान नाटककार मानती थी। ऐसे में जर्मनी के मेक्समूलर ने दुनिया का परिचय संस्कृत के महान कवि और नाटककार कालिदास से करवाया जिससे प्रचलित धारणा का खंडन हुआ। आज वामदेव शास्त्री के नाम से ख्यात डेविड फ्रोली दुनिया को भारत की आत्मा से परिचित करवा रहे हैं। कामिल बुल्के का राम के माध्यम से भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा को अवदान अप्रतिम है। वह देश, नस्ल और दुनियादारी से बहुत ऊपर की भावभूमि है।

दूसरी तरफ इस समय बहुत से विद्यार्थी भारत को एक बाज़ार मानकर नौकरी की दृष्टि से हिंदी सीख रहे हैं। लेकिन सिखाने और सीखने वाले दोनों में ही प्रेम नहीं, रोज़गार के लिए सीख रहे हैं। इसलिए उद्देश्य में अंतर होने के कारण भाषा के स्तर में भी अंतर आ ही जाता है। ऐसी ही हिंदी यदि भारत मूल के अमरीकी बच्चे सीखते हैं तो उनकी जीवन दृष्टि में कोई अंतर आने वाला नहीं है। ऐसे में न तो उनमें भारत की कोई पहचान बनने वाली है और जो बनेगी वह बड़ी विचित्र और अधूरी होगी। उसमें भारत की आत्मा तो नहीं होगी।

अभी शायद हम हिंदी के व्यावसायिक उपयोग को उसकी मूल शक्ति मानकर कुछ अधिक ही प्रसन्न हैं लेकिन जब मनुष्य आयु बढ़ने या ज्ञान के कारण वस्तु से ऊपर उठता है तो एक भिन्न और उच्च स्तर की भाषा की आवश्यकता अनुभव होती है। वैश्वीकृत बाज़ार में प्रयुक्त भाषाओं का यह रूप केवल एक अत्यंत सीमित पक्ष है।

भाषा विकल्प नहीं, संकल्प है : हमारी भाषा हिंदी या हमारे देश की अन्य भाषाएँ जिनमें हमारे देश की संस्कृति, अध्यात्म, जीवनानुभवों, वाङ्मय, कलाओं लोकसाहित्य में जो संवेदना धड़कती है वहीं हमारी प्राणवायु है। वही हमें आत्मिक आनंद प्रदान कर सकती है। भले ही हम कहीं भी रहें, कितने भी समय तक रहें लेकिन हमारी पहचान हमारे देश से ही होगी। उसे खोकर हम कहीं के नहीं रहेंगे। मारीशस, सूरीनाम, फीजी, त्रिनिदाद आदि में जो हमारे प्रवासी हिंदी भाई हैं उनके पास हिंदी के अतिरिक्त कोई भाषा नहीं थी। हिंदी की अपने साथ लेकर गई रामचरितमानस और हनुमान चालीसा जैसी पुस्तकों ने ही उन्हें आत्मिक संबल दिया और संघर्ष करके उन्होंने हिंदी को वहाँ के जीवन में वांछित स्थान दिलाया है। इसलिए उनकी वहाँ पहचान है लेकिन विकसित देशों में स्वेच्छा से अपनी आर्थिक उन्नति के लिए गए लोगों के लिए भाषा (हिंदी) वह शक्ति और संजीवनी नहीं रही जो उनके लिए अपने देश में थी। इसीलिए हमारे और उनके भाषा के प्रति दृष्टिकोण में अंतर है।

याद रहे मेरे अनुसार अपने देशों से जबरन गुलाम बनाकर विकसित देशों में ले जाए गए लोगों की स्थिति वहाँ पाँच शताब्दियों से रहने के बावजूद हीन बने रहने का मुख्य कारण यह भी है कि उनसे उनके धर्म, भाषा, नाम, संस्कृति, अध्यात्म, संस्कार सब छीन लिए गए थे।

भाषा और अस्मिता : हिंदी के सन्दर्भ में : हमें अपनी पहचान और अस्मिता के लिए केवल बोलचाल और व्यापार के नाम पर फैल रही हिंदी से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। हमें अपनी समस्त संवेदनाओं, संस्कृति, अध्यात्म की भाषा को संकल्प पूर्वक बनाए और बचाए रखना है और उससे जीवन शक्ति प्राप्त करना है।

उस भाषा की शब्दावली, रचना, तेवर, वैज्ञानिकता और उसमें व्याप्त प्रतीकात्मकता और मिथकीयता को समझना और संरक्षित रखना एक अलग विचार, आलेख और विषय है। जो सीधे-सीधे इस आलेख के क्षेत्र में नहीं है।

फिलहाल 21 वीं शताब्दी की वैश्विक होती इस दुनिया में हिन्दी के सीमित ही सही, हो रहे प्रसार से संतुष्ट हुआ जा सकता है।

वैसे ध्यान रहे यह वैश्विकता हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम' से भिन्न है।

प्रधान संपादक (विश्व)
अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति,
अमरीका सम्प्रति आइडिया टावर के सामने,
दुर्गादास कॉलोनी, कृषि उपज मंडी के पास, सीकर
मो: 9460155700

TLM एक नवाचार

❐ **मंजू वर्मा**

कोविड-19 के इस दौर में समस्त विद्यालय जहाँ बालकों की चहल पहल नहीं, चारों तरफ सूना-सूना विद्यालय समय वही 7:30 से 1:00 बजे तक शिक्षक विद्यालय आते हैं कुछ जरुरी कार्य भी करते हैं परन्तु पूरे दिन क्या काम करें। शिक्षण कार्य प्रभावित होने से विद्यालय विद्यालय नहीं लग रहे।

दिमाग में बैठे-बैठे विचार आया कि क्यों न शिक्षकों से इस काल में कुछ ऐसा कराया जाये जो विद्यालय व छात्रों के लिए उपयोगी हो। मैंने प्रत्येक शिक्षक को एक टास्क दिया उन्हें कहा कि प्रेत्यक शिक्षक 5-5 TLM बनाए। प्रारम्भ में तो शिक्षक सोचने लगे कि मैडम यह क्या कार्य दे रही हैं हमें? परन्तु एक-दो महिला शिक्षक ने हामी भरी की मेडम हम बनायेंगे। अब क्या था वे तीनों महिला शिक्षक इस कार्य में जुट गई और एक सप्ताह में तीनो ने 3-3 TLM बना कर दी। बहुत ही सुन्दर व आकर्षक जब सुबह यह TLM वो शिक्षिकाएँ मुझे दिखा रहीं थी, तो मैंने उनको सारी TLM टेबल पर लगाने को कहा और बाकी स्टाफ को भी देखने को कहा। आप यकीन मानेंगे एक सप्ताह बाद गणित के अध्यापक जी ने बहुत ही सुन्दर वर्किंग मॉडल बनाकर मुझ दिये। सभी ने उनकी तारीफ की। धीरे-धीरे यह सिलसिला प्रारम्भ हो गया है और सभी शिक्षक TLM बनाने में लगे हैं। मुझे बहुत खुशी है कि यह नवाचार आने वाले समय में कक्षा शिक्षण को निश्चित रूप से प्रभावी बनायेगा। क्योंकि जो TLM इतनी मेहनत करके बनाई गई है उसका प्रयोग शत प्रतिशत होने की संभावना होती है।

इस तरह शिक्षकों के समय के उपयोग के साथ-साथ विद्यालय में TLM का संग्रह बहुपयोगी सिद्ध होगा। मैं अपने शिक्षकों की भूरी-भूरी प्रशंसा करती हूँ साथ ही उन्हें शुभकामनाएँ भी देती हूँ कि वे इसी तरह नित नये नवाचार करते हुए सक्रिय रहें।

प्रधानाचार्य
शहीद छोटूराम मेघवाल रा.उ.मा.वि.,
चौपासनी, चारणान, तिवंरी, जोधपुर
मो. 9414917525

हिन्दी विविधा

इन्सानियत अभी जिन्दा है

❒ श्रवण सिंह राजपुरोहित

रात का घना अंधेरा बढ़ता जा रहा है। हर दिशा में खामोशी ही खामोशी पसरी है। कभी-कभार कुत्तों के भौंकने और रोने की आवाजें ऐसे लगती हैं मानों वो अन्धेरे एवं सन्नाटे को चीर रही हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा। लाईटें जल रही हैं मगर सभी अपने घरों में कैद हैं। गाँव के एक कोने में नत्थु काका का केलूओं से ढका कच्चा मकान एवं मकान के बाहर खड़ा नीम का पुराना पेड़। पतझड़ के मौसम में हवा के झोंके के साथ गिरती पत्तियाँ ऐसे लगता है मानों रात की खोमोशी में संगीत है। नत्थु काका घर के आँगन में खटिया पर लेटे अपलक आँखों से आसमान में तारे निहार रहे हैं लेकिन दिमाग में कुछ और ही उथल-पुथल मची थी। इतने में पत्नी की आवाज सुन उठ बैठे। पत्नी ने कहा ''ऐसे बैठे रहने से क्या होगा? घर में पिछले दो रोज से चुल्हा भी नहीं जला है। बच्चे कब तक पानी पी-पी कर जिन्दा रहेंगे। कुछ तो करना होगा?'' इतना कहकर सन्तोषी नत्थु काका के पास आकर बैठ गई। नत्थु काका बोले- ''दस रोज से दिहाड़ी बन्द है। गाँव, शहर सभी बन्द हैं। कमाई कैसे होगी? तुम्ही बताओ।'' सन्तोषी बोली- ''लेकिन ऐसे तो हम सब मर जाएँगे? कुछ तो करना होगा? किसी से सहायता मिल जावे तो....!

नत्थु काका-''हाँ, मैं भी यही सोच रहा हूँ।''

बच्चे भी माता-पिता की बातचीत सुन रहे हैं। भूख से व्याकुल चेहरे मुरझाए हुए हैं। पिछले दो दिन से एक निवाला भी पेट में नहीं गया था। आँखें रोटी की आस में जैसे पथरा गई थी। नत्थु काका की तीन संतानें जिसमें एक लड़का एवं दो लड़कीयाँ। नत्थु काका एवं संतोषी दोनों दिहाड़ी मजदूरी कर जीवन यापन करते। कभी दोनों को तो कभी एक को मजदूरी मिल जाती लेकिन कोरोना महामारी इनके जीवन में कहर बन कर आई। कोरोना वायरस ने तो गाँव एवं शहर का सारा वातावरण ही बदल दिया। दुकानें, बसें, मजदूरी, काम धन्धा सब बन्द हो गया। प्रशासन जोर-शोर से कोरोना के बारे में लोगों को सचेत करने में लगा है लेकिन नत्थु काका एवं सन्तोषी को तो दो वक्त की रोटी की जरूरत है। उन्हें जिन्दा रहना है और जिन्दा रखना है छोटे-छोटे बच्चों को। इस लॉकडाउन की घड़ी में वे समझ नहीं पा रहे हैं कि किस के पास हाथ फैलाएँ। कुछ देर की खामोशी को तोड़ते हुए संतोषी बोली- 'आप नियंत्रण कक्ष में फोन करके सहायता क्यों नहीं माँगते?'

नत्थु काका - 'लेकिन वहाँ हम गरीबों की कौन सुनेगा?'

सन्तोषी हिम्मत बंधाते हुए बोली - 'एक बार कोशिश तो कर लो।'

नत्थु काका ने सन्तोषी से कहा- हाँ, जरूर! तुम वो फोन नम्बर ले आओ जो मास्टर जी ने दिए थे।

सन्तोषी ने दीवार पर कोयले से लिखे नम्बर तुरंत दे दिए। नत्थु काका ने फोन मिलाया। आगे से 'हैलो' की आवाज आई।

नत्थु काका ने एक ही साँस में अपनी पीड़ा कह डाली। काका की आँखें भर आईं। अब शायद सुबह कुछ सहायता मिल जाएगी! यह सोचते हुए उनकी आँख लग गई। सुबह कब हुई पता ही नहीं चला।

सूरज निकल आया। खटिया से उठकर नत्थु काका बैठ गए। गली से कुछ आवाजें आ रही हैं। शायद लोग इकट्ठे हो रहे हैं। नत्थु काका ने बाहर गली की ओर देखा और सोचने लगे... लोग क्यों इकट्ठा हो रहे हैं? ऐसी क्या बात है? क्या घटना घटित हुई है? यही सोचते हुए वो भी घर से बाहर निकल गली में आ गए। लोग परस्पर चर्चा कर रहे हैं कि सरपंच के पास पुलिस का फोन आया था। पुलिस ने सरपंच को बताया कि गाँव से किसी व्यक्ति ने बताया कि वो व्यक्ति तथा उसका परिवार दो दिन से भूखा है। गाँव वाले कह रहे हैं ऐसा कौन है? जो गाँव को झूठा बदनाम कर रहा है। सरपंच ने तो कह दिया कि गाँव में ऐसा गरीब कोई भी नहीं है। कोई बोल रहा है कि ऐसे व्यक्ति को गाँव के समक्ष ला कर दण्डित करना चाहिए क्योंकि उस व्यक्ति ने गाँव का नाम नीचा किया है। इस तरह भाँति-भाँति कि बातें हो रही थी। लेकिन कोई भी मुसीबत के मारे नत्थु काका के दुखों एवं पेट की पीड़ा को नहीं समझ रहा है नत्थु काका चुपचाप सब कुछ सुन रहे हैं। धीरे-धीरे उनके कदम अपने घर की ओर बोझिल मन से मुड़े। घर में आकर नत्थु काका लम्बी सांस लेकर चारपाई पर निढ़ाल होकर बैठ गए ओर सोच में पड़ गए कि अब क्या करें? मन कहता है अपना निवाला किसी को ना दो पर अगर कोई भाई भूखा हो तो बांट कर खाना भी हमारी संस्कृति है। इस संकट की घड़ी में सब एक दूसरे का सहारा बनने चाहिए लेकिन लोक लाज, गाँव की मर्यादा एवं इज्जत के नाम पर गरीबों का निवाला छिनने पर तुले हैं। अब शायद प्रशासन भी मेरी कैसे सुध लेगा? सरपंच ने एक बार भी नहीं सोचा कि जिनके पास न पैसा है, न ही अनाज उनका क्या होगा? भूख के मारे सभी बेहाल हैं लेकिन क्या करें? अब कौनसा रास्ता बचा है यही सोच रहे हैं नत्थु काका।

इतने में बेटा बोला - ''पापा आज तो रोटी मिलेगी ना?''

नत्थु काका ने एक टक बेटे का चेहरा निहारा एवं आँखों से अविरल अश्रु धारा वह निकली। लेकिन बेटे के प्रश्न का उत्तर वो क्या देवे, वो तो निरुत्तर है।

धीरे-धीरे सूरज चढ़ कर ढलान की ओर जा रहा है। नत्थु काका ने अब परिवार को बचाने का निर्णय कर लिया था। अब उनके पास परिवार को भूख से मरने से बचाने हेतु एक ही उपाय बचा था, चोरी! यह वक्त ही तो है जिसने आज इसे यहाँ ला खड़ा किया। कौन चाहता है कि वो चोरी करे! लेकिन खुद की भूख तो हर पिता बर्दाश्त कर ले पर छोटे-छोटे बच्चों की भूख कैसे बर्दाश्त कर ले। सुरज अस्ताचल की ओर हो चला। आसमान में चन्द्रमा चाँदनी बिखेरने लगा। नत्थु काका ने गाँव की ओर कदम बढ़ा लिए। उसे तो सिर्फ खाने के दाने चाहिए या चंद रुपये जिससे रोटी नसीब हो जाए। लेकिन जैसे ही मन में विचार आया कि चोरी करते पकड़ा गया तो क्या होगा? मेरे परिवार एवं उसकी इज्जत का। मैं मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहूँगा। लेकिन दूसरे पल बच्चों के भूख से बिलखते चेहरे आँखों के सामने तैरने लगते हैं। उनकी खातिर आखिर मुझे यह अपराध करना ही होगा। यह

सोच नत्थु काका आगे बढ़ते हैं। एक घर के आगे जाकर पाँव रुकते हैं। गली सुनसान जैसे मुर्दों का बास हो। सभी अपने-अपने घरों में सो रहे हैं। चारों तरफ सन्नाटा पसरा हैं। एक भी ऐसा घर नहीं हैं जहाँ लोग नहीं हो। अब चोरी कैसे करूँगा! पैर पीछे हटने लगे। गली के बाहर निकलकर पैर ठिठक गए। खाली हाथ घर जाकर क्या करूँगा। बच्चों को क्या खिलाऊँगा? ऐसा सोच मन विचलित हो रहा था। एक पल सोच कर कदम आगे बढ़ने लगे। नदी के दूसरे किनारे मन्दिर में कुछ तो मिल जाएगा इस आशा में नत्थु काका मन्दिर जा पहुँचे। चारों और नजरें दौड़ाई। वहाँ कोई नहीं था। मन्दिर में सन्नाटा पसरा हुआ था। धीरे-धीरे सधे कदमों से मन्दिर में प्रवेश किया। नजरें मूर्ति पर एकटक जा लगी। मूर्ति के चेहरे पर अलौकिक आभा चमक रही थी। मानो साक्षात् प्रभु सम्मुख हों। नत्थु काका हाथ जोड़ कर निहारने लग गए फिर अचानक रूलाई फूट पड़ी। मन की सारी व्यथा प्रभु को सुना दी। कुछ देर बाद मन शान्त हुआ परन्तु पेट की आग तो अब भी जल रही थी लेकिन चोरी का विचार मन से निकल गया था। वापस घर जाने के लिए नत्थु काका मुड़े कि सामने गाँव के मास्टरजी खड़े थे। नत्थु काका ने उनको देखा और नजरें झुकाते हुए बोले-'मास्टरजी आप यहाँ!'

मास्टरजी - हाँ, मैं दिन में कोरोना के बचाव के लिए घर-घर जाकर लोगों को जागरुक करता हूँ एवं परिवार को संक्रमण से बचाने हेतु रात्रि विश्राम परिवार से दूर यहाँ एकांत मन्दिर में।

नत्थु काका आगे बढ़ने लगे। मास्टरजी बोले ''रुको... मैंन सब कुछ सुन लिया है। चलो मेरे साथ अभी इन्सानियत जिन्दा है। सुबह के उजाले के साथ नत्थु काका के घर चूल्हा जल रहा है। आंगन में बच्चे खिल-खिला रहे हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोट,
बालियान, पाली (राज.)
मो: 9928559486

दूसरों की गलतियों से सीखो, अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने में अपनी आयु कम पड़ जाएगी।

-चाणक्य

हिन्दी विविधा

चिड़िया

❒ मनोज कुमार यादव

सुबह-सुबह छत पर जाते ही नजर पानी की टंकी के ऊपर लगे नल पर गई, आज चिड़िया दिखाई नहीं दे रही है। मन में सोचा कहीं कुछ हो तो नहीं गया बिचारी को? रोज बड़े मधुर स्वर में चहकती रहती थी चूँ चूँ, चीं चीं, उसकी आवाज को शब्दों में तो नहीं बाँधा जा सकता है।

अपना योगा पूरा करते हुए मन में विचार आ रहे थे, तभी नीचे से आवाज सुनाई दी, अरे सुन रहे हो, आलू खत्म हो गए हैं। मैंने नीचे आते हुए कहा, आज ले आऊँगा, प्याज और टमाटर भी लगभग खत्म होने को आए हैं। आठ दिन पहले ला कर रखे थे। लाकडाउन बढ़ गया तो बजट भी गड़बड़ हो गया। तभी बच्चा बोला पापा मेरे कॉलेज के लिए ऑनलाइन फीस भरनी है, अरे भर देना भई डेट कौनसी भागी जा रही है मैं बड़बड़ाया। आपको पता नहीं है पहले से सब भरना पड़ता है। फिर काउंसलिंग होती है बच्चा बोला।

अच्छे खासे टिकिट हो गए थे गोवा के इस कोरोना ने सब पानी फेर दिया। सुनो हमारे टिकिट के पैसे तो वापस मिलेंगे! पत्नी के सवाल पर मैं बोला, पता नहीं क्या होगा, हाँ कल एक मैसेज तो आया था। कितने अरमानों से तैयारियाँ शुरू की ही थी कि ये मनहूस खबर आ गई कि भारत में लॉकडाउन होने वाला है। बच्चे ने तो टी-शर्ट भी ले ली मेरे बाकी थे सोचा अभी तो 14 अप्रैल को जाना है थोड़े दिन बाद ले लेंगे, अब तो सब गए।

आज फिर से सुबह योगा की तैयारी के लिए छत पर पहुँचा। बरबस नजर पानी की टंकी की ओर गई, आज भी सूना-सूना सा लगा। हाँ कल की बारिश से ठंडक सी हो गई थी। आज तो छत को धो लेता हूँ, विचार आया फिर सोचा कि पहले अपना ऑफिस का काम निपटा लूँ। फटाफट मोबाइल देखा विभाग द्वारा तय समय पर कक्षाओं के लिए सामग्री आ चुकी है। तुरंत ही अपने पी.ई.ई.ओ. के पोर्टल पर उसे फॉरवर्ड किया। सभी को तय समय तक कोविड-19 सर्वे सूचना का मैसेज डाला। कल की एक प्रवासी को स्क्रीनिंग के लिए चित्तौड़ भेजा था, शुक्र है रिपोर्ट नेगेटिव आई है।

आज पूरे बत्तीस दिन हो गए हैं, अब तो टी.वी. से भी मन भर गया है। तभी सफाई की गाड़ी का वो गीत सुनकर विचार भंग हुए, कचरा भी डालना है फटाफट नीचे उतरते हुए सोचा कि क्यूँ ना आज अपने रंगों को बाहर निकाला जाए, बड़े दिनों बाद दो पेंटिंग जल रंगों से बनाई।

सुबह-सुबह गाड़ी निकाली और स्कूल की ओर निकल पड़ा, गले में पास गाड़ी पर भी आदेश की कॉपी लगाए हुए चेक पोस्ट तक आ गया। पुलिस वाले ने तसल्ली की फिर जाने को बोला, आज आला-अधिकारी जी मीटिंग लेने वाले हैं एक बजे का समय दिया है, ऑनलाइन का आदेश हुआ है। सभी बाहरी प्रवासियों का विशेष ध्यान रखा जावे, पूरी टीम गाँव का सर्वे रोज करेगी। सूचनाएँ दो बजे तक कार्यालय पोर्टल पर डलनी चाहिए, सभी मुख्यावास पर ही रहेंगे आदि-आदि महत्त्वपूर्ण आदेश-निर्देश प्राप्त हुए। आज पी.डी. बिलों पर हस्ताक्षर करने थे। काम पूरा किया फिर घर की ओर निकल पड़ा।

आज कौनसा वार है पत्नी ने पूछा- बच्चा बोला क्या है मम्मी, आज सोमवार है। मैंने शंका की नहीं, आज तो ऑनलाइन सामग्री भी नहीं आई है, मैं देखता हूँ, अरे भाई आज रविवार है। पत्नी बोली- हे भगवान ये वार भी पता नहीं चल रहे हैं अब तो। मैं तो घबरा गई हूँ तुम्हारे बढ़िया हैं गाड़ी ली और स्कूल चले जाते हो, हमारा क्या???

आज थोड़ा जल्दी उठ गया तो सोचा चलो, ऊपर ही चलते हैं, कुछ आवाज सुनाई पड़ी, मन खुश हो गया दौड़कर ऊपर पहुँचा। वाह चीं-चीं चूँ-चूँ वही काली सी सफेद धब्बों वाली चिड़ियाँ दिखी ओह आज तो दो हैं वाह क्या बात है।

हम्म्म्म तो ये बात है....जिंदगी की दौड़ में चलो कुछ तो अच्छा हो रहा है....आज मन प्रसन्न है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावतपुरा,
चित्तौड़गढ़

हिन्दी विविधा

एकता की ताकत

❐ ओम प्रकाश सारस्वत

एकता शब्द अपने आप में बड़ा रोमांचकारी है। सामान्य जनजीवन में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक एकता, पारिवारिक एकता आदि के बारे में हम सुनते रहते हैं। हर कोई एकता की बात कहता है और जहाँ एकता नहीं है, वहाँ होने वाले हर्जाने की भी लोग चर्चा करते हैं एक और नेक बनने की सलाह लगभग सभी महान लोग देते रहे हैं। देश के संदर्भ में तो एकता बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हमारा देश जब आजाद हुआ, तब सयुंक्त हिन्दुस्तान भारत एवं पाकिस्तान नाम से दो राष्ट्रों में विभाजित हुआ। यह एकता और सामाजिक समरसता के विखण्डन का काम था। दोनों देशों के बीच में टकराव चरम पर पहुँच गया जिसका दण्ड बेचारी जनता ने भुगता। इतना ही नहीं, आज तक भुगत रहे हैं। तब प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु ने भावुक होकर कहा था, 'इस वक्त देश में जो सबसे आवश्यक और बुनियादी चीज है और जिसे हर कोई बुनियादी मानता है, वह है देश की एकता, वह है भारत की एकता।'

एकता का अहसास मात्र सुख की अनुभूति कराता है। एकता सुरक्षा का तो समझो बीता ही है। जो एक हैं, उन्हें कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता। इतना ही नहीं उनसे टकराने का कोई साहस नहीं करता। कहते हैं कि एकता का किला बड़ा मजबूत होता है। उसके भीतर रहने वाला कोई भी प्राणी कभी दुःखी नहीं रह सकता। एकता शुद्ध आचार-विचार, सबके प्रति समता एवं सहयोग वृत्ति पर निर्भर करती है। यदि इन गुणों की अनुपस्थिति है तो वह एकता व्यावहारिक एवं टिकाऊ नहीं हो सकती। महात्मा गाँधी ने चेतावनी देते हुए कहा है कि एकता चापलूसी से कायम नहीं की जा सकती। एकता के लिए मन चाहिए। केवल मन ही नहीं बल्कि एकता के लिए मन, वचन, कर्म तीनों से प्रामाणिक होना जरूरी है।

एकता की ताकत निराली होती है। जब तक एक और संगठित हैं कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। इसे समझने के लिए एक कहानी का सहारा लेते हैं। एक किसान है, चार बेटों का बाप। वे चारों आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। लड़ाई-झगड़ा करने वालों के काम की तो उम्मीद करना ही बेजा है। पिता... बेचारा किसान हैरान-परेशान। दुःखी। वह बूढ़ा हो चला। अन्तिम दिन आ गए। बेटों की एकता वह देखना चाहता था। जहाँ चाह वहाँ राह। आखिर बूढ़े किसान के दिमाग में एक आइडिया आया। उसने चार लकड़ियाँ मंगाकर उन्हें मजबूत रस्सी से बाँध दिया। अब लकड़ियाँ बण्डल बन गई थी। अब उसने बेटों को बुलाया और एक-एक करके उस बण्डल को तोड़ने के लिए कहा। सबने जोर लगाया, अपनी ताकत को अच्छे से आजमाया लेकिन वह बण्डल किसी से भी तोड़ा नहीं जा सका। अब किसान ने बंडल खोलकर एक-एक लकड़ी चारों बेटों को दी तथा उसे तोड़ने के लिए कहा। बेटों को जरा भी जोर नहीं आया उन्हें तोड़ने में। बेटे यह समझ नहीं पाए कि आखिर उनको क्या कहना चाहता है बूढ़ा बाप! तब वृद्ध किसान ने लम्बी सांस लेते हुए उन्हें समझाया-''देखो बेटा, जब तक ये चार लकड़ियाँ एक बण्डल के रूप में थी यानी उनमें एकता थी, तब तक आपकी लाख जोर आजमाइश के बावजूद वे महरूम रही, उन्हें आप तोड़ नहीं सके। इतना ही नहीं, तुम्हें पसीना आ गया। सांस फूलने लगी। आप शर्माते रहे और लकड़ियाँ मुस्कराती रही। और जब....!'' यह कहकर बूढ़ा बाप रुक गया। बेटे कभी बाप की ओर तो कभी एक दूसरे की ओर ताकने लगे। आखिर सबसे छोटे बेटे ने पूछ ही लिया,'' आगे और क्या हुआ बापू?

''जब लकड़ियाँ एक न रहकर अलग-अलग बंट गईं, तब आपने उन्हें एक ही झटके में तोड़ गिराया। ये देखो इनके टुकड़े! तब आप मुस्करा रहे हो तथा लकड़ियाँ आँसू बहा रही हैं। पहले आप पसीने-पसीने हुए शर्मसार हो रहे थे और लकड़ियाँ अपने बण्डल रूप में मुस्करा रही थी। ऐसा ही आपके साथ है। आप जब तक एक हैं, सुरक्षित हैं, लेकिन ज्यों ही अलग-अलग हो जाओगे, ताकत छिन्न-भिन्न हो जाएगी तथा लोग आपको मार भगाएँगे। इसलिए एक लकड़ी की तरह नहीं बल्कि लकड़ियों के बण्डल की तरह जिओ।'' बड़े ही भावुक अंदाज में बूढ़े पिता ने यह बात कही। यह है एकता की ताकत। एकता के लिए सभी के मन में पवित्रता होनी आवश्यक है। एकता मन से होनी चाहिए न कि यों ही बाहरी दिखावे के लिए। स्वामी रामतीर्थ ने कहा है, **''पक्की एवं टिकाऊ एकता वहीं पैदा हो सकती है, जहाँ मन एक होते हैं।''** इस बात को स्पष्ट करने के लिए भारतीय दर्शन में एक दोहा आता हैः-

स्वामी हम-तुम एक हैं, कहन-सुनन को दोय।
मन से मन को तोलिए कबहुं न दो मन होय।।

एक कहानी और आती है। एक बार कई सारे कबूतर एक बहेलिये की जाल में फंस गए। दूर खड़ा बहेलिया खुश हो रहा था, मंद-मंद मुस्करा रहा था। इतना सारा शिकार एक साथ! कबूतर, बेचारे, कबूतर मौत सामने आई देख थर्रर-थर्रर काँप रहे थे। तभी एक बुढ़े कबूतर के दिमाग में एक युक्ति आई। कबूतरों ने परस्पर कानाफूसी की और देखते ही देखते कबूतर जाल लेकर उड़ गए। बहेलिया देखता ही रह गया। कबूतर तो गए सो गए, साथ में जाल भी ले गए। कबूतर को हम सबसे अधिक भोला प्राणी मानते हैं और अक्सर आसपास में बिल्लियों-कुत्तों के शिकार होते उन्हें देखते हैं मगर जब कई सारे कबूतर एकता में पिरोए, तो बहेलिये को धत्ता बताते हुए उसका जाल ही लेकर उड़ गए। उसकी रोजी रोटी का साधन ही ले गए। चींटियों की एकता तो जग जाहिर है ही। इसके उदाहरण दिए जाते हैं। अब बात चिड़ियों की। शेख सादी कहते हैं-**'यदि चिड़ियाँ एकता कर लें, तो शेर की खाल खींच सकती हैं।'** चिड़ियों के झुण्ड जब चहचहाट के साथ विचरण करते हैं, तब उनकी एकता देखने लायक होती है। चिड़ियाओं के आसियानें (घोंसले), नन्हें शिशुओं के लिए भोजन लाने तथा उन्हें फीड करने आदि समस्त क्रियाएँ अनुशासन एवं एकता की मिशाल होती है। इनसे प्रेरणा ली जानी चाहिए।

हमें इन दृष्टान्तों को दृष्टि मध्य रखकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र स्तर पर एकता बनाए रखनी चाहिए ताकि सुरक्षा भावना के साथ हम खुशहाल जीवन जी सकें। समान उद्देश्यों को लेकर साथ रहने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं में अपने निहितार्थ के कारण मतभेद हो सकते हैं लेकिन ये मतभेद मनभेद में नहीं बदलने चाहिए। सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ मतभेद की ईमानदार समीक्षा तथा तदनुसार आगे कार्यवाही करने की भावना उन्नति की राह दिखाने वाली होती है जबकि मतभेद को मनभेद में तब्दील कर लेने के उपरान्त केवल और केवल राड़-झगड़ा ही बच जाता है जो अन्ततः विनाश का कारण बनता है। इति शुभम।

ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड़
पोस्ट गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
मोः 9414060038

हिन्दी विविधा बच्चे बदल रहे थे, यही एक सुकून की खबर थी

❐ माणिक

बचपन से सिलेबस की किताबें उतना आकर्षित नहीं करती रही जितनी इतर किस्म की। हालांकि बहुत बाद में जाना कि यह 'इतर' ही जीवन बदलाव लाता है। कुछ बड़े हुए तो स्कूल का पुस्तकालय ताले में बंद देखा। किताबें झाँकती थी मगर अलमारियों के शीशे वाले दरवाजों के पीछे से। पुस्तकालय अध्यक्ष किस चिड़िया का नाम है? नहीं जानते थे। एक सरकारी कारिन्दा किताबें पढ़वाने और वितरित करने के लिए नियुक्त था, मगर चिंताजनक तथ्य यह रहा कि उसका किताबों की संस्कृति से दूर-दूर तक कोई लेन देन नहीं था। सरकारी सिस्टम में लगे हुए की बेरुचि के कारण काम संभव कहाँ हो पाते हैं। असल खामियाजा हमें ही भुगतना पड़ता है। उस जमाने से लेकर आज तक स्कूल के टाइम टेबल में लाइब्रेरी और खेल सहित कला शिक्षा और कार्यानुभव टाइप विषय के कालांश बच्चों की जुबान में खाली पीरियड कहलाते हैं। ऐसा क्यों और कैसे हुआ? यह शोध का विषय नहीं है। सभी इसकी असलियत जानते ही हैं। आलसी और निष्क्रिय अध्यापकों की एक बड़ी जमात है, जिसने यह फिनोमिना गढ़ने में बड़ी महत्ती भूमिका निभाई है। गाँव से पास के कस्बे निम्बाहेड़ा में एक सीनियर सैकंडरी स्कूल में पढ़ने गया तो वहाँ यह प्यास कुछ बुझी। एक ठीकठाक लाइब्रेरी थी और ढंग का वाचनालय भी था। इन सभी सुविधाओं के बावजूद अंकों की दुनिया से हम भी अछूते कैसे रहते, तो सिलेबस की रंगहीन किताबों को पढ़ने में ही वक्त का बड़ा हिस्सा जाया हुआ। अध्यापक बनने की जुस्तजू में हम चित्तौड़ आ गए और एसटीसी. डिप्लोमा में डाइट के पुस्तकालय में आवाजही शुरू हुई। वहाँ सीता मैडम हुआ करती थी। लिखने-पढ़ने की कुछ रुचि जगी और यहीं से जड़ें निकलना आरम्भ हुई। हालांकि लम्बे समय तक सीता मैडम ने लाइब्रेरी को सेट करने में हमसे भरपूर काम लिया जो कि असल में बोरिंग था। मगर हर किताबों के लेबल चिपकाने, नंबर डालने, विषयवार जमाकर रखने और अलमारियों में करीने से लगाने में पुस्तकों की संगत को बहुत गहरे से अनुभव कर रहे थे।

बाद के सालों में चित्तौड़ में ही पाठक मंच, संभावना संस्था, प्रयास संस्था, जिला पब्लिक लाइब्रेरी जैसे संस्थागत ठिकानों ने मुझे साहित्य और साहित्येत्तर पुस्तकों से जुड़ने में बड़ी मदद की। हाँ, एक बीता सच यह भी था कि अपने ननिहाल हमीरगढ़ में गर्मियों की छुट्टियों में किराए पर लाकर पढ़ी गयी कॉमिक्स के चाचा चौधरी, साबू, नागराज, बबलू, बांकेलाल जैसे लोकप्रिय पात्र मेरे जेहन में लगातार बने रहे। दिलोदिमाग में यह स्थापित हो गया था कि दुनिया को देखने-समझने का एक दूजा तरीका यही है कि हम विविध किस्म की किताबों से होकर गुजरें। गप-गोष्ठियों में हिस्सेदारी करें। चाय की थड़ियों पर हाल की पढ़ी पुस्तकों पर संवाद करें। उम्र के बहुत बड़े हिस्से के गुजर जाने के बाद भी मैं बहुत कुछ सार्थक और जरूरी साहित्य नहीं पढ़ पाया था, इस बात का अहसास मुझे था और टीस भी। बस यही सोचकर अपने अध्यापन के दौरान विद्यालय की मौजूदा व्यवस्था में रहते हुए क्या कुछ नया करने की गुंजाइश है? इस पर मेरा फोकस रहा। अभी हाल के सालों में विश्व पुस्तक मेले सहित आसपास की गोष्ठियों ने कई ऐसे गंभीर रचनाकार, विचारवान और जानकार साथी दिए, जिनकी संगत में लगा कि किताबों से मित्रता जीवन को बेहतर और संवेदनशील बनाने के लिए एकदम आवश्यक है और इसमें कोई दो राय नहीं है।

दो हजार सत्रह की गर्मियों की बात है, मैं हिन्दी लेक्चरर के तौर पर प्रतापगढ़ जैसे आदिवासी बहुल जिले की छोटी सादड़ी तहसील के बसेड़ा गाँव में नियुक्त हुआ। शुरूआती तीन महीने के बाद ही कई नए प्रयोग स्कूल में आरम्भ किए, उन्हीं प्रयोगों में से एक था 'संडे लाइब्रेरी।' पहले से मौजूद स्कूल की पुस्तकालय अध्यक्ष विहीन लाइब्रेरी को छेड़े बगैर हिन्दी साहित्य के मेरे विद्यार्थियों के सहयोग के बूते यह नया आइडिया रोपा। स्कूल में अवकाश के दिन ग्यारहवीं जैसे नॉन बोर्ड क्लास के कमरे में ही लाइब्रेरी संचालित करना तय हुआ। बच्चे भी ग्यारहवीं के ही थे जिन्होंने इसे चलाने का जिम्मा लिया और एक साल तक चलाया भी। गौरतलब यह है कि अवकाश के दिन लाइब्रेरी सुबह नौ से दोपहर से बारह बजे तक चलती। विद्यार्थी ही पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते-बाँटते-सहेजते और व्यवस्थित करते और उपस्थिति रजिस्टर संधारित करते। फोटो रिपोर्ट भेजते जिसे मैं न्यू मीडिया की जुबान में वायरल करता था। गाँव के दानदाताओं ने मासिक रूप दो हजार का चन्दा देने की हामी भर ली थी। फिर क्या था, हमारी उड़ान आसमान छूने लगी। गोपाल जी आंजना और बबलू भैया का शुक्रिया जिन्होंने कभी भी पैसों की कमी नहीं आने दी। देशभर की नामी पत्रिकाएँ आने लगी। मैं चित्तौड़ रेलवे स्टेशन पर अग्रवाल जी की बुक स्टॉल से शुक्रवार की शाम अपनी साप्ताहिक खरीद करता और शनिवार को स्कूल में नयी खेप पहुँचा देता। संडे को नयी पत्र-पत्रिकाओं से मिलने को बच्चे आतुर रहते। खरीद का हिसाब किताब और आए हुए दान का लेखा बच्चे ही रखा करते। शुरूआती दिक्कतें मुझे तोड़ नहीं सकी। प्रधानाचार्य महेन्द्र प्रताप गर्ग मेरे साथ थे। दर्जन भर साथी कार्मिक में से बहुत मेरे साथ थे। इसलिए मैं बेपरवाह था। हालांकि कई मेरे काम से अभिभूत भी थे। यही मेरी तसल्ली का सबब था। असल बात यह थी कि मैं हमेशा विद्यार्थियों के प्रति जवाबदेह रहा तो मेरे काम और विचार के केन्द्र में विद्यार्थी ही रहे। बच्चों की प्रसन्नता में ही मेरी प्रसन्नता। नया अनुभव था, तो मैं भी सीख रहा था। गलतियाँ होना स्वाभाविक ही थी। गलतियों के डर से कुछ किया ही न जाए, इस तरह के कुतर्कों का मेरे शब्दकोश में कोई स्थान नहीं रहा।

संडे लाइब्रेरी के इस कोंसेप्ट पर फेसबुक वॉट्सअप छाप न्यू मीडिया के सहारे खूब प्रचार संभव हो सका और चारों तरफ से आने वाली सहरानाओं से मन अभिभूत रहा। एकदम देहाती इलाके में संचालित हमारी लाइब्रेरी में साहित्यिक पत्रिकाओं में हंस, नया ज्ञानोदय, समयांतर जैसी गुणवत्ता से भरी पत्रिकाएँ पढ़ी जाने लगी। आलोचना, पहल और मधुमती के पुराने अंक मित्रों ने भेंट किए हुए थे। शुरू-शुरू

में कुछ गरिष्ठ लगा होगा मगर बाद के महीनों में स्वाद आने लगा। राजनीतिक पत्रिकाओं में इंडिया टुडे और आउटलुक मंगाते रहे। कभी - कभी वार्षिकांक भी आ जाते तो महीनों उनका स्वाद बना रहता। बाल साहित्य के नाम पर बालहंस, बाल भास्कर सहित नंदन, विज्ञान भारती, चम्पक लाते रहे। बुक स्टॉल वाले अग्रवाल जी मेरा इंतजार करने लगे और पत्रिकाओं की एक-एक प्रति याद रखकर बचाकर रखने लगे। दो से तीन तरह के समाचार पत्र स्कूल में आते ही थे। राजकमल और एनबीटी से कुछ किताबें मंगवानी आरम्भ की थी। मगर तब हमारा फोकस केवल पत्र-पत्रिकाओं पर ही था। अन्य पाठकों की रुचियों और डिमांड को देखते हुए अहा जिंदगी, क्रिकेट सम्राट, कादम्बिनी, सहेली सहित योजना और कुरुक्षेत्र भी लाइब्रेरी का हिस्सा बनीं। हाँ याद आया हमने लम्बे समय तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिहाज से प्रतियोगिता दर्पण और क्रोनोलॉजी जैसी पत्रिकाएँ भी मंगवाई। इसी दौरान अजीम प्रेमी फाउंडेशन चित्तौड़गढ़ इकाई में मेरा आना-जाना शुरू हुआ और कुछ मजबूत संबंध बने, जहाँ डिस्ट्रिक्ट लर्निंग रिसोर्स सेंटर पर ही एक पब्लिक लाइब्रेरी लगती थी। हम मित्र लोग अक्सर उनके बुलावे पर वहाँ जाते और चाय पर देर तक चर्चाएँ करते। बाद में बिना बुलाए स्वप्रेरणा से भी जाने लगे। ज्यादातर अध्यापक किस्म के साथी। इसी संस्था के सहयोग से संडे लाइब्रेरी को बड़ा हौंसला मिला। यहाँ से बाल मनोविज्ञान पर केन्द्रित दो महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएँ हर माह मिल जाती थी, एक चकमक दूजी प्लूटो। दोनों मुश्किल से सुलभ थी, तो हमारे लिए बड़ा उपहार थी। भोपाल के सुशील शुक्ल जी का आभार की बच्चों के लिए इतनी गंभीर और शानदार पत्रिकाएँ निकालते रहे हैं।

यहाँ एक और गौरतलब जानकारी यह दूँ कि अजीम प्रेमजी फाउंडेशन चित्तौड़गढ़ में एक सक्रिय साथी मिले। नाम है रमेश शर्मा। बालगीतों और बाल कहानियों पर उनका गजब का काम है। वे एक से अधिक बार बसेड़ा आए भी। झोला पुस्तकालय के नाम से उनकी संस्था का एक प्रोजेक्ट चलता था। जिसमें वे एक माह के लिए अपनी मदर लाइब्रेरी से पचास किताबों का एक बक्सा देते और महीनेभर बाद उसी बक्से में दूजी पचास किताबें बदलकर दे देते। इस बीच हमारी संडे लाइब्रेरी नए पचास टाइटल से समृद्ध हो जाती और बच्चों के चेहरे खिल जाते। बच्चे लगातार बदल रहे थे यही एक सुकून की खबर थी। मेरी पुस्तक संस्कृत के प्रति आस्था बनी रही। इसमें रमेश जी जैसों का बड़ा हाथ है। इसी के तहत हमने एक बार विश्व पुस्तक मेला दिल्ली में रमेश जी के साथ ही घूमा। फेसबुकी प्रचार से देश के अलग-अलग हिस्सों से भी किताबें उपहार में मिलने लगी। माहौल बनने लगा। ग्रामीण भारत में इस तरह की अनूठी शुरूआत से कई अन्य मित्र भी प्रेरित होकर वैकल्पिक पुस्तकालय के कोंसेप्ट पर काम करने लगे। पीपलखूंट के कचोटिया में अभिनव सरोवा, राशमी में मुकेश स्वर्णकार, डगला का खेड़ा में इरफान भाई इनमें से कुछ नाम हैं। मुझे भी सतत प्रेरणा मिलती रही। बिना प्रेरणा के नवाचार दम तोड़ जाते हैं। आप तो जानते ही है कि व्यवस्थाएँ तो कभी आपको जीने देती नहीं, व्यवस्था की अपनी मजबूरियाँ होती हैं। हम रूटीन से अलग इस तरह के काम करके ही अपने हिस्से की ऑक्सीजन का इंतजाम करते रहे हैं। अजमेर की गाँधी पब्लिक लाइब्रेरी के जीर्णोद्धार का काम चल रहा था और उसमें तल्लीन हमारी मित्र ज्योति ककवानी से लगातार संवाद सहित उत्तराखंड के महेश पुनेठा का जनता पुस्तकालय का अभियान अनुसार काम सदैव प्रेरित करता रहा।

संडे लाइब्रेरी में बच्चे पढ़ते हुए कुछ-कुछ बदलने लगे थे और इसका असर विद्यालय की प्रार्थना सभा में दिखने लगा था। बच्चे गीत कविता आदि सहित विभिन्न विषयों पर दो-दो मिनट के भाषण देने में खुद को अब सहज अनुभव करने लगे। अखबार आदि के सम्पर्क में आने से देश-दुनिया की खबरों से एकमेक होने लगे। एकाध बार संडे लाइब्रेरी में चूंकि अध्यापक का कोई नियंत्रण नहीं रहा तो कुछ बच्चे बीड़ी-माचिस सहित पाए गए। यह सच है कि बाद में कुछ कहना-सुनना भी पड़ा। खैर.. जिंदगी में असल में रास्ते कभी भी बहुत सपाट और सहज नहीं हो सकते। नवाचार की राह डगमगाई भी मगर हौंसला पस्त नहीं होने दिया। वक्त के साथ जानकार मित्रों की विशेष वार्ताएँ भी आयोजित करवाई। स्टोरी-टेलर महेन्द्र नंदकिशोर, प्रशासनिक अधिकारी ज्योति ककवानी, हिन्दी के प्रोफेसर डॉ. राजेश चौधरी, नवाचारी अध्यापक अभिनव सरोवा, कॉलेज शिक्षा में सहायक आचार्य प्रवीण कुमार जोशी, चित्रकार मुकेश शर्मा, रेडियो ब्रॉडकास्टर शरद त्रिपाठी सहित कई जानकार मित्र संडे लाइब्रेरी आए। बच्चों के लिए यह सबकुछ नया और दुनिया को देखने के लिए एक नजरिया विकसित हो रहा था। अखबार आदि में कुछ खबरें छपने से जिले में यह नवाचार चर्चा का विषय बना। हालांकि यह एक बहुत छोटा काम था और बहुत आगे जाना है यह मालूम था ही। इस तरह की पब्लिक लाइब्रेरी के अभियान किसी भी कीमत पर दम नहीं तोड़े यही हमारा मकसद हो तो कितना अच्छा हो। अब बच्चे धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं के बाद किताबों की तरफ झुकने लगे थे। कुछ चयनित आत्मकथाओं सहित प्रतिनिधि कहानियाँ और प्रतिनिधि कविता कहानियाँ और प्रतिनिधि कविता संग्रहों की संगत करने लगे। यही हमारी जीत थी।

बसेड़ा की संडे लाइब्रेरी को तब एक बार फिर ऊर्जा मिली जब भीलवाड़ा के सांगानेर कस्बे की हमारी मित्र मण्डली ने वहाँ एक पब्लिक लाइब्रेरी का अभियान चलाया। हमने आर्थिक सहयोग सहित किताबें भेंट की। उद्घाटन उत्सवपूर्ण रहा और बाद के संडे जैसे अवकाशों में भी में हम वहाँ गए और मित्रों की हौसला अफजाई की। नाम है सांगानेर स्टडी सर्कल। शुरूआत कोठारी नदी की सफाई से हुई और फिर पौधारोपण से गुजरते हुए गाँव के सरकारी स्कूल के एक अनुपयोगी भवन में लाइब्रेरी के संचालन तक की कहानी अद्भुत और प्रेरक थी। मैं जब भी निराश होता हूँ उनके जज्बे को याद कर फिर से जुट जाता हूँ। गाँव में मौजूद साम्प्रदायिकता से सराबोर माहौल को धीरे-धीरे नयी दिशा में मोड़ने के उस पुस्तक संस्कृति प्रधान नवाचार को सलाम करता हूँ। यह यात्रा अनवरत है। सांगानेर के आदित्य देव वैष्णव, अनिरुद्ध और सूरज पारीक की टीम को सलाम है। हाँ तो यह सच भी है कि हम अपने आसपास के करीबी मित्रों से लगातार होने वाले संवाद से ही ऊर्जा प्राप्त करते हैं। अपने काम को साझा करते हैं और फीडबैक प्राप्त करते हैं। इस मायने में मेरे साथियों का आभारी हूँ। हाँ तो

बसेड़ा की इस संडे लाइब्रेरी का पहला दिखता हुआ हासिल यह हुआ कि यहाँ साल दो हजार अठारह में बारहवीं पास करके दो विद्यार्थी वर्धा (महाराष्ट्र) स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी ऑनर्स में दाखिला लेते हैं। नाम अर्जुन कुमार मेघवाल और गुणवंत कुमार मेघवाल। उनके मानस में पुस्तक-प्रेम का रोपा हुआ बीज अब कोंपल के रूप में फूट रहा है। वे अपनी फुर्सत का पहला हिस्सा यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में खर्च करते हैं न कि वर्धा के टॉकीज में।

अनुभव लिख रहा हूँ कि इस नवाचार की आदत ने मुझे जीवन में सार्थकता दी है। जिस कमी की वजह से मेरा बचपन कोरा रहा वह कम से कम बसेड़ा के बच्चों के दौर में न हो। पुस्तकों के चयन, खरीद और भेंट की गई पुस्तकों की भी अपनी संस्कृति है और गाँव वालों द्वारा विश्वास के साथ विद्यार्थियों के हित में पुस्तक मेले से किताबें खरीदने की जिम्मेदारी भी एक भाव। सालभर में आयोजित उदयपुर फिल्म फेस्टिवल में आए 'घूमंतू पुस्तक मेले' के साथ की अनुभूतियाँ भी मेरे जेहन पर अनूठी छाप छोड़ती रही। असल में प्रतिबद्ध बनाने के साथ आपके भीतर गंभीरता विकसित करती है। किताबों के चयन की जब भी बात चलती है तो मुझे डॉ. राजेश चौधरी की गंभीरता भरी सलाहें याद आती हैं। बहुत बाद में लगा कि अब बसेड़ा के बच्चे जनगीत गाने लगे हैं, नुक्कड़ नाटक, सरीखा कुछ करने लगे हैं। क्रान्ति केन्द्रित भाव वाले नारे लगाने लगे हैं। पाश, आदम गोंडवी, गोरख पाण्डेय, दिनकर और निराला वाले हिन्दी साहित्य से लबरेज गंभीर कविताओं के पाठ के रूप में रुचि लेने लगे हैं। पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी केन्द्रित झंडापरक आयोजनों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के विषयों में भी पुस्तकों के साथ की संगत का असर दिखने लगा। आपको आश्चर्य होगा कि लाइब्रेरी के वोलंटियर विद्यार्थियों ने इसी लाइब्रेरी को दीपावली, शीतकालीन अवकाश सहित गर्मियों के दो लम्बे अवकाश में खोलने की हिम्मत जुटाई और कमोबेश पुस्तकालय चलाया भी। अगर पीछे मुड़कर देखूं तो कहना चाहता हूँ कि बबली धोबी, दीपक ढोली, कारू लाल आंजना इस नवाचार के आधार स्तंभ रहे हैं।

नालंदा को जलाने से लेकर जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में हमले तक की यात्रा में पुस्तक विरोधी लोगों की ताकतें और उनकी कूटनीतिक चालें समझनी होगी। संवेदनशील और जागरूक नागरिक तैयार करने की जिम्मेदारी निभाते हुए अध्यापकों को समझना होगा कि पुस्तकालयों का बड़ा रोल है। आज जब शिक्षा हमें कुतर्की भीड़ में ही तब्दील करने में संलग्न है तो ऐसे में सिलेबस से इतर किताबों का चयन बहुत मायने रखता है। शिष्य अपने माड़साब की नकल करना चाहे तो देश का बेड़ा गर्क हो जाएगा। यहाँ अध्यापक खुद अखबार से अधिक कुछ न पढ़ रहे हैं न ही नयी पुस्तकें खरीद रहे हैं। भयावह अंधेरा है भाई। स्कूल में नवाचार करने वालों को अलग-थलग डाल दिया जाता है। इधर तनख्वाह केन्द्रित जीवन रह गया है हमारा। गुरु और शिष्य के बीच रिश्तों की ऊष्मा एकदम उड़ गयी है। ऐसे में कविता 'किताबें करती हैं बातें' या 'किताबें कुछ कहना चाहती है, आपके पास रहना चाहती हैं' जैसी रचनाएँ हमें जीवन को एक सार्थक दिशा में मोड़ने का एक मकसद देती हैं। आज भी दावे से कह सकता हूँ कि जिस रात लिखित शब्द यानी कोई आलेख या साहित्यिक रचना पढ़कर सोता हूँ। अगले दिन की सुबह कुछ जुदा होती है। विद्यार्थियों का मित्रों से बात करते वक्त ऊर्जा से भरा हुआ अनुभव करता हूँ। हमारे गुरुजी सत्यनारायण जी व्यास बड़ी खूबसूरत बात कहते हैं कि जब तक इंसान हैं साहित्य, संगीत और कलाओं की जरूरत रहेंगी, पशुओं को इनकी जरूरत नहीं होती। जहाँ एक तरफ घर में मौजूद किताबों के टाइटल के आधार पर पाठकों को अर्बन नक्सल करार दिए जाने के दौर में ऐसी गलीज मानसिकता पर दया आती है तो दूसरी तरफ जब सोशल मीडिया में कहीं पब्लिक लाइब्रेरी कल्चर को मजबूत होते देखता हूँ या किसी कॉलेज-यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरी परम्परा को समृद्ध होते अनुभव करता हूँ तो दिल तसल्ली से भर जाता है कि हम ठीक रास्ते पर ही हैं इस आलेख को पढ़ने वालों से यही अपील है कि बहुत काम करना है, आप जहाँ भी हैं वहीं अपने आसपास से काम शुरू करिएगा। हम एक दिन होंगे कामयाब।

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बसेड़ा, छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़ (राज.) **मो. 9460711896**

मन के हारे हार है...

कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ ही आगे चलकर गौतम बुद्ध हुए और उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की। जब वे गृह त्यागकर निकले, तो उनकी राह में अनेक तरह की दिक्कतें सामने आने लगीं। वे सत्य की खोज में निकले थे और उन्हें काफी भटकना पड़ रहा था। आखिर उनकी हिम्मत टूटने लगी। उनके मन में यह विचार बार-बार उठने लगा कि क्यों न वापस राजमहल चला जाए। अंत में वे एक दिन कपिलवस्तु की ओर लौट ही रहे थे कि उनकी दृष्टि एक गिलहरी पर पड़ी। गिलहरी की चेष्टाओं ने सिद्धार्थ का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। वह गिलहरी बार-बार पानी के पास जाती, अपनी पूंछ उसमें डुबोती और उसे निकालकर रेत पर झटक देती। गिलहरी के कार्यों को देखकर सिद्धार्थ ने अर्थ निकाला कि यह गिलहरी झील सुखाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने सोचा कि भले ही यह करोड़ों-अरबों बार अपनी पूंछ पानी में डुबोकर झटकेगी, लेकिन झील नहीं सूख पाएगी। संभवतः वह इस बात को जानती भी होगी। लेकिन इसने निश्चय कर लिया है। असफलता या सफलता के बारे में न सोचकर वह यह कार्य बार-बार कर रही है। सिद्धार्थ को अपने मन की निर्बलता महसूस हुई और वह वापस तप करने के लिए लौट चले। इस घटना के बाद उनके द्वारा किए गए दृढ़निश्चय ने उन्हें गौतम बुद्ध बना दिया।

कथासार : दृढ़ निश्चय से असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संभव हो सकते हैं।

हिन्दी विविधा

राष्ट्रीय बाल आपदा विज्ञान काँग्रेस (NCSC)

❐ विमलेश चन्द्र

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (NCSTC) द्वारा राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस (NCSC) का आयोजन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अन्वेषण को प्रोत्साहित करने, स्थानीय समस्याओं के वैज्ञानिक विधियों द्वारा समाधान को तलाशने एवं दीर्घकालीन विकास हेतु प्रतिवर्ष पूरे राष्ट्र में किया जाता है। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस 10 से 17 आयु समूह के बाल वैज्ञानिकों को स्थानीय समस्या पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने, उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित करने एवं रचनात्मकता हेतु एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

यह गतिविधि भारत में उस समय पनपी जब देश में भारत वन विज्ञान जत्था (1987) और भारत जन ज्ञान विज्ञान जत्था (1992) जैसे लोकप्रिय आन्दोलन चल रहे थे। इसकी शुरुआत मध्यप्रदेश के एन.जी.ओ. ग्वालियर साइंस सेंटर द्वारा की गई, बाद में भारत सरकार ने इसे गोद ले लिया। 1993 में राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में बाल विज्ञान कांग्रेस का शुभारम्भ हुआ। इस वर्ष 28वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (NCSTC) द्वारा प्रत्येक दो वर्ष हेतु मुख्य विषय एवं उपविषय घोषित किया जाता है। मुख्य विषय एवं उपविषय का चयन कर बाल वैज्ञानिक परियोजना का निर्माण करते हैं। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भारत के अलावा खाड़ी एवं आसियान देशों के बाल वैज्ञानिक भाग लेते हैं।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के मुख्य उद्देश्यः-

- बच्चों को एक मंच प्रदान करना जहाँ वे अपनी जिज्ञासा को आगे बढ़ा सकें एवं रचनात्मक कार्य करने की प्यास बुझा सकें।
- भौतिक और सामाजिक वातावरण के परिप्रेक्ष्य में स्कूलों में पढ़ाने व सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव करना।
- बच्चों के राष्ट्र की भविष्य की कल्पना करने और संवेदनशील नागरिक की एक पीढ़ी बनाने में मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस हेतु चयनित परियोजनाओं की प्रकृतिः-

- नवाचारयुक्त, सादगीयुक्त एवं व्यवहारिक हो।
- रोजमर्रा जिन्दगी के अन्वेषण पर आधारित हो।
- क्षेत्र आधारित आँकड़े सम्मिलित हों।
- वैज्ञानिक विधि पर आधारित निश्चित निष्कर्ष हों।
- इसकी निश्चित अनुवर्ती योजना (Future Plan) हो।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भाग लेने हेतु पात्रता : राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के विद्यालय से जुड़े अथवा विद्यालय छोड़ चुके 10 से 17 आयु वर्ग (31 दिसम्बर को) के बालक-बालिका भाग ले सकते हैं। इस कार्यक्रम में दो ग्रुप होते हैं (1) जूनियर ग्रुप- इस ग्रुप में 10 से 14 आयुवर्ग के बालक-बालिका शामिल हैं। (2) सीनियर ग्रुप- इस ग्रुप में 14 से 17 आयु वर्ग के बालक-बालिका शामिल हैं। वर्ष 2018 से एक परियोजना में दो बालकों का समूह होता है जिनमें एक ग्रुप लीडर व दूसरा ग्रुप मेम्बर होता है।

परियोजना हेतु शोध का क्षेत्र : राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस द्वारा प्रत्येक 2 वर्ष हेतु मुख्य विषय एवं उपविषय घोषित किया जाता है। मुख्य विषय एवं उपविषय का चयन कर बाल वैज्ञानिक गाइड टीचर के निर्देशन में परियोजना का निर्माण कर उससे सम्बन्धित गतिविधियाँ करते हैं। प्रयोजना प्रस्तुतीकरण समय 8 मिनट निर्धारित है। परियोजना कार्य हेतु निम्न सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। 1. फाइल, 2. लॉगबुक, 3. सर्वे रिपोर्ट, 4. पोस्टर। 1 वर्ष हेतु 2020 हेतु मुख्य विषय एवं उपविषय की घोषणा शीघ्र होनी है।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का समय विभाग चक्र : परियोजना चयन के बाद ग्रुप लीडर व ग्रुप मेम्बर का गाइड टीचर ऑनलाइन पंजीकरण-जून/जुलाई में प्रतिवर्ष NCSC की वेबसाइट पर।

- जिला स्तर पर बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन-प्रतिवर्ष सितम्बर-अक्टूबर तक।
- राज्य स्तर पर बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन- प्रतिवर्ष नवम्बर तक।
- राष्ट्रीय स्तर पर बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन प्रतिवर्ष 27 से 31 दिसम्बर तक

जिला स्तर पर चुनी हुई श्रेष्ठ परियोजनाओं को राज्य स्तर पर आमंत्रित किया जाता है। इस प्रकार राज्य में आए प्रतिभागियों में श्रेष्ठतम 30 प्रतिभागी एस्कॉर्ट टीचर के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में मेरा अनुभव : 2018 में 26वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भुवनेश्वर (ओडिशा) में 27 से 31 दिसम्बर 2018 तक राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़ (चूरू) की छात्रा एवं बाल वैज्ञानिक चेतना भारद्वाज ने राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य विषय- 'स्वच्छ, हरित व स्वस्थ राष्ट्र के लिए विज्ञान तकनीक और नवाचार' व उपविषय-'स्वास्थ्य, स्वच्छता और साफ-सफाई' विषय पर मेरे मार्गदर्शन में अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया एवं राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया। मुझे राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 2018 का गाइड टीचर व चेतना भारद्वाज को 2018 का बाल वैज्ञानिक का खिताब दिया गया। बाल वैज्ञानिक को भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों एवं भारत के कोने-कोने से पधारे बाल वैज्ञानिकों से रूबरू होने का मौका मिला। इसके अलावा खाड़ी एवं आसियान देशों के बाल वैज्ञानिकों से मिलने का मौका मिला। बाल वैज्ञानिकों में विभिन्न संस्कृतियों की झलक देखने को मिली जिनका पहनावा, वेशभूषा, खान-पान एवं रहन-सहन सब भिन्न था। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना देखने को मिली।

2019 में 27वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में बाल वैज्ञानिक चंचल ने राज्य स्तर पर झीलों की नगरी उदयपुर में मुख्य विषय-'स्वच्छ, हरित व स्वस्थ राष्ट्र के लिए विज्ञान तकनीक और नवाचार' व उपविषय 'कचरे से समृद्धि' विषय पर मेरे मार्गदर्शन में अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया एवं चूरू जिले का प्रतिनिधित्व किया।

कोविड-19 महामारी के चलते अभी 28वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस हेतु अभी रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ नहीं हुए हैं, ज्यादा से ज्यादा गाइड टीचर बाल वैज्ञानिकों का रजिस्ट्रेशन करवाएँ एवं उनके बालमन में उठ रही जिज्ञासाओं की प्यास को बुझाए।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़, चूरू (राज.) **मो: 9460489940**

हिन्दी विविधा

नैतिक मूल्यों का ह्रास-एक चुनौती

❐ पृथ्वीराज लेघा

फ्रांसीसी लेखक अल्बर्ट कैमस के अनुसार **''इस दुनिया में नैतिकता के बिना व्यक्ति एक जंगली जानवर के समान है।''**

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारिरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक का प्रखर एवं चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत-प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता का पुर्नजीवित तथा पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। सुसंस्कृत समाज में मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता में कमी चिन्ता का गहरा कारण है।

आज समाज का चारों ओर नैतिक मूल्यों, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। आज भीड़ भरी दुनिया में, भौतिकता की आंधी में, साम्प्रदायिक संकीर्णता के माहौल में, प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में, स्वार्थपरता के तूफान में हमारे सभी नैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्य बहते जा रहे हैं। इस ह्रास के फलस्वरूप सभी क्षैत्र में गिरावट देखने को मिलती है। आज मूल्यों की गिरावट ने समाज में अनुशासनहीनता, श्रम के प्रति अनास्था, स्व कर्त्तव्यों के प्रति अनास्था, अनुउत्तरदायित्व की भावना को जन्म दिया है। इसके फलस्वरूप समाजोत्थान का भाग अवरूद्ध हो गया है। अतः आज की विसंगतियों में समाज तथा उसके प्रत्येक सदस्य का यह दायित्व हो जाता है कि वह नैतिक मूल्यों के विकास पर बल दे क्योंकि नैतिक मूल्यविहीन शिक्षा जीवन को विनाश की ओर ले जाएगी न कि विकास की ओर।

मानवीय गुणों का विकास ही नैतिक जीवन है। यह गुण ही नैतिक मूल्यों को स्थापित करता है। नैतिक मूल्य शाश्वत होते हैं। नैतिक मूल्यों का संबंध व्यक्ति के उन गुणों के विकास से है जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाकर उसे समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग बना दे, जिससे वह दूसरों के हित में अपना हित समझे। सच्चे अर्थों में व्यक्ति का व्यक्तित्व इस

प्रकार उभर कर आए कि वह समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

वर्तमान समय की बदलती हुई परिस्थितियों के संदर्भ में नैतिक मूल्यों की अवधारणा को शिक्षा से संबद्ध करके व्यक्ति एवं समाज में सार्थक परिवर्तन लाया जा सकता है।

जीवन में अनुशासन का महत्त्व सबसे अधिक होता है। प्राथमिक विद्यालय से ही छात्र अपनी आदतों को समाज के अनुकूल व्यवहार में लाए तभी युवा होने पर आदर्श समाज की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बालक के मानवीय गुणों का सर्वांगीण विकास करके उसे इस योग्य बनाना कि वह मानव संस्कृति व समाज को अधिक सुन्दर व सुदृढ़ बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दे सके। किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके मूल्यों का प्रतिबिम्ब होता है। इसके लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य समाहित किया जावे तथा विज्ञान व अन्य विषयों की भांति इसे भी पूर्ण महत्त्व दिया जावे। अन्य विषयों की भांति विधिवत परीक्षा, पाठ्यक्रम, समय विभाग चक्र में निर्धारित कालांश, उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता आदि होने चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो इसे प्रभावी रूप दे पाना संभव नहीं होगा।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में उन महापुरुषों व देशभक्तों की जीवन गाथाऐं होनी चाहिए जिन्होंने देश अथवा मानवता के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है तथा जिनके जीवनपथ के पदचिन्हों का अनुसरण कर मनुष्य नैतिकता की राह पर चल सकता है। विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन चरित्र भी पाठ्यक्रम में शामिल किए जा सकते हैं जिन्होंने विभिन्न क्षैत्रों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है अथवा अपने परिश्रम और संघर्ष के बल पर उच्च स्थान प्राप्त किया है।

बच्चों को नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण करने के लिए यह भी आवश्यक है कि अभिभावकों व शिक्षकों में भी नैतिकता का समावेश हो। विद्यालयों में प्रार्थना सभा, समूहगान, कहानी कथन, दृश्य श्रव्य माध्यम, नैतिक शिक्षा कालांश, खेलकूद कालांश में नैतिक शिक्षा संबंधी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए। व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है।

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यायाम तथा योग शिक्षा का भी उल्लेख आवश्यक है अर्थात पाठ्यक्रम में वह सभी सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए जो मनुष्य के सम्पूर्ण नैतिक एवं चारित्रिक विकास के लिए आवश्यक है।

यदि हम प्रारंभ से ही अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करेंगे तभी भविष्य में हम अच्छे चरित्रवान, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार शासक, अधिकारी, अध्यापक, कर्मचारी की कल्पना कर सकते हैं। भावी पीढ़ी को नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाना हम सभी का उत्तरदायित्व है। यदि हम राष्ट्र उत्थान के महत्त्व को स्वीकारते हैं तो नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता को भी समझना होगा। तभी हम राष्ट्र नायकों व निर्माताओं के स्वप्न को साकार कर सकेंगे।

अवकाश के दिनों में और शाला समय के पश्चात स्वच्छता कार्यक्रम, स्वाध्याय, खेलकूल, समाज सेवा, शारिरिक श्रम, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी., स्काऊट गाईड आदि गतिविधियों पर जोर दिया जाना चाहिए। लक्ष्य यह हो कि समाज सेवा के कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में मानव प्रेम, राष्ट्रीय चेतना आदि के संस्कार डाले जावें। इन गतिविधियों के फलस्वरूप बच्चे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना कर अन्धविश्वासों का उन्मूलन कर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

कार्यक्रम अधिकरी, समग्र शिक्षा, बीकानेर
मो. 9929548840

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2020

1. **नामांकन वृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्राप आउट बच्चों एवं कोविड-19 के कारण प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश की तिथि बढ़ाने के सम्बन्ध में।**
2. **हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि 19.10.2020।**

1. नामांकन वृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्राप आउट बच्चों एवं कोविड-19 के कारण प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश की तिथि बढ़ाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/माध्य-द/22492/प्रवेशोत्सव/2019-20/ 34-8 दिनांक : 18.08.2020 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा। 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः नामांकन वृद्धि तथा अनामांकित एवं ड्राप आउट बच्चों एवं कोविड-19 के कारण प्रवासी श्रमिकों के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु प्रवेश की तिथि बढ़ाने के सम्बन्ध में। ● संलग्नः इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक : 17.07.2020।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र से विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 में नवीन प्रवेश की अंतिम तिथि 15.08.2020 निर्धारित की गई थी, जिसे बढ़ा कर दिनांक 31.08.2020 किया जाता है। पूर्व निर्देशानुसार आरटीई के तहत कक्षा 1 से 8 में प्रवेश सत्रपर्यन्त हो सकेंगे।

● **(सौरभ स्वामी)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि 19.10.2020।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/मा/हिनि/28129 (छात्रवृत्ति)/2020-21 दिनांकः 19.08.2020 ● समस्त संयुक्त निदेशक, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा), समस्त प्राचार्य डाइट, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ● विषयः हितकारी निधि योजनान्तर्गत एक मुश्त छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु आवेदन आमंत्रण की अन्तिम तिथि 19.10.2020।

हितकारी निधि माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के विभागीय कार्मिक जो सेवा में कार्यरत है (संस्कृत शिक्षा विभाग में कार्यरत कार्मिकों को छोड़कर) समस्त वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के पुत्र/पुत्री के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा X^{th} की परीक्षा में 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए है, प्रति छात्र/छात्रा को 11,000/- रुपये एक मुश्त छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं, यह सहायता राशि हितकारी निधि के 2018-19 से नियमित अंशदाता को देय होगी। योजना का लाभ उन आवेदकों का प्रदान किया जाएगा, जिन्होंने सत्र 2020 में परीक्षा उत्तीर्ण (परीक्षा परिणाम जुलाई 2020) की हो। प्रार्थना-पत्र भरते समय एवं संबंधित अधिकारी द्वारा अग्रेषित करवाते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किया जावेः-

1. योजनान्तर्गत शिक्षा विभागीय कार्मिक के पुत्र/पुत्री द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित X^{th} की परीक्षा राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए उत्तीर्ण की हो।
2. विभागीय कार्मिक के पुत्र/पुत्री द्वारा 70 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किए हो, पात्र होंगे।
3. योजनान्तर्गत 950 छात्र/छात्रा X^{th} (Secondary) के एवं 50 छात्र/छात्राएँ वरिष्ठ उपाध्याय, संस्कृत के उत्तीर्ण हो को देय है।
4. प्राप्तांक का आधार राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा X^{th} (Secondary) के प्राप्तांक है तथा टॉप 1000 छात्र/छात्राओं को यह राशि प्रदान की जाएगी।
5. सहायता राशि हेतु एक निर्धारित प्रपत्र जारी किया जा रहा है तथा प्रार्थना-पत्र प्राप्त होने पर मैरिट के आधार पर सूची तैयार कर राशि प्रदान की जाएगी।
6. आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप में संबंधित अधिकारी से अग्रेषित करवाकर भेजना होगा।
7. वित्तीय वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 में अंशदान कटौती के कटौती शिड्यूल एवं ई.सी.एस. की प्रति आवश्यक रूप से संलग्न की जानी है।
8. यह सहायता राशि वर्ष जुलाई 2020 में आए परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण हुए है, पर लागू होगी।
9. अपूर्ण प्रार्थना-पत्र एवं देरी से प्राप्त प्रार्थना-पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा, अतः ऐसी स्थिति में एवं निरस्त प्रार्थना-पत्र के बारे में कोई अलग से सूचना नहीं दी जाएगी।

हितकारी निधि

कार्यालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

हितकारी निधि से शिक्षा विभागीय समस्त श्रेणी के कर्मचारियों (माध्यमिक/प्रारंभिक) के बच्चों के लिए माध्यमिक बोर्ड अजमेर की

सैकण्डरी/वरिष्ठ उपाध्याय में 70% या अधिक अंक प्राप्त करने पर एक मुश्त छात्रवृत्ति योजना का प्रार्थना-पत्र।

1. कर्मचारी का नाम.....
2. कर्मचारी का पद एवं पदस्थापन स्थान.....
3. कर्मचारी का स्थाई पता.....
4. टेलीफोन नम्बर/मोबाइल नम्बर.....
5. हितकारी निधि अंशदान 2018-19, 2019-20 की ई.सी.एस. एवं शिड्यूल की प्रति संलग्न करें।.....
6. कर्मचारी की Employee ID संख्या.....
7. छात्र/छात्रा का नाम एवं सम्बन्ध.....
8. छात्र/छात्रा द्वारा जिस राजकीय शाला में अध्ययन करते हुए सैकण्डरी/वरिष्ठ उपाध्याय में 70% या अधिक अंक प्राप्त किए है, का नाम.....
9. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा जारी सैकण्डरी/वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा उत्तीर्ण करने की अंकतालिका की प्रमाणित प्रति एवं प्राप्तांक प्रतिशत.....
10. कार्मिक का बैंक खाता विवरण

    पास बुक के प्रथम पृष्ठ की प्रति (प्रमाणित) या निरस्त चेक.....

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि मेरी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है। इन बिन्दुओं में कोई असत्यता पाई जाती है तो हितकारी निधि शिक्षा विभाग, बीकानेर मेरे विरुद्ध जो भी उचित समझे कार्यवाही कर सकेगा यह मुझे स्वीकार्य होगी।

कर्मचारी के हस्ताक्षर मय पद
एवं कार्यरत स्थान

प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय/सी.बी.ई.ओ.) से अग्रेसित करवाया जाना है

प्रमाणित किया कि श्री/श्रीमती.....पद एवं पदस्थापन स्थान.....जो मेरे अधीन कार्यरत है, इनके पुत्र/पुत्री..... शिक्षण सत्र 2019 में राजकीय विद्यालय में अध्ययन करते हुए सैकण्डरी (Secondary) की परीक्षा उत्तीर्ण कर 70% या 70% से अधिक..... प्रतिशत अंक प्राप्त किए है अतः इनका प्रार्थना-पत्र अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को अनुशंषा सहित अग्रेषित किया जाता है।

स्थान :

दिनांकः

हस्ताक्षर जिला शिक्षा अधिकारी/सी.बी.ई.ओ. (मुख्यालय) (मोहर)

हस्ताक्षर कार्यालयाध्यक्ष /संस्था प्रधान (मोहर)

10. कार्मिक के पुत्र/पुत्री को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर या अन्य राजकीय स्त्रोतों से इस प्रकार की कोई छात्रवृत्ति प्राप्त की हो, वे पात्र नहीं होंगे।
11. योजनान्तर्गत स्वीकृत राशि कार्मिक के खातों में ई.सी.एस. के जरिए जमा की जाएगी, इस बाबत अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जाए।
12. संस्थाप्रधान एवं अग्रेषण करने वाले अधिकारी गण उक्त बिन्दुओं के बारे में आश्वस्त होने के उपरान्त प्रार्थना-पत्र अनुशंषा सहित निम्न हस्ताक्षरकर्ता सचिव, हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम से प्रेषित किया जाए।

● **उप निदेशक (प्रशासन)** एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।**

-वरिष्ठ संपादक

जीतने की जिद्द

❒ अरुण कुमार

'माथे पर पाणी का मटका, कोख में टाबर और खाक में स्कूल के बच्चों का रजिस्टर घर-घर से बच्चियों को लेकर पेड़ के तले लाती तो मेरा स्कूल तैयार होता था।' राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी को यह बात कहने वाली **'गीता कुमारी माली'** बाड़मेर के कवास पंचायत के **सरूपोणी, मालियों की ढाणी** स्थित राजकीय शिक्षाकर्मी प्राथमिक विद्यालय में पहले शिक्षाकर्मी बाद में प्रबोधक के रूप में प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को 2002 से पढ़ा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2020 के लिए राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी ने कुल 45 में से राजस्थान से चयनित होने वाली अकेली शिक्षक 'गीता कुमारी' है। साधारण सी दिखने वाली, सहजता से अपनी बात कहने वाली 'गीता कुमारी' के व्यक्तित्व में कर्म क प्रधानता अनायास ही भगवान कृष्ण के गीता के सन्देश का स्मरण करा जाता है। राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2020 के लिए ऑनलाईन आवेदन से लेकर, राज्य के प्रतिनिधित्व से लेकर राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी के समक्ष अपना ऑनलाईन प्रस्तुतीकरण करने तक सबसे सहज 'गीता कुमारी' ही लग रही थी। राज्य से राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी के समक्ष अपने प्रस्तुतीकरण के लिए उसके अन्य साथी शिक्षकों का प्रस्तुतीकरण तकनीकी कुशलता लिए था अथवा साहित्यिक अंग्रेजी में सम्प्रेषण के समक्ष 'गीता कुमारी' का स्थानीय बोली मिश्रित हिन्दी ने प्रस्तुतीकरण में उसे कमजोर नहीं पड़ने दिया। उसकी सहजता उसकी कुशलता बन गई और उसने अपने हर कार्य को सही रूप में सम्प्रेषित किया। गीता के ज्ञान के मार्ग पर चलती 'गीता कुमारी' ने कार्य किया और फल को ईश्वर के भरोसे छोड़ दिया। उसकी कार्य और मेहनत की जिद्द ने उसे जीत की मार्ग दिखा दिया।

राजस्थान से राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2020 के लिए मुझे यानि लेखक को एस.पी.ओ.सी (सिग्नल पोईन्ट ऑफिसर फॉर कॉन्टेक्ट) नियुक्त किए जाने के कारण राज्य के प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षकों की तैयारी से प्रस्तुतीकरण तक करीब से उन्हें अवलोकन करने का अवसर मिला। 'गीता कुमारी' का राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान के लिए चयन राज्य के लिए गौरव का विषय है साथ ही उसके प्रयास और समर्पण की कथाऐं दूरस्थ गांवों और

ढाणियों में बिना प्रचार के काम कर रहे शिक्षकों के लिए प्रेरणा का पथ बनेगी।

'गीता कुमारी' की ढाणी के करीब कोई स्कूल नहीं थी। तत्कालीन सरकार ने स्थानीय वालिन्टर्स जिन्हें शिक्षाकर्मी नाम दिया गया कि सहायता से प्राथमिक स्तर पर शिक्षाकर्मी विद्यालय खोले। उसी में आठवीं पास 'गीता कुमारी' ने शिक्षाकर्मी के रूप में शिक्षण प्रारम्भ किया। नवविवाहित आठवीं पास गीता कुमारी ने पढ़ाने के साथ खुद पढ़ना भी जारी रखा और आज वो तीन विषयों में अधिस्नातक तथा बीएड योग्यता भी रखती है। वह 2008 से नियमित चयनित प्रबोधक के रूप में शिक्षण कार्य कर रही है। स्कूल पेड़ के तले चलता था, इसलिए अपने हिस्से की तीन बीघा जमीन स्कूल को समर्पित कर दी। स्वयं के वेतन का एक हिस्सा विद्यालय को देने वाली 'गीता कुमारी' को गाँव वासियों ने सहयोग दिया और विद्यालय का भवन निर्मित किया गया।

'गीता कुमारी' की इस कामयाबी की कहानी बाड़मेर में बादल फटने से आए कहर का सामना करने वाले कवास की घटना के बिना अधूरी रहेगी। राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी के समझ अपने प्रस्तुतीकरण कर रही थी, और मेरी आंखें ठहर कर सम्मोहित सी हुई उसे देख रहीं थी, वो बोल रही थी, देहली स्टूडियों के लिए, मै सामने सुनता जा रहा था। गीता कह रही थी 'मेडम जी! 2006 में बाड़मेर में बादल फट गया। बाढ़ आ गई। पूरा गाँव, मेरी ढाणी पाणी में डूब गए। मेरी स्कूल पाणी में समा गयी। उसकी पथराई आखें भी साथ-साथ बोल रही थी-मेडम जी मेरी स्कूल के 15 बच्चों को भी वो पाणी बहा ले गया। आर्मी वाले बचे हुए लोगों को ऊंचे टीबे पर लेकर आ गए। गिली जमीन बिछावणा था और आसमान चादर, टेन्ट तो कई दिन बाद आए। ठंडी डाफर (हवा) हाड़ कंपा रही थी। लोग रो रहे चिल्ला रहे थे। बीएसएफ वाले ढांढ़स बन्धा रहे थे। गीता कहती है ऐसे में लोगो का ध्यान तकलीफ से हटाने का अकेला साधन थी, मेरी क्लास। मैने टीबे पर आए परिवार के बच्चों को ढूंढ़ा और एक किनारे अपनी स्कूल शुरू कर दी। भूख-ठंड से बचने के लिए ही सही, टीबे के इन कोने में बच्चे मेरी स्कूल में आने लगे। बीएसएफ वालों ने लालटेण ही नहीं होसला भी दिया और उस कवास के कहर ने भी मेरी स्कूल की कामयाबी को रूकने नहीं दिया।

प्रस्तुतीकरण पूरा होने के बाद राष्ट्रीय स्वतन्त्र ज्यूरी के सदस्य कुछ देर खामोश हो गए। फिर पुछा ''तुम्हें ऐसा करने की प्रेरणा कहाँ से मिलती है?'' मेरे जैसा साधारण व्यक्ति महान व्यक्तित्व, घटना अथवा परिवार का नाम लेता। गीता का जबाब स्वाभाविक था ''मेडम जी, ठोकर लगती है ना, तो प्रेरणा खुद ही आ जाती है। राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान में आवेदन एवं चयन का ऑनलाइन स्वरूप 2018 से प्रारम्भ हुआ तीनों वर्षों में महिला शिक्षिकाओं (2018 में सुमन जाखड़ चूरू, 2019 में कल्पना शर्मा भीलवाड़ा और 2020 में गीता कुमारी माली) का राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान हेतु चयनित होना राज्य में शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को अनायास रेखांकित कर जाता है। पुरस्कार एक प्रक्रिया है प्रोत्साहन की परन्तु इनके कार्यों से मिलती प्रेरणा अन्य शिक्षकों को कर्तव्य पथ पर चलने में सहायक अवश्य होगी।

सहायक निदेशक,
मध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर

हिन्दी विविधा

प्यार की जीत

❐ महेश कुमार चतुर्वेदी

शहर का नामचीन विद्यालय आदर्श विद्यालय। जिसमें पढ़ते विनय और विक्रम। दोनों सहपाठी थे। विक्रम नगर के जाने-माने सेठ की इकलौती संतान था। हट्टा-कट्टा देखने में वह गबरु जवान सा लगता। रईसी अंदाज ने उसे और भी अधिक उच्छृखंल बना दिया था। पढ़ाई से विमुख हो मटर गश्ती और शैतानियाँ करने में उसे मजा आता था। आवारागर्दी करना। स्कूल में बेवजह अपने साथियों की इन्सल्ट करना। ये सब उसके रोजमर्रा के काम थे। विनय के पीछे तो वह हाथ धोकर पड़ा था। जब देखो तब वह उसे परेशान करता रहता। क्योंकि विनय गरीब जरूर था लेकिन पढ़ाई में सबसे अधिक होशियार था। अपने साथियों की मदद करना। उनके साथ मित्रवत व्यवहार करना। उसकी आदत में शुमार था। यही वजह थी विक्रम और विनय की पटरी मेल नहीं खाती।

विक्रम जब विनय को परेशान करता तो वह मनमसोस कर रह जाता। कभी-कभी तो वह रोने भी लग जाता। उस समय वह अपने आपको अकेला, लाचार और बेबस समझता। वह चाह कर भी विक्रम से पंगा नहीं ले सकता।

कई बार उसके साथियों ने समझाया। विनय तुम कब तक अन्याय और अत्याचार सहते रहोगे। क्यों नहीं उसकी शिकायत प्रिंसीपल से करते। तब विनय ने बड़ी ही विनम्रता और सहज भाव से कहा-मित्रों! तुम्हें पता है गली के दादा को छेड़ोगे तो वह और अधिक परेशान करेगा। ऐसे समय में चुप रहने में ही सबकी भलाई है। तभी अनुष्का बोल उठी-'विनय भैया! क्या तुम ऐसे ही भीगी बिल्ली बन घुटघुट जियोगे या कुछ करोगे भी। विनय फिर संयत ही बोला-''देख लेना एक दिन ऐसा आएगा, जब मैं विक्रम का दिल प्यार से जीत लूंगा। विक्रम भला और नेक इंसान बनेगा। तब मैं समझूंगा-मेरे प्यार की जीत हो गयी।

ओ-हो, बड़ा आया शेखी बघारने वाला। छोटा मुँह बड़ी बात। नन्हीं सी जान चींटी चली हाथी को सबक सिखाने। इसके साथ ही सभी छात्र हो-हो-ही-ही कर हँसने लगे और विनय को अकेला छोड़ चले गए। बात आई गई हो गई। विद्यालय में दीपावली की छुट्टियाँ पड़ गई। सभी छात्र उछलते-कूदते खुशी-खुशी घर चले गए। कुछ दिनों बाद छुट्टियाँ खत्म हुई। विद्यालय खुले। रोजमर्रा की तरह सभी नियमित विद्यालय आने लगे। विनय ने देखा स्कूल खुले पन्द्रह-बीस दिन हो गए। किन्तु विक्रम का कहीं अता-पता नहीं। उसने लाख कोशिश की पता करने की। आखिर विक्रम है कहाँ? कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया।

डरता झिझकता एक दिन वह अपने क्लास टीचर अतुल जी से मिला और पूछा-'सर! मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। पूछो-पूछो क्या बात है बेटे? अपने मन की बात पूछने में संकोच कैसा? टीचर जी ने उसके सिर पर हाथ रख पूछा। सर बात यह है कुछ दिनों से विक्रम स्कूल में दिखाई नहीं दे रहा। सोचा सर से पूछ लूँ। कुछ तो वजह होगी उसके स्कूल न आने की।

बेटा! विक्रम को डबल टायफाइड है। वह एक महीने की बीमारी अवकाश पर है। यह कह अध्यापक अतुल जी अपनी कक्षा में चले गए।

ओ हो, तो बात यह है। विक्रम बीमार है। मुझे उससे मिलने जाना चाहिए। यह विचार आते ही छुट्टी होने पर विनय के कदम विक्रम के घर की ओर बढ़ चले। विनय आलीशान कोठी के सामने खड़ा था। दरवाजे पर नेमप्लेट लगी थी। सेठ घनश्याम शाह पुत्र विक्रम शाह नेम प्लेट पढ़ते ही विक्रम ने काल बेल बजाई। थोड़ी ही देर में एक नौकर ने दरवाजा खोला और पूछा क्या बात है? किससे मिलना है?

अपना परिचय देते हुए विनय बोला-'मेरा नाम विनय है। मैं विक्रम का सहपाठी हूँ। पता चला विक्रम बीमार है तो चला आया उससे मिलने। नौकर विनय को अंदर ले गया। जहाँ विक्रम बिस्तर पर लेटा था। विनय को देख विक्रम उठ बैठा और बोला-विनय तुम और यहाँ।

हाँ मित्र! जब मैंने सुना कि तुम बीमार हो तो मुझसे रहा न गया और सीधे ही तुमसे मिलने चला आया। थोड़ी देर रूक विनय ने विक्रम के मम्मी पापा से पूछा-'अब विक्रम की तबीयत कैसी है?

तबियत तो अब ठीक है बेटा! टायफाइड पीछा ही नहीं छोड़ रहा। डबल हो गया है। खाना वाना सब बंद है। कल ब्लड टेस्ट करवाया। हिमोग्लोबिन (रक्त का स्तर) बहुत ही कम है। डॉक्टरों ने कहा है-ब्लड चढ़ाना पड़ेगा। ब्लड का इंतजाम होते ही वे हमें फोन करेंगे।''

'ब्लड चढ़ाना पड़ेगा। विक्रम का ब्लड ग्रुप क्या है? क्या आप मुझे बताएँगे? विनय ने बेसब्री से पूछा।

'बी' पोजीटिव बेटा! बी पोजीटिव का नाम सुनते ही विनय उछल पड़ा। मेरा ब्लड ग्रुप भी तो बी पोजीटिव है। कल पापा के बर्थ डे पर हम सबने ब्लड ग्रुप चेक करवाया था। आप डॉक्टर साहब को और मेरे पापा को फोन पर सूचना दे दो। मैं विक्रम को ब्लड दे रहा हूँ अभी और इसी वक्त। थोड़ी ही देर में डॉक्टर साहब और विनय के पापा आ चुके थे। अद्भुत दृश्य था। एक पलंग पर विक्रम और एक पलंग पर विनय था। दोनों के हाथ में ब्लड की बोतलें लगी थी। एक खून दे रहा था तो एक खून ले रहा था। लेटे-लेटे ही विक्रम बोला-'विनय तुमने खून देकर मेरी जान बचाई। मैं तुम्हारा यह एहसान जिंदगी भर नहीं भूलूँगा। मुझे माफ कर दो विनय! मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें बहुत परेशान किया। सबके सामने तुम्हारी हँसी उड़ाई। विनय मुझे माफ कर दो। विनय ने मुस्कुराते कहा-'माफ तो एक शर्त पर करूँगा। वादा करो आज के बाद तुम किसी को भी परेशान नहीं करोगे। किसी की हँसी नहीं उड़ाओगे और न ही किसी को सताओगे। और हाँ वक्त पड़े तो एक दूसरों की मदद जरूर करोगे। यह कहते हुए विक्रम की आँख भर आई।

वादा, एकदम पक्का वादा। विनय आज के बाद सब शैतानियाँ बंद। तुम्हारे खून ने तो मेरी जिंदगी ही बदल दी। अब तुम मेरे मित्र हो। तुम जैसा कहोगे। मैं वेसा ही करूँगा। बोलो अब तो मुझे माफ करोगे ना।

हाँ-हाँ क्यों नहीं। जैसा मैं वैसा ही मेरा दोस्त। मेरे माफ करने से अगर तुम अच्छे इंसान बन सकते हो तो इससे बढ़कर और खुशी की क्या बात होगी? ब्लड़ चढ़ चुका था। थोड़ी ही देर में विनय के हाथ में गर्मागर्म कॉफी थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो सच में उसके प्यार की जीत हो चुकी थी।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, दूसरी गली, छोटी सादड़ी,
प्रतापगढ़ (राज.)-312604 **मो: 9460607990**

हिन्दी विविधा

भूदान के दीप

❐ शिवनारायण शर्मा

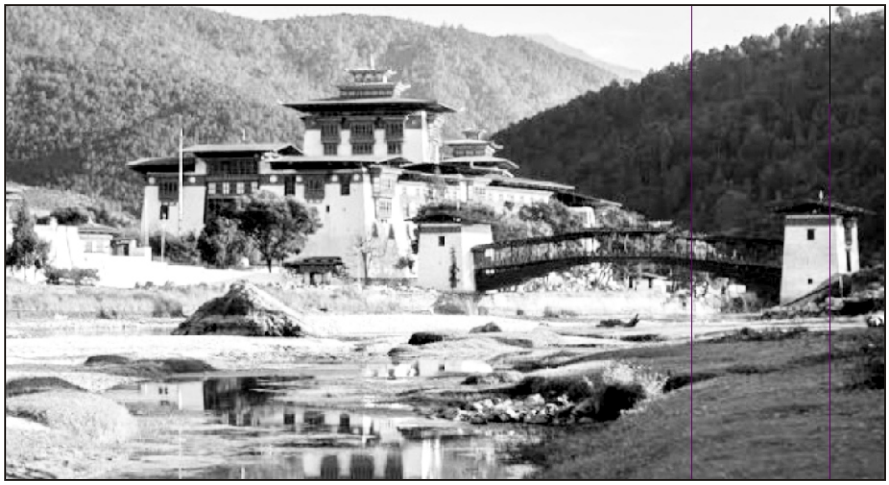

नील नदी में दो सौ मीटर की दूरी पर बसा एक छोटा सा गाँव था स्वादड़ी। गाँव में कच्चे-पक्के कुल डेढ़ सौ घर थे। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती-बाड़ी और पशुपालन था। आसपास घना जंगल होने के कारण यहाँ प्रतिवर्ष औसत से अधिक वर्षा होती थी। कभी-कभी तो नदी का पानी गाँव के नजदीक आ जाता था, परंतु कभी भी जन-धन की हानि नहीं हुई थी। परंतु दस वर्ष पूर्व के मंजर को देखकर तो आज भी लोगों को दिल दहल उठता है।

आधी रात का समय था। नील नदी में भयंकर बाढ़ आई हुई थी। तीन दिनों से लगातार मूसलाधार पानी जो बरस रहा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। गाँव के कुछ लोग तो अपना माल-असबाब समेटकर अपने रिश्तेदारों के वहाँ चले गए थे। ज्यों ही रात गहराई चारों ओर से जंगली जानवरों एवं पशुओं की आवाजें आने लगी। जब तक लोग नींद से जगे गाँव टापू बन चुका था। कुछ लोग अपने बाल बच्चों सहित पक्के घरों की छतों पर चढ़ गए तो कुछ गाँव के ऊँचे टीले पर जा चढ़े। कुछ लोगों ने पेड़ों पर चढ़कर अपनी जान बचाई। गर्रर-गर्रर की आवाज के साथ पानी मकानों को नीचे से चीरने लगा।

धड़ाम-धड़ाम की आवाज के साथ कच्चे मकान मलबें में तब्दील होने लगे। पक्के मकानों की दीवारों में भी बड़े-बड़े छेद बन चुके थे। सुबह होते-होते पूरा गाँव नेस्तनाबूद हो चुका था। खबर मिलते ही सरकारी तंत्र सक्रिय हो उठा। बाढ़ में फँसे लोगों को बचाने के साथ-साथ उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर उनके खाने-पीने की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर सेना के जवानों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए सराहनीय कार्य किया।

तीन दिनों बाद बाढ़ का प्रकोप कम हुआ, परंतु तब तक स्वादड़ी गाँव खण्डहरों में तब्दील होकर पूरी तरफ उजड़ चुका था। सरकार ने गाँव से पाँच किलोमीटर दूर एक पहाड़ी की तलहटी में शामियाने लगाकर इनके रहने की व्यवस्था की। परंतु सरकार के सामने बहुत बड़ी समस्या थी इनके पुनर्वास की। स्वादड़ी से दस किलोमीटर दूर था तख्तपुर। वहाँ के ठाकुर चिमनसिंह बड़े नामचीन व्यक्तित्व थे। वह पाँच सौ बीघा जमीन के मालिक थे। प्रत्येक व्यक्ति के दुख-दर्द में वह उनका सहयोग करते थे। यही कारण था कि वह कई बार गाँव के निर्विरोध सरपंच चुने गए थे।

ठाकुर चिमनसिंह स्वयं उस बर्बाद स्वादड़ी गाँव को देखने गए। खण्डहरों में तब्दील उस गाँव का दृश्य देखकर उनका मन रो उठा। उन्होंने तम्बुओं में निवास कर रहे स्वादड़ी के लोगों से सम्पर्क किया। उन्होंने उन्हें ढाँढ़स बंधाते हुए उनके स्थायी निवास की व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। अगले दिन उन्होंने एक ट्रक भरकर खाद्य सामग्री तथा दैनिक जरूरत की चीजें भिजवायी। उन्होंने बेघर हुए परिवारों की सूची भी मंगवाई।

ठाकुर चिमनसिंह राज्य के मुख्यमंत्री से मिले तथा उन्हें लोगों के पुनर्वास के लिए भूमि उपलब्ध करवाने की अपनी भावना प्रकट की। मुख्यमंत्री जी ने बड़े हर्ष के साथ उनके प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। शीघ्र ही इसके लिए एक कार्ययोजना तैयार कर उनकी क्रियान्विति प्रारंभ कर दी गई।

ठीक दो महीने बाद आया दीपावली का त्योहार। इस अवसर पर ठाकुर चिमनसिंह ने मुख्यमंत्री जी के हाथों स्वादड़ी गाँव के प्रत्येक परिवार को तीन-तीन सौ वर्ग फीट के आवासीय पट्टे वितरित करवाए। मुख्यमंत्री एवं जिला कलक्टर ने ठाकुर चिमन सिंह को फूल-मालाओं, साफा, शॉल, नारियल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया। स्वादड़ी गाँव के लोगों की आँखें नम हो गई। उन्होंने विनम्र शब्दों में इस सदशयता व उदारता के लिए आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय ने कहा यदि विकास के कार्यों में सरकार को भामाशाहों को इस तरह सहयोग मिलता रहे तो विकास के नए प्रतीक व बिम्ब स्थापित किए जा सकते हैं। उन्होंने इन भूखण्डों पर मकान बनवाने के लिए शीघ्र ही बजट उपलब्ध करवाने की बात की। कार्यक्रम के पश्चात उन्होंने दीप जलाकर भूमि पूजन किया तथा इस नवीन गाँव का नाम चिमनपुर रखने की घोषणा की। इस खुशी में स्वादड़ी के लोगों ने तंबूओं के बाहर दीप जलाकर तथा तंबूओं के भीतर रंग-बिरंगी कंदीले जलाकर पूरी तलहटी को रोशनी से जगर-मगर किया। इस अवसर पर ठाकुर चिमन सिंह ने उनके तथा उनके बालकों के लिए मिठाइयों के पैकेट्स तथा आतिशबाजी की सामग्री भिजवाई। सभी लोगों ने रात्रि के समय सामूहिक रूप से वैभव लक्ष्मी का पूजन किया। आपदाग्रस्त लोगों को ठाकुर चिमनसिंह मानवता का मसीहा लगा।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट-गिलूण्ड, राजसमंद
मो: 9610706740

हिन्दी विविधा

लॉक-डाउन

❐ तुलाराम निर्वाण

कई दिनों से मीनू और विशाल मॉल जाने की कह रहे थे, किन्तु अचानक लॉक-डाउन लग गया। हम सबने लॉक-डाउन के दौरान घर के अन्दर ही रहने का निश्चय किया। रोहन का ऑफिस भी बन्द होने के कारण वो भी रात-दिन हम सबके साथ-साथ रहने लगा। बाबूजी का बाजार जाना भी अब बन्द हो गया। क्योंकि मम्मी और रोहन एक दिन बाजार जाकर महीने, डेढ़ महीने का सामान खरीद लाए। जीवन में पहली बार परिवार के सभी सदस्यों का घर के अन्दर ही रहने का यह सुन्दर अवसर था।

केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी की हमारे घर में पूरी पालना की जा रही थी। बाबूजी सुबह सवेरे सबसे पहले सभी खिड़की-दरवाजों के सांकल-कुन्दे, हैंडल और नलों को सेनेटाइजर करते उसके बाद ध्यान योगा और व्यायाम का सेशन चलता, इसके बाद आयुर्वेदिक काढ़ा तैयार कर पीया जाता। हरी-सब्जियाँ और अखबार लेना भी शुरू-शुरू में बन्द कर दिया, किन्तु एक महीने के बाद भी लॉकडाउन नहीं खुलने के कारण अब ये चीजें घर में आने लगी।

कोरोना वायरस (कोविड-19) से सारा देश लड़ रहा था, सबकी दिनचर्या में बड़े-बड़े परिवर्तन देखने को मिल रहे थे। जो परिवार के सदस्य अपनी व्यस्तता के कारण होली और दीपावली पर भी सभी एक साथ नहीं मिल पाते थे, लॉकडाउन में 24×7 समय साथ-साथ रह रहे थे। हमारे पड़ौसी मिश्राजी ने तो अपने मुख्य द्वार पर अन्दर से परमानेन्ट लॉक भी लगा दिया था। बाहर की जानकारी अपनी बालकॉनी और छत पर से ही लेते थे।

गजब तो उस दिन हो गया जब मिश्राजी की बहिन रजनी अपनी पुत्र वधु को ऑपरेशन द्वारा प्रसव करवाने के बाद हॉस्पिटल से छुट्टी मिलने पर अपने भाई के घर लेकर आई है। रजनी की ससुराल जयपुर से 70-80 कि.मी. दूर हिंगोनिया गाँव में थी। मगर लॉकडाउन में आवागमन के सभी साधन बन्द होने के कारण वो अपने गाँव नहीं जा सकी और मजबूरी में अपने बेटे-बहू और नवजात पोते को लेकर अपने भाई के घर आ गई। दरवाजा खटखटाने पर मिसेज मिश्राजी बाहर आई। दरवाजे पर अपनी ननद रजनी को देखकर बिना गेट खोले ही मुँह बनाते हुए अन्दर जाती हुई कहने लगी- 'लो जी ये महारानी लॉक-डाउन में भी आ गई।'

मिश्राजी ने पूछा- क्या हुआ? कौन है जी....।

मिसैज मिश्रा- 'दरवाजे पर कोरोना लेकर आई है, तुम ही मिल लो।'

मिश्रा जी- 'अरे भाग्यवान! कुछ बताओगी भी या ऐसे ही पहेलियाँ बुझाती रहोगी।'

मिसैज मिश्रा- 'मुझे नहीं पता' खुद ही जाकर देख लो? और हाँ- मैं पहले ही बता देती हूँ, इस घर में किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। इस घर को कोई धर्मशाला समझ रखा है, चले आए मुँह उठाकर।'

मिश्राजी बाहर आकर रजनी को देखकर गेट खोलने को आगे बढ़ते हैं, तभी पत्नी के मिजाज के बारे में सोचकर उनके कदम थम से गए।

मिश्राजी- 'आपको पता नहीं क्या? आजकल लॉक-डाउन चल रहा है।'

रजनी- 'भईया! गुनगुन की डिलीवरी हुई है, आज ही अस्पताल से छुट्टी मिली है। गाँव जाने को कोई साधन भी नहीं मिला। इसीलिए मुसीबत में आपकी ओर चले आए।

मिसैज मिश्रा- यहाँ पर जो रह रहे हैं उनकी चिन्ता थोड़ी है? वरना हॉस्पिटल से कोरोना लेकर यहाँ क्यों आती!

इतना सुनकर बाबूजी मम्मी भी बाहर आ गए। हमारे सामने वाले खन्ना जी, वर्मा जी, चौधरी साहब तथा बाजू में पाराशर जी और बंसल जी अपने-अपने घर के बाहर आकर कानाफूसी (कुसर-फुसर) करने लगे। तभी मिश्रा जी ने अपनी बहन रजनी से कहीं और चले जाने की बात कहकर सबको चौंका दिया।

रजनी का स्वभाव बहुत ही मिलनसार था। दो साल पहले रक्षाबन्धन पर जब आई थी तो हमारे घर भी आई थी। कह रही थी गोपाल (मिश्राजी) और रोहन को बचपन में मैंने अपनी गोद में खिलाया था, पता ही नहीं कब इतने बड़े हो गए। मीनू के पापा भी रजनी का अपनी बड़ी बहिन की तरह सम्मान करते थे।

रजनी के कदम अपने भाई की बात सुनकर पीछे की ओर मुड़ गए। उनके बेटे अमन और गुनगुन की आँखें भी भर आई। तभी मीनू और विशाल के साथ खेलते-खेलते रोहन भी बाहर आ गया। लेकिन सब को मौन अवस्था में देखकर पूछने लगा-

रोहन- क्या हुआ? आप सब चुप क्यों हो?

मम्मी-'कुछ नहीं' तुम अन्दर चलो।

तभी बाबूजी ने सारे मामले के बारे में रोहन को बताया। अब तक रजनी कुछ दूर जा चुकी थी।

रोहन-'लेकिन रजनी बहन अब लॉक-डाउन में कहाँ जाएगी। उसका यहाँ और कौन है। और उस नवजात बच्चे का क्या होगा।'

पिताजी-'समाज की इसी विचारधारा का तो रोना है।

मम्मी- सरकार कह रही है-'हमें बीमारी से लड़ना है बीमार से नहीं।' किन्तु आम जनता बीमार से लड़ रही है।

पिताजी- रजनी और उसका परिवार तो पूरी तरह स्वस्थ है। किसी भी सदस्य को खाँसी, जुकाम और बुखार का कोई लक्षण नहीं है।

मम्मी- सुना है उन सबकी हॉस्पिटल में छुट्टी होने से पहले स्क्रीनिंग भी हो चुकी है। अब खतरे की भी कोई बात नहीं है।

पिताजी- हाँ बस थोड़ी सावधानी के लिए सोशियल डिस्टेन्स रखते हुए आगामी 14 दिवस तक होम क्वारेन्टाइन रहना होगा।

रोहन- इसमें क्या बड़ी बात है। लॉक-डाउन के दौरान तो हम सभी को होम क्वारेंटाइन रहना ही चाहिए।

पिताजी- बस इस प्रकार की समझ की ही आवश्यकता है। हमें कोरोनो से डरना नहीं लड़ना होगा।

इतने में ही मीनू के पापा रजनी के पीछे-पीछे दौड़कर जाने लगे, हम सब भी पीछे-पीछे चलने लगे।

रोहन-रजनी बहिन जी! दिन छिप गया है, ऐसे में आप इन जच्चा-बच्चा को लेकर कहाँ जाओगी।

रजनी- कहीं नहीं भईया... जहाँ भगवान की मर्जी..(और सिसकियां लेने लगी)

रोहन- (रजनी से उसका बैग छीनते हुए)

तो आओ... आज भगवान की मर्जी इस भाई के घर रूकने की है। आपने गोद में खिलाया है ना इसको...। आज अपना थोड़ा सा फर्ज अदा करने का मुझे मौका भी दोगी।

रोहन-रजनी का सामान एक हाथ में लेकर और दूसरा हाथ उसके कन्धे पर रखकर आगे-आगे और अमन-गुनगुन उनके पीछे-पीछे चले आ रहे थे। बीच में ही रजनी बाबूजी के गले लगकर जोर-जोर से रोने लगी। मैं गुनगुन और अमन को घर के अन्दर ले गई, कुछ देर में बाबूजी, मम्मी रजनी और रोहन भी घर के अन्दर आ गए।

सबसे पहले हम सब ने साबुन से मलमल कर हाथ धोए। तत्पश्चात चाय पी। मम्मी ने कुछ कपड़े रजनी और गुनगुन को और रोहन ने अमन को दे दिए। सभी ने स्नान कर व ड्रेस चेन्ज कर साथ-साथ डिनर लिया।

लॉक-डाउन को आज दो महीने से अधिक समय हो गया। यद्यपि बस सेवा अभी भी चालू नहीं हुई, किन्तु प्रशासन ने निजी वाहन से आने-जाने की अनुमति दे दी है। रजनी ने अब अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की।

रजनी- अंकल जी! आपने मुझे इतना प्यार दे कर मेरे बाबूजी की भी कमी पूरी कर दी। आप लोगों को एक महीने से भी अधिक समय तक इस बोझ को उठाना पड़ा। अब हम अपने गाँव जाना चाहते हैं। अमन के पापा और मुन्नी घर पर अकेले है।

पिताजी- ऐसा ना कहो बेटी। ये घर आपका ही है। आपके पिताजी मेरे घनिष्ठ मित्र थे। इस प्रकार आप मेरी भी बेटी हो और बेटी माँ-बाप के घर बोझ नहीं किसी की अमानत होती है।

रजनी की आँखों में आँसू छलक पड़े। फिर बाबूजी ने रोहन को अपनी गाड़ी से कार द्वारा रजनी को उसकी ससुराल छोड़ने को कहा।

रोहन रजनी और उसके परिवार को मास्क लगाकर अपनी गाड़ी से उनके गाँव छोड़ने जा रहा था। रजनी माताजी के गले लग-लगकर रो रही थी, अमन और गुनगुन बाबूजी के चरण छूकर कार में बैठ रहे थे। सभी अड़ौसी-पड़ौसी सोशल-डिस्टेंस से हमारे घर के सामने खड़े थे। किन्तु मिश्राजी का परिवार अभी भी बालकनी में खड़ा होकर लॉकडाउन की पालना कर रहा था।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयश्री,
नगर, भरतपुर **मोः 9929768080**

हिन्दी विविधा

सच्चा शिक्षक

❒ विजयलक्ष्मी

गुरु शिष्य परम्परा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वही हमें इस रंगीन, खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। कहा जाता है कि जीवन के सबसे पहले गुरु हमारे माता-पिता है। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु एवं शिक्षक परम्परा चली आ रही है लेकिन जीने का असली सलीका व तरीका हमें शिक्षक ही सिखाते हैं और सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है, जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। शिक्षक उस माली के समान है जो एक बगीचे को अलग-अलग रंग-रूप के फूलों से सजाता है जो छात्रों को काँटों पर भी मुस्कुराकर चलने के लिए प्रेरित करता है। आज शिक्षा को हर घर तक पहुँचाने के लिए तमाम सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षकों को भी वह सम्मान मिलना चाहिए जिसके वो हकदार हैं। एक गुरु ही शिष्य में अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। वर्तमान युग है आधुनिकता का, वैज्ञानिकता का, व्यस्तता का, अस्थिरता का, जल्दबाजी का।

आज का विद्यार्थी जीवन पहले की तरह सहज, शांत और धैर्यवान नहीं रह गया है क्योंकि आगे बढ़ना और तेजी से बढ़ना उसकी नियति मजबूरी बन गई है। वह इसलिए कि यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो जिंदगी की दौड़ में पीछे रह जाएगा। यह वक्त का तकाजा है ऐसे समय में विद्यार्थी जीवन को एक सही, उचित, कल्याणकारी एवं दूरदर्शी दिशा-निर्देश देना एक शिक्षक का पावन कर्त्तव्य है।

वैसे तो शिक्षक की भूमिका सदैव ही अग्रगण्य रही है क्योंकि 'राष्ट्र निर्माता है वह, जो सबसे बड़ा इंसान है, किसमें कितना ज्ञान है बस इसको ही पहचान है।'

एक राष्ट्र को बनाने में एक शिक्षक का जितना सहयोग और योगदान है उतना शायद ही किसी और का हो क्योंकि एक राष्ट्र को उन्नति के लिए चरम शिखर पर ले जाने का सबसे बड़ा दायित्व शिक्षक का ही है। राजनेता, डॉक्टर, इंजीनियर, लेखक, उद्योगपति, अभिनेता व खिलाड़ी आदि परोक्ष रूप से इन सबको बनाने वाला शिक्षक ही तो है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के संदर्भ में एक शिक्षक की भूमिका अब और भी अधिक महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं। इसके कारण चाहे जो कुछ भी हो परन्तु एक शिक्षक को आज के ऐसे ही विद्यार्थियों को उचित प्रशिक्षण, सदुपयोगी एवं सटीक कल्याणकारी मार्गदर्शन प्रदान करते हुए उन्हें भावी देश के कर्णधार, जिम्मेदार देशभक्त नागरिकों में परिणत करना है। एक शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत अधिक होती है क्योंकि उसे न केवल बच्चों का बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक विकास करना है अपितु सामाजिक, चारित्रिक एवं सांवेगिक विकास भी करना है जो कि आज के युग में शिक्षक का ही परम कर्त्तव्य है।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वराः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्मः, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय उमरैण,
अलवर (राज.)
मोः 9694530751

हिन्दी विविधा

बाल सभा ऐसी भी

❐ निधि शर्मा

ईंट भट्ठे पर मुझे आया देख कमली पहले तो झिझकी, फिर मैंने उसे आने का कारण बताया। बाल सभा में आने की बात सुनते ही उसने मुझे साफ मना कर दिया। वह बोली–'जी मैडम! आप जानते ही हो गाँव का हाल। मैं गरीब विधवा जैसे–तैसे अपना और बेटी रसना का पेट पाल लेती हूँ।'

मैंने उसे समझाया कि बालसभा अमावस्या के दिन रखी जाती है और उस दिन अधिकांश मजदूर भी छुट्टी रखते हैं। तो उस दिन वह विद्यालय की बालसभा में आकर अपनी बेटी रसना की प्रतिभा को खुद भी देखें।

अब कमली के चेहरे पर खुशी और उत्सुकता दोनों के भाव एक साथ उभरे। कुछ सोचते हुए वह बोली–'लेकिन मैडम जी मैं आधे दिन काम करके फिर विद्यालय आ जाऊँ तो सभा देख सकती हूँ क्या?'

मैंने उसका भाव समझते हुए कहा–'क्यों नहीं? जरूर जाओ, वैसे भी बालसभा आधी छुट्टी के बाद होती है। तुम दोपहर एक बजे आ जाना।' उसने हाँ में सिर हिला दिया। विद्यालय लौटते समय मुझे रास्ते भर पिछली बाल सभाओं की यादें ताजा हो आयी। मेरी पाँचवी कक्षा की छात्रा रसना हर प्रस्तुति को एकटक देखा करती थी। रसना अंग्रेजी विषय में बहुत होशियार थी। सो मैंने उसे अंग्रेजी कविता पाठ की तैयारी करने के लिए कह दिया।

वह बड़े मनोयोग से कविता पाठ की तैयारी करने लगी। एक दिन मैंने उससे पूछा कि क्या वह बालसभा के दिन अपनी माँ को भी

बुला सकती है तो वह उदास नजर आने लगी। मैंने उससे प्यार से पूछा कि माँ के आने में क्या परेशानी है तो उसने सकुचाते हुए बताया कि उसकी माँ ईंट भट्ठे पर काम करती है और उसे काम से छुट्टी मिलना बहुत मुश्किल है।

मैंने उसी दिन निश्चय कर लिया कि बालसभा में सभी अभिभावकों और विद्यार्थियों के सामने कविता पाठ करने की रसना की दबी हुई अभिलाभाषा को जरूर पूरा करूँगी। इधर लगभग दो हफ्ते के अभ्यास से ही उसके स्वर व आचरण में गजब की मधुरता व आत्मविश्वास पैदा हो गया।

रसना की संकल्पशक्ति और लगन ने मेरा भी विश्वास बढ़ाया। आखिर वह दिन आ गया जिसका कमली, रसना और मुझे ही नहीं बल्कि बाकी सब विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को भी इंतजार था। कमली समय की पाबंद निकली और ठीक 1 बजे बालसभा में पहुँच गई। वह सबसे पीछे जाकर खड़ी हो गई। मैंने उसे इशारे से आगे बुलाया और कहा कि सबसे पहले रसना की ही प्रस्तुति है।

विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष जी द्वारा बालसभा का शुभारम्भ किया गया। रसना का उत्साह चरम पर था। जब उसने माइक पकड़ा तब मुझे उसके हाथों में हल्की कंपन महसूस हुई। रसना ने अंग्रेजी कविता का सस्वर पाठ प्रारंभ किया सब चकित भाव से रसना को देख और सुन रहे थे और कुछ समझ ना आने पर भी कमली तो जैसे भाव–विभोर हो उठी।

उसे सहज ही विश्वास नहीं हो रहा था कि नितांत अभावों में पलने वाली उसकी बेटी के कंठ में तो जैसे साक्षात् सरस्वती का वास है। रसना की कविता पूरी हुई और पूरा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। मैंने आगे बढ़कर रसना को हृदय से लगा लिया। रसना ने माइक मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने कमली को आगे बुलाया। वह खुशी से गदगद थी और कुछ बोल नहीं पा रही थी। फिर उसने स्नेहपूर्वक रसना के सिर पर हाथ फेरा और कहा–'मेडम जी, मुझे आधे दिन की मजदूरी न मिलने का अब कोई दुख नहीं है क्योंकि रसना ने मुझे सौ गुना सुख दिया है। सच में, बालसभा ऐसी होती है, मुझे तो पता ही नहीं था।'

यकीन मानिए बालसभा ऐसी भी होती है।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बालकिशन का बास, ग्रा. पं. कालाखो, ब्लॉकः दौसा, जिलाः दौसा
मो: 9460047978

सही फैसला

एक कुम्हार माटी से चिलम बनाने जा रहा था। उसने चिलम का आकार दिया। थोड़ी देर में उसने चिलम को बिगाड़ दिया।

माटी ने पूछा- अरे कुम्हार, तुमने चिलम अच्छी बनाई फिर बिगाड़ क्यों दिया?

कुम्हार ने कहा कि- अरी माटी, पहले मैं चिलम बनाने की सोच रहा था, किन्तु मेरी मति (दिमाग) बदली और अब मैं सुराही बनाऊंगा।

ये सुनकर माटी बोली- रे कुम्हार, मुझे खुशी है, तेरी तो सिर्फ मति ही बदली, मेरी तो जिंदगी ही बदल गयी।

चिलम बनती तो स्वयं भी जलती और दूसरों को भी जलाती, अब सुराही बनूँगी तो स्वयं भी शीतल रहूंगी और दूसरों को भी शीतल रखूंगी।

यदि जीवन में हम सभी -सही फैसला लें तो हम स्वयं भी खुश रहेंगे एवं दूसरों को भी खुशियाँ दे सकेंगे।

क्योंकि अब इस दुनिया में...

●शीतल साँगला

अनजान थी इस दुनिया से
पर अब, सब समझने लगी हूँ।
सब मतलब से हैं चाहते
बेफिक्र अब रहने लगी हूँ।
क्योंकि अब इस दुनिया में
किसी से कोई मतलब नहीं है।।
मायूस हो के झुक जाती हैं
ये भीगी पलके मेरी।
पर अब दुनिया की उलझन से
बेफिक्र मैं रहने लगी हूँ। क्योंकि...
समंदर से भी गहरी हैं
जिंदगी की उलझने।
मगर सपनों से बड़ी
ऐसी कोई उलझन नहीं है।। क्योंकि...
हर दिन इन्तजार रहता है
मंजिल के मिलने का।
मगर अब हर काम
मंजिल से कम नहीं है।। क्योंकि...
सपनें हैं, उम्मीदें हैं
पंख हैं, आसमां हैं।
मन में ख्वाहिशों की
कोई कमी नहीं है।। क्योंकि...
रात भर जागकर
किताबों को सीने से लगाना।
उनके अल्फ़ाजों को
दिमाग में उतारना है।।
अब इससे बड़ा कोई
संघर्ष नही है।। क्योंकि...
एक लाल बत्ती की गाड़ी हो
एक छोटा सा बंगला हो।
कंधों पर चार सितारे हों
रूतबा अपना अलग-सा हो।।
अब सपनों के लिए
वक्त की काई सीमा नहीं है।। क्योंकि...

बरल 2, विजयनगर,
अजमेर (राज.)
मो: 7232061819

नमस्ते कर, नमस्ते कर

●अमित शर्मा

हाथ ना मिला प्रिय,
हृदय से बात कर।
नमस्ते कर, नमस्ते कर।।

ईशावास्यम, इदं सर्वं
यत्किञ्च जगत्यां जगत,
जान ले मेरे प्रिय भगत,
हर प्राणी में प्रभु का वास,
कण-कण में उसका ही निवास,
इस बात को तू स्वीकार कर।
नमस्ते कर, नमस्ते कर।।

मेरे भीतर जो रहता है,
तुझ में भी है वह विराजमान,
जुड़ा है एक विभु का तार,
कर लें हम उसको ही नमस्कार
सबमें दिखे उसका आकार।
नमस्ते कर, नमस्ते कर।।

स्पर्श तो है तन का काम,
आत्मा का भला इसमें क्या लाभ,
छूना कहाँ जरूरी है,
बस पंचतत्व की दूरी है,
भाव अपने करो पवित्र,
फैलाओ स्नेह सम्मान का इत्र,
वसुधैव कुटुम्बकम् के आधार पर।
नमस्ते कर, नमस्ते कर।।

हाथ ना मिला प्रिय,
हृदय से बात कर।
नमस्ते कर, नमस्ते कर।।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेड़ा,
बाँसवाड़ा (राज.)

हे राही! तू चलता चल

●मनोज कुमार शर्मा

हे राही! तू चलता चल,
तू नित आगे बढ़ता चल।
हो रहा आज तू क्यों विकल,
तेरा नूर आज क्यों मुरझाया है।
तेरे लक्ष्य पर किसकी काली छाया,
आज तेरा मन क्यों लजाया है।
अपने बुलंद इरादों को नई दिशा दो,
अपने लक्ष्य को चारों ओर महकने दो।
अर्जुन के तीर जैसा अपना
लक्ष्य संधान करो, कर्ण जैसा दृढ़ विश्वास
अपने मन में धरो।
सूरज के तेज की तरह
अपना तेज जग में बिखराओ,
चंद्रमा की शीतलता की तरह
जग में छा जाओ।
नभ में तारों की भाँति
जग में टिमटिमाओ,
परमेश्वर का दिया कभी
अल्प नहीं होता।
गर टूट जाए जो बीच में
वह संकल्प नहीं होता,
हार को अपने लक्ष्य से दूर ही रखना
क्योंकि जीत का कभी कोई
विकल्प नहीं होता।
जिस जीवन में संघर्ष नहीं
वह जीवन ही बेकार है,
जिस लक्ष्य में दृढ़ विश्वास नहीं
वह लक्ष्य ही बेकार है।
नित नई उमंग, नई तरंग के साथ
अपने लक्ष्य पर संधान करता चल,
हे राही! तू चलता चल।।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मलखेड़ा
तह. भादरा, जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो: 9001605568

मेरी अद्भुत कर्मशाला

● श्रीमती इंद्रा

मन को प्यारी राग-माला
जग से न्यारी पाठशाला
ग्वाल-बाल की कंठमाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

प्रांगण इसका है निराला
बनती इसके आंगन अंशुमाला
भरती हृदय में सबके उजाला
ज्ञान से भरी है ग्रंथमाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

बालक इसकी बगिया के फूल
बनके कली खिलते हर शाखा
मस्तिष्क की है आरोग्य-शाला
गुरू जैसे है रत्नमाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

समान यहां पर बाल-बाला
ज्ञान पाते यहां निराला
खुल जाता हर कठिनाई का ताला
ऐसी पावन पाठशाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

भावों की है अग्नि-शाला
दुभावों की आयुष-शाला
कला की है अनुपम माला
अंधियारे में करती उजियाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।

मेरे तो जीवन की आशा
तपती दुपहर में जैसे कोई छाया
हर ली मेरे मन की निराशा
जग से न्यारी पाठशाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

मैंने तो यहां बहुत कुछ पाया
दुखों के संसार में सुख का साया
जीवन बाधाओं से परिपूर्ण जाला
उसमें मार्ग दिखाती पाठशाला
मेरी अद्भुत कर्म-शाला।।

अध्यापिका
श्रीमती राधा रा.उ.प्रा.वि.
बिजवाड़िया, तिवारी, जोधपुर
मो. 9680693930

परिवार की अहमियत

घर और परिवार से बढ़कर,
जग में कोई ठोर नहीं।
परिवार में निज की रक्षा,
होती कहीं और नहीं।।
हो कोई भी जटिल समस्या,
हल उसका भी मिलता है।
आपस में सहयोग समर्थन,
परिवार संग मिलता है।।
घर अपने परिवार में रहना,
सचमुच अच्छा होता है।
परिवार को छोड़ जो रहता,
समझो सब कुछ सहता है।।
रिश्तों की मजबूत नींव पर,
होता है परिवार खड़ा।
परिवार की अहमियत का,
होता है एहसास बड़ा।।
संग-संग रहना होता है।
परिवार में मिलकर रहना,
साथ निभाना पड़ता है।।
रिश्तों का जंजाल भले हो,
लेकिन उत्तम होता है।
परिवार में सब का होकर,
जीना उत्तम होता है।।
दरक जाते हैं सारे रिश्ते,
दिल में जड़ता होने से।
परिवार में रिश्ता टूटे,
स्वार्थ, लोभ के होने से।।
परिवार में जीना-मरना,
सबसे अच्छा होता है।
परिवार के हित साधन में,
रहना श्रेष्ठ होता है।।
परिवार में स्नेह भाव से,
नित खुशहाली आती है।
हर्षित सब जन होते,
रोज दिवाली आती है।।
त्याग भावना बड़प्पन की,
सीख मिले परिवारों से।
मर्यादा अनुशासन हम सब,
सीखें सब परिवारों से।।
परिवार का जीवन दर्शन,
सुख समृद्धि प्यार मिले।
सब के हित में अपने हित का,
मिलनसार आधार मिले।।
मिलता है सुकून सभी को,
रहने से परिवारों में।।
दादा से लेकर पोते तक,
होते हैं परिवार में।
शालीनता से जीवन जीना,
सब सीखें परिवार में।।
परिवार की गरिमा व्यापक,
समझो यह परिवार में।
चार पीढ़ियाँ तक समाहित,
मिल रहती परिवार में।।
रक्त समूह जन वृद्धि से,
बढ़ते हैं परिवार सभी।
संयुक्त परिवार के रूप में,
मिलते रहते परिवार सभी।।
सच समाज की लघु इकाई,
होता है परिवार भला।
मानव समाज संचालन में,
अहम है परिवार भला।।
सामाजिकता मौलिक अंश,
परिवार को कहते हैं।
प्राणी जगत की मुख्य इकाई,
सभी इसी को कहते हैं।।
सभ्यता का रूप परिष्कृत,
परिवार का होना ही।
छोटे-बड़े घरेलू जन का,
मिल आपस में रहना ही।।
जब आता परिवार दिवस है,
परिवार का महत्त्व सीखाता है।
बतलाता परिवार दिवस,
अहमियत भी समझाता है।।

मोः 9982491518

जिज्ञासा

कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
क्या, क्यों, कैसे
की जिज्ञासा में
अभिव्यंजना मापता है।
बादलों में छिपते निकलते
चाँद से अपने सवालों के
जवाब माँगता है।
धरती का भूगोल क्या?
तारों का खगोल क्या?
शतरंज का खेल क्या?
अंबर में उमड़ती घटाओं में
सैलाब मापता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
विज्ञान में ज्ञान क्या?
जीवन में सम्मान क्या?
नैतिकता की पहचान क्या?
बादलों की बनती बिगड़ती
छवियों में
धूप-छाँव जानता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
पर्यावरण में प्रदूषण क्यों?
सूर्य-चन्द्र के ग्रहण क्यों?
ओजोन का आवरण क्यों?
प्रकृति के रहस्यों से
दिलों में
कुतूहल जागता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
भरी दुपहरी मृग तृष्णा कैसे?
वायरस महामारी फैलाए कैसे?
कविता में शब्दों का मेल हो कैसे?
छंद-अलंकारों की तुकबंदियों में
रस-व्यंग्य जगाता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
चींटी की चीख क्या?
मरणासन्न हथिनी की पीर क्या?
कोरोना की वैक्सीन क्या?
लॉकडाउन से आतंकित मानव
दुनिया में
जीवन-डोर ढूँढ़ता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
ज्ञान बड़ा अनमोल क्यों?
मोबाइल में कॉल क्यों?
क्रिकेट में स्विंग-बॉल क्यों?
मन-मस्ति की
जिज्ञासाओं में
तूफ़ान उमड़ आता है।
कवि क्यों जागता है?
गगन में क्या निहारता है?
बादलों की ओट से ये कौन
झाँकता है?
क्या, क्यों, कैसे
जो तमाम सवालों के
जवाब जानता है।
कवि क्यों जागता है?

मो: 9784132269

g_` H$m CÎma

समय को मैंने जब भी पुकारा,
समय ने कहा-मुझे पुकारते हो क्यों?
मैं तो तुम्हारे साथ था, हूँ और सदा रहूँगा।
समय को मैंने जब भी ललकारा
समय ने कहा-मुझे ललकारते हों क्यों?
मुझसे डरते रहे हो, डरते रहो।
समय को मैंने जब भी भुलाया,
वह बार-बार मेरे सामने आया।
समय ने कहा-मुझे भुलाते हो क्यों?
मुझे याद करते रहे हो, याद करते रहो।
समय को मैंने जब भी स्वीकारा
समय ने कहा-मुझे स्वीकारते हो क्यों?
मुझसे लड़ते रहे हो, लड़ते रहो।
मैंने समय से कहा-तेरा अस्तित्व तो मुझसे है।
यदि मैं न होता तो तुझे जानता कौन?
मानता कौन?
समय ने उत्तर दिया सुन-
मुझे पुकारना, ललकारना, भुलाना, स्वीकारना
कुछ भी जरूरी नहीं है।
जरूरी है मुझे पहचानना।

मो: 9602929254

धरा

आज मनुज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में

मेरी रग-रग आह्लादित है,
गिर-नग सब प्रमुदित है।
क्योंकि आज मनुज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

वन-उपवन कुसुमित, सुवासित है,
झर-सर निर्मल जल से परिपूरित है।
क्योंकि आज मनुज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

पशु-पक्षी करते कलख गान हैं,
जलचर, कीट-पतंगे कूदते ऊँची तान हैं।
क्योंकि आज मनुज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

आज युगों बाद हो गई हूँ मगन में,
अपने प्रिय से प्रीत करती हूँ गगन से।
क्योंकि आज मनुज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

आज न वाहनों का क्रूर क्रंदन है,
न कोई मेरा कर रहा मर्दन है।
क्योंकि आज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

आज मेरी गोद में नव पल्लवित आस है,
जिसमें पुष्प-सी सुगंध-सुवास है।
क्योंकि आज तू कैद हो गया है मेरी मुट्ठी में।।

आज फूल-सा भार हो गया है मेरा,
जिसे उठा शेष भी नृत्य करे ता-ता थैया।
क्योंकि आज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

ऐ मनुज! तू समझ ले मेरा स्वरूप,
मैं हूँ दया-करुणा की प्रतिरूप,
मैं इसे यथार्थ करूंगी, यदि तू होगा मेरे अनुरूप।
क्योंकि आज तू कैद हो गया मेरी मुट्ठी में।।

मोः 9784580960

अभिनन्दन

जीवन की रक्षा करने वालों का,
करता हूँ मैं अभिनन्दन।
कठिन परीक्षा समय ले रहा,
आज आपके धीरज की।
लेकिन शपथ निभानी होगी,
भारतमाता के रज की।
साँसों के रखवालों का मैं,
करता हूँ दिल से वन्दन।
जीवन की रक्षा.....
प्राणों का संकट है लेकिन,
तुम कर्मठ, निर्भीक, निडर।
पर हित को हो गए समर्पित,
निज सुविधाओं को तज कर।
तुम पर है अभिमान हमें,
है गर्व भरा यह पुलकित मन।
जीवन की रक्षा.....
ऐसा लगता दीर्घकाल तक,
युद्ध तुम्हें लड़ना होगा।
भीषण इस विकराल आपदा,
में भी नित बढ़ना होगा।
भय है और संत्रास विकट है,
मानवता का है क्रन्दन।
जीवन की रक्षा.....
सेवा से निःस्वार्थ आपकी,
रहते लोग सुरक्षित हैं।
अथक, निरन्तर त्याग, समर्पण,
से मानवता रक्षित है।
आज आपके शुभ ललाट पर,
अर्पित है कुमकुम चन्दन।
जीवन की रक्षा करने वालों का,
करता हूँ अभिनन्दन।।

मो. 9929602057

सहारा

पैरों को ठोस धरती का आधार
छूने को आसमां चाहिए
छू लेंगे आस्माँ हम भी,
गर मिल जाए धरा का आधार
धरती से आस्माँ तक का सफर
पूरा करना हमें, मगर
पैर टिकाने को संतुलित धरा चाहिए
आगे बढ़ने को राहें, बहुत हैं मगर
सक्षम राह चुनने को, समर्थ सहारा चाहिए
राह हम चुनेंगे, मगर
आगे बढ़ने हेतु छूने को किनारा चाहिए
पथ में कांटे लाख सही
पथ में मात्र उजियारा चाहिए
रोशन कर देंगे, इस जग को
मार्ग दर्शन का सहारा चाहिए
सक्षम, समर्थ, कटिबद्ध हैं हम
ऊंचा है महात्वाकांक्षा का स्तर
छू लेंगे आस्माँ को मगर
पैर टिकाने को ठोस, संतुलित धरा चाहिए।।

मो. 9828186706

हम अलख जगाने आए हैं..

हम शिक्षक हैं..... हम शिक्षक हैं, ले मेधशिखा
हम अलख जगाने आए हैं।
हम अलख जगाने आए हैं....।

सनातन निर्झरी से, आए हैं मरु में स्वर्ग बसाने,
भर अंजुरी ज्ञान लेकर हम गंगा पान तुम्हें कराने आए हैं।
कौन यहाँ पिपासु है कौन यहाँ जिज्ञासु है
हर बाल समस्या का हल हम तुम्हें बतलाने आए हैं,
हम शिक्षक हैं..... हम शिक्षक हैं
हम शिक्षक हैं ले मेधशिखा हम अलख जगाने आए हैं।।

हमारे शिक्षक रमते हममें, तुममें रमाने आए हैं...
जीवन पथ के राही अथक हम तुम्हें चलाने आए हैं।
राह बना कर, राह दिखा कर, निशदिन स्वप्न नए संजोकर
अंधियारों की नगरी में तुम्हें दीप बनाने आए हैं।
हम शिक्षक हैं..... हम शिक्षक हैं
हम शिक्षक हैं ले मेधशिखा हम अलख जगाने आए हैं

अकूत क्षमता,अगणित ऊर्जा हम तुम में जगाने आए हैं...
बन रामकृष्ण हम तुम्हें स्वामी विवेकानंद बनाने आए हैं।
आओ शरण हमारी और जो पाओ कर लो तुम ग्रहण
तुम्हारे ही बूते जड़ संसार को हम हिलाने आए हैं
हम शिक्षक हैं..... हम शिक्षक हैं
हम शिक्षक हैं ले मेधशिखा हम अलख जगाने आए हैं

झुकते पर्वत, थमते दरिया ये खेल दिखाने आए हैं..
बुद्धि और विद्या से तुम्हें सागर पार कराने आए हैं।
अदम्य साहस, बल अपार सुषुम तुम में है अब कितना
श्यामपट्ट में भर उजियारे का बोध कराने आए हैं
हम शिक्षक हैं..... हम शिक्षक हैं
हम शिक्षक हैं ले मेधशिखा हम अलख जगाने आए हैं
अलख जगाने आए हैं, हम अलख जगाने आए हैं
हम अलख जगाने आए हैं।

मो. 9660949868

हम शिक्षक हैं

●संगीता जोया

हम शिक्षक है,
यही हमारी पहचान है।

लौ अलौकिक है कर्म प्रगाढ़ है
चल रहा युगों से यह वो कर्त्तव्य मार्ग है।
पथ दिखाना आगे बढ़ाना
मुश्किलों में संभालना,
सामना करना शत्रुओं से
और राष्ट्र के काम आना।
यही हमारी शान है,
हम शिक्षक हैं।
यही हमारी पहचान है।

अंगुली पकड़कर चलना माँ सिखती है,
पर किसी के हक के लिए न्याय दिलाना
वो एक गुरु सिखाता है।
गुरु तेरे रूप अनेक हम शिक्षक हैं।
यही हमारी पहचान है।

मोम सा हृदय कठोरता है हाथों में
कद-काठी से भले ही नहीं,
वचनों से बलशाली हैं हम
जोश पैदा करने का जुनून है।
जीतना सिखाते हैं, पर पथ पर मुड़ना नहीं,
हौसला जगाते हैं, नहीं बनाते कायर हम
यही हमारी पहचान है, हम शिक्षक हैं।
यही हमारी पहचान है।

व्याख्याता, जीव विज्ञान
रा.उ.मा. विद्यालय,
छापोली, झुन्झुनूं

आओ स्कूल चलें

●सुभाषचन्द्र

आविर्भाव संग संस्कार लिया बचपन खूब मस्ती से जीया,
ना कोई आण्ट ना कोई डाण्ट, मम्मी पापा ने खूब स्नेह दिया।।
अब तो आयी बारी, जाने की निज लोक में,
अनसुने से, अजीब से, अनजाने खौफ में।।
मन नहीं माने, छोड़ूँ तर्जनी निज ममता की,
खूब रोया, नाटक किया, पल रुह नहीं पिघली ममता की।।
सहसा नजर आयी तुल्य-जानकी मेरी गुरु मैया,
मुस्कान बिखेर आकर समीप पुकारा,
आओ! मेरे प्यारे-से दुलारे-से खिवैया।।
कैसे बताऊँ? उस अजनबी अपनत्व को कि
मेरी नैया अभी मझधार खड़ी।।
कुछ जाने से कुछ पहचाने से दो-चार नवांकुर आए,
देखकर मुझको आपस में वो फुसफुसाए।।
चलो भैया! क्रीड़ानन्द लें खूब विनोद करें,
कुछ तो पास आए, कुछ लगे सहसा डरें।।
चल पड़ा सिसकता मैं, देखते पीछे अपनी महतारी को,
फिर तो रुका नहीं, फिर झुका नहीं, खूब खेला जीवन की पारी को।।
ज्ञान हुआ, अवबोध हुआ समझ आयी जवानी की,
कक्षा पूरी हो गयी पर इतिश्री नहीं हुई इस कहानी की।।
निकला जब शाला के मुख-मन्दिर से तो आगे दो राह दिखे,
किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया अनुभव मेरा
और सीखे हुए गुर लगने लगे फीके-फीके।।
काश! गुरुवर मेरे, देते मुझको कौशल जीवन संवर्धन का,
तो अद्‌भुत होता दृश्य मेरे अभिवृत्ति और अभिवर्धन का।।
ना ही कक्षा, ना इमारत, ना रटण्त सिद्धांत चाहिए,
मुझको तो बस मेरी अभिलाषा का प्रशान्त चाहिए।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बम्बू, (चूरू)
मो: 9784873840

त्याग

●कमल सिंह भाटी

सदा ही रखा वश में त्याग,
धैर्य, संयम और अनुराग।
प्रण हेतु था छोड़ दिया,
माता-पिता, सुत और राज।।

अतीत गाथाएँ हैं गवाह,
दशरथ, भीष्म, श्रीराम की।
अस्थियों के भी दान वाले,
ऋषि दधीचि महान की।।

पहिए समय के थाम लिए थे,
है बला क्या महामारी की।
रावण का भी दमन किया था,
लाज बचाई पांचाली की।।

मर्यादा का संदेश जो,
पुरुषोत्तम राम से पाया था।
प्रताप सरीखे वीर ने,
विकट काल अपनाया था।।

हम संतान उन्हीं की भूल चुके,
थे कौन हमारे अग्रज महान।
दे बलिदान निज प्राणों का,
रखी भारत माँ की शान।।

हम लाचार क्यों आज हो गए,
दिवास्वप्न में जो खो गए।
पश्चिम के नकल जाल में,
बीज विष के बो गए।।

हम न रहे त्याग आज,
विचरण, खान-पान, अहं।
होंगे बड़े विकट परिणाम,
धरा न रहेगी और ना ही हम।।

आओ पुनः हुंकार भरे,
संयम धैर्य अनुशासन की।
महामारी को कुचल डालेंगे,
बात समझकर शासन की।।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ओला, जैसलमेर
मो: 9982032359

गुरु की महिमा

●प्रेम चन्द दाधीच

गुरु शिष्य का जीवन है, संबल है, शक्ति है।
गुरु शिष्य की सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।
गुरु शिष्य की अंगुली पकड़ने का सहारा है।
गुरु कभी कुछ खट्टा तो कभी खारा है।
गुरु पालन है, पोषण है, विद्यालय का अनुशासन है।
गुरु धौंस से जलने वाला प्रेम का प्रशासन है।
गुरु कलम है, दवात है, किताब है।
गुरु शिष्य के जीवन का मोहताज है।
गुरु अप्रदर्शित अनन्त प्यार है।
गुरु है तो शिष्यों को इंतजार है।
गुरु से ही शिष्यों के ढेर सारे सपने हैं।
गुरु है तो विद्यालय के सब खिलौने अपने हैं।
गुरु से विद्यालय में प्रतिपल राम है।
गुरु से ही शिष्य का मान और दुलार है।
गुरु परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है।
गुरु ब्रह्मचर्य आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है।
गुरु अपनी इच्छाओं का हनन और विद्यालय की पूर्ति है।
गुरु शिष्यों को दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है।
गुरु शिष्य के जीवन को जीवन का दान है।
गुरु दुनिया दिखाने का अहसान है।
गुरु शिष्य की सुरक्षा है, सिर पर हाथ है।
गुरु नहीं तो शिष्य का बचपन अनाथ है।
तो गुरु से बड़ा तुम अपना नाम करो
गुरु का अपमान नहीं, उन पर अभिमान करो
क्योंकि गुरु की कमी कोई नहीं पाट सकता
और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता
विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है
गुरु की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्राएँ व्यर्थ है
यदि शिष्य के होते हुए गुरु असमर्थ है।

प्रधानाध्यापक
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़, ब्लॉक खानपुर,
झालावाड़ (राज.)
मो:8949319747

नया विश्व निर्माण

●सत्यपाल अवस्थी

नया विश्व निर्माण करने से पहले पुराने जगत को जगाना पड़ेगा।
पुरातन जगत को जगाने से पहले नए को सहारा लगाना पड़ेगा।।
वहाँ भावना थी यहाँ भावना है
वहाँ चाहना थी यहाँ चाहना है
वहाँ कामना थी यहाँ कामना है
वहाँ वेद थे और यहाँ वेदना है
इन वेदनाओं से बचने से पहले शरण हमको वेदों की जाना पड़ेगा
नया विश्व निर्माण.....

जो शिक्षा युवक को निरंकुश बनाती
व उनको ही वो नर्तकी सा नचाती
ना श्रद्धा की शक्ति ना भक्ति की शक्ति
जो उपहास ही पूर्वजों का कराती
जिन्हें राष्ट्र को आज सौपेंगे त्राता बने आज भारत के भावी विधाता
इन युवकों का अभिषेक करने से पहले नियम और संयम सिखाना पडेगा
नया विश्व निर्माण.....

कोई शैव वैष्णव कोई सिक्ख जैनी
कोई बुद्धवादी सिया और सुन्नी
कोई विप्र क्षत्रिय कोई वेद ज्ञानी
कोई शूद्र संज्ञा कोई है अनामी
ये जाति व्यवस्था इन्हीं ने बनाई व मतलब परस्ती इन्ही ने सिखाई
ये मतलब परस्ती मिटाने से पहले दलों का ये दल-दल सुखाना पड़ेगा
नया विश्व निर्माण.....

इरादे हैं धरती गगन से मिला दें
सागर की छाती में केशर उगा दें
महाज्वाल से धार जल की बहा दें
जगत्पति की सत्ता जगत से मिटा दें
है जिसकी ये सत्ता बिना एक पत्ता हिला है हिलेगा ना संभव हिला दें
ब्रह्माण्ड का पट पलटने से पहले ये ईश्वर अवस्थी मनाना पड़ेगा
नया विश्व निर्माण.....

व्याख्याता संस्कृत
ग्राम पो.-खोहरा, मलावली,
लक्ष्मणगढ़, अलवर
मो. 9950385063

ग्रीष्म ऋतु

●चन्द्र भान सम्मौरिया

(1)
ग्रीष्म ऋतु का हुआ आगमन,
गर्मी फैली चारों ओर;
कुल्फी, लस्सी, शरबत का आचमन,
करने लग गए सब नित भोर।
आम, मौसमी, नारंगी और अन्नानास का रस भाता;
छाछ, राबड़ी मीठे सत्तू, रस-गन्ना मन सरसाता।
तरबूजे का स्वाद निराला, मीठी ककड़ी भाती है;
स्वादभरा खरबूजा आला, भीनी खुशबू आती है।
कोयल, पपीहे, तोते बोले,
वन उपवन में अलस भोर;
ग्रीष्म ऋतु का हुआ आगमन,
गर्मी फैली चारों ओर।।

(2)
नीबू की शिकंजी ठण्डी-ठण्डी, गर्मी से राहत देती;
खट्टी-मीटी दही की लस्सी, तृप्त-तृप्त सा कर देती।
आचार, मुरब्बा, गुलकंद जैली, सबका स्वाद निराला है;
गर्मी में सब राहत देते, यदि मिल जाए भर प्याला है।
शीत मीठे शहतूत और खिरनी, गुणकारी जामुन का जोर;
ग्रीष्म ऋतु का हुआ आगमन, गर्मी फैली चारों ओर।।

(3)
दिन हुए बड़े रातें छोटी, उत्तरायण्य सूर्य हुआ;
तपता सूरज हुई तेज धूप, तापक्रम अति उच्च हुआ।
भीषण गर्मी के प्रकोप से, परेशान हैं सब बेहाल;
कुली, कृषक और कामगार, श्रम से थककर हुए निढ़ाल।
तीतर, बटेर, खंजन, कपोत और चिड़ियों के कलरव का शोर;
ग्रीष्म ऋतु का हुआ आगमन, गर्मी फैली चारों ओर।।

(4)
ऋतुओं का अन्दाज निराला, है गर्मी की भी अपनी शान;
सागर के खारे पानी को, मृदु-वाष्प बना करती रसपान।
यही वाष्प बन बादल बरसे, हो धरा तृप्त पाकर अमृत-मुदु जल;
वर्षा जल से भरे नदी नाले, समुद्र, प्रपात और झरने बहते कल-कल।
गर्मी सबब बने वर्षा का, प्रकृति का जादू चारों ओर
ग्रीष्म ऋतु का हुआ आगमन, गर्मी फैली चारों ओर।।

प्रधानाचार्य, से.नि.
गायत्री विला, 55-साकेत नगर,
रामगंज थाने के पीछे, अजमेर (राज.)-305003
मो. 9928235765

शिक्षक मैं कहलाता हूँ

●शंकर दान

अपना तन मन धन सब देकर
हरदम मैं तैयार हूँ रहता,
राष्ट्रीय आपदा अगर है आती
हर तकलीफ में हंसकर सहता।
चाणक्य सदृश्य ओज हमारा
ज्ञानवाणी बरसाता हूँ,
उज्ज्वलता भारत में लाएँ,
शिक्षक मैं कहलाता हूँ।।
है शिक्षक की गरिमा इसमें
अपने ज्ञान को बांटे सब में,
भारत का निर्माण करें हम
फैलाएँ उजियारा जग में।
माता-पिता सखा सभी के,
गुणों को मैं अपनाता हूँ,
उज्ज्वलता भारत में लाएँ, शिक्षक मैं.....
जैसा काम हमें देते हैं
उसको सफल बनाते हैं
कोरोना की महामारी में
कर्म ही सेवा बताते हैं
क्षुधा किसी की देख हृदय में
करुणा दृष्टि दिखाता है
उज्ज्वलता भारत में लाएँ, शिक्षक मैं.....
मैं वशिष्ठ का हूँ वंशज
विश्वामित्र तुलसी भी हममें
मैं कलाम हूँ मैं ही कृष्णा
वीणापाणि की वाणी हममें
हम कहते हम जान भी दे दें
भारत जब भी बुलाता है
उज्ज्वलता भारत में लाएँ, शिक्षक मैं.....
लानत हैं उन लोगों पर
जो गुरु को आँख दिखाता है
चाणक्य का जो करे निरादर
तो नाश पल में हो जाता है
जिसको विद्याधन गुरु दे दें
वह चन्द्रगुप्त बन जाता है
उज्ज्वलता भारत में लाएँ, शिक्षक मैं.....

प्राध्यापक हिन्दी
रा.उ.मा.वि. मनणा बस्ती मोड़ी, जोशियान,
लुणी, जोधपुर, राजस्थान
मो. 8764345001

वक्त

●गिरधारी लाल

वक्त...लहरों को साहिल दिखाता है अक्सर
वक्त...अपना रंग बदलता है अक्सर
वक्त...हर किसी का गरुर तोड़ता है अक्सर
वक्त...शंहशाह को मजबूत करता है अक्सर
कालकोठरी में बैठा जीवन के महासृजन को निहारता है अक्सर
वक्त से न उलझों ए मुसाफिरों,

क्योंकि यह बड़ों बड़ों को धूल में मिलाता है वक्त
इंसान की तकदीर और तासीर बदलता है वक्त
इंसान को तकरार और तहजीब सिखाता है वक्त
वक्त के नासमझों के साथ बेदर्दी से पेश आता है वक्त
बड़े दरख्तों को गिराकर नए अंकुर निकालता है वक्त
वैशाखियों के सहारे चलने वालों को सिंकदर और
सिकंदर को वैशाखियों के सहारे चलना सिखाता है वक्त
वक्त से ना उलझों ए मुसाफिरों

क्योंकि जमीन को आसमां और आसमां को जमीन पर लाता है वक्त
अनमोल लम्हों को निगल जाता है वक्त
बेइंतहा पीड़ा और दर्द दे जाता है वक्त
हर एक की नई परिभाषा गढ़ता है वक्त
गलतियों की कीमत और एहसानों का हिसाब मांगता है वक्त
आँसुओं के सैलाब भी लाता है वक्त
तो दुःख का दरिया भी सुखाता है वक्त
धन-दौलत, शानो-शौकत को बख्शता नहीं है वक्त
सत्कर्म और सद्विचार से ही मात खाता है वक्त
अपने अच्छे वक्त पर ना इठला और बुरे वक्त पर न पछता ए मुसाफिर
क्योंकि सब हिसाब बराबर करता है वक्त
सबका हिसाब बराबर करता है वक्त।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. कोटड़ा, जालोर-343041
मो. 7023885034

कर्त्तव्य पथ

●सोहन लाल कुमावत

कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा।
जब तक है जीवन, अपनी सुगंध से पथ को महकाता चलूँगा।।

हूँ माली बगीचे का
तैयार कर मिट्टी ऐसी, पथ की मिट्टी जोतता रहूँगा।
उगेंगे नन्हें पौधे मिट्टी में, वृक्ष उन्हें बनाता चलूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा.....

हूँ सूर्य शिक्षा मंदिर का
अपने तेज कोष से, पथ को रोशन करता रहूँगा।
मिलेंगे अनजान नन्हें राही, मंजिल तक उन्हें पहुँचाता रहूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा.....

हूँ चन्द्रमा अंधकार का
अपनी रोशन किरणों से, अँधेरे पथ को जगमगाता रहूँगा।
मिलेंगे कई व्याकुल अधीर राही,
शीतल किरणों से धीर, उन्हें बनाता चलूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा....

हूँ मल्लाह सागर का
अपने कौशल से, फंसे हैं सागर में, जा पार उन्हें कराता रहूँगा।
सागर रूपी तूफानों में, नाविक बन किनारे उन्हें लगाता चलूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा....

हूँ बाजीगर कला का
नन्हें परिंदों को, जो छू सकें बुलदिंयाँ आसमां की।
खोल पंख उनके, बाज आसमां का उन्हें बनाता चलूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा....

हूँ हवा का मंद झौका
अपनी खुशबू से जिधर गुजरूँगा, सुगन्धित पथ को करता रहूँगा।
मिलेंगे कई रास्तें सफर में, अपनी खुशबू से जीवन को महकाता चलूँगा।।
कर्त्तव्य पथ का राही हूँ, सदा पथ पर चलता रहूँगा.....
जब तक है जीवन, अपनी सुगंध से पथ को महकाता चलूँगा।।

व्याख्यात, राजनीति विज्ञान
रा.उ.मा.वि. नारायण खेड़ा,
रायपुर (भीलवाड़ा)-311803
मो. 8058330187

मैं शिक्षक, मेरे अच्छे बच्चे

●लक्ष्मण राम सोलंकी

मैं शिक्षक, मेरे अच्छे बच्चे,
छोड़ माँ का आँचल, आ जाते हैं।
कुछ सिसकी, कुछ लिए मुस्कान,
मेरे मन को भा जाते हैं।।
देखे मुझको अपलक जैसे,
मैं उनके जीवन की आशा हूँ।
तुतलाते, मुस्काते, घबराते,
सबकी, मैं ही प्रथम भाषा हूँ।।
घर आँगन छोड़, शाला जो आए,
मैं ही उनका प्रतिपालक बन जाऊँ।
जब भी उनको शिक्षण करवाऊ,
मैं शिक्षक संग बालक बन जाऊँ।।
उनकी भाषा में ही उनको,
मेरी भाषा तक लाना है।
उनके मन मन्दिर को जानूँ,
फिर उनके संग-संग जाना है।।
वो मुझको, मैं उनको समझूँ,
वर्ण, अक्षर, शब्द समझाना हैं।
जब तक वो ना पहुँचे मुझ तक,
तब तक उनको समझाना है।।
लाड़-प्यार, शिक्षा, अनुशासन,
मुझे सब देकर चलना है।
दीप्तिमान हो या हो सर्जक,
मुझे सबको लेकर चलना है।।
जात-पात और ऊँच-नीच का,
मुझ पर कोई प्रभाव ना हो।
मैं ही माता, पिता मैं ही हूँ,
स्नेह भाव का अभाव ना हो।।
नवजीवन को आगे बढ़ने का,
मुझे उत्तम रास्ता देना होगा।
अटके-भटके या हो विचलित,
जीवन कठिनाई का वास्ता देना होगा।।
जहाँ मैं, वहाँ से वो आगे हो,
तब ही मैं शिक्षक कहलाऊँ।
सभ्य, सरल, सुबुद्धि, सुसंस्कृत हो,
तब ही मैं शिक्षक कहलाऊँ।।
मैं हूँ शिक्षक, ये कहने का,
मुझको तब ही अधिकार मिले।
मैं कर दूँ जीवन प्रकाशित उनका
और मुझको उनका प्यार मिले।।

व.अ. (अंग्रेजी) रा.मा. विद्यालय,
हिंगोली, भोपालगढ़, जोधपुर
मो. 7597800929

मनुज से....

●वेद प्रकाश कुमावत

तुम मनुज हो, मार्ग प्रशस्त करो अपना।
श्रम को साधो, कुछ काम-धाम करो।
मंजिल तक अपनी, न तुम विश्राम करो।।
तुम धैर्य धारण करो,
निज पतन के न कारण बनो।
सीखो श्रम के तप में तपना।
तुम मनुज हो, मार्ग प्रशस्त करो अपना।।
करो अपने, जीवन को सार्थक।
सुअवसर कहीं चला न जाए निरर्थक।।
भुला देते हैं लोग उन्हें, जो होते स्वार्थपरक।
अमर होते वही, जो करते प्राणोत्सर्ग।।
जी कर न मरो, मरकर जियो।
न समझो जग को निरा पद सपना।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।।
नित रोते जो रोना भाग्य का,
मेहनत से जिन्हें सरोकार नहीं।
वो मनुज भी मनुज क्या,
साधना पर जिसे एतबार नहीं।।
स्मरण रख हे महा मनुज,
कर्मघृत से है सम्भव, सुफलदीप का जलना।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।
बन सके न आदर्श जन के,
क्यों धरा पर जन्म लिया।
ढोर-सम, जड़-जीवन जीकर,
क्यों धरा को भार किया।।
उठो, जागो, जीवन-पथ पर,
करो पद-चिह्न अंकित अपना।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।।
वह कौनसा पत्थर, जिसे तुम तोड़ सकते नहीं।
वह धारा कौनसी, जिसका प्रवाह मोड़ सकते नहीं।।
मानव शक्ति जब, तूफानों लहरों से टकराती है।
नियति की लकीर, पल भर में बदल जाती है।।
तुम भी धरावतरित करो, स्व-स्वप्निल कल्पना।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।।
जो भाग्य के बल जीते हैं,
पुरुषार्थ-कर्म से रीते हैं।
सिंह को मरना स्वीकार मगर,
दूसरों के निवाले पर अधिकार नहीं।
पुरुषार्थ स्वयं वो करता है,
अपना उदर तभी वो भरता है,
हम मिट जाएं बेशक,
जिन्दा हमारा स्वाभिमान यही।
जन हृदय सम्राट बनें हम,
जन-जन में सम्मान रहे।।
बाधाएँ हो मगर, ऐसी जीवन बना अपना।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।।
तुम मनुज हो मार्ग प्रशस्त करो अपना।।

अति. मुख्य ब्लॉक
शिक्षा अधिकारी-द्वितीय, लूणकरनसर, बीकानेर
मो. 9829485108

है प्रकृति! तुझे नमन

●गोपाल कृष्ण शर्मा

दिन की डोर खिंची,
शाम का वितान छा गया।
निशा-रंगमंच पे,
सुहाना चाँद आ गया।।

देख चाँदनी की चाल,
तारे दे रहे हैं ताल।
सज गई है ये धरा,
पहन के ओस मोतियों की माल।।
भागता मनुज है मौन,
मौन नील आसमान।
सुरसरि उतावली सी,
गा रही पिया का गान।।

बदला उषा ने दृश्य,
लीनस्वप्न रवि को जान।
छोड़ता उषा पे मुग्ध,
अरुण रश्मियों के बाण।।
उदित हुआ प्रकाश पुंज,
मुस्कुराए कमल कुंज।
अलि पराग की कली पे,
कर रहा सुरों का गुंज।।

मृग, मत्स्य, खग-समूह,
शैल, वारि, वन-चमन।
साधुवाद-साधुवाद,
हे प्रकृति! तुझे नमन।।

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा.वि. डोली, जोधपुर (राज.)-342008
मो. 9352835051

छंद

● आभा मेहता 'उर्मिल'

1. हरिगीतिका छंद

अनुभव बड़ा या ज्ञान ऊँचा, ये बहस चिरकाल से।
दोनों बराबर मूल्य रखते, मेल कर निज ताल से।
संसार अनुभव यह सिखाता, भूत से सीखो गुनो।
पढ़-पढ़ किताबी ज्ञान को जो, श्रेष्ठ है उसको चुनो।
जो है अधूरा ज्ञान तो अनुभव बनाता पूर्ण है।
यह ज्ञान का साथी सदा से, मेल से सम्पूर्ण है।
अनुभव मिलाता शब्द को जब, ज्ञान होता अर्थ का।
अभिमान लाता ज्ञान कोरा, तर्क करता व्यर्थ का।

2. दोधक छंद

चोट लगे तो चुप रह जाना। भेद जिया का तुम न बताना।।
लेकर बातें नमक लगाते। घाव कुरेदें अरु न लजाते।।
जो न तुम्हारे अरु न हमारे। वो भटके हैं निपट बिचारे।।
हास करेंगे परिजन सारे। वो बिना पेंदे, पुछलक तारे।।
आस रखोगे तब दुख देंगे। दूर रखोगे जलन करेंगे।।
पास न कोई मरहम होगा। ये दुख तो है सब जन भोगा।।
ये हरजाई कटुक भगाओ। दूर रहो और निकट न लाओ।।
पास रहे तो हरदम चिंता। कैद करो ये दरद परिंदा।।

3. हरिगीतिका छंद

कर्त्तव्य पथ चलना कठिन है, साथ कब मिलता भला।
आलोचना का ज्वार उमड़े, सत्य पथ लगता टला।
जीते सदा निज लगन में जो, वंदना से दूर है
सम्मान समुचित हो न हो पर, साधना में चूर हैं।
व्यर्थ वाद-विवाद करना, भी जिन्हें आता नहीं।
उल्लंघना संवाद सीमा, भी जिन्हें भाता नहीं।
धन मान पद गौरव तभी तो, रह न पाते दूर हैं।
आते स्वयं ही पास उनके, कर्म से मशहूर हैं।

4. पञ्चचामर छंद

निशान है अचूक वीर तेज पुंज धीर हैं।
कभी झुके न शीश मात भारती प्रवीर हैं।
हिमायती न युद्ध के हमें न युद्ध चाहिए।
परन्तु वार हो समूल नाश क्रुद्ध चाहिए।।
भुजा उठा हुँकार दो सभी सपूत साथ हैं।
पुकारती वसुंधरा धरे हितार्थ माथ हैं।
न जात-पात धर्म-क्षेत्र का प्रपंच ही अड़े।
लिखें नवीन पृष्ठ आज एक पंक्ति हों खड़े।।
न भूख-प्यास नींद कष्ट का विचार ही धरें।
न पूर्ण लक्ष्य हो डटे रहें न पीठ ही करें।।
निभाय फर्ज़ को नितांत स्वार्थहीन भाव से।
प्रशंसनीय काज पूर्ण होता है प्रभाव से।

प्रधानाचार्या (सेवानिवृत्त)
128, आदर्श नगर लिंक रोड,
गिफ्ट हाउस के सामने, डूँगरपुर
मोः 8764287954

बेटी देश की शान

● महीपाल सिंह 'खरडिया'

बेटी हूँ मैं बेटी हूँ, बेटी हूँ कोई ओर नहीं,
बेटी हूँ मैं बेटी हूँ, बेटी हूँ कमजोर नहीं।
पढ-लिखकर जीवन में, रोशन कर दूँ जग को,
फूल बिछा दूँ पलकों के, जग-मग कर दूँ जग को।
ज्योति से ज्योति जला, सबको मार्ग दिखलाती हूँ,
राह में पत्थर आए तो, मैं रत्न उन्हें बनाती हूँ।
रात को न रात कहूँ, रात को भी दिन बनाती हूँ,
कर्त्तव्य-पथ गमन कर, जीवन उन्नत बनाती हूँ।
दो परिवार पढ़ाकर मैं, जीवन सफल बनाती हूँ,
तप-साधना-संयम से, लक्ष्य तक बढ़ जाती हूँ।
न हारती न हारने देती, ऐसे कदम बढ़ाती हूँ,
स्वाभिमान का जीवन जीती, फिर भी झुक जाती हूँ।
सुख-दुख में समान रहती, मंजिल पाकर न इतराती,
सबका पेट भरकर मैं, भूखी भी रह जाती।
घर की रोशन दीपक हूँ, करती हूँ मैं उजियारा,
जब मैं ठान लेती हूँ, तो मुट्ठी में है लक्ष्य सारा।
बेटी हूँ कोई ओर नहीं, पूरे करूँगी सबके अरमान,
नादान हूँ कमजोर नहीं, नाप लूँगी महि आसमान,
गर्भ में हूँ पर जोर नहीं, नहीं हूँ मैं अनजान,
लडकी होना पाप नहीं, समझ ले ऐ इंसान।
शान्ति बन दिखलाऊँगी मैं, करूँगी जीवन कुर्बान,
मैं किसी से कम नहीं, बनाऊँगी भारत महान।
रक्षक रहो, भक्षक नहीं, लड़का-लड़की दोनों समान,
मैं न रही तो तुम न बचोगे, या इसका नहीं है ध्यान।

हिन्दी व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. जाखोद (झुंझुनूं)
मो. 8875424450

शिक्षक : अज्ञानहर्ता

●तारकेश्वरी

ज्ञान का दीपक लिए वे, राह में चलते सतत हैं।
आसमां जैसे समेटे, गोद में सारे सितारे।
त्यों नज़र में शिक्षकों के, एक सम है बाल सारे।
दीप्त करने को जगत को, मौन रहकर कर्मरत हैं।
शिष्य के वे पथ प्रदर्शक, देश के निर्माण कर्त्ता।
हर बुराई से बचाते, हैं सदा अज्ञान हर्ता।
चल रहे पथ पर निरन्तर, वे न हो पाते विरत हैं।
हर सके मस्तिष्क का तम, लक्ष्य जीवन का यही है।
देश की खातिर हमेशा, दीप बन जाना सही है।
सामने आकाश, चन्दा, ये सितारे आज नत हैं।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अणतपुरा,
साम्भर लेक, जयपुर (राज.)
मोः 9414455223

नवीन

●मधु उपाध्याय

हर पल देता ज्ञान नवीन,
हर दिन की है भोर नवीन।
हर क्षण है, अहसास नया, हर
जीवन का गीत नवीन।।
गाता रहा संगीत कभी मन,
हर्ष प्रेम से भरा नवीन।
कभी डूब शोक सागर में,
स्वर साँसों के बजे नवीन।।
मिला किसी का साथ नवीन,
प्राप्त हुआ कुछ ज्ञान नवीन।
खिलते हैं टहनी के ऊपर,
आभा देते कुसुम नवीन।।
बिखरे हुए पड़े हैं मोती,
निर्मित माला हुई नवीन।
अश्रुपूर्ण पलकों के ऊपर,
सपने सजते सदा नवीन।।
संघर्षो का करो सामना,
खुल जाएंगे द्वार नवीन।
मंजिल पर अपनी जाने को,
चुन लो फिर से राह नवीन।।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., ताखा, कुम्हेर, भरतपुर
मो. 9782562021

सीखो

●रेखा कुमारी ओझा

दूसरों की खुशियों से खुश होना सीखो।
अपनी कमियों को भी देखना सीखो।
मेहनत करते हुए खुद पर
यकीन करना सीखो।
लक्ष्य तय कर अपनी मंजिल
तक पहुँचना सीखो।
अहंकार करो पर उसका
प्रदर्शन न करना सीखो।
योग्यता रखो और उसका
प्रदर्शन भी करना सीखो।
चिन्ता छोड़कर चिन्तन करना सीखो।
श्रवण, मनन और निरन्तर
ध्यान करना सीखो।
टूट कर बिखरना नहीं प्रत्युत
और भी निखरना सीखो।
ठोकर खाकर भी पुनः
शीघ्र सम्भलना सीखो।
जो बुरा करे आपका उसको
भी माफ करना सीखो।
अच्छाई से बुराई की जंग जीतना सीखो।
आप स्वयं के तारणहार बनना सीखो।
दूसरों पर निर्भरता छोड़कर
स्वयं प्रकाशित होना सीखो।
जीवन को आनन्द, मौज
और उत्सव बनाना सीखो।
हर इक पल को जी भर कर जीना सीखो।
निराशा में आशा का
दीपक जलाए रखना सीखो।
उम्मीद का दामन हमेशा रखना सीखो।
माता से संस्कार और
पिता से संघर्ष सीखो।
सब कुछ हारकर भी उनका
दिल जीतना सीखो।

रा.बा.मा.वि. रायला,
जिला-भीलवाड़ा
मो. 8890110124

मन दीपक

●राजकुमार बुनकर 'इन्द्रेश'

ऐ मेरे मन दीपक तू कहाँ रोशनी कर रहा
यहाँ तो पहले से ही
देख उजाला हो रहा है।

तेरी नहीं कद्र फिर तू क्यों यहाँ भटक रहा
यहाँ पहले ही घमंड का
देख चिराग जल रहा है।

ऐ मेरे मन दीपक
तू अब चल, चल वहाँ पर
जहाँ पर तेरी उनको जरूरत है।

ऐ मेरे मन दीपक तू ठहर वहाँ पर, जहाँ
तेरे अस्तित्व की पहचान है
तेरी उनको चाहत है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी,
कुशलगढ़, बाँसवाड़ा, राजस्थान
मोः 9001311561

माँ की ममता

●प्रिंस व्यास

माँ, जिसने दिखाया हमें संसार
बिना उसके हम होते लाचार।
वो करती है दुआ लिए हमारे
उसके बिना अधूरा जहाँ रे।
वो देती है ईश्वर का एहसास
जब भी रहती है हमारे पास।
कैसे चुकाएँगे तेरा उपकार
तू साथ हो तो जीवन साकार।
जब-जब लगी चोट मुझे
हुआ उसका गहरा घाव तुझे।
जब नेत्रों से मेरे अश्रु बहे
तू समझ गई बिना कुछ कहे।
नहीं है जग में कोई तुमसे प्यारा
तूने पूरा जीवन मुझपे वारा।
माँ, जिसने दिखाया हमें संसार
बिना उसके हम होते लाचार।

व्याख्याता (भौतिक विज्ञान)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
ब्यूसन मंडी, जोधपुर (राज.)-342304
मोः 9460105666

शिक्षा

●पवन कुमार माली

जीवन का आधार हैं शिक्षा
खुशहाली का भण्डार है शिक्षा
जीवन में नई ज्योति जगाती
सपने सारे पुरा कर दिखाती
हर राह आसान बनाती शिक्षा
नैतिक जीवन सिखाती शिक्षा
राह आसान नहीं है इसकी
धैर्य, कर्म पहचान है इसकी।
अनगढ़ों को गढ़ती है शिक्षा
पत्थर को मूर्त बनाती शिक्षा
सरस्वती का भण्डार है निराला
इसको पाकर बन मतवाला।
जीवन को सुदृढ़ बनाती शिक्षा
माँ की दुआ से पलती है शिक्षा
जीवन व्यर्थ नहीं बनाना
शिक्षा से देश को आगे बढ़ाना है।

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा.वि. कुण्डल सिवाना, बाड़मेर (राज.)
मोः 9509076497

शिक्षक

●बाबूखान शेख

शिक्षक तू मशाल बन,
सूरज-सा विशाल बन।
मिटे जगत से अंधियारा,
ऐसा कुछ कमाल बन।
दुनिया सदियों तक याद करें,
ऐसी एक मिसाल बन।
जिसमें भला हो सबका,
एक नायाब खयाल बन।
ठौर ना हो जहाँ नफरत का,
तू ऐसा रंग-ओ-गुलाल बन।
तन-मन से सब साथ चले,
कोई ऐसी मंथर चाल बन।
सबको मिले समान अवसर,
वास्ते इन्साफ के, ढाल बन।
जो करे अन्याय और अनाचार,
उनके लिए महाकाल बन।
जो सच की राह भूल जाए,
'शेख' उनके लिए सवाल बन।।

जिला शिक्षा अधिकारी, (सेवानिवृत्त)
गाँव/पोस्ट सिरोडी
वाया-अनादरा, जिला-सिरोही-307511
मो. 9602962146

तेरी महिमा का पार नहीं...

●रामकृष्ण शर्मा

किस किस गुण का मैं गान करूं,
तेरी महिमा का पार नहीं,
अंबर जितना विस्तार तेरा,
तेरी महिमा का पार नहीं।

सागर-सी तुझमें गहराई,
सूरज-सा तेज तुम्हारा है,
है चाँद-सी शीतलता तुझमें,
सब काम तुम्हीं से संभव है,
सब ज्ञान तुम्हीं से पाते हैं,
तू मिट्टी को सोना कर दे,
भटके को राह दिखाता है,
तेरी महिमा का पार नहीं।

भगवान से पहले तू ही है,
दुर्गुण से हमको दूर करे,
तू भवसागर से पार करे,
खुद के लिए नहीं जीता,
परहित के ही तू काज करे,
जलकर भी उजाला तू कर दे,
सारा जीवन अर्पण कर दे,
है राष्ट्र का तू ही निर्माता,
बालक के मन की नींव है तू,
गुरुवर बस तेरा सहारा है,
तेरी महिमा का पार नहीं।

प्राध्यापक
रा.उ.मा.वि. बरल द्वितीय,
अजमेर (राज.) 305624
मो. 9414372612

आज फिर से सावन आया है

●बस्तीराम जाट

तपती धरा की प्यास बुझाने को
अन्नदाता की आस जगाने को
ये पावन माटी महकाने को
आज फिर से सावन आया है।

हर तरफ हरियाली फैलाने को
रिमझिम फुहारें बरसाने को
मंद शीतल बयार बहाने को
आज फिर से सावन आया है।

सदाबहार नगमें सुनाने को
जीवन के तराने गाने को
अशान्त मन बहलाने को
आज फिर से सावन आया है।

कच्चे धागों की डोर बनाने को
दो दिलों का मेल कराने को
जीवन में मिठास बढ़ाने को
आज फिर से सावन आया है।

मिलन की प्यास बढ़ाने को
गौरी संग झूला झुलाने को
प्रेम का संगीत सुनाने को
आज फिर से सावन आया है।

कोमल कलियों पर प्यार लुटाने को
फूलों की मुस्कान लौटाने को
नई उमंग नया जोश भराने को
आज फिर से सावन आया है।

पंछियों का कलख गुंजाने को
नदियों का नाद लौटाने को
पर्वतों की पीर मिटाने को
आज फिर से सावन आया है।

धरती माँ का धैर्य बढ़ाने को
महादेव के चरण धुलाने को
इंद्रदेव की महत्ता बताने को
आज फिर से सावन आया है।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
ग्वालू (मूण्डवा), नागौर
मो. 9983202162

अब कोरोना का रोना क्यों

●डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा

तोड़ संतुलन अविरलक्रम का, अब खुद पर पछताना क्यों ?
प्रकृति को कर कुपित बहुत, अब कोरोना का रोना क्यों ?
प्रकृति की सुन्दर बगिया में, फूल हजारों महके थे।
सुरभित पवन स्वच्छ जलक्रन्दन, निर्झर बहते रहते थे।
शान्तधरा पर सौम्यरूप में, कलरव ध्वनियाँ होती थीं,
निर्मल जल की धाराएँ भी, अविरल बहती रहती थीं।।
पर इस अविरल क्रम को मानव ने आज है तोड़ा क्यों...।
प्रकृति को कर कुपित.....।।

स्वार्थ, अहं, लिप्सा की खातिर, मानव ने रुख मोड़ लिया।
अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु, प्रकृति मकरंद निचोड़ लिया।
बन लूटे, उपवन लूटे, जल को गंदा कर डाला।
वायुप्रदूषित करके छीनी, शान्तिश्वास की माला।।
कर दिया प्रदूषित बगिया को फिर चैनपूर्ण अब सोना क्यों.....।
प्रकृति को कर कुपित....।।

नदियों को रौंदा मानव ने, आकाशों को रौंदा है,
पुष्पवाटिका रौंदी इसने, खलिहानों को रौंदा है,
गिरि की शान्ति छीनी इसने क्रुद्ध किया सरिताओं को,
वृक्ष, वनों को रौंदा इसने कीन्हा क्षुब्ध हवाओं को।
ध्वनि, वायु, जल किया प्रदूषित निर्मल शान्ति छीनी है,
सौम्य प्रकृति की स्वाभाविकता, छिन्न-भिन्न कर दीन्ही है,
मत्स्यकाल की तरह प्रकृति, शुद्ध कर रही अपने को,
वातावरण को पुनः शुद्ध कर पावन कर रही अपने को।।
छीन के चैन प्रकृति का अब अपना चैन है खोना क्यों....।
प्रकृति को कर कुपित.....।।

सहायक परियोजना समन्वयक
समग्र शिक्षा, अभियान, भरतपुर (राज.)
मो. 9460013093

अभिशाप है

●दीपसिंह भाटी

उन्नति के उच्च शिखर पर, चर्चित हिन्द पदचाप है,
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।
एक पिता परमेश्वर अपना, एक ही धरती माता है।
ऊँच नीच का भेद अनुचित, निर्मल गहरा नाता है।
भारतवासी भाई-भाई, हम पुण्य कर्म प्रताप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।

सृजनहार ने सोच समझकर, मानव योनि बनाई है।
जांत-पांत और भेदभाव की, किसने आग लगाई है।
मत बांटो मजहब में मानव को, पृथ्वी पर यह पाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।

आहत किया आर्यावृत को, अंग्रेजों की आंधी ने।
काट बेड़ियाँ मुक्त कराया, गोरे जन से गाँधी ने।
नियम व्रत सत पर न्यौछावर, जपे अनेक जाप हैं।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।

सत्य अहिंसा का सन्मार्ग, बापू ने था बतलाया।
आजादी का नर अलबेला, भारत माता को भाया।
सुबक रही है आज समाधि, प्रचण्ड पसरता पाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।

आओ मिल संकल्प उठाए, सबको गले लगाना है।
बापू के सपनों का भारत, सुंदर रूप सजाना है।
'दीप' निवेदित देशप्रेमियों, उगते सूरज आप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।

प्राध्यापक हिन्दी
ग्रा.पो. सणाऊ, (चौहटन) बाड़मेर
मो. 9413307889

प्रेरक क्षणिकाएँ

●ललित देव शर्मा

(1)

संकट के सच्चे साथी हैं, विद्या विनय विवेक।
सुकृत साहस संयम से, सु-फल मिले अनेक।

(2)

कर्म करे बिन सुख नहीं, कर्म करे बिन चैन।
कर्म करे बिन कछु नहीं, कर्म करें दिन रैन।

(3)

मात-पिता गुरुदेव वृद्धजन, कर सबका सम्मान।
हाथ जोड़ सेवा करें, ये धरती के भगवान।

(4)

गुरु तराशे शिष्य को, पल-पल काढ़े खोट।
निखर जाएँ व्यक्तित्व जब, पड़े ज्ञान की चोट।

(5)

गुरु की महिमा बहुत है, बहुत मान सम्मान।
गुरु कृपा बिन ना मिले, जग में खास पहचान।

(6)

वन्दन अभिनन्दन करें, रखें गुरु का मान।
तन मन सब अर्पित करें, तज कर मन अभिमान।

(7)

बालरूप में विचर रहे, धरती पर भगवान।
इन सबका अधिकार है, शिक्षा पोषण ध्यान।

(8)

संकट सम्मुख देख कर, क्यों करता है रोष।
मन में धीरज धार ले, रख थोड़ा सन्तोष।

(9)

स्वच्छ रखे तन-मन सभी, स्वच्छ रखे परिवेश।
सब जन सदा सतर्क रहें, जीत जाएगा देश।

(10)

गाँव सर सरिता की धारा, स्वच्छ निर्झर व्योम प्यारा।
जीवन की निर्मल धारा हो, स्वच्छ हो ब्रह्माण्ड सारा।

(11)

सुख दुःख है जीवन के साथी, इनसे क्या घबराना।
हम भारत हैं, हमको आता, संकट से टकराना।

(12)

उत्साह बढ़े चित चेतन में, निर्मल रहे विचार।
मंगलमय हो काज हमारे, रहे सुखी संसार।

(13)

आस और विश्वास से, भरें प्रीत के रंग।
प्रेम और उत्साह से, जीते जीवन जंग।

(14)

ईश भजन कर बावले, सेवा कर चित धोय।
पर सेवा उपकार से, लोक सफल कर दोय।

(15)

ईश्वर अल्ला वाहेगुरु, ईसा और महावीर।
सच्चे मन से सुमरिएँ ये ही हरेंगे पीर।

(16)

बिना रूके जो सेवा करते, रखते सबका ध्यान।
ऐसे लोग बढ़ाते जग में, मानवता का मान।

(17)

मानवता के मन मन्दिर में, प्रेम के दीप जलाए।
सत्पुरुषों के आदर्शों को, अपनाएँ जय पाएँ।

(18)

जीवन के संग्राम में, तू हिम्मत मत हार।
मिल जाएँगी सफलता, खुल जाएँगे द्वार।

(19)

शब्द कम ज्यादा समझ, है विकास के मूल।
वचन सदा हो प्रेममय, समय रहे अनुकूल।

7, हिम्मत नगर,
पाली-306401
मो. 9829258218

निश्चय ही तुम्हारी जीत हो

●रेखा सुथार 'माधवप्रिया'

उठो मनुज
आगे बढ़ो,
अपने लक्ष्य का संधान करो।
शीतलता नहीं है गुण तुम्हारा,
ओजपूर्ण है कुल तुम्हारा।
साहस तुम्हारा मीत है,
तो निश्चित तुम्हारी जीत है।

कर्मपथ के तुम अनुरागी,
डटे रहो अपने मार्ग पर।
परिश्रम से यदि तुम्हें प्रीत है,
तो निश्चित तुम्हारी जीत है।

मत घबराओं तनिक बाधाओं से,
गिर कर ही उठना होता है।
यही संघर्ष की रीत है,
निश्चित तुम्हारी जीत है।

एक स्वप्न देखो....
फिर उसको साकार करो।
जिसमें नवजीवन का आरम्भ हो,
मुख पर विजयश्री का गीत हो,
निश्चय ही तुम्हारी जीत हो...
निश्चय ही तुम्हारी जीत हो।।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
8, श्रीगंगानगर (राज.)

हिन्दी और हिन्दुस्तान

●गौरव शर्मा

संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।
जन्म हुआ मानवता का
हाँ यही तो वह स्थान है
दी सीख जिन्होंने धर्म की हमको
तुलसी, कबीर संत महान हैं,
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

बिहारी, केशव, भूषण जैसे
कवियों ने हिन्दी अपनाई
हिन्दी का महत्त्व बहुत है
बात ये सब को समझाई
यही है कारण कि इन सबकी
विश्व में आज पहचान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

है भाषा ये जनमानस की जो
हृदय से सबको जोड़ती है
पढ़ा जाए इतिहास तो ये
सभ्यता की ओर मोड़ती है,
हर हिन्दुस्तानी के दिल में
इसके लिए सम्मान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

बात करें जो लिपि की तो
बात ही इसकी निराली है
जैसा लिखते वैसा बोलें
पुराना नाम इसी का पॉली है,
गौतम बुद्ध की रचना का भी
इसी भाषा में ज्ञान है।
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।

समेटे जज़्बात जो मन में रहती है,
वो बात हृदय की हिन्दी कहती है।
सहज, सरस, सरल प्रवाह संग,
उद्गारों की एक नदी बहती है।।

रा.उ.मा.वि. निभेरा
तह. रूपबास (भरतपुर)
मो. 8949455255

कामयाब

●प्रकाश कुमार खोवाल

वक्त वो आ गया है, जिसका तुझे इंतजार था
बन के दिखा सितारा, जिसके लिए बेकरार था

अब हो जाओ तैयार, सुबह का इंतजार है
रख यकीन अब तेरी, काबिलियत हथियार है

मायूस मत होना, हर वक्त ईश्वर का हाथ है
अब घबराना नहीं, दुआ हजारों साथ है

बस अब जा अपनी राह, मंजिल को इंतजार है
तेरा जुनून-हौसला, तेरा सबसे बड़ा हथियार है

आज तक माँ बाप ने तेरे, हर सपने को पूरा किया
उन्होंने अपने जीवन का, हर पल तुझे ही दिया

मौका है तेरे हाथ में, जाकर उनका कर्ज चुका
उड़ान भर आसमां की, ज्ञान से आसमां झुका

डाल दे जान जुनून, जीतकर तुझे आना है
अपने माँ-बाप के लिए, नया लक्ष्य लाना है

अब पीछे नहीं मुड़ना, अपनी मंजिल तुझे पाना है
जीवन सफल बनाना है तो कुछ कर तुझे दिखाना है,
'कामयाब' हो कर आना है सबको ये बताना है।

अध्यापक
पिता श्री घुड़ाराम खोवाल
जिला-सीकर (राज.)-332027
मो. 8003832015

शिक्षक समाज को संवारता है

●ब्रजपाल सिंह

शिक्षक समाज को संवारता है,
हर पल नव्य रूप निखारता हैं।
फूल बन ज्ञान की खुशबू बिखेरता,
सूरज बन अज्ञान तम को मिटाता है।
शिक्षक समाज को.....

दुनिया जब अज्ञान तम में खोई थी,
शिक्षक ने ज्ञान दीप से अलख जगाई थी।
मंजिल खो गई थी अशिक्षा के अंधकार में,
तब 'कृष्ण' आगे बढ़ने की राह दिखाता है।
शिक्षक समाज को.....

शिक्षा उमंग-भर, मन को करती पावन,
जैसे पतझड़ जीवन में हो बसंत का आगमन।
प्रस्फुटित हो उठते हैं नव्य विचार,
उज्ज्वल होता मन, ज्ञानवाणी चहकाता है।
शिक्षक समाज को.....

सड़क बन मंजिल तक पहुँचाएँ,
पैचिदा मुश्किलों को सरल बनाएँ।
बार-बार घिसकर ही,
हीरा अपना रूप निखारता है।
शिक्षक समाज को.....

जहाँ शिक्षक का सम्मान है वहाँ प्रभु का वास है,
इनका करता जो तिरस्कार, उसका सदा नाश है।
सिर पर हो हाथ गुरु का
सदा आसमां को छू जाता है।
शिक्षक समाज को.....

देश, समाजहित सारा जीवन किया बलिदान,
ऐसे प्रिय गुरु को बारम्बार हो प्रणाम।
उम्र भर सपनों के भारत को,
मन में सदा संजोता है।
शिक्षक समाज को.....

हिन्दी (व्याख्याता)
रा.उ.मा.वि. माल की टूस ब्लॉक,
भीण्डर, उदयपुर (राज.)

शिक्षक को प्रणाम

●घींसाराम धेतरवाल 'मानव'

शिक्षक तरणि है, तट है, तारक है।
शिक्षक युग के निर्माण का कारक है।।
शिक्षक दुआ है, प्रार्थना है, पूजा है।
शिक्षक निज शिष्य का, पिता दूजा है।।
शिक्षक के सन्मुख, भगवान स्वयं खड़ा है।
शिक्षक का दर्जा, भगवान से भी बड़ा है।।
जो जीवन जीने की सीख देता, वो शिक्षक है।
जो हारे के हिस्से जीत लिख देता, वो शिक्षक है।।
शिक्षक जीवन को सुंदरतम करने का विश्वास देता है।
शिक्षक स्वयं जलकर औरों को प्रकाश देता है।।
शिक्षक का जीवन चरित असाधारण है।
शिक्षक स्वयं ही इसका उदाहरण है।।
शिक्षक की सीख थी जो अभिमन्यु चक्र चला पाया।
शिक्षक का ही प्रण था जो अर्जुन शस्त्र उठा पाया।।
शिक्षक ने ही चन्द्रगुप्त को आर्यव्रत का सम्राट बनाया।
शिक्षक ने ही छत्रपति शिवाजी को अति विराट बनाया।।
शिक्षक ही माँ पन्ना में त्यागभाव का प्रदाता था।
शिक्षक ही काली बाई की ताकत का प्रणेता था।।
शिक्षक ने ही लय-ताल यति-गति रस और छंद दिया।
शिक्षक ने ही राग गीत कवितकथा का मकरंद दिया।।
शिक्षक ने ही सूर, तुलसी, कबीर,
मीरा, केशव, गंग दिया।
शिक्षक ने ही जग को पूज्य स्वामी विवेकानंद दिया।।
शिक्षक जीवन के हर क्षेत्र में अपना सर्वोत्तम देता है।
शिक्षक जगत के रंगमंच का समृद्ध अभिनेता है।।
शिक्षक युद्ध से यज्ञ तक का साक्षी रहा है।
शिक्षक प्रेम करुणा समरसता का पाक्षी रहा है।।
शिक्षक का जिस राष्ट्र में सम्मान नहीं होता।
उस राष्ट्र का उत्थान भी आसान नहीं होता।।
आओ! हम सब शिक्षक का सम्मान करें।
निज का और राष्ट्र का उत्थान करें।।
माना जो कल सरल था, आज कुछ दुर्गम्य है।
शिक्षक का अभिनय लेकिन अब भी प्रणम्य है।।
मैं कलम कागज शब्द स्याही
शिक्षकों के नाम करता हूँ।
मैं दुनिया के सब शिक्षकों को प्रणाम करता हूँ।।

अध्यापक
शहीद सिपाही सुरेश
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
कोलिया (नागौर) राज.
मो: 9983816930

युग निर्माता

●रश्मि शर्मा

सहज संयमी मनस्वी धीर,
कर्म पथिक वह कर्मवीर।
नव पल्लव नव किसलय को,
निज के कर से करता सिंचित।
काल चक्र व्यवधानों से,
भयभीत नहीं होता किंचित।
स्वयं विटप सा स्थिर रहकर,
शान्त पथिक को देता छाया।
अष्ट पुराण चतुर्वेदों ने,
निर्विवाद उसका गुण गाया।
मृण्मय घट को सुघड़ बनाता,
देता रंग और रूप।
शर संधान करे प्रस्तर पर,
मरुभूमि में खोदे कूप।
सकल विश्व का स्रष्टा है,
पथभ्रष्ट समाज का त्राता है।
शिक्षक है मूल्यों का रक्षक,
वो ही है युग निर्माता है।।

5/248 RHB कॉलोनी, गोवर्धन
विलास, उदयपुर (राज.)
मो: 9413479677

शिक्षा

●सुनीता नानकानी

शिक्षा का जो मूल्य चुकाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा को न व्यर्थ बहाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा से अहंकारी न हो जाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा को बोझ नहीं उद्देश्य बनाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा पाकर माँ-बाप को न भूल जाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा से निज राष्ट्र का गौरव बढ़ाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।
शिक्षा से बुद्धि नहीं, चरित्र बनाए,
तो शिक्षित होता है आदमी।

प्रधानाध्यापिका,
रा.मा.वि., जूनावास, गंगापुर,
ब्लॉक-सहाड़ा, जिला-भीलवाड़ा

कोरोना से जंग में...

(समस्त कर्मवीरों को समर्पित)

●जगदीश चन्द्र शर्मा

कोरोना के महा कहर से, जूझ रहे श्रीमान जी,
नमन आपको प्रियवर मन से, वन्दन बारम्बार जी।
अपने कुशल प्रबन्धन से, दिल जीत लिया श्रीमान जी,
सहयोगी समस्त प्रशासन को, वन्दन बारम्बार जी।
कोरोना का कहर बड़ा है, मच गया हाहाकार जी,
आफत की इस कठिन घड़ी में, एक आस भगवान जी।
कोरोना के कर्मवीरों को, दिल से करें सलाम जी,
भगवान् इनको शक्ति देना, मिटा सके जंजाल जी।
एक निवेदन हाथ जोड़कर, मरुधरा की जनता से,
अब तो समझो घर में रहकर, जंग जीत लो आफत से।
दूरियों से रहो सुरक्षित, बच जाओगे डंडों से,
प्रहार करेगा कोरोना, यदि नहीं मानोगे मिलने से।
नमन करे उन सब वीरों को, जो फाइटर बनकर जूझ रहे,
अपनी जान हथेली लेकर, जीवन जीना सिखा रहे।
सरकारों के मूल मंत्र को, जीवन पथ से जोड़ रहे,
हाथ जोड़कर, विनयपूर्वक, घर में रहना सिखा रहे।
आओ करें प्रतिज्ञा मिलकर, संघर्ष करें इस संकट से,
सामाजिक दूरी अपनाकर, इसे परास्त करे अपने तप से।
राह कठिन पर है मुमकिन, अगर चलें दृढ़ संकल्प से,
अनुशासन की पराकाष्ठा बिन, असंभव मुक्त होना इससे।
उद्दंड, हठीली जनता भी अब, कायल है श्रीमान की,
निर्धन, बेबस, लाचारों की, ज्योति किरण श्रीमान जी।
अपनी कर्म कुशलता का दम, दिखा दिया श्रीमान जी,
उन रणवीरों के रण कौशल को, वन्दन बारम्बार जी।
हे मालिक! तुमसे एक प्रार्थना, सबको सफल बना देना,
निष्काम कर्म के पथिकों को, अपनी मंजिल पहुँचा देना।
कोरोना के तम को हर कर, आरोग्य प्रकाशित कर देना,
जन मन में समाए हर गम को, फिर से मुस्कान बना देना।

व्याख्याता-हिन्दी
रा.उ.मा.वि. महुआ (मांडलगढ़)
जिला-भीलवाड़ा (राज.)
मो. 9413863435

_éYa

●ईसरा राम पंवार 'मजल'

रेत का अथाह समंदर है, धोरों की धरती मरुधर है
खेजड़ी-निंबड़ी तरुवर है, धोरा भाखर धरा मरुधर है
साँप पीवणा विषधर है, गोगाजी, तेजाजी वीर मरुधर है
प्रीत-गीत तो घर-घर है, मीठी-मनुहार मरुधर है
अरावली तो सुंदरतर है, आबू तो जन्नत मरुधर है
पिछोला-पुष्कर सरोवर है, ओरण-गोचर धर मरुधर है
ढोला-मारु प्रेम अंतरतर है, मूमल महेन्द्र जोड़ी मरुधर है
रूंख कूंपळ लूंख मिमझर है, सेवण-धामण घास मरुधर है

5, संजाड़ा रोड, देवनगर (मजल)
तह. समदड़ी, जिला बाड़मेर (राज.)
मो: 9983413969

हे ईश्वर कुछ ऐसा कर दे

●संपत लाल शर्मा 'सागर'

हर दिल में मानवता भर दे, दानवता को तू हर दे।
राष्ट्र प्रेम का भाव जगा दे, निराशा को दूर भगा दे।
ॐकार का बजर बजा दे, कायरता को दूर भगा दे।
सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ा दे, सबको अपना मीत मिला दे।
हमको मधुर संगीत सुना दे, तन मन के घावो को भर दे।
दिल को पावन भावो से भर दे, गीता का तू पाठ पढ़ा दे।
कोरोना से मुक्ति दिला दे, हमारी नैया पार लगा दे।
हम सब की पीड़ा को हर दे, फिर मुरली की तान सुना दे।
छिपी निराशा दूर भगा दे, स्नेह का आलोक फैला दे।
पिछड़े को तू आगे बढ़ा दे, सुविकास का पथ बता दे।
श्रम का सबको पाठ पढ़ा दे, बेटे बेटी का भेद मिटा दे।
माँ की ममता को जगा दे, कोख में बेटी की मौत रुका दे।
सत्य शाश्वत का भान करा दे, हे ईश्वर कुछ ऐसा कर दे।

पोस्ट-गिलूंड, तहसील-रेलमगरा,
जिला-राजसमंद-313207
मो. 8003264828

राजस्थानी

सत किण में?

❒ हेमा

चवदस रौ चन्द्रमां आभै रै आधे'क आय ग्यो हौ। पण आंबा री कोटर में हेत हथाई करतां चकवै री आंख्यां अजे कस नी ई पड़यौ। 'चकवी बोल पड़ी कह रे चकबा बात' घर बीती के पर बीती। घर बीती तो हरमेस हुवै, आज पर बीती ई सुणल्यां।

तो पछौ फौज में नगारौ, अर बात में हुंकारौ। रात रा सून्यापा में टेम बितावण चकवै बात इण भांत शुरू करी। केई नर सूता केई नर जागै, सूतांरी पागड़यां चोर ले भागे। तो रामजी भला दिन देवै के एक राजा अर एक सेठ रौ बेटो दोन्यू में बाल पणा सूं डाढ़ो जाझौ हेत। टाबरपणा री इणी गैलाई में दोन्यू साथीड़ा एक दूजा नै एक कौल वाचौ देय दियौ। कोल वाचौ ई अटपटौ अर अण विचारयौ। जिणरौ ब्यांव पै'ला हुवैला वो आपरी बींदणी ने पैलड़ी बार आपरा साथी सूं मिलावैला। खेल खेल में बात आयी गयी हुयगी पण सेठां रै बेटै ने वो कोल वाचौ अजे तांई बरोबर ध्यान में समाजोग री बात के ब्याव भी पैला सेठां रै सपूत रौ हुयग्यौ। लाडां कोडां बनड़ी घरे आयी। बींद बींदणी महलां दाखिल करीज्या पण सेठां रै बेटे रौ मन पूरौ मगसौ। गताधम में अलूझग्यो जाण नुंवी परणेतर मून तोड़ ई दी। आज री इण हेत मिठास री रली पूरण री बेला आप भलां उमणा दूमणा क्यूं? म्हैं थारै लारै आयी हूँ तो अब आपरी अबखाई मेटण म्हारौ भी बरोबर रौ जिम्मौ।

सेवट सेठां रै बेटे आपरी परणेतर नै बाल गैलाई रा कौल वाचा रौ उगाड़ करई दियौ-मिंतर सूं अन्तर नहीं बैरी सूं नहिं नेह। प्रीतम सूं परदो नहीं जिण निरखी सगरि देह।। सुणंता पाण बींनणी फटकारै बोल पड़ी। आप चिंता फिकर छोड़ो अर म्हनै राजकंवर रे घरे जावण री हामल भरलौ। म्हैं आपरो कौल ई निभाऊंला अर म्हारौ नारी धरम नै भी कोई धक्कौ नीं लागण दूं। ऐ म्हारा कौल वाचा आपनै। अर नुवी परणेतण आपरो सुहाग री बाल गैलाई नै पूरी करण फटकारै वहीर हुयगी।

उण रात में ही सोला सिणगार कियां गहणां सूं लडाझूम सेठां री बींदणी तो राजकंवर

री ड्योढी री सोय कर ई ली।

समाजोग री बात के उणी मारग चोर किणी लूट री ताक में ऊभा। नैड़ी आवती साख्यात लिछमी नै सांप्रत देख चौरां रै तो घरे बैठ्या गंगा आई। पण सेठां री बीनणी बरजती बोली-थोड़ो नेठाव राखौ। पैलां म्हनै म्हारा धणी रौ वचन पूरो करनै आवण दयौ। वलतां पाण म्हैं थांने म्हारा सगळा गहणा सूंप देसूं। औ म्हारौ वचन आपने पण चोर ई पूरा चाटक अर पाटक एक चोर बोल पड़यौ-थारौ कांई भरोसौ रावला सूं वलती सिपाहियां नै ई सागे लेय आवै। पण सेठां री बीनणी चोरां नै आपरै सुहाग री सौगन खाय थावस बंधायौ।

सेवट सेठां री बीनणी राजकंवर रौ दरवाजौ बजायौ। राजकंवर बारणे आय देखे तो हाक बाक हुयग्यौ। रात री इण टेम आ म्हारी पेढ़ी पारखी कुण?

ज्यूं-त्यूं बोल नीसरया, हे लिछमी! आप कुण हौ अर अठै किण कारण आया हौ? सोले सिणगार कियां थे इन्दर री अपसरा हौ के कोई माया जाल? सेठां री बीनणी मांय पग धरती राजकंवर नै जद यौ कयौ के म्हैं थारै बाल सखा सेठां रा बेटा री परणेतर। बालपणा में थारै कौल बाचा पूरण करण सारू आज पैलड़ी बार आप कनै आयी हूँ-करौ कौल वाचा पूरा।

राजकंवर रा पगां हेटली तो जाणे जमी सरकगी जीभ जाणे तालवै चैंटगी। हिम्मत कर हार भर्‌या बोल नीसरया। बे बालपणा री अबूझ बातां ही। म्हनै माफी बख्शौ। थैं म्हारी धरम री बहन बरोबर।

सेठां री बींदणी बोल पड़ी - म्हारौ सील सत थांरी पेढ़ी ई ऊजलौ रहयौ इण रौ तोड़ ई बतावौ तो पाछी निरात सूं जाऊं। राजकंवर झट सूं मोत्यां जड़ी चूनड़ी धरम री बोली बहन नै ओढाय उणनै उणी पगां पाछी वहीर करी। वो ही टेम हौ अर इस्या ई ऊजला मन वाला वे मिनख हा, सुण्यौ? चकवी बात नै धके बंधावण सारू पडूतर देय ई दियौ तो पछै बाट जोवतां चोरां रौ थावस कियां पूरी ज्यो, बोलो? चकवे कह्यौ अरे गैली सेठां री बीनणी आपरा कौल वाचा मुजव चोरां धकै आय ऊभगी। झटकै बोल पड़ी- लो, म्हैं उतारूं, गहणा अर थे बांधो पोटली।

चोरां री तो जाणै अकल चकरीजगी। एक लुगाई होय जबान री इतरी खरी? वां रौ तो मनई पलटग्यौ। चोरां रौ सरदार बोल्यौ हे सतवंती, थारा प्रण धकै म्है चमगूंगा। थनै इण भांत खरा पगां देख म्हे थानै धरम री बहन मानां। अर चोरा उणनै आप कनला गहणा पहराय हाथ फेर वहीर करी। अबे बतावौ म्हारी मानेतण के सेठां री बीनणी सतवंती के राजकंवर। चोरां रौ सत ऊंचो के सेठां रा बेटा रौ? बोलो इण च्यारू में सिरे सतधारी कुण?

चकवी रौ तो माथौ चकरीजग्यौ देवै तो ही कांई पडूतर देवै। सगलां ने वे माता जबरी सुमत देय दी। अर चकवा ने ई इण न्याव सारू बात उणरा पाला में पटक दी।

चकवे कह्यौ म्हारी हीरकणी। सत तो चोरां में वापरयो जिकां आपरै मूंडै आयी लिछमी नै लूटणी छोड़ हाथ मसलता रहग्या समझी? अर चकवी नै लटकौ लेवणौ पड़यो हाँ म्हारा सहिब थांरी बात सुभर निपट निरवाली। अब भाख फूटण रा एनाण हुया। चकवा-चकवी री रात रस रंग भीनी हेत हथाई री टेम विजोग में पलटीजण री नियति पूरण दोन्यू आप आप रा माळां मे जाय बैसग्या।

इतरी बात अर नीं सुणी उणरै डावा पसवाड़ै लात।

शारीरिक शिक्षक
आदर्श विद्या मंदिर बालिका उ.मा., जालोर
मो : 9460174152

राजस्थानी

फैरीवाळी

❒ भोगीलाल पाटीदार

गां म में दांम मनख खेतीवारं नै सापं ढांड़ं राखवा वारं वधारै र्‌यं। खेती मांय खावा पीवा नी दांम वस्तुये मली जयं। खेती रा दाणा खावा म्हारै काम आवै। मूंगफली, सरसो, तिल नै डोरे नुं तेल घाणी थकी कड़ावी लयं। चौमासु नै सियाळा मांय साक भाजी अे घणी मिले। खवाय ई खयं नी खूटै करी दयं ते ऊंनारा मांय छाछ साथै वगारीनै खावा काम आवे। अरधर नै मरचु अे पाके। हांटं थकी गोळ बणावै। सोप थकी दूध घी मली जाय। गांम नं मनख हिनी अे वस्तु थकी बजार न उहीयारं न्हे रयं।

मनखं ने बजार थकी लूण नै छेतरं लेवा जवु पड़े। सोपु लाब्बु ओय तौ सेठ कने रुपिया लेवा जयं। ताजो बोदो अवसर काड़वो ओय नै हगंवाल थकी सैयोग कम पड्यो ओय तो सेठ ने सेतारे। अैणा सिवाय बजार नुं मुंडू न्हे देखे। कोय घर वपरास नी वस्तु जुवे तो मेळो भराय अैयं थकी लई आवै।

गांम मांय अेक खासीयत है के फैरीवाळा घणी चीजां लईनै फरै। जैके कने वस्तु है, हेलो पाड़ता जयं। आखा गांम मांय फिरै। जैम के धुरकटीयो दातेडू, कोवाडू, खाटला ना वाणवारा, टोपलं वारा, माणु नै पाली वारा, सादड़ी वारा, चकू नी धार करवा वारा, रमकड़ं वारा, वणकोर नै कुंबार तौ गदेड़ माथे ठामड़ं लादीनै लावै ते बे तण दाड़ा पड़ाव नाखी मेलै। हुं गणावो? हर वस्तु फैरीवाळा लईनै आवै। अैणा साथै झरमर नं खावा पीवा नं ठामड़ं नै बईरं ने सणगार नी चीजां लईनै फैरीवाळी बाईयां भी आवै। गांव फैरीवाळा ऊंनारा के हियारा नुं धान पाके ने आवै। ऐसके गांम मांय पाक्या धान थकी लेवड़ देवड़ करै। नकद रुपिया मलै नी।

ऊंनारा ना दाड़ मांय सुरज उगतो अंगार ज्यूं तपतो। सोपं ने पाणी पाई ने घर ना आंगणा मांय बैठो अतो। गोठियो बाजी लईनै आवी ग्यो। ना क्यू तोय जौराईये रमवा बेहाड्यो। तईवरै वाट मांय फैरीवाळु बईरू आवते देख्युं। मेलु- कुरतु पाजेमु पेहरीलु अतु। डील थकी अेकदम दुबळी-पतळी। जोवनीयात बाई अती तोय आंखें औड़ी पैहीली नै मुंडा ना गाल चोटीला नै

खाड़ा पड़ीला। मुंडू अैनूं दुधमहामरू अतु। अैने साथै नानो छोरो हेंडतो अतो। बईरा ना मौरं वांहे छेतरे थकी नानुं छोरू बांधीलु अतु। माथा माथे ठामडं नुं थड़ी हादीलु टोपलु हाईनै हेलो पाड्यो 'वाटकी थाळी लई लौ। वाळ वारी आवी वाळ।'

हाद सांभरी नै रजू काकी घर बारणै नेंकर्‌यं। फैरीवाळी अैणं ने आंगणा मांय जाईनै टोपलु रजू काकी नै सैयोग थकी उतारी दीधु। स्याद थाकी गई अती लै अैयं ताप नो तड़को अतो तोय नेंचे बैही गई। पोगं मांय रबड नं गाहीलं चप्पल अतं। ऊपर नी टूटीली पट्‌टीये छेतरा ना छेंदे थकी बांधीली अती। छोरा ने पोगं मांय कोय पेहरीलु नतु।

रजू काकी अे क्यू के रमती तू तो घणं मईनं पुठै देखवा मली है। मादी पड़ी अती के हुं? रमतीये मौरं वांहे बांधीला छोरा आड़ै अेसारो कर्‌यो तो रजू हमझी गई। पछे हूं वस्तुये लावी है? ई टोपला मांय जोवा लागी। तईवरै पाड़ोसी बईरं अे आवी ग्यं। टोपला मांय भरीलं जरमर नं ठामडं वाटली, थारी, गिलास, कळिया जैवं दांम ठामड़ं जौई लीधं। पछे मोल भाव करवा लागं। अेक बईरू जै रमती ने नतु जाणतु अैणे पूछ्युं 'कैटलं रुपियं मांय आले है?'

'रुपियं हाटे नती आळती।' रमती अे क्यू।

'तारै दाणं हाटे आळे है?'

'ना। बईरं ने माथा ना उतरीला वाळ हाटे आलूं।'

'वाळ तोले है के अंदाज थकी?'

'हाथ मांय हाईनै अंदाज लगावी लउं। अैनी किमत परमणै ठामडू आलूं।'

'बईरं ने सणगार नुं सामान न्हें लावी?' रजू अे क्यू।

'लौ। ई भी लावी हूँ।' खबे लटकावी थेली उतारीनै बतावी। बक्कल, पीने, कास, कांगी, कसकड़ं, फूंदी, रीबन नै मालाये जैवी वस्तुये वतावी।

रमती नो छोरो मेलु डाट फाटेलु कमीज नै अैवी चड्डी पेहरीलो पागती मांय ऊंभो अतो। पोग मांय जोडं न्हे अतं ते पोग ऊंचा नेची करतो अतो। अेक बईरू देखी ग्यू। ई हमझी गई के ताप मांय जमी तपी गई है। छोरा रे पोग बळे है। अैने दया आवी गई तौ रमती रे छाइला मांय हादी लीधी। रमती उठीनै छाइलां मांय आवीनै बैठी। तईवरै बईरं नो काहाबोह सांभरीनै मौरं वांहे बांधीलो छोरो हुतीलो अतो ई उठी ग्यो। रोवा लागो तो रमती अे छेतरु छोड़ीनै वांहे थकी अैने खोरा मांय लीधो। छोरो खोरा मांय हुतो थको रोते जाईनै रमती ने छाती सांमे हाथ लांबो करतो अतो।

रमती अे छोरो भूखे थ्यो है। अैम करीनै माथा माथे ओढ़ीलु छेतरु खबा माथे नाखी छोरा ने ओढ़ाड़ी ने दूध पावा लागी। अैम लाग्यु के मोटं नी मरजातां राखी रई है। अैना साथै ई भी थई सके है के दूध पीते छोरा ने कैनीये नजर न्हें लागे।

छोरा ने दूध पाते थक वाळ आलवा वारं बईरं कने वाळ लईनै जैने जै जुवे आली रई अती। पाहे ऊभा छोरा ने तर लागी तौ रमती ने क्यू तो अेक बईरू सांभरी ग्यु। अैणी अे पाणी लावीनै छोरा नै रमती ने पाणी पायु। थोड़ीक वार मांय छोरे फैर रमती ने स्यूं रमती अे टोपला मांय डोबा थकी रो हेलो काडी नै आल्यो। छोरे हाथ मांय रोटलो हाईनै बटकं टोड़तो थको कोरो खावा लागो। भूख कैनीये हगी न्हे ओय। रोटलो हुको ओय के उतरीलो। मुंडू भी हवाद न्हें करे।

रजू नी नजर छोरा माथे पड़ी। छोरो हुको रोटलो हाण्णा वगर खातो अतो। अैणी अे क्यूं के छोरो हुको रोटलो हरतै खाय। पापोड़ वजू छोरो रोटलो भागे है नै चणं वजू करड़ करड़ चाबे है। पछे घर मांय गई। हाण्णु नै रोटलो लावीनै क्यू

आलते थके 'आणा मांय मथी ने खाई ले। हुको रोटलो वगर हाण्णे खाय तो हंतोक न्हें आवे।'

रमती बोली 'हुं करू? अमनै तौ भगवने डेरं वारो जनम आल्यो है जीब्बु ओय तो जै मले ई खावु पड़े। मेनत तो रोटलो मीठो ओय। मांगी ने खावा थकी आदत वगड़े। कमावा ना संस्कार नै हुनेर न्हें आवे।'

अेक बईरे पूछ्युं के नाना छोरा ने वांहे बांधीनै फरे है ते घेरे राखवा वारूं कुंणे नती। रमती अे क्यू 'अमैं आंय नं नती। नागपुर महाराष्ट्र नं हैं। च्यार मईनं आंय धन्धा वास्ते आवं हैं। मोटू गांम देखीनै अैयं डेरो नाखं। च्यार कुटुम आवीला है। डेरा माथे रखवारा सारू अेक डोकरी हैं। हवार थतं मांय धणी वऊ बे नेंकरी जं। अेटले छोरू म्हूं साथै लई आवूं पेटे वास्ते सब बैठवु पड़े।''

'तारे घरवारा हुं काम करै हैं?' अेक बईरे पूछ्युं।

रमती अे क्यू 'ई अे म्हारे वजू फैरी नुं काम करै है। म्हूं नै बीजं बईरं भेगी वस्ती मांय फरै ने आदमी डूंगरै डूंगरै घरं हैं अैयं जयं। ई अैयं वाळ मलै तौ लावै नेके ठामडं बदले होळ नी कोह नं बटकं, गाहीली गेती, खपड़ो, फावड़ो, डोलसी, तगारू जैवं दांम लोढ़ा नी उतरीली वस्तुये लावै। अैने धुरकटीया ने, के स्हैर मायं जाई न्हें वेची दं। बईरं बफोर नफ्या सुधी फैरी करै। पछै डेरा माथे आवी जयं। आवीनै कचरा पाणी नुं काम करै। हांझ नुं खावा नुं करै। आदमी रातरे मोड़ा आवै। टैम मले तो गुछवाईला वाळ कोलै करै। बीजी चीजां भी हंकेलवा नुं करै।''

तईवरै अेक बईरे आवीनै क्यू 'माथा ना वाळ आलीनै कोय वस्तु न्हे लेवी। लेवी ओय तो वेंसाती लई लौ। वाळ तो माथा नो मोड़ केवाय। वाळं ने पाणी मायं पधरावी देवा जुवै।'

नरमाई थकी रमती बोली 'तिरूपति बालाजी मंदिर मांय दरसन करवा जयं ई मनख वाळ उतारी दयं। आपड़ी आपड़ी आस्था है। म्हूं कैनेये कने जौराइये वाळ नती लेती।'

बीजं बई रे रमती आड़ै हाक भरीनै क्यू के तू तारी आवती रैजै। आज फळा नं हामटं बईरं आब्बा थकी हामटो वेपार थई ग्यो। धावणा छोरा ने दूध पीवाई ग्यु अतु। आपड़ी वधीली वस्तुयें ठामड़ं नै वाळ टोपला मांय गाली दीधं। पछै छोरा ने मौरं वांहे बांधीनै आंगणा थकी नेकरी।

तईवरै तण आदमी ऊभी वाटे आवी र्‌या अता। अेक आदमी गांम नो मुखी अतो। मुखी ने धोरी धोती कुरतु नै धोरो साफो बांधीलो अतो। तड़को लागतो अतो ते माथा माथे छतरी ओढ़ीली अती। रमती ने आंगणा थकी नेकरते मुखी देखी ग्यो। अैणे क्यू 'आ छेनार आवी गई। गांम मांय चोरीये अैणं ने लीधे थयं हैं।''

रमती अैण ना सांमे जौईनै बोली 'अे काका! अैम हरतै बोलो हो? जरा बोलते भान राखो। मन मांय आवे अैम हुं भसो हौ?'

गांम मांय मुखी नो दबदबो अतो। अैना सांमे कुंणे बोली न्हें सकतु। वगवारौ नै पईसं वारो अतो। घणं ने ब्याजे रुपिया आलतो अतो। व्याज मांय केड़े भागी नाखतो पण भीड़ पड्ये मनख अैने कने जतं। अेटले गांम वारं ने दबावीनै राखतो अतो।

ठुकराई करतो थको मुखी बोल्यो 'जा जा नागड़ी। तनै कुंण वतरावे। तमैं लोक घर मांय आवीनै अेरु करी जौ हौ। रातरे आदमीयं ने चोरी करवा मौकलो हौ। घरं ना आंगणा मांय थकी छेतरं, ठामड़ं, साईकल, अैवी घणी वस्तुये चोरी करीनै लई जौ हो। तमैं रखड़ंत बाहर नं कैयं थकी आवो हौ?'

'तमारै वस्तु चोराई थाय है तौ तमैं ध्यान राखो। चोर ने हाई लौ। अबम कैनेये कैवा नुं न्हें। गांम मांय फैरी वारा घणा आदमी आवै हैं। अैणं नी बंदीस लगावी दो। बईरा मनख सांमु मुंडू हंबारी ने बोलो। म्हूं बाहर थकी आवी हूं। आणा

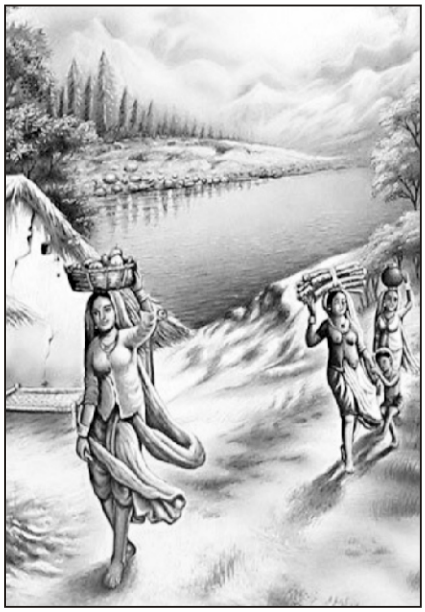

गांम मांय पाँच वरस थकी आवूं हूँ। लौ आ कागद वांची लौ। म्हूं वधारे भणेली नती। आणा मांय म्हारु सरनामू है। हाकाबन काचू पाकू न्हे सांभरू।' कागद भारते थकी रमती बोली।

मुखी ने साथ वारो आदमी बोल्यो 'कागद रै'वा दे। अमारै नती जौवु। तू ओर खती नती। आ गांम ना मुखी है। गांम ना मानेता आदमी।'

रीस करीनै रमती अे क्यू 'तमारै गांम बदले मानेता ऊंगा। 'म्हारै सारू न्हें है। मानेतो आदमी ब्हेन बेटी सारू भसवाड़ो करे? म्हनै छेनार हुँ जौइनै कैयु? कैयं छेनारू करते देख्यु। म्हूं अैण नी दबेल न्हें हूं तो सांभरू। आ तौ जेटला ऊपर थकी धोरा हैं। अेटला मन ना मेला देखयं है। म्हूं कैम बीयु? मेनत करीनै पेट भरू हूँ। जौई लौ वांहे नानो छोरो बांधी लौ। तमनै जराये दया नती आवती। हं अमीर ने गरीब माथे कैयं दया आवे? म्हनै तौ आदमी सेनारूवो लागे है। अेटले अेकला बईरा ने देखीनै मन फावे अैम बोले है।''

दांम बईरं रजू ने घेरै अंत ई सांभरी र्‌यं अतं। रमती मुखी ने हुकी ने हुकी झापोटी रई अती। मन मांय खुस थई र्‌यं अतं। मुखी माथे घणं मनखं कटतं अतं। गांम वारं ने ठसक मांय तू तूकारे बोलतो। हांडाई नी वाते करतो। कणा भी बईरा नुं पाणी उतारते वार न्हें करतो। आजे अैना माथा नी मली है। गांम वेचे भद वगाड़ी नाखी। असल राखीनै हेकड़ी नी लू उतारी नाखी।

मुखी गांम मांय बोलता अैम फैरीवाळी ने बोली ग्या। रमती सांमी चोटी तौ खमकाई ग्या। लवेणो पड़ी ग्या ते कोय बोल्या न्हें। बीजे आदमीये क्यू 'जा बाई जा। खोटू बोलाई ग्यु ओय तो मन माथे लावे नखै। तू अे तारू देस छोड़ी ने आंय पेट वास्ते फरे है।'

परहेवे थकी रमती भेनी भस थई गई अती। लायकी वारी अती अेटले खाटी वात कैनीये सांभरती न्हें। सांमा वारा नुं तरत मुंडु हाई लेती। गळा मांय पड़ेला छेतरा थकी मुंडू लुईनै वांहे बांधी ला छोरा ने छानो राखती थकी हेलो पाड़वा लागी। 'ठामड़ं लई लौ। काच, कांगी, लई लौ' करती बीजा फळा जती रई। म्हारै गोठीयो नै म्हूं मुखी ने नेंचे मुंडू करीनै जाते जौई र्‌या।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
किशनपुरा रोड, सीमलवाड़ा, डूंगरपुर
(राज.)-314403
मो: 9783371267

राजस्थानी

चोर री रूखाळी

❒ रामजीलाल घोड़ेला 'भारती'

बात जूनी है। उण बगत लोग नरमा-कपास री खेती कर्‌या करता। नहर अर कुआं रो पाणी नरमा-कपास री फसल वास्तै चौखो हुवै। इन्द्र भगवान री मेहर सूं छांटो छिड़को भी हुय जांवतो। जमीन उपजाउ ही। नोपो, पेमो अर खेतो गाँव रा मौजीज आदमी। गाँव रा गरीब, मजदूर, कारू लोग इणा रै खेतां मांय दिहाड़ी, मजदूरी कर'र परिवार रो गाडो गुड़कावंता। गाँव मांय सुख-चैन। उण दिनां बाजार मांय जावण रा साधन कमती हा अर बाजार तो पन्द्रह-बीसेक दिनां सूं आवणो जावणो हुंवतो। टी.वी., फोन तो दूर री बात हुवंती। बिजळी भी दसेक घरां मांय लाग्योड़ी। बाकी घरां मायं लालटेन या तेल रा दीया चसता।

कार्तिक रै महीनै मांय नरमै-कपास री फसल पूरै जोबन पर। नरमो इतो खड़्यो कै सगळो खेत धोळो हुयगो। चांदणी रात मांय तो नजारो गजब कै भगवान खेत मांय धोळी चादर बिछा दी हुवै। च्यारूं कानी समृद्धि पसरयोड़ी। उण बगत नरमा-कपास रा भाव भी सावळ हा। खरचो बावड़ जावंतो। आज री तरयां घणी स्प्रै नी करणी पड़ती। रसायनिक खादां रो प्रयोग कमती हुंवतो। फसल चौखी हुवै अर भाव ठीक हुवै तो करसो फायदै मांय रेवै। गांव मांय सगळा रो आछो मेल जोल। दुःख-तकलीफ मांय अेक दूजै रो साथं देवता। आज री तरयां अेकलखोरिया लोग नी हा। भैळप मांय ई सुख-चैन हुवै।

उण दिनां कदै-कदास नरमो-कपास चोरी री घटना हुय जावंती। बा भी गाँव में नी, खेतां मांय। कई चोरड़ा नरमै-कपास नै चुग'र ले जावंता, अर बजार मांय बेच देवता। कोई चोर पकड़ीज जावंतो तो बस फेर तो पूछो ही ना। उण साथै इती कुता खाणी हुवंती, बो इतो कुटीजतो कै सात जनमां मांय चोरी नी करतो। आज चांदनी रात ही। चांद आपरै पूरे जोबन पर। नोपो, पेमो अर खेतो उमर मायं 40-45 रै लगैटगै। नोपो, पेमो अर खेतो रोजीना री तरयां रात नै दसके बजे हाथ मांय डांग्यां लैय'र नरमै- कपास री रूखाळी वास्तै व्हीर हुया। खेत घर सूं दो-

तीनेक मुरब्बा दूर हो। इण वास्तै पन्द्रह-बीसेक मिन्ट ही लागता। आज उणां नै बहम हुयौ कै चाँदनी रात नै चौरड़ा फायदो उठा सकै। तीनू जणां पक्का सुगनी। उण तीनां रा खेत अेक दूजै सूं थोड़ा-थोड़ा अलगा हा। पैला पेमे रो खेत हो। उणा च्यारूं मेर खेत री सींव अेक गेड़ो मार्‌यो। तीनू जणा थोड़ी-थोड़ी दूरी पै चुप-चाप चालै हा। निजर धोळै हुयड़ै खेत कानी। तीनूं जणा खाळै रै नाकै खनै बैठग्या। दस-पन्द्रह मिन्ट चुप-चाप बैठ्या रैया। नरमो पाँच छः फुट तांई बध्यौड़ो। फिरतो मिनख भी नी दीखे। सगळो खेत धोळो-धट। थोड़ी देर पछै उणां नै नरमै मांय खुसर-फुसर सुणीजी। उण तीनां रां कान खड़्या हुयग्या। उणां भरोसो हुयो के आज चोरड़ा खेत मांय बड़ग्या लागै। दिन छिपतां ही चोरड़ा खेतां रै नैड़े पूगग्या हा। अबै तीनूं जणां योजना बणायी कै आनै कियां पकड़ां। चोरड़ा किता है ठाह कोनी चालै हो। उणां अेक अेक नै पकड़नै री योजना बणाई। पैलां उणां अेक चोरड़े नै घेर लियो। चोरड़ा भी थोड़ी-थोड़ी दूरी पर नरमो चुगै हा। उणां री भी गजब री अेकता। नरमै मांय जद खड़्यो मिनख नी दीखै तो बैठ्यो कठै दीखसी।

उणां अेक चोरड़ा नै घेर लियो अर उण रै अेक रै गिटै पे डांग सरकाई। चोरड़ो पड़ग्यो अर पड़तां ई बोक्यो 'औ रै मार दियो रै।' बाकी तीनूं चोरड़ाई सावचेत हुयग्या। बै नरमा मांय गुढ़ालियां हुय'र खेत सूं बारै जा निकळ्या। बठै सूं भाग छूट्या। जको चोरड़ो पकड़ज्यो हो उण रै सगळां दो-दो, तीन-तीन रैफट जड़ दीनां। उणनै पकड़'र खाळै कनै लै आया। उण बतायो कै बै तीन जंणा है। पेमो डांग लेय'र चोरड़ै री रूखाळी करै हो। चोरड़ो खाळै मांय भेळो हुय'र बैठ्यो हो। नोपो अर धनो दूजा चोरड़ां कानी दौड़्या। पण वै दोनूं चोरड़ा तो पैला'इज भागग्या हा। बै कठई दूजी जिग्यां लुकग्या हा। बै आपरी झोळ्यां भी खुली छोड़ग्या हा। उणां पैला सूं ही 15-20 किलो नरमो चुग राख्यो हो। किंकर नीचै भैळो कर राख्यो हो। जको चोरड़ो पकड़ीज्यो हो उण भी झोळी मांड राखी ही उण मांय 8-10 किलो नरमो हो। चोरड़ा भी तगड़ा मक्कू होवता। जकै चोरड़े री पेमो रूखाळी करै हो, उण झोळी मांय दो-तीन फुट रो अेक डण्डो घाल राख्यो हो। चौरड़ो पाँच-सातेक मिन्ट तो छाप्ळयौड़ो बैठ्यो रैयो। पेमो रूखाळी तो करै हो पण कदैई उण रो ध्यान ईनै-बिनै हुय जावंतो। पेमै नै भरोसो हो कै अेक चोरड़ो तो काबू आयड़ो है ही। इणरी गुवाड़ मांय बात करस्यां। सगळा नै मुफत रो धन भावै। चौरड़े री निजर पेमै कानी ही। बो सोचै हो कै गाँव मांय लैजायां पछै पूरो गाँव कुटाई करसी, अधमर्‌यो कर देसी अर पुलिस नै पकड़वा देसी।

उण चोर आपरी झोली मांय सूं डण्डो काढ्यो अर काठो पकड़'र फुरती सूं पेमै रै पटपड़े पर दे मार्‌यो। अर दड़ाछट दौड़ग्यो। पेमै रै पटपड़ै पर पड़तां ही बो कोझी तरयां अरड़ायो-'अरै मावड़ी रै, मार दीयो रै।' पेमो नीचै पड़ग्यो अर पटपड़ै नै पंपोळण लागग्यो। खैते अर नोपे नै पेमै री चिरलाहट सुणीजी। उणां सौच्यो कै चौरड़ो पेमै रै मारग्यो लागै। पैलां तो दोनूं जणां चौरड़ा लारै न्हास्या हा, पण अबै पेमै कानी न्हास्या। इतै मांय पेमो आपरी पटपड़ी पंपोळतो उठ बैठ्यो हो। उणां सोच्यो कै चोरड़ा तो गजब निकळ्या। पकड़ीज्यौड़ो चोर हाथां सूं निकळग्यो अर आ चोर री रूखाळी तो मूंगी पड़गी।

चन्द्र साहित्य प्रकाशन, लूणकरणसर, बीकानेर
(राज.)-334603
मो: 9414273575

राजस्थानी

बड़गड़ां बड़गड़ां

❐ आशुतोष

सूरां पूरां री धरती चित्तौड़। त्याग अर बलिदान री अणगिण कहाणियां उकेरती भोम चित्तौड़। मायड़ भोम री आजादी री ओलख बणायी राखण री आण सारू जूझारां माथा देय दिया तो वीर नारियां जौहर री जोत ने सदा सवायी राखी। सिर साटे जे धर रहे तो भी सस्ती जाण-इणी लवना री पंगत, फतह सीकरी कनै खानवा री लड़ाई में आपरौ सूरापौ जतावता माहराणां सांगा लड़तां भिड़तां महाराणा रौ वज्र शरीर दुसमी रा वार झेल झैल नै अस्सी घाव लेय अब थाकल पड़ग्यो है। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। विष तीरां सूं बाथल पड़ग्या सांगा रा शरीर में उण जूझार रौ मन अजे ई मजबूत हौ। अजमेर परगना में गाँव कालबी रा शिविर में चेतौ वापरतां पाण सिंघ हुंकार ज्यूं पूछ ई लियौ-म्हैं कठै? म्हारौ घोड़ो कठै?

रिसता घावां रै पाण ई सांगा रा कानां घोड़ां री पोज सुणी जी बड़गड़ाँ बड़गड़ाँ। विष तीरां रौ असर महाराणा सांगा रै चित्तौड़ जीतण री अधूरी आस री लाचारगी महाराणा रौ पछतावौ बण आंख्यां सूं ढलक पड़ी। खानवा रौ औ संग्राम महाराणा भाग री अभागी झूल री धूल ज्यूं अंतस में ऊँची चढ़गी। विचारां रा अणगिण गोट महाराणा री चेतना में विचरण लाग्या। बापड़ी उण चारणी ठीक ई कह्यौ के मेवाड़ रौ राज मुकुट सांगा नै सूंपणो सिरे रहसी पण ईसकाला उतावला भायां रै आ बात हिये नीं उतरी। पग में भाई पाटवी हा सो वां रै विपरीत वार तो कीकर करलै। खानवा रै उण घमसाण में सांगा आपरी एक आंख गमायां पाण ई भाई पै ने बाथळ कियां पटक दे? वारां अंतस में तो चित्तौड़ री आजादी रा उछाला नाटक मचावै हा-बाज पराया पाणि पड़ि तूं पंछिन्द ना मारि-अर सांगा आपरौ मन काठो कर कायरता रो कपूरो लेय नै ई आपरा पगां नै पाछाल फेराय दी। सूना कानां में एक ई घोर दौड़तां घोड़ां री टापां-बड़गड़ां-बड़गड़ां।

सिंघणी रा जाया महाराणा सांगा पसवाड़ो फेरतां कराहतां फेरूं विचारणा में पड़ग्या। स्वाभिमान अर साम धरम री सेवना में वीर प्रसू

चित्तौड़ री नारियां आपरा आभूषण देय दिया तो गांव गुवाड़ रा वासियाँ केसरिया फौज री पंगत में जाय ऊभा होयग्या। आक्रांता नै मायड़ भोम सूं मार भगावण देश रूखालां री पंगत देश भक्ति री इदक दीठ बणगी। अचेत महाराणा फेरूं झझक्या-अरे! अरे! घोड़ां री पोड़ां सुणीजै बड़गड़ा! बड़गड़ां! ल्यावौ म्हारा सस्तर पाटी, म्हैं भी करसूं देस रूखाळी- जय एक लिंग! जय चित्तौड़!! जय मेवाड़!!

अर पाटा पीड़ करता सामधरमी सेवकां महाराणा नै धीरज बंधावतां पडूतर दियौ-नेठाव महाराणा! ना कुछ नेहछो करावौ। आपरा घाव अजे गहरा है।

महाराणा री आंख्यां बोल पड़ी- आ नैहछै री वेला है? म्हारी मायड़ भोम री मरजाद री इण घड़ी में तो जीवण के मरण रौ जस कमावण री वेला है। आ वेला तो शान्ति री नहीं क्रान्ति री है-बजावौ त्राटक। करावो घमसाण। आजादी री हेतालु म्हारी हरावल रै घौड़ां री टापां म्हनै सुभट सुणी जै-बड़गड़ां बड़गड़ां। अर घायल महाराणा फेरूं अचेत हुयग्या। खानवा रै इण संग्राम में आक्रान्ता बाबर यौ खण लियौ बतावै कै चितौड़ जीते जितरै पाँच वक्त नमाजी रैवेला अर शराब कबाब कबूल नहीं करैला। उण रौ इष्ट उण री आस्था। यूं भी महाराणा सांगा पग में थाटवी हुवतां पाण बाबर नै बादशाह कदे ही न्हीं मान्यौ।

भाठा करतां ईंट कंवली। बाबर तो घाड़ेती री जूण अंग्रेज्यां इण धरती में लूटपाट कर सोकड़ मना वैला। इब्राहीम लोदी सूं सांठ गांठ कर्यां देश रा दोन्यूं दुसमियां नै आपसरी में लड़ाय भिड़ाय कमजोर करण री आगूंच सोच रै पाण ई स्वाभिमानी राजा रजवाड़ा नै एकठ कर चित्तौड़ री वीर धरा री सीम सतलज सूं लेय नर्मदा तांई बधाय शक्तिशाली राजा रौ गरबा अंगेज्यो। बीतग्यो टेम अर रैयगी बातां। म्हनै बैरी रौ लहूलाय द्यौ। महाबली पृथ्वीराज री आंख्यां रै रगत रौ ब्याज इब्राहीम लोदी सूं लड़ाई रा थाकेला रै उपरांत ई म्है तो बाबर सूं बदलौ लेय वसूलण री तेवड़ ली ही। पण भाग्य नै वीरां री पिछाण कोनी। म्हारो तन हारग्यौ पण मन नहीं। म्हारा घोड़ा तो खानबा रा त्राटक में अजे ई दौड़ता सुणीजै रे बड़गड़ां-बड़गड़ां। अर महाराणा री आंख फेरूं मींचीजगी।

चितौड़ इतिहास री अजोगती भूल फेरूं अचेत महाराणा रै अंतस में शूल ज्यूं चुभगी। पसवाड़ौ फेरतां बोलण लाग्या-मेवाड़ रा सामन्तां। सुभट सुणल्यौ म्हनै कियातर कर्यौ सारंग देव। म्हारा पर पृथ्वीराज अर जयमाल रै वार नै सामधरमी सारंगदेव आपरै ऊपर झेल इदकी रीत निभायी। उण रै सामधरम री कूंत कोई कीकर कर सकै। अणगिण मूंघा मोत्यांसूं भी घणी अणमोल। रंग थारा समाधरम नै सारंग।

घायल सिंघ सांगा नै चेतो बावड़ता पाछी वा ही लवना। महाराणा फतहसिंह रा घोड़ा भी थाकग्या दीसै पण बां पर असवार सूरा पूरा अजे काठी सूं काठा चिपक्योड़ा वीर धरा री रूखाळी में कर्मवीर बण्या दौड़ाया जावै-बड़गड़ां-बड़गड़ां।

अर वीर सांगा रै जीवण री इणी छेहली छांव में उण स्वाभिमानी सामधरमी सूर सपूत री आंख्यां पाथरीजगी सुरग री सोय करती। उण री तीरात्मा रौ घोड़ो दडी छांट दौड़्यौ जाय रह्यौ है। बड़गड़ां-बड़गड़ां।

सेल घमोड़ा किम सह्या किम सहिया गजदन्त।
कडी ठहक्के बगतरां नडी नडी नाचन्त।।
जावसी

भाषा अध्यापक
सनराईज एज्यूकेशन एकेडमी,
उच्च माध्यमिक विद्यालय, समदड़ी,
बाड़मेर (राज.)-344021

राजस्थानी

विमला

❒ आर.आर. नामा

विक्रम बहुत होशियार मिनख ड्यूटी अर नौकरी मांय सावलचेती राखतो। डील डौल सूं हष्टपुष्ट रंग गौरो अर उण ऊपर सफेद पौशाक पेरतो तो जाणे सफेद बुगलौ/जैडी कद काढ़ी रूप रंग पेहनावो फुटरौ तो हो ही पण मन रो मालिक जुबान रौ पक्को/ड्यूटी पछे वा उतरलाई एयरफोर्स सूं बारे आवतो, छोटी दुकान माथे, रोड माथे मौची...सुं हथाई कर पाछो आपरे क्वाटर जावतो। विक्रम फिल्मों रो शौकीन साथै उपन्यास भी राखतौ, ड्यूटी माथै एकळो होवतो तो इण उपन्यास नै पढ़ स्मय पूरो करतो।

विक्रम लगै टगै पाँच वर्ष नौकरी कीनी उण वगत बीच मांय एण रौ सगपण कर दीनो। सगपण वाली कन्या सुन्दर सुशील ही अर अध्यापिका री ट्रेनिंग ले रही ही। बस इण वर्ष ट्रेनिंग पूरी होता ही विवाह तय हो। एक दिन अचानक विक्रम रै पेट पसवाड़ौ दुखण लागौ, दवाईयां दीनी थौड़ो आराम आयौ, पण जद जोधपुर जाय पुरी जाँच करायी तो ठा पड़ी इण रौ एक गुर्दो खराब होय गयौ है। सासरै वाळा जोधपुर रेवता आया इलाज मांय मदद कींनी, पण मन मांय शंका होवण लागी। विमला री नौकरी सैंट्रल स्कुल मांय इण महिने लाग गी ही वा जोधपुर नौकरी करती। घर मांय खुशरफुशर होवती देख विमला नै ठा पड़ी कै सगपण तोड़ण री चर्चा होवै है। थोड़ा दिनां पछै बात तय होयगी। अबै सगपण दूजी ठौड़ करो ला। विमला बहुत दुःखी हौय लाज मरजाद छौड़ आपरै माता-पिता नै कयों- ''बापू करमां री गत न्यारी होवै, थै म्हारे सगपण छौड़ण री बात मते करो। म्हारै मन मांय पतिदेव री मूरत विक्रम री बैठगी है। कोई एक देवल री मूरत बदली जै है? विमला गहरी सांस छौड़ आपरे मन री बात पूरी कीनी।

विमला रा परिवार वाला धर्म संकट में पड़ गया। करै तो करै कांई, छौरी री जिद पक्की है, जै आपां दूजो घर देखां कोई ऐली-पैली बात हौय जावे तो.....?

थौड़ा दिन पछै विमला आपरो पतर विक्रम ने लिख दीनौ। जिण मांय आपरौ मन री बात ही। विमला लिखियो थांरो म्हांरौ जोड़ो बिन ब्याव ही पति-पत्नि रौ है। म्हैं आपने पति मान लीना है दुनिया की कोई ताकत कौनी आप सूं अलग करै। आप इलाज कराऔ, हिम्मत राखौ दुनियां मांय सब बिमारी रो इलाज है। भगवान नी करै म्है म्हारी किडनी आपरै दें दुला।

विमला रो कागद पढ़ विक्रम राहत महसूस कीनी अर भगवान रौ धन्यवाद करण लागौ। एक एड़ी हिम्मत वाली एक शिक्षिका म्हारी मंगेतर है। थोड़ा महीना पछै विवाह कर विक्रम विमला न लै उतरलाई आयौ। थोड़ा महीना साथै रया बातां चीतां होयी तो रोग रफ्फूचक्कर, कुण जाणै बिमार हौ विक्रम रौ शरीर बढ़ण लागो, विमला पाछी जोधपुर आय नौकरी करै। आयै रविवार आवै-जावै तो जिवण रा दिन हशी-खुशी सूं बीते।

दो वर्ष जावतै देर कौनी लागी, विक्रम एक टाबर रौ बाप, लड़के रौ नाम सुखबीर सिंह कइजै। सुखबीर आपरी मां माथौ गयौ हो, बहुत होशियार। जद कैंवता कौंई बणेला तो कैंवतौ- ''म्है तो हवाई जहाज उड़ाऊंला।''

सुखवीर री मीठी बोली पॉयलेट बणन री बात दाय आयी कैंवता इणनै तो पढ़ा लिखा पॉयलोट बणावां ला।

समाजोग सुखवीर पाँच-छः बरस रौ हो स्कूल जावै एक दिन अचानक विक्रम बिमार होवे, गुर्दे मांय दर्द। जोधपुर जाँच करायी जो राय दीनी आपरेशन करानो पड़सी। विक्रम री किडणी खराब होयगी ही। अहमदाबाद जाय आपरेशन करायौ। पण हरी करै सो होय। विक्रम रै आपरेशन खराब होवण सूं सौ बरस पूरा कीना।

''अपनी पहली सफलता के बाद आराम न करें क्योंकि अगर आप दूसरी नाकाम हो गए तो सब यही कहेंगे कि पहली सफलता आपको भाग्य से मिलेगी
-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

विमला विक्रम रै देहान्त पछै हिम्मत राखी सामाजिक रीत रिवाज पूरा कर गाँव सूं जोधपुर रैवास कर बच्चे सुखवीर ने पढ़ावण लागी।

कैवे दुःख रा पडू दिन होवे। विमला होशलो राख पढ़ाई आगे कर पी.एच.डी कीनी, अबै डॉ. विमला सूं पिछाण बणगी ही।

सुखवीर पढ़ाई मांय तो हो ही। तकनीकी पढ़ाई कर वा एयरफोर्स मायं फ्लाइट ऑफिसर बणग्यौ। सुखवीर री ट्रेनिंग पूरी होयां पछै दो तीन बरस अठे उठे ड्यूटी कीनी पछै उतरलाई बैस माथै पोस्टिंग होई। विक्रम रै उतरलाई सैन्ट्रल स्कूल मांय पलटी करायी।

उतरलाई आवंते ही विमला सुखवीर ने कयौं ''बेटा हालो आपां लेबर क्वाटरां मांय जठै क्वाटर नम्बर 6/7 है। सुखवीर उण पुराणे क्वाटर जाय देखयौं तो आँख्या सूं आंसूड़ा ढळकण लागग्या। हां थोड़ो सुखवीर ने भी याद आयो कै म्हारी माँ री उज्ज्ली यादा इण कमरा सूं जुड़ीयोड़ी है। सुखवीर रौ जलम इण कमरा 6/7 मांय होयौ हो बचपन रा चार पाँच बरस अठे ही बित्या है। कमरा नै निखरता दैखता पड़ौसी क्वाटर वाला पूछौ- ''मैडम आप इस पुराने कमरे को देख क्यूं री रही हो। मेडम चुप्प हा कैवे तो कैवे कांई। उज्ज्ली यादां एक दूजे री लारै आवंती जावै, मन मांय होवतो काश आज सुखवीर रा पिताजी अठे हेलौ देता। इतरो सोच डॉ. विमला आपरे हिवड़े री चितारणी नी सहन नी कर सक्या, फफक-फफक रौ पड्या। सगला अचरज कीनौ पण जद इतिहास ज्यूं सगळी बात सामनै आयी। तो अचरज होयो।

डॉ. विमला अर सुखवीर नै ढाढ़स बंधायौ, पाछा आपरै कमरै गया, घर में जाय विक्रम रै चित्र माथै अगरबती कीनी अर कैवण लागा देखौ म्हें आपा रे कमरा 6/7 गिया हा''

आंख्याँ फैरूं उज्ज्ली यादां ताजी कर टप-टप आंसू टपकावे। आप रै जीवन रै उतार-चढ़ाव मांय डॉ. विमला धीरज, हिम्मत राख'र शिक्षा जगत मांय मिशाल कायम कीनी।

रूपाराम नामा, जिप्सम हॉल्ट,
वाया कवास, बाड़मेर (राज.)
मो: 9414532949

आ राजस्थानी भाषा है

❐ नारायण दास जीनगर

आ राजस्थानी भाषा है।
म्हां सगला री आशा है।
या बडेरा रही बाणी है
या देवा रही कहाणी है
इण ने स्वीकार करो
या म्हारी अभिलाषा है
आ राजस्थानी भाषा है।
म्हां सगला री आशा है।

या जीवन री जोत है
या जीणै रो स्रोत है
कर्मवीरां री गाथा आ
प्रेरक अभिलाषा है
आ राजस्थानी भाषा है।
म्हां सगला री आशा है।

ऐ रंग-रंगीली रांता है
इणमें समाई बातां है।
टाबरां री गेलाई भी
बडेरा री आशा है
आ राजस्थानी भाषा है।
म्हां सगला री आशा है।

मातृभाषा रो मान करो
मन सूं अंगीकार करो
जन-जन प्रयास करे तो
जागेगी विश्वासा है
आ राजस्थानी भाषा है।
म्हां सगला री आशा है।

वरि. अध्यापक,
मरूधर भवन, गोपेश्वर बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर-334401
मो. 91414142641

मोट्यार

❐ गोपाल लाल वर्मा

कीरत सबकी मान
जनम सुधर जासी।
ठण्डो पाणी पाबो कीरत
आशीष मिल जासी।
गेले-गेले चाल
मंजिल मिल जासी।
बड़ा-बूढा कनै बैठबो कीरत
अक्ल मिल जासी।
जल्दी उठबो कीरत
भाग्य खुल जासी।
भाया-मायै बैठ
परिवार सुधर जासी।
दान करबो कीरत
भागवान बण जासी।
साफ सुथरो रहबो कीरत
रोग मिट जासी।
धीरज धारण करबो कीरत
क्रोध मिट जासी।
प्यासा की प्यास बुझाबो कीरत
शीतलता मिल जासी।
गुरुवां की सेवा करबो कीरत
ज्ञान मिल जासी।
कर्म करके कीरत
जमारो सुधर जासी।
भागबो दौड़बो कीरत
मोट्यार बणजासी।
गोपाल का गुण गाबो कीरत
आगलो जनम सुधर जासी।।

वरि. अध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. मूण्डवाड़ा,
सांभर लेक, जयपुर (राज.) 303328
मो. 9828432125

राजस्थानी

फीस

❒ मनोज कुमार स्वामी

पात्र परिचै

राजकमल : अेक छोटो टाबर जिण री पढ़ाई बिचाळै छूटगी
अमरीश : राजस्थानी रामलीला रा निदेशक
गुरुजी : रामलीला रो मंचन करवावणिया बडेरा
हेडमास्टर जी: सरकारी इस्कूल रा हैड मास्टर जी
आलोक सर : प्राइवेट इस्कूल रा संचालक
मनीष अर, अेक, दो, तीन और टाबर
सामग्री : कोई घणी कोनी चाहीजै। संभव हुवै तो अेक मेज, दो तीन कुरसी।

दरसाव अेक

गुरुजी : हाँ भाई टाबरां आसोज लागण वाळो है। अर आपणी मायड़ भासा री रामलीला खेलणे रा दिन थोड़ा ही रैहग्या है। आपांनै त्यारी सरू कर देवणी चाहिजै। थे संवाद सुणावो। आपणा निदेशक अमरीश जी थांनै रोल बांटसी।

सगळा टाबर : हाँ...हाँ गुरुजी म्हें तो त्यार ही बैठ्या हाँ।

अमरीश : पण अबकाळै आपां उणी कलाकार ने सामल करस्यां जिको आपरा बोल जबानी याद कर लेवैगो। बोलो त्यार हो के?

सगळा टाबर : हाँ जी त्यार हाँ।

गुरुजी : अेक बात और...कलाकार ने किस्यो भी रोल कदी करणो पड़ सके।

सगळा टाबर : हाँ जी....!

अमरीश : ठीक है तो आज आपां कैकयी-मंथरा संवादां रो अभ्यास करस्यां। कैकयी कुण बणनो चावै।

मनीष : म्हे बणनो चावूं।

अमरीश : थूं तो लारलै बरस मंथरा बण्यो हो नी?

मनीष : हाँ गुरुजी पण म्हे अबकाळै कैकयी रो अभिनै करणो चावूं हूँ।

अमरीश : ठीक है तो, अर मंथरा?

राजकमल : म्हें।

गुरुजी : थूं कर लैसी के मंथरा रौ अभिनै?

राजकमल : हां.....हां। गुरुजी

अमरीश : ठीक है तो। कैकयी आप रै मेहल मांय बैठी है। मंथरा रो आवणो हुवे। थूं कर दिखाणी।

राजकमल : (लकड़ी पकड़ने रो अभिनै करतो आवै) राणी सा.... के करो हो?

मनीष : (कैकयी) के बात है मंथरा, आज खासी मोड़ी आई नी?

राजकमल : (मंथरा) (गीत)
राणी सा म्हें के कैवूं,
बड़ै गजब री बात।
जद सूं म्हें आ बात सुणी,
म्हारा थर-थर कांपै गात।
थर-थर कांपै गात,
के कैवूं बात घणी दुखदाई है।
राजसभा में राजा जी,
मनमानी बात सुणांई है।
राम ने बणा दियो युवराज,
नां कणी जीभ हलाई है।
राजतिलक सारू राजा जी,
काल री तिथ ठैराई है।

सगळा टाबर : वाह...वाह....(ताळी बजावै)

गुरुजी : वाह...भई वाह राजकमल, तनै तो पूरो संवाद याद है। पण लय रो थोड़ो अभ्यास करणो पड़सी। कितवीं में पढ़ै थूं?

राजकमल : म्हें गुरुजी हुग्यो तो सातवीं में हो पण अबकाळै इस्कूल छोड़ दियो।

गुरुजी : क्यूं? छोड़ क्यूं दियो?

राजकमल : फीस कोनी भरीजी।

गुरुजी : क्यूं? किस्यै इस्कूल मांय पढ़तो थूं। किती फीस देवणी है?

राजकमल : प्राइवेट इस्कूल मांय पढ़तो गुरुजी, च्यार हजार रिपिया बाकी है फीस रा।

गुरुजी : तो थूं अबै घरै ही रैह्वै है?

राजकमल : हाँ गुरुजी! पापा कैवै आगलै साल आठवीं रो प्राइवेट फार्म भरवास्यां।

गुरुजी : आच्छो भरवायो रे। आठवीं तो बोर्ड री है, अर ईयां बिन्या पढ़ै थूं किंया पास हूसी? (केई देर सगळा चुप....कीं सोचै...) ईयां कर थारै खनै कोई कागद.. जियां प्रगती पतर आद है के?

राजकमल : हां, हां...पेली सूं ले'र सातवीं तांई रा सगळा कागद है।

गुरुजी : ल्या दिखांणी। देखा दिखांण कियां के ह् सकै। बावळा पेलां बतावणों हो। (राजकमल घरै जावै अर कागद लेयर आवै। गुरुजी ने देवै।)

गुरुजी : (कागद देखै) ठीक है म्हें काल दो-तीन सरकारी इस्कूलां मांय जायर पूछगे आवूं कै, थारो अेडमिसन किया होय सकै। जै नीं हुय सक्यो तो भी थनै सरकारी इस्कूल मांय सातवीं किलास मांय पढ़णै सारू बैठणै री मंजूरी तो ल्यार ही देस्यूं।

अमरीश : ठीक है तो आज इत्तो ई अभ्यास करस्यां। काल आपां ओजूं भेळा हुस्यां अर राजस्थानी रामलीला री त्यारी करस्यां।

(पड़दौ गिराणो) (परदो उठावणो)

दरसाव दूसरो

(हैड मास्टर जी बैठ्या है गुरुजी आवै)

गुरुजी : प्रणाम गुरुजी!

हैडमास्टर जी : प्रणाम...प्रणाम सा। आओ आज किने मारग भूलग्या?

गुरुजी : मारग तो के भूलग्या गुरुजी, अेक जरूरी काम आयो हो। जे कोई समाधान निसरै तो।

हैडमास्टर जी : हाँ....हाँ बताओ....बताओ म्हें के सेवा कर सकूं?

गुरुजी : गुरुजी आपणी राजस्थानी रामलीला रो अेक कलाकार टाबर है। पढ़ाई-लिखाई में घणो हुश्यार, स्याणो। पण, उण री पढ़ाई बिचाळै छूटगी।

हैडमास्टर जी : कियां?

गुरुजी : किंया के, गुरुजी, प्राइवेट इस्कूल मांय पढ़तो हो। फीस भरीजी कोनी अर अबकाळै बरस इस्कूल मांय बिठाण्यो कोनी। मा बाप जमा गरीब है।

हैडमास्टर जी : आपां च्यार पाँच रळमिलगे फीस रा रिपिया भेळा करगे जमा करवा देवां। कीं म्हे दे देवूं, कीं थे करो।

गुरुजी : ऊँ हूं.... प्राइवेट में तो अबै लेजावणो ही कोनी। थे सरकारी इस्कूल मांय दाखलौ करणै रो कोई उपाय करो।

हैडमास्टर जी : टी.सी. बिना कियां हू सकै गुरुजी? थे ही बताओ। आजकल तो ऑनलाइन हुयग्यो है सगळो काम, टी.सी. हुया तो म्हें झट देणी सी अेडमिशन कर देस्यूं।

गुरुजी : टी.सी. हुंवती तो फेर रोळो ही के हो। म्हे टाबरियै ने साथै ही लियावतो। सरकार रो शिक्षा मैकमो बियां तो घणो ही प्रचार-प्रसार करै है नीं कै कोई टाबर पढ़ाई बिन्या छूटणो नंई चाहिजै?

हेडमास्टर जी : बा तो आप री बात खरी है। पण जे जुलाई मे ल्यांवता तो कोई रास्तो निकाळता। अबै तो सितम्बर चालै है। टेस्ट हुग्या दोनूं। रिपोर्टा उठगी ऑनलाइन।

गुरुजी : कीं नां कीं उपाय तो करणों पड़सी गुरुजी।

हेडमास्टर जी : आपां ईया करां की हजार पाँच सौ म्हे देवूं, कीं थे दे देवो। कीं आपां उण प्राइवेट इस्कूल आळै खनै चाला हां उण सूं कम करवागे उण टाबर री टी.सी. ही मांग ल्यावां जिण सूं कागज रो काम पक्को हुज्यावै।

गुरुजी : ठीक बात है। तो चालो अबी चालां।

हेडमास्टर जी : आप बैठो आधी छुट्टी हूंवण आळी ई है पछै आपां चालां।

(पड़दो गिराणो) (पड़दो उठाणो)

दरसाव तीसरो

(प्राइवेट इस्कूल रा मालक बैठ्या है गुरुजी अर हेडमास्टर जी आवै)

आलोक सर : (कुर्सी सूं खड्यो हुयर) आओ गुरुजी आओ! प्रणाम! आज कियां आवणों हुयो?

गुरुजी : आलोक जी आया तो अेक जरूरी काम हा।

आलोक सर : हाँ....हाँ बताओ म्हें के सेवा कर सकूं? फोन ई कर देवता आवणै री के जरूरत ही।

गुरुजी : अेक टाबर है, राजकमल अर फीस नंई दे सकणै रै कारण बो अेस घरै रैहग्यो, उण री टी.सी. लेवण आया हा।

आलोक सर : के नाम है?

गुरुजी : राजकमल! अबकाळै सातवीं मायं हुयो है। उण रै परवार वाळा फीस कोनी दे सकै।

हेडमास्टर जी : म्हें इण वास्तै आया हां, कै थें उण री टी.सी. दे द्यो अर कीं ने कीं म्हें थानै म्हारै खनूं हाथ रो उतर दे देवां।

आलोक सर : नंई नंई इसी के बात है? थें आया, म्हारै सारू तो आ ई घणी बड़ी बात है। पेली चा पीयस्यां। (घंटी बजावै)

हेडमास्टर जी : नंई चा कोनी पीवां, आगै ई घणी गरमी है।

आलोक सर : तो कोई बात नीं सिकंजी पी लेस्या।

अेक टाबर आवै: हाँ सर?

आलोक सर : जा घर में, मेडम जी ने कैय'र, तीन गिलास सिकंजी बणा'र झलावै जी। (टाबर जावै)
हाँ सर, टी.सी. सीधी ही काटूं कै ऑनलाइन?

हेडमास्टर जी : आजकाल तो शिक्षा मैकमै रो सगळो काम ऑनलाइन ही हुग्यो है। टी.सी. थे आज री तारीख में ही काटो अर टेस्टां रा नम्बर भी चढ़ायर देवो जिण सूं म्हें उण रो दाखलो चालू सत्र मांय कर सकूं।

आलोक सर : ठीक गुरुजी म्हें बणावूं।
(कम्प्यूटर पर टी.सी. बणावै। इण बीचै अेक टाबर तीन गिलासां मांय सिकंजी ल्यावै। तीनूं पीवै।)

आलोक सर : ल्यो गुरुजी टी.सी.।

गुरुजी : वा सा आलोक जी। थांरो आभार, अेक टाबर रो भविष्य अंधेरे मांय जावणै सूं आप बचा लियो।

हेडमास्टर जी : (आपरी जेब सूं दो पाँच-पाँच सौ रा नोट काड'र देवै।) ल्यो अै म्हारी ओर सूं।

गुरुजी : हेडमास्टर जी पाँच सौ और दे द्यो म्हारै पांती रा भी। (हेडमास्टर जी पाँच सौ और देवै)

आलोक सर : नंई नंई गुरुजी रैहवण द्यो, थे आया नीं बस, फीस आयगी।

गुरुजी : नंई नंई म्हे राजी हुयर देवां हां, लेल्यो।
(आलोक सर पीसा जेब मांय घाल लेवै) (गुरुजी अर हैडमास्टर जी ने छोडण आवै)

(पड़दो गिराणो) (पड़दो उठाणो)

दरसाव चौथो

(हैडमास्टर जी अर गुरुजी आवै)

हेडमास्टर जी : ल्यो गुरुजी अबै कोई फिकर कोनी। बैठो। राजकमल रो अेडमिशन लगातार पढ़ेसरी के रूप मांय हुज्यासी अर किताबां ई अभी दे देस्यां।

गुरुजी : कोई टाबर ने भेज'र राजकमल ले बुलाइल्यो नीं, नेड़ै ही घर है।

हेडमास्टर जी : हाँ, हाँ, अबी ल्यो। अरे अेक जणो जाओ जिको राजकमल रो घर जाणै। उण ने बुलायर ल्यावो।

गुरुजी : (आप री जेब सूं पाँच सौ रिपिया काड'र देवै) ल्यो हेडमास्टर जी अै म्हारै पांती रा।

हेडमास्टर जी : नंई म्हे कोनी ल्यूं। थे इती सेवा करण लागर्‌या हो मायड़ भासा री। तो आ सेवा कीं म्हनै ही करण द्यो।

गुरुजी : धिन हो। हैडमास्टर जी। थां जिस्या शिक्षकां रै पाण ही शिक्षा सरजीवण है। (हाथ जोड़ै)

(पड़दो गिराणो)

पुराना बस स्टैण्ड, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर
(राज.)-338004
मो: 9414580960

राजस्थानी

नेगम नींद निवाण

❒ जेठनाथ गोस्वामी

पात्र परिचै

महारानी, महाराजा, राजमंत्री, फूल मालण, डावड़ियां-तीन

पहलो दरसाव

(मंच रौ परदौ उठतां ई राजमहल रै रनिवास रौ दरसाव देखणी में आवै। रीस में मुट्ठियाँ भींच नै अलळ-बलळ बोलती महाराणी अठी-उठी पांवडा भरती दीसै। कनै ई डावड़्यां हाथ जोड़्यां डरपती सी ऊभी थकी)

महाराणी : अरी ए डावड़ी! ऊभी ऊभी म्हनै कांई देखै। झटकै जा अर उण फूल मालण नै फटकारै लेय आव समझी?

डावड़ी : इसी कांई कोगत हुयगी महाराणी सा, उण बापड़ी फूल मालण सूं?

महाराणी : थूं उणनै तेड़ाय ल्यावै के थनै ई भेळी ई सजा सुणाय दूँ?

डावड़ी : हुकुम महाराणी सा (डरपती थकी वहीर हुय जावै। फूल मालण सागे मंच पे पाछी आवती थकी)

फूल मालण : घणी खम्मा महाराणी सा (डरपती सी) म्हनै किंयां याद करी?

महाराणाी : (रीस में पग पटकती) अरे, थूं फूल मालण है के सांप्रत नागण?

फूल मालण : जिकी भी हूँ आपरी डावड़ी हूँ महाराणी सा!

महाराणी : थूं म्हारी डावड़ी थोड़ी नै दुसमी घणी है दुसमी।

फूल मालण : हे रामजी! पण म्हारौ कसूर तो फरमावो, महाराणी सा!

महाराणी : चोरी नै सीना जोरी? देख म्हारी कँवली काया नै देख! सगळै शरीर जाणे लीला डाम सा ऊपड़्या।

(रुकतां कराहतां) पूरी रात नींद नैड़ी ई नी बावड़ी, पसवाड़ा फेरतां फेरतां ई परभात हुयग्यौ।

दूजी डावड़ी : इसी कांई अण जोगती हुयगी महाराणी सा! जीव तो सोरो है आपरौ के मन में कोई चिंता वापरगी?

महाराणी : अरे नहीं रे! मरण जोगी इण फूल मालण म्हांरी सेज पे फूलां सूं डांखळा न्यारा नहीं कर्‌या।

(रुकतां-मूंडो बिसूरती) काम चोर कठै री ई। फुलड़ां रा डाखळां म्हारी कँवली काया में चुभ-चुभ नै लीलां उपाड़ दी। ऐ देख!

(महाराणी डावड़्यां नै शरीर पे लीलां बतावै)

तीजी डावड़ी : तनै कीं ठा'ई है मरजाणी मालण के आपां रा महाराणी सा रौ डील कितरो कंवळो है? फूल पांखुड़्या सूं ई कंवळौ।

फूल मालण : (हाथ जोड़ती) सौ ई गुनाह माफ महाराणी सा! म्हैं तो फूलां री सेज सूं सगळा डांखळा एक एक करनै बरोबर न्यारा कर दिया हा! ऐ देखो म्हारा हाथां री पोरां ई गुलाब रा फूलां सूं कांटा न्यारा कर-कर नै बींधीजगी (आपरां हाथां री पोरां बतावै।)

महाराणी : (बिदकती थकी)- अरे! तो म्हारी पूठ अर थारी आंगळयां री बरोबरी करै है? ठा, कोनी तनै उण दिन रनिवास रा ढोलण जी कांई गावै हा?

सगळी डावड़्यां (एकण सागे) म्हें भी तो सुणां महाराणी सा फरमावौ।

महाराणी (नखरा करती ओळ्यां यूं बोलै)-

म्हांनै पिवजी कूटिया लूंगे लक्कड़ियेह।
म्हांनै पिवजी मारिया चंपे री कळियेह।।

(अर सरमीजती आधी पूठ फेर लेवै)

फूल मालण : (आपरौ बचाव करती) पण महाराणी सा, बिना डांखळा फूल विकसै ई तो कोनी!

महाराणी : म्हैं कीं नी सुणूं। थनै सजा दियां ई थारी अक्कल ठिकाणे आवेला समझी?

फूल मालण : माफी महाराणी जी माफी। आप सिवाय म्हारौ कुण है- ऊपर आकाश नै नीचे धरती। (हाथ जोड़ पगां पड़ै)

महाराणी : अबे काले ठा पड़ जासी, समझी? सगळी काम करौ आप आप रौ, चालौ।

(परदो पड़ै)

दूजो दरसाव

(महाराजा रौ दरबार लाग्यो थकौ। महाराणी जी महाराज कनै आय बैठै।)

महाराजा : तो, मंत्री जी शुरू करौ आज रा कामकाज।

महाराणी : (बिचाळै ई बोलती थकी)-ढबो महाराजा! सगळां सूं पैंला म्हारी बात रौ न्याव करो।

महाराजा : खरी बात थांरी। फरमावो, कांई चावौ?

महाराणी : इण फूल मालण नै देखौ। म्हारी सेज पे फूलां सागे आधो आध डांखळा टाळ्या ई नीं। जिणसूं सगळी रात म्हैं सोय नीं सकी- अर फूलां रा डांखळा चुभ-चुभ नै म्हांरी केसर कंवळी काया में लीलां पटक दी, महाराज!

महाराजा : बात तो थांरी विचारण जोग। पण इण सारू म्हनै थांरी भी परख करणी पड़सी।

महाराणी : कांई परख रैयगी म्हांरी, महाराजा!

महाराजा : सवारे सूं पूरो दिन सगळी डावड़्यां री छुट्टी। म्हारा सगळा काम अर सेवा महाराणी सा, आप करौला।

महाराणी : आ तो मरजादा सूं बारै री बात हुयगी। पण म्हैं आपरी महाराणी

हूँ-आपरी बात तो मानणी ई पड़सी।

महाराजा : नहीं, नहीं, पै'ला आप इण फूल मालण नै सजा तो सुणायद्यौ।

महाराणी : इण फूल मालण नै सगळी रात कांटां री खाटली पे सूणो पड़सी, जदई म्हांरौ काळजो ठरसी महाराजा!

महाराजा : ठीक है, दो डावड़्यां इण री पूरी निगे राखैला। बीजो काम काले सारू। (महाराजा वहीर हुय जावै)

(परदो पड़ै)

(तीजो दरसाव)

(राजमहल रै अंतःपुर रौ दरसाव। महाराजा रा हुकम मुजब महाराणी घर रै काम सूं बाथोटा खांवती दीसै।)

महाराणी : (पाणी री मटकी भरनै ल्यावती थकी)- महाराजा रौ औ अणूतो न्याव। राजमहल री महाराणी होय पाणी ई म्हैं भरूं। (इतरा में महाराजा रौ आवणो)

महाराजा : थुथको थांनै महाराणी जी! पणिहारी रा रूप में आप रौ रूप तो औरूं निरखतो लागै।

महाराणी : (रीसां बळती आडी आंख्यां सूं) म्हारी तो कमर रैयगी पाणी अर बुहारी कर-कर नै अर आपने मसखरी सूझै?

महाराजा : अरे यूं कांई बिदकग्या, महाराणी सा! म्हनै तो कलेवो करणो हौ आज थांरा कंवळा हाथां सूं रेशमी रोटी रौ झारौ करण रौ आणंद आय जासी।

महाराणी : हे राम जी, या माळा तो जबरी गळे पड़ी।

महाराजा : अर हाँ, आज थारै पीवर सूं थांका वीरो सा ई पधार रह्या है। वां रै सारू ई दोय तीन तेवड़ बेसी बणावजो सुण्यौ?

महाराणी : हाँ, हाँ सुण्यौ। वीरा नै ई आज आवंणो हौ।

(रसोई रा के ई कामां में उळझती ऊंची नीची हुवतां देखीजे।)

(परदौ पड़े)

चौथो दरसाव

(रनिवास में महाराजा रौ आवणौ महाराणी हाथ धोवती देखीजे)

महाराजा : महाराणी सा! थांरा वीरा नै तो थे थांरा हाथां सूं मनवार कर-कर नै जीमाय, पछै दूजो काम देखजो।

महाराणी : अरे नहीं नहीं महाराजा, दिन पूरो काम कर करनै म्हारी तो कमर ई दोवड़ी हुयगी है। पोर पोर टूटै है, घणो थाकेलो है। थे थांरे जीमता रहजो। (रुकतां टसकतां) म्हंनै अबे तो पसवाड़ो आडो करण द्यो (बारै जावे)

महाराजा : जैड़ी थांरी मरजी महाराणी सा! (एक डावड़ी नै आवाज देवतां) अरे, कोई नैड़ो है अठै? जाय देखो तो महाराणी जी किण में कठै अळूझग्या?

डावड़ी (हाजिर हुवती)- हुकुम अन्नदाता। महाराणी जी तो जाजम पे ई आडा पोढ्योड़ा दीस्या। स्यात रुसणो कर लियौ दीसै।

महाराजा : (हँसता थका) नहीं, नहीं, या बात कोनी। दिन पूरो काम कर कर नै थाकेलो इतरो चढ़ग्यो के वां नै तो पड़तां पाण नेगम नींद आयगी। महाराणी जी नै जाजम पे ई पौढ़्या रैवणद्यौ। आपो आप ऊठ जासी।

(रनिवास सूं बारै जावंता दीसै)

पाँचवो दरसाव

(राजमहल रौ दरबार सज्यौ थकौ। महाराजा रौ आवणों अर राज सिंघासण पै बैसणौ)

महाराजा : तो, राजमंत्री जी! उण फूल मालण नै हाजिर करौ सगळा जणा देखै-कांटां रा खाटला पे बापड़ी रौ शरीर कितरो बेजा बींधीजग्यौ। पाटा पीड़ करणी पड़ जावै तो राजवैध नै ई तेड़ाव ल्यावौ।

राजमंत्री : निरांत सूं सुणो महाराजा दोन्यूं डावड़ियां बतायो के वा बापड़ी फूल मालण तो पूरो दिन घर काम अर राजमहल रा बाग री बेगार कर-कर नै इसी बेजा थाक'र कायी हुयगी के कांटां री खाटली पे पड़तां पाण ई जाणें घोड़ा बेच सोयगी। घणी अजोगती बात हुयी महाराजा!

महाराजा : (महाराणी कानी देखता कैवै)- तो, सुण्यौ महाराणी सा! काम रौ चाम सूं कोई मेळ नी करीजै। सगळी ठौड़ काम व्हालो हुवै, चाम वालो नहीं। अर नेगम नींद तो उणी नै आवै जो पूरे दिन डील-तोड़ हाड़-फोड़ मै'णत करै अर पूरो कायौ हुय जावै।

महाराणी : (लचकाणी पड़ती थकी)-हाँ, महाराजा, आप साव सांचा। म्हैं ई काले पूरो दिन काम कर नै इतरी थाकगी के म्हनै फूलां री सेज रौ ध्यान ई नीं र्‌यौ। (शरमीजती)-अर जाजम पे पड़ी जठे ई ऊँघीजगी। सांची बात है- भूख नी जोवै सूख्योड़ो अर नींद नी जोवै ऊकरड़ो।।

महाराजा : अबे ज्ञान हुयौ आपनै नेगम नींद रै निवाण रौ? (रुकतां थका)- अरे, माफ कर द्यौ बापड़ी उण फूल मालण नै। उण सागै थैं भी थोड़ो घणों तो डील नै दोरो करता रैवौ जिण सूं चंद्रलोक री परियां आय आपनै पौढ़तां पाण नेगम नींद री गोद में सुवांण दै- समझ्या?

महाराणी : सोळह आना समझ आयगी महाराजा!

डील तोड़ मै'णत करै, टपकै गाभां सूं परसेड़ो।
भूखां नै भावै सूक्योड़ी, ऊंघ न देखै ऊकरड़ो।।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बालोतरा (राज.)
मो: 9828926826

दस्तखत

❐ पूर्णिमा मित्रा

घर रै कनलै बैंक मांय खातो खुलवाण रो पक्को निस्चै कर नीलिमा बठै जाय पूंची। बठै बैंक रो बाबु बीनै एक फॉरम पकड़ाय दियो। फारम भरता बगत बींरी निजर गवाह रैं दस्तखत करबा वाळी ठौड़ माथै पड़ी। बां अठै सोधन लागी के कोई सैंधो मिनख मिल जावै। चाणचक बींरी निजर बैंक मनीजर सूं बंतळ करता मगनजी माथै पड़ी। बां तावळी सी उणारै कन्नै जाय'र बोली ''अंकल जी इण बैंक मांय म्हारै किरोबी घरवाळां रो खातो कोनी। प्लीज आप गवाह री जिग्या आपरा साइन कर देवो तो म्हारो भी अठै खातो खुल जासी। नीं तो म्हारो आकाशवाणी रो चैक कीं काम रो कोनी रैयसी।'' मगन जी बीनै टरकावतां बोल्या ''कैश काउंटर कन्नै चंचल चांदनी ऊभी है। बी सू साइन करालै जा।''

बा चंचल चांदनी कन्नै जाय'र घणे उमाव सूं बोली- ''चाँदनी जी प्लीज अठै साइन करज्यो।'' पण चाँदनी जी तो आपरी साथन नै कविता सुणावण मांय मस्त ही। कीं ताळ मून रैय'र बा हिम्मत करऽफॉर्म पकड़ावती बोली- 'साइन प्लीज।' कीं सोच परी चाँदनी निसानसो

साइन कर बींनै फॉरम पूठो पकड़ाय दियो।' हरख सूं मुळकती बां फारम बाबू नै झलाय पास बुक मिलण री खुशी मांय मगन हुयगी। चिणक ताळ पाछै बाबू मैणो मारतो बोल्यो ''ओ तो राइट रो निशान बळै है। दस्तखत कठै? बैंक मांय प्रॉपर गवाह रा साइन बिना खातो कींकर खोलद्यूं।''

आ सुणता ई बींरो मन घायल पंछी दाई कुरळावण लाग्यो। बीं री आंख्या आली हुयगी। बीनै लाग्यो के पासबुक मांय चैक रा रिपिया जमा हुय जावंता तो बां स्कूल री फीस भर सकती ही। बीं री हालत देख स्टूल माथै बैठा रतनू जी सूं रैयो नीं ग्यो।

बै बींरै कन्नै जायर बोल्या 'ल्या म्हूं साइन कर दूं।' नीलिमा नै कोतुक सूं आपरी कानी देखतां रतनू जी बोल्या'' केई म्हीनां पैली थारै घर रै सामी म्हारै कागज रो ठंगों फाटग्यो हो। उण में सूं चावल खिंड'र माटी में रळग्या हा। तद थूं म्हनैं चालनी अर कपड़े री गोथळी लाय दीन्हीं। बो तो म्हारो फरज हो अंकलजी। ''बां शरमांवती सी बोली। ''इण बैंक मांय थारो खातो खुल जावै। जिस्यूं थूं टैम सूं चैक जमा करा सकै ओ बीं म्हारो फरजबणै है।'' इत्तो केयर रतनू जी हरख सूं दस्तखत करण ढूकग्या।

ए-59, करणी नगर,
बीकानेर (राज.)-334003

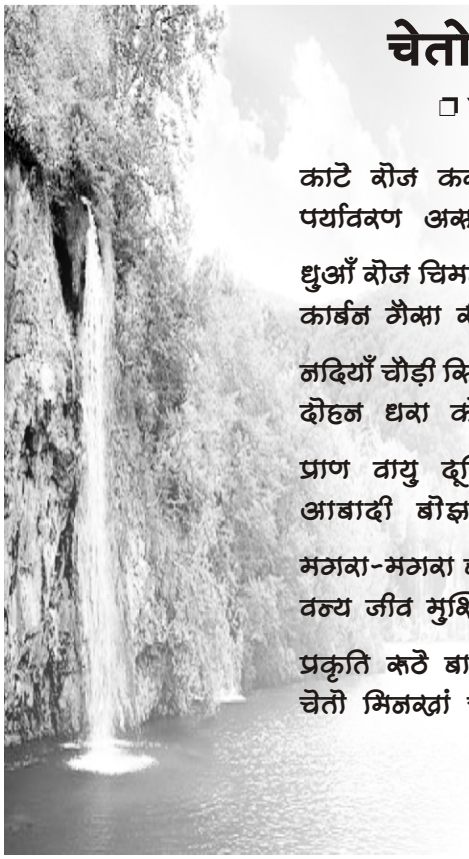

चेतो मिनखां चेतो

❐ सत्य नारायण नागौरी

काटे रोज करखड़ा भला, हरियाली मिटाय।
पर्यावरण असर दिखे, जलवायु बतळाय।।

धुआँ रोज चिमन्या उगळै, प्रदूषण बढ़तो जाय।
कार्बन गैस्या री परत, ओजोन छेद करवाय।।

नदियाँ चौड़ी सिमटगी, प्लास्टिक कचरो माय।
दोहन धरा कोख री, संकट जल आय।।

प्राण वायु दूषित घणी, दम घुटे संसार।
आबादी बोझ बढ़े, कुदरत पड़े मार।।

मगरा-मगरा बक्ती बसे, नहीं रूख जंगलात।
वन्य जीव मुश्किल में, दर-दर भटके रात।।

प्रकृति रूठे बार-बार, फिकर नहीं है आज।
चेतो मिनखां चेतो, विनाश आँधी आवाज।।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केलवाड़ा,
राजसमंद (राज.)-313325
मो: 9610334431

लगन

❐ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

लगन लगाजै करम में
रखजै आत्मविश्वास
मनै मिलैलो बड़ फल
मतना लगाजै आस
सुख-दुख जीवन में सदा
रहवै जियां दिन-रात
अयां सिया छै गुणीजन
सोच-समझ की बात
बच्चां में भगवान छै
दर्शन होला आप
शिक्षक बण स्कूल म
सदा पढाजै धाप
करम गति का फैर छै
सोच करै क्यूँ आज
टैर सुणैलो सांवरो
सबका सुधरे काज।

प्रधानाचार्य
श्री सर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसा बोहरा,
झोटवाड़ा, जयपुर-302040 **मो: 8946838583**

म्हारी भासा

❐ रतन लाल जाट

जनम पायो म्हां लोगां,
अठै राजपूतानां माय
सगळा देसभर रो काळजो,
म्हांरो राजस्थान कह्यो जाय।।

म्हां लोगां रै मातर-भासा,
राजस्थानी कह्यी जाय
कूण है? जो मानता दिलाय

भारत देस रा बरगद रो
मूळ मान्यो जावै राजस्थानी
ई मूळ रो काँई मतलब है?
अठै नान्ही-नान्ही डाळयाँ ने
तो मिलग्यो है मान।।
अर् म्हैं राजस्थानी,
हरबार हुया हाँ बदनाम।
ज्याँणै म्हैं आया हाँ,
दूजा देस रा मैमान।।

भारत माँ री आंगळयाँ
फोरी-मोटी भासा कही जाय।
अर् म्हारी भासा राजस्थानी
दाँयों अंगूठो मान्यो जाय।।

कूण है अरच्यो? ज्यो संविधान सूं
म्हारी भासा ने पिछड़ाय।
आज सूं म्हे धारी है कलम
मातर-भासा में कछु लिख पाय।।

राजस्थानी एक ठावी भासा,
ज्यो फैली है यूरोप-अमेरिका माय।
आ क्यूँ पाछै रहगी आपणी,
दूजी सगळी देसी भासाया।

दुन्यांभर का कोणां-कोणां में,
जा बसग्या है राजस्थानी भाया
अबै तो सुणो थाँ,
म्हारा गेरा काळजा री बात।।

संविधान माय अबें ई जै,
थाँ दरजो दिलवाय।
अर् देर नी करो,
नी तो समर मच जाय।।
वीर-जौद्धा रा पूत म्हैं,
नी रूकांला तकरार उठाय।।
आन-बान-सान रे खातर,
प्राण निछावर कर जाय।।

सगति-भगति अर् सिणगार रे माय।
कुंण करे ई री बराबरी
सगळा ने बताय।।

भारत माँ री बेटी राजस्थानी भासा,
आज सबसूं मोटी कही जाय।
संविधान माय अबै ईनै,
थाँ दरजो दिलवाय।।
आज सूं म्हे धारी है कलम
मातर-भासा में कछु लिख पाय।
अबै देर नी करो,
नी तो समर मच जाय।।

गाँवः लाखों का खेड़ा,
पोस्ट-भट्टों का बामनिया, तह. कपासन, चित्तौड़गढ़
मोः 9636961409

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

❐ नीलम पारीक

बेटी है मायड़ बाबुल रे, काळजिए री कोर।
पिरो देवे मनड़े रा मोती, ऐसी है या डोर।।

भोळो सो मुखड़ों,

उळझी अलका,
तितली री पाख्यां सी पलकां,
मूँदयाँ होज्या रातड़ली,
खुल जाया होज्या भोर...
पिरो देवे मनड़े रा मोती ऐसी है या डोर।

घर में माँ रो हाथ बंटावे,

पढ़ने स्यूं भी मन न चुरावे
चुप-चुप फर्ज निभावे
करे न कोई शोर...
पिरो देवे मनड़े रा मोती, ऐसी है या डोर।

पढ़-लिख कुल री शान बढ़ावे,

ना गरवीजे, ना इतरावे,
इक दिन उड़ जा सासरिए
ज्यूँ ईसर लारे गौर
पिरो देवे मनड़े रा मोती, ऐसी है या डोर।

सासरिए ने भळ अपनावे,

माँ बाबुल भी कद बिसरावे,
जद जद पीवर याद आवे,
हिवड़े में उमड़े लोर...
पिरो देवे मनडै रा मोती, ऐसी है या डोर।

सब समझो सबने समझाओ,

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
बात कहूँ हूँ साँची,
थे सुणल्यो करगे गौर...
पिरोदेवे मनड़े रा मोती, ऐसी है या डोर।
बेटी है मायड बाबुल रे, काळजिये री कोर।
विशे देवे मनड़े मोती, काळजिये री कोर।।

अध्यापिका
केसर देसर जाटान, बीकानेर

आ धरती धवळै धोरां री

❐ मदन सिंह राठौड़

आ धरती धवळै धोरां री,
आ धरती अमर बलिदान री।
कण-कण गूँजै कीरत गाथा,
रणबंकै राजस्थान री।।

अखियातां बातां ख्यातां में,
रजवट री समर कहांणी है
चूंडावत नै सिर सूंप दियौ,
हाडी री अमर सैनांणी है।।
ऊजळ धरती रै आंगणियै,
गूँजै गौरव रा गान जठै।
पन्ना गोरा पदमण रौ,
साखी अमर बलिदान जठै।।
जौहर री परझळती झाळां,
जुग जुग जिणनै जांणी ही।
मान सती राखण मरजादा,
रूठी ऊमादै रांणी ही।।
चहुंखूँटां चावी जस बातां,
इण धरती रै अभिमान री।
गूंज रही कण-कण में गाथा,
रणबंकै राजस्थान री।।

सिर कटियां लड़ता समहर में,
कीरत जूंझारां खाटी ही।
गिर सुमेल अजलग गरबीजै,
हिंदवाणी हलदीघाटी ही।।
जयमल पत्ता जैसा कूंपा,
अर गोरा बादळ जसधारी।
देखौ पातळ आल्हौ दुरगौ,
सोनगरौ वीरम सतधारी।।
सीस हथेली जस लूटणिया,
अणगिणत वीर जूंझार हुवा।
रजवट रा मांझी रखवाळा,
रणबंका नर जोधार हुवा।।
परमवीर शेखावत पीरू,
अर समर वीर सैतान री।
सूरां रै सूजस री गाथा,
रणबंकै राजस्थान री।।

खागां रणखेतां खड़की ही,
मंडियोड़ौ वीरत मान जठै।
वीरां जूंझारां सतियां रा,
थपियौड़ा थिरकस थान जठै।।
अजै'स मगरा कण कण माटी,
चेतक री टापां गूंजै है।
बळबंकौ चांपावत बल्लू,
अरियां री छाती धूजै है।।
कुण नीं जांणै कमधज कल्लै,
मूंछां पर ताव लगायौ हो।
अमरसिंह री अमर कटारी,
भुजबळ सूं अरि भगायौ हो।।
सूरजमल रै जस री बातां,
है चहुकूंटा में शान री।
इण ऊपर उजळ अखियातां,
रणबंकै राजस्थान री।।

आबू शिखर अड़ै अंकासां,
गढ़ चित्तौड़ौ जग चावौ।
रणथंभौर रुड़ौ रखवाळौ,
किलौ कुंभळगढ़ रौ ठावौ।।
जोहर नवकूंटौ जोधांणौ,
गाइजै आऊवौ जस गीतां।
सिवांणौ कीरथंभ सूरां रौ,
राखी गौरवमय सब रीतां।।
इण रौ जूनागढ़ जैसांणौ,
गढ़ वो गागरोण गरबीजै।
साकै जौहर रा साखीधर,
सूरां! रगत सूं रंगीजै।।
साख भरै है गढ़ ऊंटाळौ,
साहस स्वाभिमान री।
गढ़ कोटां री कीरत गाथा,
रणबंकै राजस्थान री।।

रामापीर कहै अवतारी,
बड़भारण मरूघर री मीरा।
गावै पाने रा परवाड़ा,
परजा धावै पांचूं पीरां।।
जसनाथी दादू जांभै री,
ग्यान-गंगा री इमरत वांणी।
पीपै प्रगट दया प्रकासी,
रूड़ी रूपादै वा राणी।।
देसणोक री करणी माँ,
जन-जन तेजै नै ध्यावै है।
करमा री करणी है साची,
भगवान खींचड़ौ खावै है।।
संतां अर देवां री वांणी,
तंदूरां रै तांन री।
गाँव-गाँव में गूंज सुणीजै,
रणबंकै राजस्थान री।।

ईसर पीथळ मीसण जिसड़ा,
सतवादी कवि सिरमौर हुवा।
कलम कटारी कर झेलणिया,
साहित-मोती चहुंऔर हुवा।।
इण धरती री कीरत गावां,
आ धरती धोरां मोरां री।
मगरा भाखर तालरियां,
आ काचर बोर मतीरां री।।
इण धरती रै हरियल खेतां,
निपजै सातूं ही धान सदा।
डग-डग पर डिंगळ डणकंती,
सुणीजै गौरव-गान सदा।।
पग-पग पर पळकै पूतळियां,
सूरां रै सम्मान री।
गजब अनूठी गौरव गाथा,
रणबंकै राजस्थान री।।

व्याख्याता (राजस्थानी साहित्य)
सोलंकिया तला, तह. शेरगढ़, जोधपुर (राज.)-342025
मो: 9982713941

आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार

❐ ओमदत्त जोशी

आज राखी रो औसर आयो,
म्हारो मनड़ो घणों हरसायो।
पहनै बहना हीरा-पन्ना रा गहणा
म्हारी पियारी मूंगी बहणा।

ममता री उमड़ी है मीठी धार,
आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार।

चंदा ज्यूं मुखड़ो थारो पियारो,
घणो दुलारो सब सूं नियारो।
चौपड़ सूं, रौली रो तिलक लगायदे,
अकसत-चावल सूं लिलपट चमकायदे।

ले, आ ओढ़ले मोटा री चूंदड़ी चमकदार,
आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार।

इण हाथ माथे बाँध दे रकसा रो बंधन,
करूँ बहना थारो घणो-घणो वंदन।
बहना! टूटे नी आपणा पनेम री डोरी,
भाई-बैण री अमर राखैआ जोड़ी।

सुहावणी लागै थारी झांझर री झंकार,
आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार।

करमावती नै निजर आयगी अबखाई,
हुमायूं नै बणायो राखी बंध भाई।
कर्‌या आपरा करतब सुखदाई,
काचा सूता रा डोरा मांय कितरी लुकलाई।

दुसमण नै सामै पेली कर्‌यो खबरदार,
आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार।

हे बहना! अबखायां मांये थूं मत जी जै,
हेळा रा हमचै, बेगो बुलाय ली जै
आधी रात रा, आगो आवेलो थारो भाई,
ओ तन-मन-धन आज निछावर थारै तांई।

ओ है आज थारे सामै साँचो करार,
आज रंगीलो राखी रो त्यूंहार।।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
साहित्य सदन, वर्धमान कॉलेज के पास, ब्यावर,
अजमेर (राज.)-305901 **मो: 9309353637**

प्यारो राजस्थान

❐ बिहारी लाल

म्हानै घणो सुहाणो लागै जी यो प्यारो राजस्थान।
प्यारो राजस्थान रै रंगीलो राजस्थान।।
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

सियाळो सीकर भलो कोई उन्नाळो अजमेर-2
मारवाड़ नित को भलो कोई सावण बीकानेर
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

उदयपुर झीलों की नगरी, जयपुरियो गणगौर-2
घाट किला अजमेरा, अठै बाँको गढ़ चित्तौड़
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

नागौरी बळदांनै जोड़ै सगळो हिन्दुस्तान-2
मकराणे रो भाठो कोई साम्भर लूण री खान
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

शेखावाटी मैं सैनिक निपजै गंगानगर को धान-2
नरहड़ बाबो सीख सुणावै, सालासर हनुमान
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

मीरा हंसा कर्मा जोधा, हुई देवियां महान-2
जौहर में ज्वाला चमकै, पदम करै अस्नान
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

मेहन्दीपुर बालाजी म्हारै, पुष्कर रो अस्नान-2
मानगढ़ का डूँगर राखै, गोविन्द गुरु को मान
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

गोगामेड़ी अर भरतरी का मेला अपरम्पार-2
दूर-दूर से आवै जातरू करते जय-जयकार
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

कोटा बूँदी झालावाड़ की शोभा बड़ी निराली-2
साँवलिया जी और त्रिपुरी जठै नित हुवै दिवाळी
म्हानै घणो सुहाणो लागै ऽ ऽ ऽ ऽ.....

दादूपंथी, जैनी नागा, पीर फकीरों का धाम-2
महाराणा और पंच पीरों का जुग-जुग जाणै नाम।

निरालो प्रदेश है म्हारो हिन्दुस्तान की शान-2
शीश कटा कै रूँख बचादे नारी शक्ति महान
म्हानै घणो सुहाणो लागै जी यो प्यारो राजस्थान।

व्याख्याता
लाठ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मण्ड्रेला, झुंझुनूं
मो: 9982410994

चालो नी चालो....स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो

❒ जी.आर. गुर्जर 'देवेन्द्र'

चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....

चालो नी भाईडों रे....चालो नी बहिनों रे.......
शिक्षा सुं बणांला सुजान..... भाईडों रे.....
शिक्षा सुं सुधरेलां समाज......बहिनों रे...........।टेर।।

पाटी बरता थैलां रखल्यो...2; संग सहेल्यां साथ लेल्यो....2।
पढ़ल्यो नी भाईड़ो रे.....पढ़ल्यो नी बहिनों रे......
शिक्षा सु बणाला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सु सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो..स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।1।।

ऊँच नीच को भेद मिटाओ....2; छुआछूत न दूर भगाओ...2।
चेतो नी भाईड़ो रे.....चेतो नी बहिनों रे.....
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।2।।

बाल विवाह न बन्द कराओं....2; टाबरां न आखर पढ़ावो..2।
समझों नही भाईड़ों रे.....समझों नी बहिनों रे........
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सु सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।3।।

नशा-पता न बन्द कराओ....2; बीमारियाँ न दूर भगाओ...2।
संभळों नी भाईड़ों रे....संभळों नी बहिनों रे....
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।4।।

अमल शराबाँ बन्द कराओ.....2; बर्बादी सुं थे बच जाओ...2।
सुधरों नी भाईडों रे....सुधरों नी बहिनों रे.....
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।5।।

मृत्यु भोज न बन्द कराओ....2; सगळा न बातां समझाओ...2।
जागों नी भाईड़ों रे....जागों नी बहिनों रे......
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।6।।

साफ सफाई घणी राखणो....2; जिवड़ा न सुथरो ही राखणो...2।
निखरों नी भाईड़ों रे.....निखरों नी बहिनों रे......
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।7।।

आपस म मिलजुल कै रहणो...2; देवेन्द्र री सीख समझणो...2।
सुणल्यो नी भाईड़ों रे.....सुणल्योनी बहिनों रे......
शिक्षा सुं बणांला सुजान......भाईड़ों रे.....
शिक्षा सुं सुधरलां समाज......बहिनों रे...........।टेर।।
चालो नी चालो...स्कूलां म चालो, पढ़बा न चालो....।।1।।

वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वडेरवास (पाली)
मो: 9414348866

भणावजू

❒ भाविक कुमार लौहार 'भावी'

मारसा, तमे तो भणीजग्या
अमारे छोरे ने भणावजू,
भणी-गणी ने मोटो थई
नौकरियें लगवाइजू।

मारसा, तमे तो सुदरग्या
पण मारा सोरा ने सुदारजू,
अभण रई नी जाय, छोरो
एटले, बे-च्यार डांट मारजू।

नहारे नी आवे तो
खोटियें तमे धमकावजू,
भणी-गणी ने मोटो थाय
एवो तमे बणावजू।

मोटी-मोटी चौपड़ियें
खोपड़ी में बेवड़ावजू,
मारा सोरा कैणानी मासे
तमे नने बतलावजू

छोरे ओरे फरतो फरे तो
सकरी तमे समझावजू,
ऐणा वाय भी नी माने तो
कमरा में खोटे बेवाड़जू।

सोरो, सोरी वाय लागे तो
रास्ते-रास्ते बेवाड़जू
भणी-गणी ने मोटो थई
नौकरियें लगावजू।

पीठ, तह. सीमलवाड़ा,
डूँगरपुर (राज.)-314406
मो: 7568099345

लेखणी

❐ दशरथ सिंह खिड़िया

करणी सदन, पृथ्वीराज जी का थड़ा,
मेड़ता सिटी, नागौर
मो: 9461155794

मत थाक ऐ लेखणी
चालणौं है हाल
अणथक थन्नै।
ऊभौ है सांमी थारै
अथाग सागर,
पड़्यौ है आखो
भूगोल।
लिखणौं है मानवी सभैता रो
इतिहास अर
लिखणी है
किरतां जुगां-जुगां री।
सिमट्यौड़ी थूं फकत
तीन आखरां में
पण!
समायौड़ौ है आखौ
ब्रिरमाण्ड
थारै मांय।
पोखीजै थारै सूं
जग रा सै गरंथ,
लिखणां री परकत थारी
पंण!
लिखणां सूं थूं नीं
थाकै।
जद विसराम नीं
सूरज अर
चांद नै
तो कियां विसराम
करैला थूं।
थंम जावैला जद
सूरज रौ
ऊगणौं आथणों अर
मिट जावैला वजूद
इंण धरा रौ
जांण सी उणीं दिन
मिलैला
विसराम थनैं।

गाँव का बचपन

❐ नीलू कंवर शेखावत

दादा की परभात्यां सुणता पाण आँख खुल ज्याती
झीणा हरजस गाती दादी दूध कटोरो ल्याती
झागां की मूछ्यां बण ज्याती चोटी मोटी करता
गट गट पीता भाई न बेण ज्यावे राजा डरता
पाटी कॉपी और किताबां थेला मं जंचाता
कॉपी र पाना रे बीचे बिद्या न दबाता
चूना री डब्बी मं बड़ता का टुकड़ा भर लेता
नीची नाड़ देख साथी की झट काड दे देता
मोतीड़ो लखणां को लाडो लारे लारे आतो
दांत पिसती मैडम म्हांपर बो पेली डर ज्यातो
मैडम म्हारो म मोती को कान दोलड़ा करता
दूजे दिन इस्कुल आबां उं पेली हबक्यां भरता
कक्का बारक्खड़ी न पूरे दिन गीतां मं गाता
तो भी मास्टरजी स्यूं दिन का दो-दो डंडा खाता
लेय लटुंबा खेज बांठखा क ऊपर चढ़ ज्याता
धर धम्म भी हु ज्याता तो भी आंसू तक न ल्याता
गाडां लारे लूंब-लांबकर कोसां तक ज्याता
इज्जत की चिंता कूण न ही हिंडोळयां खायाता
अब मं पाच्छे फिर देखूं हूं जद म्हारो टाबरपण
घी-गुड़ की रोटी सी लागे है मन बो बाळकपण
कूड़ कपट को नांव न नेरो सुख की नींदां सोता
क्यूं म्हे मोटा हूता क्यूं ओ छाती कूटो ढोता

मु.पो. सुरेश, तह. दाँतारामगढ़, सीकर (राज.)-332742
मो: 8742031309

श्रम री महिमा (लोकगीत)

❐ नाथू सिंह राजपुरोहित 'मनवा'

मिनख मांनवी सब थे सुण लो, इण जग में आ कांम करो।
जिण खोळी में आया जग में, उण नै मत बदनाम करो।।

जिणनै थै मान्या अवतारी, खुद हाथों सूं कांम किया।
कृष्ण री शिक्षा सूं अर्जुण, कर्म योग संधान किया।।
लक्ष्य मिलण सूं पैला भायों, मत ना थे आराम करो।
जिण खोळी में आया जग में, उण नै मत बदनाम करो।।

परकत सूं चावै जे प्राणी, बदळा में कुछ बिना दियो।
भार धरा पर उणनै मानो, वो खावै बिन कांम कियो।।
करमों नै करतब जो मांने, उणनै थे परणाम करो।
जिण खोळी में आया जग में, उणनै मत बदनाम करो।।

सिंह रै मुख मिरगा नी आवै, जद कोरी वो आस करे।
श्रम रै ही बळ-बूतै सूं तो, जंगळ में वो राज करे।।
आळस जद घर डेरा डाले, उणनै थै नाकाम करो।
जिण खोळी में आया जग में, उणनै मत बदनाम करो।।

भाग लकीरां सूं कद बदळे, काम करण सूं बदळैला।
काम मंत्र सूं भाग आपरा, सूतोड़ा जग जावेला।।
नाथूसिंह निराशा तज नै, कांम खास या आप करो।
जिण खोळी में आया जग में, उणनै मत बदनाम करो।।

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नीम्बली उड़ा, पाली (राज.)
मो: 9982609723

टन-टन की टंकोर साथे
टाबर टोली भागती
स्कूलों के आँगन मायं
नव कालियाँ खिल जावंती।।

प्रार्थना में प्रेम बरसतो
कक्षाओं में कलरव
अभिव्यक्ति रो आनंद मिलतो
सरस्वती रो सिमरन।।

मास्टरां सूं मान पावता
मैडम सूं ममता
स्कूलों रे आंगन माय
दौड़ दौड़ ने रमता।।

प्रिंसिपल जी सूं प्यार पावता
सहपाठियाँ रो साथ
खाली पीरियड में खेल खेलता
होम वर्क हाथो-हाथ।।

नाश्ते में दूध पीवता
मध्यांतर में मिड-डे-मील
पेटभर खूब खांवता
नहीं राखता ढील।।

विद्यार्थी री व्यथा

❐ जीताराम मकवाना

विद्यार्थी व्यथा में फसग्या
कुण बातावे सवाल
थांरे बिन गुरुजी
बुरा व्हे हवाल।।

अध्यापकां रो ओहदो बदलग्यों
घर-घर घूमे रोज
चिकित्सा विभाग रो साथ निभावे
करे कोरोना री खोज।।

कक्षा-कक्ष सब बंद पड्या है
सूना पड़िया हैं ऑफिस
अध्यापक उलझन में पड्या है
कुण पढ़ावे टॉपिक।।

विद्यार्थी उलझण में पजग्या
फैल होस्यां या पास
सरकारी आदेशां सूं
सबरी बचगी लाज।।

बोर्ड परीक्षा में बैठण वाला
रोज करे इंतजार
बाकी परीक्षा करावण रो
कद निकळेला फरमाण

टाबर बेचारा तड़प रिया
घर में हो गया वास
विद्यालयों रा वार्ड बणग्यो
अध्यापकां सूं आस।।

ई-लर्निंग स्टार्ट करिज्यो
रोज भेजे लिंक
टीचर बिना टारगेट
दोरो व्हे अेचिव।।

जीताराम जगत ने कह्वै
विद्या उतम-दान
विद्यार्थियों री विद्वता सूं
मिलै मान-सम्मान।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चारलाई कलां, बाड़मेर (राज.)
मो: 9602259105

हाइकू छंद

❐ कमल कुमार जाँगिड़

(1)
म्हारै तो दोन्यूं
जैपर जोधपर
मोत्यां सूं मूंगा।

(2)
नागौरियां रो
कैणों कांई बीचलो
टोळी मुं टाळ।

(3)
धोती कुरता
घाघरा चुनड़ी रै
बाना है शान।

(4)
सेठ-सेठाण्यां
नगर हवेलियां
शेखाटी जाण।

(5)
सरूप घणी
पदमण मीरां रौ
त्याग महान।

(6)
मेवाड़ धरा
निज गौरव आण
कीका महान।

(7)
गढ़ गढ़ैया
अणूता पण न्यारौ
चितौड़ मान।

(8)
बांगड़ धरा
बनस्या काळी नाना
भील महान।

(9)
सादो जीवण
करमा मीरा बाई
भगती जाण।

(10)
हड़बू पाबू
रामदेवजी तेजा
म्हारी पिछाण।

(11)
'सेठीयां बीजी'
'सुदामाजी'र 'चन्द्र'
री भासा मान।

(12)
तीज तींवारां
ब्याव सावा भदावा
गीत रै ताळ।

(13)
मोठ बाजरौ
फळी काचरौ राब
जीमणहार।

(14)
बै मीठा खाण
कैर सांगरी साग
बीकाणो जाण।

(15)
सर्दी गरमी
बरसात फागण
म्हारै आंगण।

(16)
घणौ ऊजळौ
पोथ्यां करै बखाण
जै राजस्थान।।

राजकीय जवाहर उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)-341508
मो: 9928278014

बाल साहित्य

बालकाव्य एवं इसके मानदण्ड

❐ डॉ. बनवारी लाल पारीक 'नवल'

बच्चों के सतत विकास में उत्कृष्ट बाल साहित्य की महती भूमिका है। बालकाव्य रचकर साहित्यकार गौरवान्वित हैं। किन्तु उन्हें यह समझना चाहिए कि इस काव्य की बच्चों को होठों से मैत्री हो, यह उनका गलहार बने, वे इसे जीवनभर याद रखें। यह सब तब होगा जब कलमकार अपने पांडित्य को बिसराकर नन्हे-मुन्नों सा निर्मल मन बनाकर सरल शब्दावली में काव्य सौन्दर्य की सृष्टि करेंगे। वैसे काव्य में गद्य-पद्य की समस्त विधाएँ आती हैं परन्तु यहाँ हम पद्य की ही बात करेंगे। पद्य अर्थात कविता आदि जो श्रवणेन्द्रि का विषय है, दर्शनेन्द्री का नहीं।

बालकाव्य में क्या कुछ होना चाहिए? क्या उसमें मात्र मनोरंजन ही होना चाहिए। अथवा यह ज्ञान-विज्ञान से भरा होना चाहिए? इस बारे में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के निम्नांकित विचार अनुकरणीय है-

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

बालकाव्य का वर्गीकरण-आयु, विषय, रस व शिल्प के आधार पर यह इस प्रकार है-

(अ) आयु के आधार पर- इस आधार पर बालकाव्य त्रिविध है- शिशुकाव्य, बालकाव्य तथा किशोरकाव्य।

(आ) विषय के आधार पर- इस आधार पर बालकाव्य बहुविध है। यथा-

1. पशु-पक्षी व जीव-जन्तु संबंधी काव्य।
2. पेड़-पौधों, वन-बागों, फल-फूलों संबंधी काव्य।
3. प्रकृति के उपादानों-सूरज, चाँद, सितारे, धरती, अंबर, जल, नदी, सागर, पहाड़ा, हवा संबंधी काव्य।
4. खेल-खिलौनों संबंधी काव्य।
5. ऋतुओं व अन्य प्राकृतिक दृश्यों संबंधी काव्य।
6. अभिनय तथा प्रयाण संबंधी काव्य।
7. सहगान व समूह गान।
8. राष्ट्रीय बाल गीत।
9. त्यौहारों के गीत।
10. विज्ञान की गीत।
11. शिक्षाप्रद गीत।
12. वेदना गीत।
13. परिवार के गीत।
14. महापुरुषों के गीत।
15. नीति संबंधी काव्य।
16. लोकोक्तियों व मुहावरों संबंधी काव्य।
17. गिनती-पहाड़ों संबंधी काव्य।
18. अक्षरों संबंधी काव्य।
19. बच्चों की नित्य उपयोगी वस्तुओं संबंधी काव्य।
20. किस्सागोई संबंधी काव्य।

(इ) रस के आधार पर- इस आधार पर वीर, हास्य, अद्भुत तथा शान्त चतुर्विध रसों की बाल रचनाएँ अधिक मिलती हैं। उदाहरणार्थ-

- 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' (वीर रस)
- 'गधेराम की खुली लॉटरी, एक लाख जब आया।' (हास्य रस)
- 'जादूगर यह कमाल ही करता, तुरत-फुरत ही फूल खिलाता' (अद्भुत रस)
- 'हे प्रभो! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए' (शान्त रस)

वात्सल्य तथा करुण रस की सुन्दर रचनाएँ भी यहाँ मिलती हैं। यथा-

- 'मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो' (वात्सल्य रस)
- 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोये' (करुण रस)

(ई) शिल्प के आधार पर- इस आधार बालकाव्य के ये दो भेद हैं-

1. प्रबन्ध काव्य-पद्य कथाएँ, परिचयात्मक कविता आदि।
2. मुक्तक काव्य-बालकाव्य में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की इस विधा का अधिक प्रचलन है। बालकाव्य में मुक्तक के अधोलिखित स्वरूप दृष्टिगत होते हैं-

(i) लोरी-प्रभाती- ये संगीत प्रधानतः श्रव्य काव्य हैं। मातादि प्रियजन शिशुओं को सुलाने व जगाने के लिए गाए जाते हैं। यथा

- 'निंदिया रानी आ जा, मुनिया को सुला जा' (लोरी)
- 'जागो मोहन प्यारे' (प्रभाती)

(ii) कविता-गीत-ये तुकान्त-अतुकान्त उभयविध होते हैं। किन्तु बच्चों को तुकान्त प्रस्तुति अधिक पसंद आती है। सहज, सुग्राह्य व गेय होने से वे इन्हें गुनगुनाते रहते हैं। उदाहरणार्थ- 'चंदामामा दूर के, पूए पकाए बूर के।'

(iii) नाट्य कविता- ये बाल गोपालों की अभिनयात्मक प्रवृत्ति की पोषक रचनाएँ होती हैं। इन्हें बच्चे उछलकूद व झूमते हुए गाते रहते हैं। यथा-'हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की।'

(iv) ध्वन्यात्मक (नादमयी) पद्य रचनाएँ- ये प्रारंभिक अवस्था के शिशुओं को भी काव्य से जोड़ने में समर्थ हैं। जैसे-'चक्की चलती पुक-पुक, गठ्ठर वाले रुक-रुक-रुक। गेहूँ दे आटा ले जा, रोटी सेक मजे से खा।।'

(v) बाल गजल-यह विधा कम मिलती है, पर है मनोहारी। जैसे-'माँ के होने पर उदासी दूर हो, प्यार ही बस प्यार की भरपूर हो।'

(vi) बाल पहेली- ये भी बालकों को रुचिकर लगती है। यथा- खुसरो कह गए- 'एक थाल मोती भरा, सबके सिर औंधा धरा' (आकाश)

(vii) दोहे- पद्य की यह सार्वकालिक आबालवृद्ध प्रिय रचना है। यथा- 'गुरु गोविंद दोऊं खड़े, कांके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।'

(viii) कुंडलियाँ- भावी पीढ़ी में साहित्य की उत्सुकता जगाने की सशक्त विधा होते हुए भी कुंडलियाँ न के बराबर लिखी गई है। जैसे-'मम्मीजी ने बनाए हलुआ पूरी आज। आ धमके घर अचानक पंडित जी गजराज।। पंडित जी गजराज सजाई भोजन थाली। तीन मिनट में तीन थालियां करदी खाली।

(ix) बाल कव्वाली- यह बालकाव्य की नवोदित विधा है। उदाहरणार्थ- 'हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए। अजी क्या कहिए।'

(x) अनूदित बालकाव्य- अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ काव्य रचनाओं को अनुवाद के माध्यम से हम अपने बच्चों तक पहुँचा सकते हैं। इनके अलावा कवित्त, हाइकू आदि विधाएँ भी बाल रुचिप्रद हैं।

बालकाव्य सृजन के मानदण्ड- बड़ों व बच्चों के काव्य में इस स्तर पर बड़ा अंतर होता है। वहाँ 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि' हो सकता है। लेकिन यहाँ बालकाव्य में कवि को न तो भावों के अति गांभीर्य में जाना है, न ही शब्दों की ऊँचाइयों में। बस इन मासूमों के मनोविज्ञान

का ध्यान रखकर काव्यसृजन करें, जो अधिकाधिक संप्रेषणीय होता है। साथ ही बालकाव्य के अन्य मानदंड इस प्रकार है–

(अ) बालकाव्य की भाषा– संगीतमयी, अति सरल शब्दावली वाली, चित्रोपम और देश काल प्रसंग इस अन्वितित्रय के अनुरूप होनी चाहिए। तोतली बोली में कविता हो तो कहना ही क्या– 'अले छुबह हो गई, आँगन बुहार लूँ। मम्मी के कमले की, चीजें थमाल लूँ।।'

(आ) बालकाव्य की शैली– संवादात्मक, अभिनयात्मक, वर्णनात्मक, कथात्मक, पत्रात्मक, गेयात्मक, उद्‌बोधात्मक, मुहावरेदार इत्यादि शैलियों में मनोहारी बालकाव्य रचा जाता है।

(इ) बालकाव्य के छंद– दोहा, गजल, गीत, नवगीत, कुंडलियाँ आदि उपयुक्त छंद हैं। अतुकांत कविताएँ भी लिखी जा रही हैं, परन्तु बालकाव्य में तुकांत का ही बोलबाला है। अच्छी बाल कविताएँ 16 पंक्तियों से लम्बी नहीं होतीं और जो 4 ही पंक्तियों में लक्ष्य (परमानन्द) मिल जाय उसकी तो होड़ ही नहीं। यथा–चूहेमल का देखो खेल, चले ऊँट की पकड़ नकेल। बुड़बुड़बुड़बुड़ बोला ऊँट, मुझे पिला पानी के घूँट।

(ई) बालकाव्य के अलंकार– बाल कविता को सायास अलंकारों से बोझिल करना तो कत्तई उचित नहीं, किन्तु छोटे–मोटे गहने तो बच्चों को भी भाते हैं। सो यहाँ अनायास अलंकृति स्वीकार्य है। जैसे–

- 'काम क्लास का कितना करना' (अनुप्रास)
- 'चाँद सा सुन्दर भैया प्यारा, बहना के नयनों का तारा' (उपमा)
- 'बरसाता यह पानी सारा, मानो मेघ नहीं फव्वारा' (उत्प्रेक्षा)

वस्तुतः बालकाव्य प्रणयन साधना ही है। यहाँ तो सब चलेगा, जैसी गैर जिम्मेदारी अक्षम्य ही है। ऐसी रचनाएँ विकलांग संततिवत् हमें हमेशा दुःखी रखेगी। हमारा बालकाव्य सर्व सुग्राह्य व कालजयी हो एतदर्थ शास्त्रीयता तथा छन्दविधान से दूर नहीं जाना चाहिए। साथ ही बाल मनोविज्ञान और गेयता के मद्देनजर बनी बच्चों की पद्य रचनाओं के लिए उनके सृष्टा बालकाव्य जगत के सदा ऋणी रहेंगे।

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतहनगर,
उदयपुर (राज.)–313205
मो: 960232996

बाल साहित्य

शिक्षा का अधिकार

❐ गोविन्द भारद्वाज

रामू की माँ शांता बहुत गरीब थी। रामू के पिताजी का देहान्त चार साल पहले हो गया था। वह रोजाना अपने सिर पर खिलौने रखकर शहर की गलियों में बेचा करती थी। रामू अभी पाँच साल का ही था। इसलिए उसकी माँ शांता उसे अपने साथ खिलौने बेचने ले जाया करती थी। वह भी अपनी माँ के साथ गलियों में आवाज लगाता, खिलौने ले लो... खिलौने।' उसकी माँ शांता को सभी खिलौने वाली के नाम से जानते थे।

एक दिन वह एक बंगले के सामने से निकल रही थी। तब ही अंदर से आवाज आयी, 'खिलौने वाली जरा रूकना।' शांता आवाज सुनकर तुरंत रूक गयी। बंगले से एक मेम साहब आई और उसने पूछा, 'ये मछली वाला खिलौना कितने का दिया? बहन जी पचास रुपये का।' रामू जी माँ शांता ने कहा 'अरी खिलौने वाली तुम ने हद कर दी। ये खिलौना तो बाजार में तीस रुपये में ही मिलता है।' मेम साहब ने कहा। रामू बीच में बोल पड़ा, 'आंटी आप बाजार से ही खरीद लेना। यहाँ महंगा क्यों खरीदो।' 'अरे ये छोटा–सा बालक तो माँ से ज्यादा होशियार है। बड़ा होकर जरूर नाम कराएगा।' उस मेम साहब ने कहा। इस पर शांता माँ ने कहा, 'क्या नाम कमाएगा। पढ़ेगा–लिखेगा तो ही ना। ये तो मेरी तरह गली–गली में खिलौने ही बेचेगा।' उसकी बात सुन मेम साहब ने कहा, 'क्यों नहीं पढ़ेगा..इसका स्कूल में दाखिला करवाओ।' 'मेम साहब मुझ जैसी गरीब माँ इतने पैसे कहाँ से लाएगी?' उसने कहा। इस पर मेम साहब तेज स्वर में बोली, 'गरीबी का बहाना मत बना। ये कहो कि तुम इसे पढ़ाना ही नहीं चाहती।

आज सरकार ने सबको शिक्षा का अधिकार दे रखा है। सभी सरकारी स्कूलों में बच्चे का निःशुल्क प्रवेश होता है तथा स्कूल में किताबें फ्री मिलती है। इतना ही नहीं अब तो बच्चों को मिड–डे–मील भी दिया जा रहा है। 'मिड–डे–मील' इसका मतलब?' खिलौने वाली ने पूछा। इस पर मेम साहब जोर से हँसी

और बोली, 'दोपहर का खाना।' लेकिन मेम साहब मैं तो अपने बच्चे को पढ़ाऊँगी तो पब्लिक स्कूल में।' शांता ने तपाक से कहा। शांता की बात पर मेम साहब ने पूछा, 'क्यों भई.. तुम जैसी खिलौने बेचने वाली पब्लिक स्कूल के बारे में जानती है क्या कुछ?'

'हाँ..हाँ क्यों नहीं जिसमें गिटर–बिटर अंग्रेजी बोली जाती है। बच्चा बाबू की तरह तैयार होकर स्कूल जाए। बस लेने आए व छोड़ने जाए।' शांता ने कहा। मेम साहब ने उसकी बात सुनकर कहा, 'अरे पागल आजकल तो प्राईवेट स्कूलों में भी कम आमदनी वाले परिवार के बच्चों को शिक्षा के अधिकार के अन्तर्गत पच्चीस प्रतिशत प्रवेश दिए जाते हैं। तुम इस बार किसी पब्लिक स्कूल में इसका एडमिशन करा देना।' रामू ने पूछा, 'आंटी आप करा दोगे क्या मेरा अंग्रेजी स्कूल में एडमिशन?' एक पल सोचने के बाद वह बोली, 'क्या नाम है तुम्हारा?' 'जी रामू!' रामू ने तपाक से जवाब दिया। 'और तुम्हारी मम्मी...मेरा मतलब...तुम्हारी माँ का क्या नाम है?' मेम साहब ने लाड़ से पूछा। रामू ने कहा, 'शांता।'

'देखो शांता...मैं किसी अच्छे सरकारी स्कूल में या कोशिश करके किसी पब्लिक में रामू का एडमिशन करा दूँगी। लेकिन...।' मेम साहब कहते–कहते रूक गयी। शांता ने पूछा,

'लेकिन क्या मेम साहब? वह बोली, 'लेकिन ये की रामू को कभी अपने साथ खिलौने बेचने नहीं ले जाओगी और रोजाना एक घंटे मेरे पास ट्यूशन पर भेजोगी। 'मेम साहब ने बात पूरी करते हुए कहा। रामू ने अपनी माँ से कहा, 'माँ आँटी की बात मान लो ना।' 'पर बेटा मैं आँटी को देने के लिए ट्यूशन के पैसे कहाँ से लाऊँगी। आजकल तो हम लोग से खिलौने खरीदने की बजाय बड़े-बड़े मॉल से खरीदना पसंद करते हैं। वहाँ इन खिलौने के दोगुने दाम दे देंगे लेकिन फेरी वालों से नहीं लेंगे।' शांता का चेहरा गम्भीर हो गया। उसकी गम्भीरता को तोड़ते हुए मेम साहब बोली, 'अरी शांता बहन तुम से ट्यूशन से पैसे किसने माँगे।

मैं इसको अपने बच्चों के साथ मुफ्त में पढ़ाऊँगी। रहा सवाल तुम्हारे खिलौनों का...ये बात तो सच है कि लोग झूठी शान दिखाने के लिए बड़े-बड़े मॉल या शोरूम से ही महंगे दामों में यही खिलौने खरीद लेते हैं। उनको किसी गरीब की रोजी-रोटी की चिंता नहीं है। मेरा भी तुमका एक सुझाव है।' 'कैसा सुझाव मेम साहब?' शांता ने पूछा। 'यही कि तुम ये चीनी खिलौने मत बेचा करो। हो सके तो अपने देश में बने ही खिलौने बेचो। इसके लिए मैं अपनी सोसायटी के लोगों और अपने सगे-सम्बन्धियों को भी प्रेरित करूँगी। और वे सब तुम्हारे स्वदेशी खिलौने ही खरीदेंगे।' मेम साहब ने कहा। रामू ने कहा, 'वो ठीक है आंटी पर आप भी तो खरीद रही थी चीनी खिलौना।' मेम साहब ने हँसते हुए कहा, 'हाँ रामू आज के बाद कभी नहीं लूँगी। लेकिन आज तो इसलिए ले रही हूँ कि तुम्हारा कितना समय बेकार कर दिया मैंने।'

'बेकार नहीं मेम साहब... इतनी अच्छी जानकारी दी आपने रामू को पढ़ाने के लिए। आप का यह अहसान कभी नहीं उतार पाऊँगी।' शांता ने कहा। रामू ने हाथ जोड़कर मेम साहब को नमस्ते की। वह बहुत खुश था। ये सोचकर कि इस साल से वह भी स्कूल में पढ़ने जाएगा। खूब पढ़ेगा और बड़ा अफसर बनेगा।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होकरा,
अजमेर (राज.)-305001
मो: 9461020491

बचपन है अनमोल हमारा..

❐ मनमोहन गुप्ता

बचपन है अनमोल हमारा
कभी नहीं है फिर मिलता,
खेले-कूदे, झगड़े फिर भी
नेह सुमन मुख खिलता।
उसे देखकर उमड़ा जाता
प्यार सभी का है सारा
बचपन है अनमोल हमारा।
घर पर मम्मी, बाबा-दादी
अतुलित प्यार जताते हैं,
ऑफिस से जब लौटे पापा
मौसम के फल लाते हैं।
उन्हें छीनकर झट पापा से
खा जाते हम सारा
बचपन है अनमोल हमारा
चुन्नू, मुन्नू, राघव भैया
माँगे गुब्बारा दीदी सविता,
माँग भुलाने को तब पापा
हमें सुनाते कविता।
सुनकर कविता तब पापा की
भूले हम गुब्बारा,
बचपन है अनमोल हमारा

मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा
गिरिजाघर जाते मिलकर,
बचपन कैसा स्वर्णिम होता
हँसते है खिल-खिलकर।
अंधकार नहीं जाति धर्म का
सबका मन उजियारा,
बचपन है अनमोल हमारा।

गुप्ता सदन, एस.बी.के. गर्ल्स हायर सैकण्डरी स्कूल के पास,
मण्डी अटलबंद, भरतपुर-321001, **मो: 6378262325**

दिवस भर चलती रहती चींटी

❐ नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'

ना पटरी ना इंजन सीटी
दिवस भर चलती रहती चींटी
कभी न थकती, कहीं न रुकती
परिश्रम करने से न चुकती
करती रहती काम से काम
नहीं चाहती ये कभी आराम
न बोलती न कुछ कहती
सदा ही हिलमिल कर रहती
दिखने में लगती बहुत छोटी
नजर नहीं आता माथा चोटी
अजब चढ़ती गजब उतरती
मीठा खाने को टूट पड़ती
यूँ तो लगती सीधी सयानी
काट खाए तो याद करादे नानी
अच्छी सीख चींटी से मिलती
मिलकर मेहनत से सफलता मिलती।

ए.सी.बी.ई.ओ. खमनोर, राजसमंद (राज.)
मो: 9829960055

लैपटॉप इनाम में लूँगा

❐ डॉ. विजयगिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

माँ मुझे मोबाइल दिला दो, बोला मोनू बेटा।
खाना नहीं खाऊँगा तब तक, और रहूँगा लेटा।।
सब बच्चों के स्मार्टफोन हैं, स्कूल में भी लाते।
आते जाते रास्ते में वो, बड़ी देर बतियाते।।
गेम भी इसमें खेला करते, मुझे नहीं खिलाते।
बोलते है तेरे बापू क्यों, तेरे लिए नहीं लाते।।

माँ ने बेटे के बापू पर, एक निगाह दौड़ाई।
टूटी खांट पर सोये थे वो लेकर अपनी दवाई।।
बापू की आँखों में था, तैर रहा एक सपना।
पढ़ लिखकर काबिल बनेगा, बेटा मोनू अपना।।
मोनू को मोबाइल दिया तो, वो सपना टूट जाएगा।
बिगड़ जाएगा मोनू इससे, हाथों से छूट जाएगा।।

माँ ने मोनू को धीरे से, पास बुलाया लाड़ किया।
बोली प्रथम आओ गर बेटे, तो तुम्हें मोबाइल दिया।
अच्छी-बुरी सारी बातें, मोबाइल में हैं भरी हुई।
बुरी बातें पकड़ न ले तुझे, यही सोच कर डरी हुई।।
मुझको एक वचन दे बेटा, अच्छी बातें देखेगा।
तुझको आगे बढ़ा सके वो, सच्ची बातें देखेगा।।

माँ मुझ पर विश्वास करो तुम, मोनू ने बतलाया।
आज हमारे गुरुजनों ने, प्रोजेक्टर से पाठ पढ़ाया।।
कहते हैं मोबाइल पर भी, पाठ हैं सारे होते।
घर पर इन्हें देखो समझो, व्यर्थ समय क्यों खोते।।
इसलिए बापू से कहकर, मोबाइल मुझे दिला दो।
मेरे जीवन के सपनों का, माँ यह फूल खिला दो।।

मोनू की बातों को सुनकर, माँ को आया भरोसा।
रुपयों का जुगाड़ नहीं था, जिन किस्मत को कोसा।।
माँ का चेहरा देखकर मोनू, समझ गया मजबूरी।
रहने दो मोबाइल माँ अब, लैपटॉप है जरूरी।।
अच्छे नंबर लाते हैं हम, जब सरकारी स्कूल में।
लैपटॉप निःशुल्क मिलता, बात गया था भूल मैं।।
मोनू की प्रतिभा को देखा, माँ ने सीने लगाया।
बोली मेरी लाज रखेगा, मेरा प्यारा जाया।।

प्राध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रैयाना,
अरथुना, बाँसवाड़ा (राज.)-327034
मो: 9928699344

बचपन

❐ सुरेश कुमार शर्मा

पहले रात-भर आती थी, गहरी नींद
अब बोलते-बुलाते,
लोरियाँ सुनते भी नहीं आती
बस, वापस लौट जाना चाहता हूँ
उसी बचपन में
बच्चा बनकर जीना चाहता हूँ
अपनी मर्जी का मालिक था,
जैसे-तैसे सबको मना लेता
मर्जी का मालिक तो हूँ,
हूँ मगर अकेला
न होते भी सब कुछ था
सब कुछ होते भी
कुछ कमी, खालीपन-सा हैं
बुरा करते हुए भी बुरा न था
सब कुछ अच्छा करते भी बुरा हूँ
गिरकर उठना उठकर गिरना,
रोकर हँसना, हँसकर रोना
बहुत आसान था
अब बहुत मुश्किल हैं
बोलकर, हँसकर, चलकर
सब कुछ सीख लेता था
सीखते-सिखाते भी
कुछ नहीं सीख पाता हूँ
मैं अबोध था, बच्चा था,
बचपन खुद एक गुरु था।

गांव-बख्सीतापुरा, वाया-पलसाना, सीकर-332402
मो: 7073189383

वतन हमारा

❐ जितेन्द्र कुमार

रिश्ता वतन से है, मजबूत हमारा।
प्राणों से अतिप्रिय है, वतन हमारा।।
तीन रंगों का ध्वज है तिरंगा, सबसे प्यारा।
त्याग, शांति और हरियाली देता, तिरंगा हमारा।।
जल, थल और नभ से तैयार है वतन हमारा।
वीर जवानों की रक्षा से, मुस्कुराएँ वतन हमारा।।
रिश्ता वतन से है, मजबूत हमारा।
प्राणों से अतिप्रिय है, वतन हमारा।।
भिन्न-भिन्न धर्मों का है वतन हमारा।
भिन्न-भिन्न त्योहारों का है, वतन हमारा।
संस्कृति से परिपूर्ण है, वतन हमारा।
रिश्ता वतन से है, मजबूत हमारा।
प्राणों से अतिप्रिय है, वतन हमारा।।
भिन्न-भिन्न भाषाओं का हैं, वतन हमारा।
सुमधुर भाषाओं से प्रिय हैं, वतन हमारा।।
भिन्न-भिन्न नदियों का है, वतन हमारा।
जल की धाराओं से गूंजे वतन हमारा।।
रिश्ता वतन से है, मजबूत हमारा।
प्राणों से अतिप्रिय है, वतन हमारा।।

वरिष्ठ अध्यापक, गणित
साईं निवास, मोकलसर,
तहसील-सिवाना, जिला-बाड़मेर (राज.)
मो. 9784853785

बाबा

❐ भावना मिश्रा

बाबा, अब घर आए हो,
बोलो क्या क्या लाए हो?

पेन्सिल, कॉपी, मेरा बस्ता,
तीखी भुजिया, गुझिया खस्ता,
ये सब कहाँ छिपाए हो,
बोलो क्या-क्या लाए हो?

मिल तारे, चंदा मामा,
पिला कुर्ता और पजामा,
झोले में क्या भर पाए हो,
बोलो क्या क्या लाए हो?

मुनिया की गुड़िया, उसका गुड्डा,
मोटी सेठानी, उसका मुद्दा,
लाए पर, ना बतलाए हो,
बोलो क्या क्या लाए हो?

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
जीएसएसएस लोंगवाला,
ब्लॉक पीलीबंगा, हनुमानगढ़

विद्यार्थी जीवन

❐ राजेन्द्र सिंह चारण

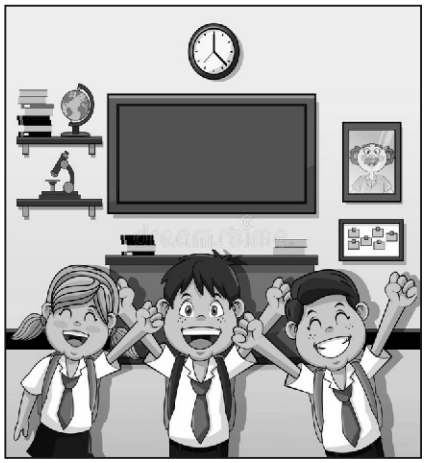

मोबाइल, टी.वी. में आँखें फोड़े,
कैसे मनवा किताब में लागे,
जल्दी उठकर स्कूल को जाना,
मुसीब भारी पहाड़ सी लागे।
बेमन उठायी बैग की गठरी,
चल पड़ा लेके ये लाचारी,
आधी हो गई ईश्व वंदना,
अब पहुँचा वो स्कूल अँगना,
अनुशासनहीनत की उपाधि पाई,
फिर टूटी-फूटी प्रार्थना गाई।
पहुँचा कक्षा में मिले साथी संगी
तब जाके हुई थोड़ी तबियत चंगी
लेकिन मिली खुशी पल भर की,
पधार गए कक्षा अध्यापक जी।
पल्ले ना पड़े है एक भी अक्षर,
आँखों में है, नींद जो छारी
फिर भी पलकें खोले बेचारा
कान खड़े है, सुनता जारा।
कहर ढाया है अंग्रेजी ने,
गणित ने है छक्के छुड़ाए,
विज्ञान ने है परमाणु छोड़ा,
हिन्दी, सामाजिक सांत्वना दे जाए।
माथा पकड़े सर खुजलाए,
कुछ भी उसको समझ ना आए,
सर जी डाँटे पापा मारे
घायल करें, मम्मी के ताने।
ये बनना है, ये करना है
याद दिलाके पड़ोसी जलाए
ऊपर से है टेस्ट परीक्षा,
इनकी चिंता बड़ी सताए,
आँख मूंदकर भूलना चाहे,
सब मिलकर याद दिलाए।
जैसे-जैसे दिन-रात काटूँ
राम ही मेरी लाज बचाए
त्योहार जब रविवार का आए,
तब कही मनड़ा शांति पाए।
मम्मी-पापा को कहा अदब से
कृपा कर मुझे ना जगाना,
आज उस संडे को मनाना।
खुशी का पल है जल्दी बिता,
कहाँ है कॉपी कहाँ है बस्ता
याद नहीं कुछ, गृहकार्य अधूरा
गुरुजी पिटेंगे रोज का ढिंढोरा,
बड़ा आलसी कामचोर ये छोरा।
बैठे-बैठे विचार एक आया,
स्वयं को उसने फिर समझाया,
रो रो के भी काम है करना,
फिर क्यों ना हँस हँस के करना।
मेहनत कर लूं, आराम त्याग दूँ,
मैं अपना भविष्य सुधार लूँ,
मम्मी पापा रोज कहते हैं
और कहते हैं अध्यापक जी,
मेरे भविष्य और असफलता की
सबसे बड़ी चिंता है सबकी।
ख्वाब सजाने लक्ष्य को पाने
विद्यार्थी हो गया दृढ़ प्रतिज्ञ,
अब उठता है जल्दी मुस्कुराते
नहीं रहा वो अब अनभिज्ञ,
'राज' समझ गया वो अब सारा,
विद्यार्थी जीवन सबसे प्यारा।
विद्यार्थी जीवन सबसे प्यारा।।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नलवाई,
चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो: 9549637070

मीठी रसदार जलेबी

❒ प्रमोद दीक्षित 'मलय'

हर मौसम की बहार जलेबी।
मीठी बहुत रसदार जलेबी।।
मिठाइयों की है रानी यह।
न कभी मानती हार जलेबी।।
नाच रही घी में छन छना छन।
शीरा पिए हर बार जलेबी।।
बालक, बूढ़े, मजदूर, किसान।
सबके हृदय का प्यार जलेबी।।
लड्डू-पेड़ों की रौनक फीकी।
स्वाद की है सरदार जलेबी।।
धनी-निर्धन का भेद न करती।
सबकी मनमीत-यार जलेबी।।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम में।
सबको सुखद स्वीकार जलेबी।।

पुस्तक मेरी मीत बनी

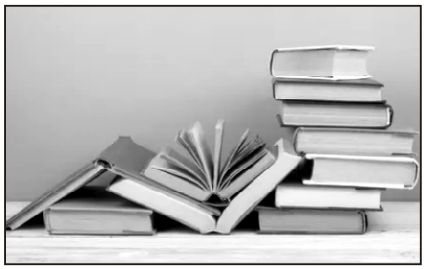

खुशियों का संगीत बनी है।
जीवन का मधु गीत बनी है।।
दुख, पीड़ा, संकट में हर पल,
पुस्तक मेरी मीत बनी है।।
सच्चाई की राह दिखाती।
घर बैठे जग की सैर कराती।।
मानव पर है उपकार बड़ा।
लेकिन वह न कभी जताती।।
अंधकार से जब-जब हारा,
पुस्तक मेरी मीत बनी है।।
खुशियों का संगीत बनी है।
दुखों की शुभ परिपाटी के।
गिरि, कानन, सरिता, घाटी के।।
कोमल मधुर पृष्ठ दिखलाती।
खलिहान, खेत, सर माटी के।।
श्रम-तप की आतप बेला में,
पुस्तक छाया-भीत बनी है।
खुशियाँ का संगीत बनी है।।

शिक्षक, शास्त्री नगर, अतर्रा-210201, बांदा, उ.प्र. **मो. 9452085234**

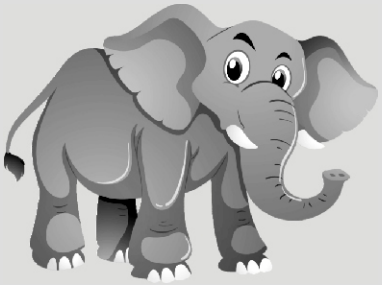

हाथी आया हाथी आया

❒ नोरत मल रेगर

हाथी आया हाथी आया।
मोटा ताजा हाथी आया।
मोटे मोटे पै है इसके,
पतली पतली पूँछ है।
तेज है चिंघाड इसकी,
दूर दूर तक गूँज है।
छोटी छोटी आँखे इसकी,
चौडे चौडे कान है।
लम्बे लम्बे श्वेत रंग के,
दाँत इसकी शान है।
चाल में इसकी मस्ती देखो,
कैसे पैपर उठाता है।
सूँड उठाकर हमें डराया।
हाथी अया हाथी आया।
मोटा ताजा हाथी आयो।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. देवरिया (शाहपुरा), भीलवाड़ा
मो. 9950820686

ग़ज़ल

❒ डॉ. भँवर कसाना

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि.,
मण्डा बासनी (डीडवाना)
जिला-नागौर (राज.)
मो. 9828735395

कितने अच्छे हैं खिलखिलाते बच्चे।
कितने सच्चे हैं खिलखिलाते बच्चे।।
किसी कुम्हार ने रचे है अभी-अभी।
कितने कच्चे है खिलखिलाते बच्चे।।
तुतलाकर कह देते है, अपना सब कुछ।
कितने बच्चे हैं, खिलखिलाते बच्चे।।
अभी से उलझे हैं घरौंदे बनाने में।
कितने पच्चे हैं खिलखिलाते बच्चे।।
टी.वी. मोबाइल में उलझकर यारो।
कितने तो बचे है खिलखिलाते बच्चे।।

गुरुवर शिक्षक

❒ जनकदुलारी शर्मा

कलम हाथ में पकड़ा करके पहला अक्षर लिखवाया था।
निपट अँधेरे जीवन को भी स्वर्ण मार्ग दिखलाया था।।
आज छिटकती शुभ्र चाँदनी हर पल खुशियाँ मंडराती है।
ज्ञान दीप भी जला हुआ है यश लहरें भी आ जाती है।।
मुझे पता है सारा वैभव उस अक्षर से आया है।
हाथ पकड़ाकर बड़े प्यार से जो तुमने सिखलाया है।।
हे पथ दर्शक गुरुवर शिक्षक नमन आप स्वीकार करो।
शिक्षक दिवस, समर्पण मेरा मुझको अंगीकार करो।।

अध्यापिका, रा.उ.मा. विद्यालय भादवों की कोटड़ी, हुरड़ा, भीलवाड़ा (राज.)

माँ

❐ सुमन ओझा

इस जग में तुम से ज्यादा,
हुआ ना होगा प्यारा माँ
तुमसे जुड़ता है रिश्ता,
इस जग से नौ माह पहले माँ
पहले अपने खून से सींचा,
दूध से हमको पाला माँ
अपने आँचल की छाया दे,
निवाला भी दे डाला माँ।।
आज तक पाला जिसने,
वो बोझ क्यों हो जाती माँ
ऐसा क्या गुनाह हुआ जो,
घर से बाहर होती माँ।।
होते देखे कंगाल जो,
छोड़ के माँ को वृद्धाश्रम आए।।
वो ही माला माल है जिसके,
सर पर माँ का हाथ रहे।।
अपने बच्चों को दुःखी देख,
खून के आँसू रोती माँ।।
जो बैठ पास में प्यार से बोले,
फूलों सी खिल जाती माँ।।
अपने अरमां को दफन कर,
बच्चों के पूरे करती है।
ये माँ है प्यारे, माँ तो बस
माँ.....ही होती है।
खुद काँटों पर चलकर के,
फूलों की राह बनाती है।
हर मुश्किल की घड़ियों में,
वो ढाल सी बन जाती है।।
क्या कहूँ नहीं कोई ऐसा शब्द,
जो माँ से पहले आता हो।
बस यही दुआ करती हूँ कि,
हर जन्म इसी से नाता हो।।

173/2 प्रताप कॉलोनी, मेवाड़ी गेट के बाहर,
सब्जी मंडी के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)
मो: 9461517208

छप छप करता पानी

❐ पुखराज सोलंकी

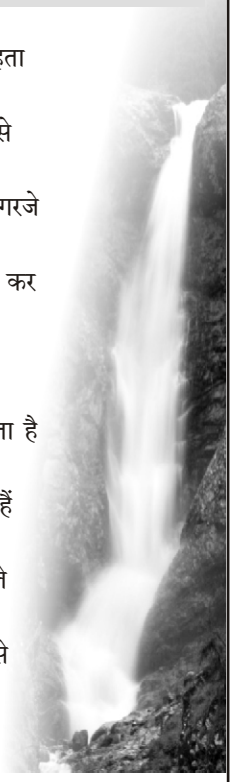

जब नदियों में बहता रहता
कल-कल करता पानी
आता जब ऊँचे झरनों से
झर-झर गिरता पानी
जब-जब बादल बाबा गरजे
टिप-टिप बरसे पानी
बारिश में तालाब पहुँच कर
चुप-चुप रहता पानी
पनिहारी के सर पे बैठा
छल-छल छलके पानी
जब घर के नल से आता है
खर-खर करता पानी
हम जब भी पानी पीते हैं
गट-गट गटके पानी
बच्चे इसमें जब भी खेले
छप-छप करता पानी
धरती का शृंगार है इससे
चुनर धानी धानी
बिन इसके जीवन की
है कल्पना बेमानी।

हनुमान मंदिर के पीछे, किसमीदेसर, भीनासर,
बीकानेर (राज.)-334403
मो: 9251431947

दिनचर्या

❐ प्रतिभा व्यास

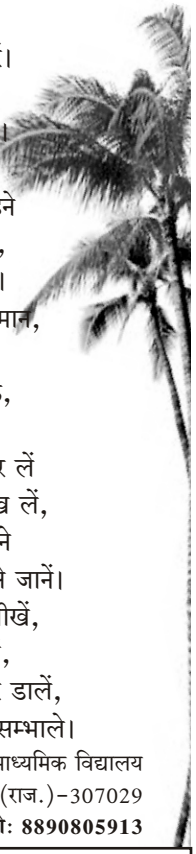

सूर्योदय से पहले उठें,
माता-पिता को नमन करें।
दातुन-कुल्ला करके हम
पढ़ने बैठे कुछ-कुछ पल।
स्नान ध्यान करके चलें,
विद्यालय की पोशाक पहने
फिर टिफिन लेना न भूलें,
बस्ता पूरा जरूर सम्भाले।
शाला में शिक्षक का सम्मान,
इसका रखना पूरा ध्यान।
ध्यान लगाकर पढ़ना पाठ,
इससे जीवन नैया पार।
कुछ खेलें, कुछ सेवा कर लें
इसकी भी एक आदत रख लें,
सदैव बड़ों का कहना माने
टीवी, मोबाइल को दूर से जानें।
समाचार पत्र पढ़ना भी सीखें,
गृहकार्य नित करना सीखें,
आज का काम आज कर डालें,
सोने से पहले, दिनचर्या सम्भाले।

विवेकानन्द माध्यमिक विद्यालय
भोरडा, जालोर (राज.)-307029
मो: 8890805913

भारत महान

❐ चन्द्रिका व्यास

मेरे खुल गए है स्कूल,
पढ़ना मुझको है जरूर।
इसीलिए हो रहा तैयार,
पोथी, बस्ता रहा सम्भाल।
विद्या धन है, सबसे बड़ा,
मैं इसको लेने सतत खड़ा,
दो गुरुजी! मुझे कुछ ज्ञान,
हो जाए मेरा कल्याण।
पढ़-लिख कर देश का नाम करूँ,
वाह रे भारतीय! ऐसा मैं सुनूँ।
तब खुशी से झूमेगी, यह धरती,
मेरी बस एक ही विनती।
रात-दिन प्रगति करता रहूँ,
मुसीबत से लोहा ले, सम्भलूँ,
हिम्मत मुझे दे इतनी भगवान
हो जाए मेरा भारत महान।

खंडप, बाड़मेर (राज.) **मो: 9413171217**

मन की अभिलाषा

❐ सत्य भूषण शर्मा

मन में आए, यही विचार,
दिल में उठे, यही पुकार,
ये जो मानव जीवन है,
नहीं मिलता है, बार-बार।।
अतः करो कुछ ऐसे काम,
रोशन हो जाएँ चारों धाम,
जग में हो जाए तेरा नाम।
ना कर बुरा, कर सिर्फ भला,
तन-मन से, जीवन भर प्रण से,
कर सिर्फ अच्छे तू काम।
तू तो आया खाली हाथ,
खाली हाथ ही जाना है,
प्यार बढ़ा, प्यार ही बांट,
जग करेगा तुझे प्रणाम।।

प्रवक्ता (भौतिक विज्ञान)
संत ग्रेगोरियस सीनियर सैकण्डरी स्कूल,
उदयपुर-313001
मो: 9414934304

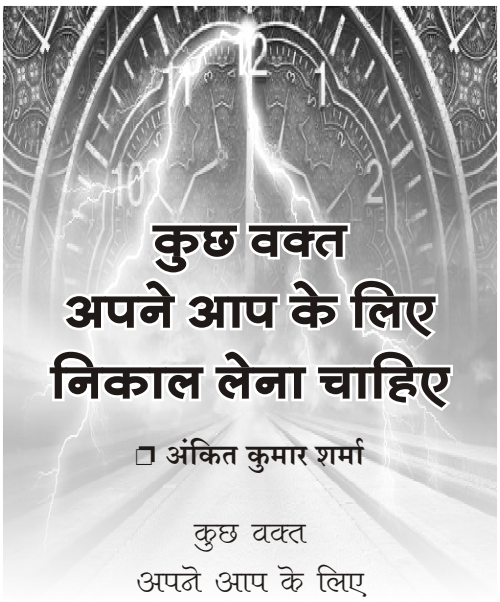

कुछ वक्त अपने आप के लिए निकाल लेना चाहिए

❐ अंकित कुमार शर्मा

कुछ वक्त
अपने आप के लिए
निकाल लेना चाहिए
नसीब के कुछ पन्नों को
कर्म से हिला लेना चाहिए
जरूरी नहीं कि
हर इंसान पूर्ण हो
जो मिले तुमको
वक्त की हर
चाबी का भान
मिले तुमको
हाँ, जीवटता के बीच
सुस्ताना जरूरी है
ज्यों साँझ के बाद
दिवस का आना
जरूरी है
अपने ही बोझ को कभी-कभी
माथे पे उठा लेना चाहिए
कुछ वक्त
अपने आप के लिए
निकाल लेना चाहिए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देवरिया,
शाहपुरा, भीलवाड़ा
मो: 9784270084

हमको है देश से प्यार

❐ जगदीश चन्द्र कुम्हार

बर्दाश्त नहीं है ललकार,
आओ सरहद पर,
भगाएँगे उस पार,
हमको है देश से प्यार।

नहीं सहेंगे तेरा वार,
हो जाओ अब तैयार,
नहीं रूकेगा तेरा संहार,
हमको है देश से प्यार।

तेजस भरेगा हुंकार,
तो सुखोई करेगा वार,
मिराज से होगा बेड़ा पार,
तो राफेल है सरदार,
हमको है देश से प्यार।

अग्नि का है वार,
तो पृथ्वी आकाश ब्रह्मोस है तैयार,
त्रिशूल, नाग और अस्त्र का होगा प्रहार,
हमको है देश से प्यार।

अब आ जाओ हर जगह, हम हैं तैयार,
दो-दो हाथ से करेंगे वार,
नहीं सहेंगे तेरा प्रहार,
हमको है देश से प्यार।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांखली,
पं.स. राशमी, चित्तौड़गढ़
मो: 9680264329

संकट में दुनिया सारी...

❐ सतीश गोयल

चहुँ ओर मचा रही हाहाकार, कोरोना की महामारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।
मानव से मानव जुदा कर रही, कैसी है ये बीमारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।

इक सूक्ष्म विषाणु ने मानव को, उसकी औकात दिखाई,
विज्ञान ज्ञान की उसकी प्रगति, क्षण भर में हुई धराशायी,
और काम न दवा कोई आई।

कोहराम मचाया कोरोना ने, दुबके घर सब नर-नारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।

इटली, ईरान, चीन, अमेरिका, जापान, फ्रांस या बाकी
सब बेबस हैं लाचार आज और, समझ भी सबकी थाकी,
ये कैसी झाँकी है भाई।

ये जैविक अस्त्रों की तैयारी, मानवता पर पड़ रही भारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।

छोड़ परम्परा शेक हैण्ड की, कर जोड़ नमस्ते बोलो,
संयम से कुछ दिन घर में रहो, 'सोशल डिस्टेंसिंग' रख लो
'लॉक डाउन' न खोलो।

प्यारा है परिवार जो अपना, तो मानों बात हमारी
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।
हो बहुत जरूरी घर से निकलना, 'मास्क' जरूर ही पहनो,
'सोशल डिस्टेंसिंग' का पालन हो और 'गलब्ज' हाथों में पहनों
ये विनती है भाइयों, बहिनों।

'सेनेटाइज' करो हाथों को अपने, जो लाइफ तुम्हें है प्यारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।
चहुँ ओर मचा रही हाहाकार, कोरोना की महामारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।
मानव से मानव जुदा कर रही, कैसी है ये बीमारी,
संकट में दुनिया सारी, ये कैसी है लाचारी।।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आरेड़ा, हिण्डौन, करौली
मो: 9413817979

राखी का अटूट रिश्ता

❐ शालू मिश्रा

भाई और बहन हो जाओ तैयार,
लो आ गया राखी का त्यौहार।
ठंडी बारिश की बूँदें,
सावन की सौंधी महक।
भाई के आने की उम्मीद बहना को लगी है कसक।
राखी और मिठाई से सजा होगा पूजन थाल,
अक्षत रोली सोहेगा प्यारे भाई के भाल।
अटूट रेशमी धागे से कलाई पे चमक आ जाएगी,
भाई को कभी न भूलने का वचन अमर कर जाएगी।
छोटे भाई से स्नेह बड़े से मिलती है दुआ।
सारे जग में सबसे सच्च रिश्ता है यही हुआ।
मुसीबत आने पर भाई का साथ निभाना,
बहन की खातिर हर पल कुर्बान कर जाना।
वादा मुझसे कर लो भैया अबकी बार जब आओगे,
साथ में प्यारी भाभी को घर लाओगे।
राखी की इस लाज को उम्र भर निभाना तुम,
दुनियादारी के चक्कर में मुझे न भुलाना तुम।
मन में सपना सजाती रहूँगी
हर साल यूँ ही राखी बाँधती रहूँगी।
रब ने ऐसा अटूट बंधन बनाया है,
तभी जग में ये त्यौहार रक्षाबंधन कहलाया है।
रिश्ता बना रहे सदियों तक,
मिले भाई को खुशियाँ अपार।
मिश्री के मीठे रस सा,
झलकता रहे भाई-बहन का अनोखा प्यार।

वार्ड नं. 12, रेल्वे स्टेशन रोड,
नोहर-हनुमानगढ़
मो: 9024370954

National Education Policy (NEP) 2020

AnIntrospective and Prospective Assessment

❒ Lukut Ballabh Gaur

Education has always been a matter of paramount importance in life. It teaches values, creates oportunities, inculcates critical thinking, builds confidence, moulds character and fulfills basic needs. Education plays a pivotal role in achieving full human potential, promoting national progress and developing just an equitable society. Education is a marvellous tool which can be used to change the world and facilitate one's purpose in life.

The pursuit of knowledge (Jhan) wisdom (Pragya) and truth (Satya) was always said to be the highest goal in Indian philosophy and thought. World class institutions of ancient India such as Nalanda, Vikramshila, Vallabhi and Takshila hosted students and scholars from across the world. They set the highest standards of reasearch and teaching.

The leaders of the freedom struggle also thought of education as an important factor of nation building. They considered it to be a process of realization of best in human body, soul and spirit. Mahatma Gandhi especially propounded the idea of "Buniyaadi Shiksha".Post independence modern India also focused on education through several commissions such as Kothari Commission, Radhakrishnan Commission etc. The right to education was made an enforceable fundamental right through the 86th amendment (Article 21A) resulting in provision for universal education to all children between ages 6 and 14 (The Right to Education Act, 2009)

More than three decades have passed since the last education policy was erected in 1986, But since then much has changed. India has liberalized its economy. Population has witnessed a huge growth of 65%. There is a sizeable aspirational middle class. There is a massive influence of technology on every sphere of life. Our education system is still impaired by the age old problems of quality professionalism and difficulties of reaching to the needy ones. A lot more remain to be done to keep pace with the ever changing scenario around the globe. Though we have witnessed a significant increase in literacy rates but the "Buniyaadi Shiksha" of Gandhiji is still a far cry.

The successive reports of Annual State of Education Report (ASER) state the dismal condition of education system. The gaps between textbook teaching and real life vocations, poor learning leads to a big imbalance in rural-urban, private-public educational sectors. Up till now our main focus has been on rote learning, excessive and cut throat competition or terror of marks and ranks.

One of the phenomenon after liberalization, privatization and globalization (LPG) is the marketization of the education sector. The mushroom like growth of educational institutions with insufficient facilities is also an important concern of worry because they are producing a class of "Educated Unemployed" in our country. This can be perceived in the growth of engineering and management colleges and pitiable condition of the majority of graduates from these colleges.

The school dropout rates continue to remain high inspite of various efforts made in this direction. This hampers the goal of universal education. This can be attributed to the non-utility of formal education and inability to connect and utilize it to real life situations.

Taking all these above mentioned issues in consideration the New Education Policy - 2020 has emerged. The final policy is based on the draft report submitted by Dr. K. Kasturirangan Committee which was constituted by the Ministry of HRD in 2017.

The NEP is built on the fundamental pillars of Equity, Quality, Access, Accountability and Affordability. This policy is focussed on the 2030 agenda for sustainable development and aims to revise and overhaul the education system in our country including its regulations and governance in toto. It will also make both school and college education more holistic, flexible and multi-disciplinary.

The NEP recognizes that over 85% of child's cumulative brain development takes place prior to the age of 6. To ensure healthy brain development and growth,the existing form of 10+2 structure is to be transformed to new 5+3+3+4 structure with a strong base of early

childhood care and education ECCE from age 3. One of the most important aspects of the NEP is to give atmost priority to the education system that will help to achieve universal foundational literacy and numeracy in primary school by 2025.

To reach this goal, it is proposed to set up a National Mission on Foundational Literacy and Numeracy by the HRD on priority.This is because various reports indicate that a large proportion of students currently at elementary level have not attained foundational literacy and numeracy the ability to read and understand basic text and basic calculation.

One more aspect that attracts our attention is that the policy aims at a Pupil Teacher Ration (PTR) of under 30:1 and 25:1 for socio economically backward areas.

It is common thought that morning hours after a nutritious breakfast can be high yielding for the study of hard subjects for that fact keeping in mind a simple but energizing breakfast will be provided along with midday meal.

Curriculum will be reduced to its main essentials for each subject to encourage inquisitivenessand discovery based critical thinking, scientific vision, critical thinking and analysis based learning. There is also a provision for vocational training along with internships during school.

Further the policy also aims to wipe-out the lines between the current rigid streams concept in which the students are required to opt for either Science, Commerce or Arts. It proposes to provide enhanced degree of flexibity to students after grade 10 board by allowing them to choose subjects of their own choices rather than imposing stream on them.

The NEP judiciously proposes to implement a three language formula. According to this two out of three languages i.e. mother tongue local language/regional language will be used as the medium of instruction.

It is also reinterated that 6% of GDP will be spent in the education sector through public investment The Policy proposes a National Education Technology Forum (NEFT) where free exchange of ideas will be available on the use of technology to enhance learning assessment, planning and administration. The policy suggests that the need for undertaking coaching class has to be done away with Board Exams will be reformed so that they test primarily core competencies rather than rote learning.

The policy suggests to establish PARAKH (Performance Assessment Review and Analysis of Knowledge for Holistic Development) a National Assessment centre as a standard setting body under MHRD for all recognized school boards of India.

No doubt Government's intention is highly praiseworthy, the implementation of the policy requires herculean efforts. The policy seems forward looking and strong on paper. The policy has been finalized after long extensive discussions. What remains to be done now, experts from various fields think, is that there is a dire need for a comprehensive roadmap of implementation as previous policies promised a lot but much of that remained unfulfilled.

We have been aiming at spending the 6 percent of GDP for a long time, But still we have to go a long way to fulfill this. To allocate such a huge amount is a mammoth task for a developing country like India. So government has to proceed with urnestness and firm willingness.

We all know that education is in the concurrent list. Different states are ruled by different government of different ideology. Consensus building among states is a huge task to accomplish. Without proper consensus it is very difficult to reach the task of "one nation one education". The co-operative federalism approach is a must for critical fields like education.

The vocational training programme for school children needs perfect rapport between the ministeries of HRD, skill development and labour.

The COVID-19 has created a new problem. Educational Institutions are closed for last six months or so. There is a need to build huge digital facilities to digitize the education sector. The dearth of online teaching facilities is hampering the education. There is a fear of washing away of this academic year.

In a nutshell, the New Education Policy - 2020 intends to make India a knowledge powerhouse of the world. It is a great endeacour to ensure inclusive and equitable quality education. It is a giant leap to promote lifetime learning opportunity for all by 2030. The education policy is a right step in the right direction provided it is implemented thoroughly with strong devotion, dedication and determination. To keep pace with the changing scenario, the New Education Policy is a welcome step.

Senior Teacher (English)
M.A. (English), B.Ed. PGCTE (CIEFL)
Surajmal Bhomraj Ku Govt. Sec. School
Kuchaman City, Nagar
Mo. 9414024574

पुस्तक समीक्षा

पिघलते लम्हों की ओट से

लेखिका : श्रीमती कीर्ति शर्मा **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, रोड नं. 11, करतारपुरा औद्योगिक क्षेत्र, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
पृष्ठ संख्या : 132 **संस्करण** : 2013
मूल्य : ₹150

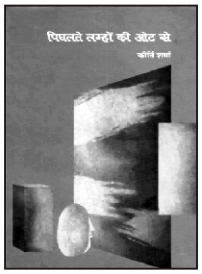

समीक्ष्य पुस्तक 'पिघलते लम्हों की ओट से' वस्तुतः 14 कहानियों का एक खूबसूरत गुलदस्ता है जिसमें कहानीकार ने इस भागमभाग एवं कशमकश भरी जिन्दगी में समय निकालकर अपने दिलो दिमाग में आने वाले कथानकों को कहानी के वेश में ढालने का सुन्दर प्रयास किया है। कहानीकार कीर्ति शर्मा शिक्षक हैं। शिक्षक हैं तो संवेदनशीलता उनके समीक्ष्य सृजन में बोलती नजर आनी ही है। कहानी का सृजन संवेदनशील मन की माँग करता है। संवेदनशीलता, कल्पना शक्ति एवं दूसरे की भूमिका में स्वयं को रखकर उस जैसी अनुभूति कर सकने की योग्यता के बिना प्रभावी कहानी रची नहीं जा सकती। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन कहानी के दर्शन को समझने के लिए पर्याप्त है। रवीन्द्र कहते हैं, 'कहानी महज तथ्यों की प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि किसी एक मानव परिचय की पूरी तस्वीर है, समग्र चित्र है, उसमें हमारे जीवन के अनुभवों ने पूर्णता पाई है।' समीक्ष्य पुस्तक में परोसी गई समस्त कहानियाँ इस अपेक्षा पर खरी उतरने वाली है।

प्रथम कहानी 'दायित्व' के नायक शासकीय नौकरी से सेवानिवृत्त बाऊजी का झल्लाना, माँ जी का उन्हें समझाना, बाऊजी का खाना खाने से इंकार करना, बेटे-बहू की सार्थक मनोवैज्ञानिक भूमिका और अन्ततः बाऊजी का 'मुस्कान भवन' का सदस्य बनकर फिर से पुरानी हँसी-मुस्कान में आ जाना। बहुत ही प्रभावी प्रस्तुति है कीर्ति की। यह सामाजिक कहानी हमारे इर्द-गिर्द मंडराती कहीं भी देखी जा सकती है। साहित्यकार का कर्तव्य है कि सामाजिक समस्याएँ एवं ऊहापोह जगत के सामने लाए लेकिन उनका समाधान बताना भी उसका धर्म है। कहानीकार ने अपने कर्त्तव्य और धर्म दोनों को अच्छे से पूरा किया है कहानी 'दायित्व' में। एक सामाजिक कशमकश का चित्रण उसके समझदारी पूर्ण समाधान के साथ किया गया है। कहानी थोड़ी लम्बी अवश्य है लेकिन तारतम्यता लिए है। संवाद बहुत सहज एवं सरल है।

कहानी 'जोहरा' आपा में गाँव की बेटी कुँजडिन को लेकर अन्तस तक मार करने वाली बहुत सुन्दर कहानी पुस्तक की शोभा है। मुस्लिम जोहरा आपा की सब्जी खरीदने आने वाली एक हिन्दू लड़की के साथ आत्मीयता, दोनों के मध्य वादे-प्रतिवादे। उन्हें पूर्ण करने से पहले जोहरा का इंतकाल तथा इंतकाल से पूर्व वादे-प्रतिवादे। रमजान के पास हिन्दू लड़की को शादी का उपहार देने के लिए डिब्बा सौंपना। बहुत भावपूर्ण कहानी है। हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द एवं प्रेम की अमर गाथा है कहानी जोहरा आपा। ऐसे अद्भुत पात्र हमारे यहाँ बिखरे पड़े हैं। 'कपड़े' कहानी में जूही द्वारा उसके घर में काम करने के लिए आने वाली बाई की बेटियों को कपड़े देने के लिए माँ के प्रस्ताव को ठुकराना तथा बाद में कच्ची बस्तियों में सर्वे के लिए जाने पर देखे दृश्य के कारण हृदय परिवर्तन का मनभावन वृत्तांत किया गया है। जूही न केवल घर पर काम करने के लिए आने वाली बाई के लिए कपड़े बैग में भर कर कच्ची बस्ती के जरूरतमंद परिवारों को देने के लिए जाती है। जूही का यह कथन कितनी गहरी शिक्षा देने वाला है, 'मम्मी इन कपड़ों की जगह अलमारी में नहीं है। इनकी सार्थकता अलमारी में तह कर रखने में नहीं, बल्कि किसी का तन ढकने में हैं। आज मैं इसकी सार्थकता सिद्ध करने जा रही हूँ। मेरे ये कपड़े किसी के बरसों पहनने के काम आएँगे।' संयुक्त परिवारों की उपयोगिता से विज्ञ हम सब है। बावजूद इसके यह सामाजिक संस्था अब टूटती जा रही है। बुजुर्गों के मन में अपनी विरासत के प्रति जो भाव होता है, वह मोह नहीं बल्कि एक भाव है जिसकी उष्मा में घर महकते हैं, पीढ़ियाँ खुशियाँ मनाती हैं। इसका सुन्दर वर्णन कहानी 'विरासत' में पढ़ने को मिलता है जो अन्दर हिला देती है। बानगी के तौर पर कहानी का यह कथन पर्याप्त है, 'बाऊजी का वचन मैंने निभाया। अब किसी और के वचनों के बंधन में न बँधूंगी। ये विरासतें इन्सानों से आबाद रहे, जीवित रहे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है।' बाबू शरतचन्द्र चटर्जी ने कहा है कि यदि कहानी को पढ़कर आनंदातिरेक से नेत्र गीले न हो जाए, तो वह कहानी कैसी? शरत बाबू का यह कथन कीर्ति की कहानियों में सार्थक सिद्ध होता है।

'पिघलते लम्हों की ओट से' नाम लेकर पुस्तक सृजन संसार में आई है। इसी शीर्षक की कहानी, कहानी संख्या 5 है जो निश्छल प्रेम और निस्वार्थ आत्मीय लगाव की अमर गाथा है। अमित और कविता का बालकपन के साथ कैसे उच्च शिक्षा तक रहता है। यह साथ जिसमें इन्सानी फितरत हावी है। मानवीयता एवं संस्कार जिसके स्तंभ है। कहानी बहुत खूबसूरत एवं शिक्षाप्रद है। बार-बार पढ़ने से ही मर्म का अहसास होगा। कविता करना अमित ऊँचाइयों को जाहिर करता है। कहानी में व्यक्त से अल्फा गहराई तक असर करने वाले है-

'फकत इतना याद रखना
मैं प्यार का एहसास हूँ जो सदा साथ रहूँगा
जमाना भूले चाहे बिसरा दे इस जिस्म को,
पर तुम रूह की सदाओं में मेरी आवाज
सुनना
साँसों के तारों में बसा था, बसा रहूँ।'
चिराग-ए-लौ नहीं जो जलकर मिट जाऊँगा
बंदिशों से परे आह्लादित प्रकाश हूँ
हर पल तुम्हारे पास-पास हूँ
धड़कन मे छुपा था, छुपा रहूँगा
मैं प्यार का एहसास हूँ, जो सदा साथ रहूँगा।

समीक्ष्य कृति 'पिघलते लम्हों की ओट से' में स्थान पाई अन्य कहानियाँ यथा फैसला, कचरा बीनने वाला, मौन, मंगू, स्वीकार, रोशनी, गुरु दक्षिणा, साल गिरह एवं भूख सभी कहानियाँ सामाजिक परिवेश एवं घटनाओं को अपने में लिए है जो सबकी सब उद्वेलन, परिवर्तन एवं परिवर्तन की साख भरती है। सामाजिक रिश्तों में प्रेम, सहयोग, समन्वय, वात्सल्य और परोपकार भावना को ठीक से प्रतिपादित करने में कहानीकार निःसंदेह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई है। बकौल कहानीकार यह उनका प्रथम कहानी संग्रह है, मगर कहानियों की

कसावट एवं प्रस्तुति उन्हें एक परिपक्व सृजक एवं सफल कहानीकार सिद्ध करती है। वह हिन्दी व राजस्थानी दोनों में अधिकारपूर्वक बराबर लिखती रही हैं। भाषा का प्रवाह लालित्यपूर्ण है। संवाद सहज सम्प्रेषणीय है। कहीं-कहीं राजस्थानी का पुट मिलता है जो उन्हें अतिरिक्त सहजता प्रदान करता है। कुल मिलाकर समीक्ष्य कृति 'पिघलते लम्हों की ओट से' में शामिल सभी कहानियाँ बहुत सार्थक है।

पुस्तक के प्रकाशक बोधि प्रकाशन, जयपुर को श्रेष्ठ प्रकाशनों के लिए जाना जाता है। यह प्रकाशन श्रेष्ठता की माला में एक नया मनका है। श्रेष्ठ लेखन के लिए कहानीकार तथा श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र है। पुस्तक में प्रयुक्त कागज, मुद्रण, बाइडिंग सब गुणवत्तापूर्ण है। मूल्य एक सौ पचास रुपये उचित है। गुरुजन को चाहिए कि वे ऐसी पुस्तकों का मनोयोगपूर्वक अध्ययन करें। साहित्य से सरोकार पाठकों के लिए नए-नए वातायन खोलता है। उनकी विचारशीलता एवं चिन्तन-मनन को बढ़ाता है। शिक्षक के लिए तो यह और भी ज्यादा जरूरी है। इतिशुभम्।

समीक्षकः **ओमप्रकाश सारस्वत**
संयुक्त शिक्षा निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)-334401
मो: 09414060038

छुट्टी आई मौज करो

लेखक : रामजीलाल घोड़ेला 'भारती' **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, बीकानेर **पृष्ठ संख्या** : 64 **मूल्य** : ₹ 70

बाल साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला 'भारती' का नया बाल काव्य संग्रह 'छुट्टी आई मौज करो' में बाल मनोविज्ञान एवं कोमल चित्तावृत्तियों का सांगोपांग निरुपण हुआ है। 26 बाल कविताओं वाला यह संग्रह पुलवामा के सुरक्षाबलों-शहीदों को समर्पित है। श्री घोड़ेला पेशे से शिक्षक हैं एवं उन्होंने बालकों के बीच लंबे अरसे तक काम किया है। इसलिए रामजीलाल घोड़ेला की कविताएँ बालकों की अभिनव सृष्टि व बाल दुनिया के नवीन संदर्भों की रचना करती है।

'छुट्टी आई मौज करो' संग्रह की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी' ने लिखी है। इंटरनेट के समय में पुस्तक व पाठक के बीच की दूरी का संकट हो गया है-जिसे पाटने में यह संग्रह ताजा हवा का झोंका प्रतीत होता है।

'जल ही जीवन है' कविता के माध्यम से जल संरक्षण का संदेश बच्चों की भाषा व शैली में दिया गया है, वहीं 'जाड़े के दिन आए बच्चों' कविता में शीतकालीन मनःस्थितियों का जीवन्त चित्रण श्री घोड़ेला ही करते है। इस संग्रह की कविताओं में वन, जंगल, देश अनुराग, मिट्टी का गौरव, परिश्रम का महत्त्व एवं राजस्थान की वीरता जैसे अनेकानेक प्रासंगिक विषय संदर्भों का सटीक चित्रण किया गया है। इसके लिए कवि रामजीलाल घोड़ेला बधाई के पात्र है। संग्रह में 'दादाजी' कविता के माध्यम से प्रथम पीढ़ी (दादाजी) व तृतीय पीढ़ी (पोते-पोतियाँ) के मध्य अन्योन्याश्रित पनपने वाले पारस्परिक अनुराग का समीचीन वर्णन किया है।

आज के दौर में बालक के सामने अनेक जटिलताएँ व समायोजन की समस्याएँ है। इंटरनेट की दुनिया ने हमारे बच्चों को भाव-स्खलन व संवेदना शून्य बना दिया है-जो चिंताजनक है। रामजीलाल घोड़ेला 'भारती' का यह संग्रह बाल पाठकों के मन-मंदिर में कर्णप्रिय घंटानाद साबित होगा।

'छुट्टी आई मौज करो' (बाल कविता संग्रह) कलासन प्रकाशन, बीकानेर से प्रकाशित है एवं मूल्य 70/- है। आवरण चित्र राजूराम बिजारणियाँ का है जो सुन्दर व प्रासंगिक बन पड़ा है। कुल मिलाकर 64 सुनहरे पृष्ठों की यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए जटिल व ऊबाऊ होते जीवन के लिए फूलों का सुन्दर सुगंधित गुलदस्ता है जो बाल संवेदनाओं से अटा पड़ा है। बालकों के बीच रहकर बालकों की भाषा में बालक बनकर लिखा गया है यह संग्रह नई ऊँचाइयाँ छुएगा ऐसी अपेक्षा है।

समीक्षक : **कमल किशोर पिपलवा**
व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
गारबदेसर

खेत

लेखक : दिनेश पंचाल **प्रकाशक** : विजया बुक्स दिल्ली **पृष्ठ संख्या** : 151 **प्रकाशन वर्ष** : 2019 **मूल्य** : ₹ 295

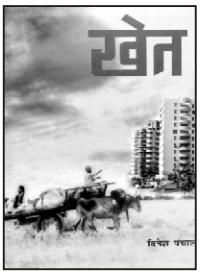

बाजार और पूंजी की अनथक दौड़ में संवेदनशीलता आदमी के दिल के कोने में कहीं उपेक्षित पड़ी दिखाई पड़ती है। ऐसे संवेदनहीनता के दौर में कहानी ही है जो इस प्रवृत्ति को उद्घाटित करने का मादा रखती है। दरअसल कहानी के तमाम सूत्र अपने आस-पास ही होते हैं। इन सूत्रों को कहानी में तब्दील करने के लिए संवेदनशील मन और जागरूक मनःस्थिति की आवश्यकता होती है। किसी भी कहानी में उसका कहन महत्त्वपूर्ण होता है। आज कहानी सब कुछ सिखा देने की जल्दबाजी में नहीं है लेकिन सब कुछ दिखा देने का उतावलापन कहानी में नजर आता है। कहानियों में घटनाक्रम तेजी से बदलते हैं। वह फिल्म की भाँति चलने की चेष्टा करती है। वह पाठक को ठहरने और सोचने का अवसर प्रदान नहीं करती। कहानी जीवन सूक्ष्म अन्वेषण है इसलिए कहानी में जटिलता अवश्यंभावी है। हिन्दी साहित्य में कहानी में बौद्धिकता तड़का लगाकर उसे जबरदस्ती जटिल करने की प्रवृत्ति ने कहानी को पाठकों से दूर किया है। दिनेश पंचाल के कहानी संग्रह 'खेत' को पढ़कर आप इस संबंध में आश्वस्त हो सकते हैं कि जीवन की तमाम जटिलताओं को सरलता से कहानी में रखा जा सकता है।

लेखक जिस अंचल से आते हैं उसे पूरी तरह से अपनी कहानियों में जीवन्त करते हैं। यदि किसी ने इस अंचल को देखा नहीं है तो इस संग्रह की कहानियों को पढ़ते हुए वहाँ के समाज, रीति-रिवाज, सामाजिक, आर्थिक और राजनेतिक परिस्थितियों को बखूबी समझ सकता है। इस कहानी संग्रह को यदि अंचल विशेष के समाजशास्त्र को समझने के लिए बोधगम्य कहूँ तो गलत नहीं होगा।

समीक्ष्य संग्रह में 9 कहानियाँ 151 पृष्ठों में समाहित हैं। इस संग्रह की शीर्षक कहानी

'खेत' एक लंबी कहानी है। 45 पृष्ठों की यह कहानी आज सड़क के किनारे और बड़े शहरों के नजदीक बसे प्रत्येक गाँव की कहानी है। कहीं सेज तो कहीं राजमार्गों के निकलने की घोषणा के कारण भू-माफिया सक्रिय होकर किसानों को लोभ-लालच या डरा धमका कर उनकी जमीनों को हड़पने लगता है। ऐसे में कुछ लोगों का अपने खेत को बचाना भी एक बड़ा संघर्ष बन जाता है। तथाकथित विकास की पृष्ठभूमि में बाजार किस तरह से गाँव में कब्जा करता है। ऐसी अनेक कहानियाँ हिन्दी जगत में आई हैं। लेखक ने इसी प्रवृत्ति को 'खेत' कहानी में उजागर किया है। यहाँ बाजार द्वारा गाँव को हड़पने के लिए किस प्रकार भाई-भाई को आपस में दुश्मन बना दिया जाता है, बखूबी उभारा गया है। लंबी कहानी का सुखद अंत भले ही काल्पनिक लगे पर देश में बहुत सी जगह युवाओं द्वारा इस तरह से कार्य किए है। पढ़ने-लिखने के बाद उन्होंने कृषि को अपनाया है। बहरहाल इस कहानी के बारे में यह कहा जा सकता है कि लेखक तथाकथित विकास की सार्वभौमिक समस्या को अपने अंचल की समस्या रूप में प्रस्तुत किया है। इस लंबी मैराथन कहानी में यदि थोड़ा और प्रयास किया जाता तो एक बेहतरीन उपन्यास निकल सकता था।

दिनेश पंचाल का अपने अंचल की विशिष्टताओं को अपनी कहानी में समेटने कार्य प्रशंसनीय तो है ही। वे बारीक अवलोकन कर वहाँ के जनजीवन को कहानियों में रखने में सफल रहे है।

कहानी 'अंतर्कथा' थोड़ा अलग कलेवर लिए हुए हैं। एक विकलांग व्यक्ति की मनोदशा और उसके प्रति समाज की उपेक्षा को प्रकट करती है। विकलांग और बेसहारा को उसके नजदीकी रिश्तेदार भी सहारा नहीं देते। इस कहानी की ये पंक्तियाँ कहानी की पूरी दास्तां बयां कर देती है- 'अरे तू इस तरह पागलपन करता है और लोग हमें सुनाते हैं। हमें शर्म आती है।' 'मैं सब जाणूं हूँ, भाई।'.....मैं समझदार और जिम्मेदार आदमी हूँ, कोई पागल थोड़े ही हूँ। मिनखों से पैसे लेने के लिए मैं मजाक-ठट्टा करने लगा। कोई मुझे लात मारता है। कोई गाली देता है, कोई नाच करवाता है। मेरा मन तो नहीं करता है, लेकिन यह सब करता हूँ। थोड़ी देर के लिए उनको खुश करता हूँ, ये मेरे को पैसा देते हैं। भाई के लिए सब करने में कैसी शरम? हाँ, ऐसा करते समय तुम्हारे जैसे सगे-वालों की इज्जत का विचार आता भी है, लेकिन फिर कर लेता हूँ।.....मेरा पागलपन ही मेरा धंधा है और धंधा करने में शरम नहीं आती।''

इस संग्रह की भूमिका में लेखक ने इन कहानियों में खेत, किसान, ढोर-डांगर और गाँव की बात बताते हुए लिखा है कि खेत, खेती और ढौर-डांगर व्यक्ति के जीवित रहने के लिए अनिवार्य हैं। फिर भी इसकी उपेक्षा बराबर की जाती रही है। लेखक की इस बात से कोई भी अलग राय नहीं रख सकता। आज किसानों की स्थितियाँ जटिलतम होती जा रही हैं। कर्जे में डूबे किसान आत्महत्याएँ कर रहें हैं। इस कारण खेती से मोहभंग हो रहा है। गाँवों से पलायन बढ़ रहा है। पलायन का दर्द हम कोरोना लॉकडाउन में देख भी चुके हैं। बहरहाल खेत, किसान, ढौर-डांगर की इन कहानियों में 'उसके ना होने का अहसास' कहानी ढौर-डांगर मात्र पशु के दर्द को नहीं रखती वरन् इंसान से उनके उस अबोले रिश्ते को ज़ाहिर करती है। जिसे वही समझ सकता है जिसने कभी पशुओं को पाला हो। एक ओर कहानी 'सरकारी पाडा' सरकारी पाडे भंवरिए के माध्यम सरकारी व्यवस्थाओं और उनकी आड़ में चलने वाले निजी कार्यों की पोल खोलने के साथ-साथ आदमी के उपयोगिता के फार्मूले को ललकारती नजर आती है। कहानी भंवरिए और मंगलजी के बीच के प्रेम बखुबी रखती हुई ग्रामीण जन-जीवन की बारीकियों को बखूबी रखती है।

कहानी 'पनपता परायापन' कहानियों में बहुचर्चित विषय बुर्जुगों की उपेक्षा को दर्शाती कहानी है। कहानी को पढ़कर यह कहना गलत नहीं होगा कि यह समस्या महानगरों और शहरों की समस्या नहीं है वरन् ठेठ सुदुर गाँवों में यह उतनी ही व्यापक है। दरअसल यह समस्या पूंजी का अप्रत्यक्ष प्रभाव से उपजी है। जो उपयोगिता और अनुपयोगिता की पहचान करती है। आज इसी उपयोगिता और अनुपयोगिता के कारण ही यूज एंड थ्रो की संस्कृति जन्म ले रही है। बाजार वस्तुओं में स्थायित्व को कम करता जाता है ताकि उसकी माँग बनी रहे। जब यह प्रवृत्ति व्यक्ति को गहरे से प्रभावित करने लगती है तो वह रिश्तों को भी उसी नजर से देखने लगती है। परिणाम आज भारत जैसे देश में जहाँ रिश्तों के ताने-बाने सामाजिक समरसता के एक प्रमुख औजार के रूप में जाने जाते थे आज ये छिन्न-भिन्न होते नजर आते हैं।

विविधताओं से भरे राजस्थान के दक्षिणी भाग आचार-विचार और संस्कृति की विभिन्नताओं और वहाँ समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को रखने में इस संग्रह की कहानियाँ सफल रही है। इस लिहाज से देखें तो 'डाकण' इस संग्रह की उल्लेखनीय कहानी है। यह कहानी राजस्थान के दक्षिणी अंचल की ही नहीं वरन् भारत के प्रत्येक अंचल की कहानी है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का अपने दम पर खड़े होने की कोशिश करना ही उसके डाकण स्वरूप का कारण बनता है। इसके अलावा उसकी ज्यादा जमीन-जायदाद होना भी उसको डाकण या डायन बनाता है। बहरहाल इस कहानी में डाकण बनने की जो क्रियाविधि बताई गई है वह इतनी जटिल और खतरनाक है कि कोई डाकण बनना डर के मारे ही छोड़ दे। फिर भी आए दिन देश में डायन या डाकण बताकर औरतों की हत्याएँ की जाती है। दरअसल शिक्षा को जन-जन तक नहीं पहुँचा पाने की स्थिति के कारण ऐसा हुआ है। आज की स्थिति में शिक्षित भी इस तरह की अतार्किक घटनाओं को सोशियल मीडिया के माध्यम फैलाने में लगे हुए तब अशिक्षितों की स्थिति तो हम समझ ही सकते हैं। दरअसल शिक्षा के मायने जब मात्र डिग्री लेना और नौकरी लगना हो गया तब वह शिक्षा मानसिक विकास का कार्य पूर्ण नहीं कर पाती। इसलिए ही इस प्रकार की अतार्किक और अविश्वसनीय बातों में जन-मानस विश्वास करने लगता है।

बहरहाल इस संग्रह की कहानियों में इसी अंचल की बात हो ऐसा नहीं है। लेखक 'अनावश्यक कुछ भी नहीं' कहानी में साहित्य और साहित्य जगत की पोल खोलता नजर आता है। इसे कितना कहानी समझा जाए, कितना संस्मरण या लेखक की अपनी रचना प्रक्रिया आलेख यह अलग बात है। दरअसल कहानी में कहन होना आवश्यक है। प्रत्येक नवोदित को सीनियर द्वारा खारिज किया जाता है। ऐसे में प्रत्येक लेखक आत्मालाप करते हुए एक-एक कहानी तो बना ही सकता है। हालांकि ये भी सच

है कि आज के वाह! वाह! के इस युग में आलोचना किसी को पसंद नहीं है। सभी आत्ममुग्ध हो आत्मलाप कर रहें हैं और चारो ओर वाह ! वाह! सुनाई पड़ रहा है। ऐसे में यह कहानी आलोचक के तटस्थ होने की बात को रखती है।

समीक्ष्य संग्रह की कहानियों में विविधता भी है। इस संग्रह की कहानी 'एक प्रेत की आत्मकथा' व्यक्ति के मरने के बाद उसके घर में उसकी स्थिति को दर्शाने वाली व्यंग्य कथा है। इस कहानी को पढ़कर पहले कभी पढ़ी खुशवंत सिंह की ऐसी ही कहानी जिसका शीर्षक याद नहीं है, याद हो आई है। अंतिम कहानी 'रहिमन बिगड़े दूध का' में गाँव में अकेली रहने वाली समरत बा की कहानी है। जो जीते जी पूरे गाँव के लिए छाछ की व्यवस्था करती रही। इस कहानी में शहरी और गंवई संस्कारों को अन्तर्द्वन्द्वों को उभारते हुए ग्राम्य जीवन की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है।

इस संग्रह को पढ़कर यदि एक पंक्ति में व्याख्या करनी हो तो कहा जा सकता है कि 'यह संग्रह ग्राम्यजगत (विशेष तौर पर राजस्थान के वागड़ अंचल) का जीवन्त दस्तावेज है। इतना सब कुछ होते हुए भी कहीं-कहीं, कहानियों में अनावश्यक विस्तार ने पठनीयता को प्रभावित किया है। ऐसा प्रत्येक लेखक के साथ होता है, क्योंकि लेखक जब कहानी लिखने बैठता है तो उसके पास उसकी कहानी से जुड़े बहुत से आयाम सामने होते हैं। लेखक सभी बातों को कहानी में कहने का मोह कहानियों में अनावश्यक विस्तार का कारण बन जाता है। कहानी लेखन में या किसी भी प्रकार के लेखन में क्या-क्या शामिल करना है कि बजाय क्या-क्या छोड़ना यह बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस संग्रह की कहानियों की भाषा में आंचलिक भाषा का मिश्रण प्रवाह में सहायक बना है। कुल मिलाकर अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि संग्रह पठनीय और संग्रहणीय है। संग्रह की सुन्दर छपाई और आकर्षक कवर प्रशंसनीय है।

समीक्षकः **डॉ.प्रमोद कुमार चमोली**
राधास्वामी सत्संग भवन के सामने,
गली नं. 2, अम्बेडकर कॉलोनी,
पुरानी शिवबाड़ी रोड, बीकानेर
मो. 9414031050

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

मेरा शहर, प्यारा शहर

❐ पाखी जैन

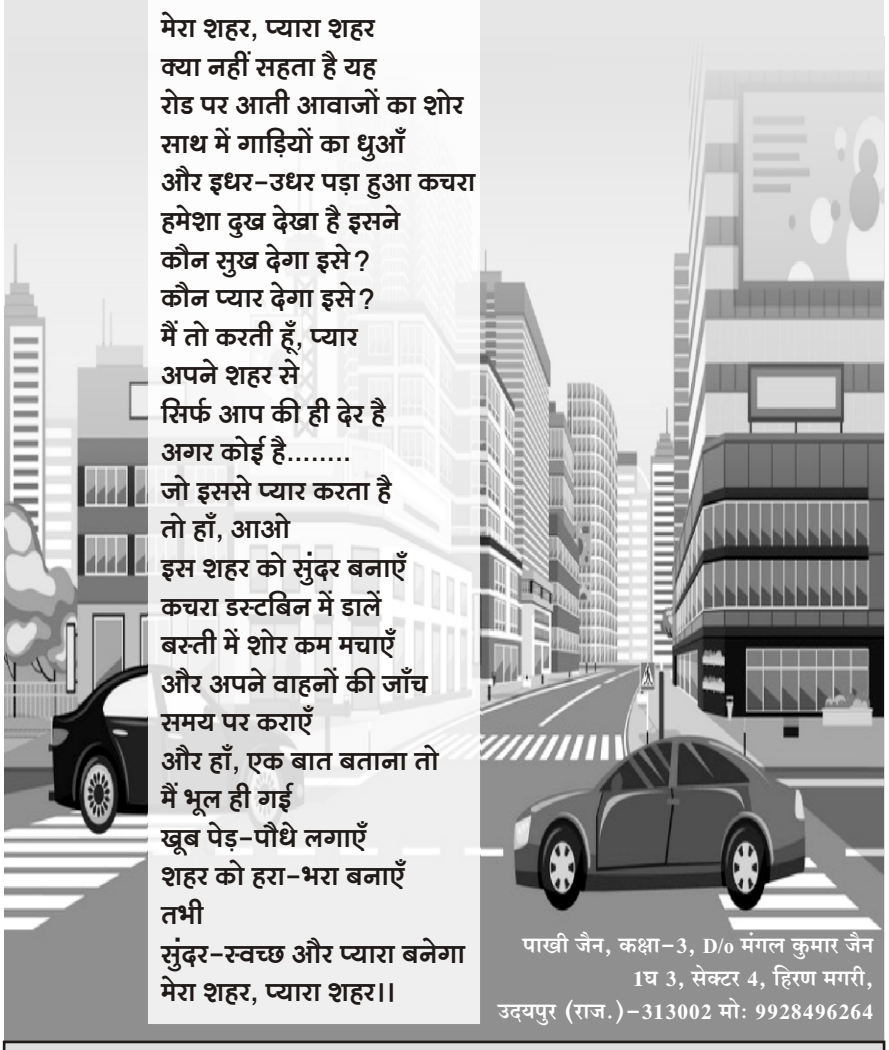

मेरा शहर, प्यारा शहर
क्या नहीं सहता है यह
रोड पर आती आवाजों का शोर
साथ में गाड़ियों का धुआँ
और इधर-उधर पड़ा हुआ कचरा
हमेशा दुख देखा है इसने
कौन सुख देगा इसे?
कौन प्यार देगा इसे?
मैं तो करती हूँ, प्यार
अपने शहर से
सिर्फ आप की ही देर है
अगर कोई है.....
जो इससे प्यार करता है
तो हाँ, आओ
इस शहर को सुंदर बनाएँ
कचरा डस्टबिन में डालें
बस्ती में शोर कम मचाएँ
और अपने वाहनों की जाँच
समय पर कराएँ
और हाँ, एक बात बताना तो
मैं भूल ही गई
खूब पेड़-पौधे लगाएँ
शहर को हरा-भरा बनाएँ
तभी
सुंदर-स्वच्छ और प्यारा बनेगा
मेरा शहर, प्यारा शहर।।

पाखी जैन, कक्षा-3, D/o मंगल कुमार जैन
1घ 3, सेक्टर 4, हिरण मगरी,
उदयपुर (राज.)-313002 मो: 9928496264

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

नवाचार

राजकीय माध्यमिक विद्यालय बिलन्दी, उमरैण (अलवर)

नरेगा मजदूर बना भामाशाह और स्कूल में बनाया कमरा

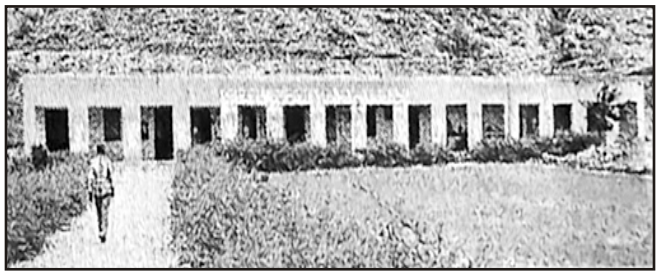

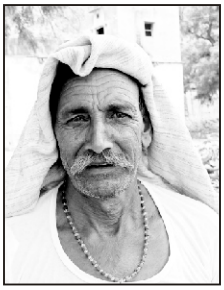

बिलन्दी के सरकारी स्कूल में बच्चों को बैठने के लिए कमरे कम थे तो नरेगा मजदूर बाबू लाल गुर्जर ने अपने पोता-पोती को पढ़ाने के लिए नया कमरा बना दिया जिससे सभी ग्रामीणों को प्रेरणा मिली और ग्रामीणों ने भी सभी घरों से चन्दा एकत्रित कर दूसरे कमरे का निर्माण शुरू किया है ।

2013 में उमरैण ब्लॉक का सरकारी स्कूल माध्यमिक में क्रमोन्नत हुआ तब मात्र दो कमरे थे लेकिन निर्माण हेतु कोई जमीन उपलब्ध नहीं थी पूर्व प्रधान शिव लाल गुर्जर के प्रयास से लगभग एक किलोमीटर दूर स्कूल भवन और खेल मैदान के लिए भूमि आवंटन हुई और 4 कक्षा कक्ष और चारदीवारी का निर्माण कराया ।

संस्था प्रधान भावना मीना ने बताया कि मेरा पोस्टिंग अक्तूबर 2019 में यहाँ संस्था प्रधान के रूप में हुआ तो चार कमरों में 10 क्लास संचालन करना मुश्किल काम था लेकिन गाँव के ही बाबू लाल गुर्जर एक दिन विद्यालय आए और उन्होने स्कूल में कमरा बनाने हेतु कहा तो तुरंत स्वीकृति दे दी गई । बाबू लाल गुर्जर ने कमरा निर्माण शुरू किया तो सभी ग्राम बासियों को प्रेरणा मिली और ग्राम बासियों ने राशि एकत्रित कर एक कमरे का निर्माण और शुरू कराया । बाबू लाल का कमरा बन चुका है और ग्रामीणों द्वारा कमरा निर्माणाधीन है अन्य कमरों के निर्माण हेतु सरकार को प्रस्ताव भेजे है विद्यालय में नामांकन 282 है अगर यहाँ और कक्षों का निर्माण होता है तो नामांकन और बढ़ेगा ।

बाबूलाल गुर्जर ने बताया कि उनको अपने पोता-पोती का प्रवेश इस सरकारी विद्यालय में कराना था लेकिन यहाँ कमरे कम थे तो मैंने एक कमरे का निर्माण कराया है मुझे खुशी है कि अब सभी ग्रामबासी मुझे देखकर एक कमरे का निर्माण और कर रहे हैं बाबू लाल गुर्जर ने बताया कि उनके पास मात्र 3 बीघा जमीन है और स्वयं मजदूरी करते हैं लेकिन अब अपने पोता-पोती का प्रवेश इस स्कूल में कराऊंगा ।

रा.उ.प्रा.वि. कालीखोल, पंचायत समिति-उमरैण (अलवर)

कालीखोल के ओमप्रसाद गुर्जर ने स्कूल को जमीन खरीद कर दान दी

अलवर मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गाँव कालीखोल जो उमरैण पंचायत समिति के खेडका ग्राम पंचायत अन्तर्गत आता है । अलवर से पुराने जयपुर मार्ग पर 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अकबरपुर से पश्चिम की ओर 10 किलोमीटर पर अरावली की पहाड़ियों के मध्य कालीखोल गाँव है । लगभग 1400 की आबादी वाला यह गाँव जिला मुख्यालय से नजदीक होने के कारण पिछड़ा ही है । यहाँ के ज़्यादातर लोग मजदूरी और खेती, पशुपालन ही करते हैं। गाँव में ज़्यादातर कच्चे मकान हैं । ज़्यादातर लोगों ने अलवर शहर भी नहीं देखा है ।

यहाँ एक 8वीं तक का सरकारी स्कूल है जिसमें 260 बच्चे पढ़ते हैं जिसमें मात्र तीन कमरे और घुटन भरा माहौल होने के कारण बच्चे खुले में पेड़ों के नीचे बैठने को मजबूर थे। दिन भर यहाँ भेंसो का आवागमन और भेंसो द्वारा किए गए गोवर को बार-बार बच्चों को ही हटाना पड़ता था। कुछ दिन पूर्व 260 बच्चों को पढ़ाने के लिए मात्र 3 शिक्षक थे।

यहाँ की समस्या को समझने के बाद गाँव के ही ओमप्रसाद गुर्जर ने स्कूल को कीमती जमीन स्वयं के पैसे से खरीद कर दान में दी हालांकि ओमप्रसाद गुर्जर स्वयं आज भी कच्ची झोंपड़ी में रहते हैं।

दान की जमीन में सर्व शिक्षा अभियान से 21.00 लाख रुपये की स्वीकृति जारी हुई तो यहाँ 5 कमरों का निर्माण हुआ । नवीन कक्षा कक्षों को ट्रेन की तरह पैंट कराया गया क्योंकि यहाँ के ज़्यादातर लोगों ने एवं बच्चों ने कभी ट्रेन नहीं देखी थी । चारदीवारी ग्राम पंचायत द्वारा कराई गई और क्यू . आर. जी . फ़ाउंडेशन द्वारा शौचालयों का निर्माण कराया गया ।

चारदीवारी पर आकर्षक पैंट एवं शैक्षिक कार्टून और कक्षों को ट्रेन के रूप में देखकर बच्चे और ग्रामबासी रोमांचित हैं। भूमि दानदाता ओमप्रसाद गुर्जर सरकार को धन्यवाद देते हुए कहते है कि जिस मकसद से उन्होने जमीन दान में दी थी आज उनका मकसद पूरा हो गया। ओमप्रसाद चहाते हैं कि अब गाँव के बच्चे 8वीं पास करके आगे भी पढ़ाई जारी रखें।

❐ **राजेश लवानिया,** इंजीनियर, समग्र शिक्षा अभियान, अलवर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

टीन शेड का निर्माण

सीकर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय माण्डेला छोटा, फतेहपुर शेखावाटी, सीकर, राजस्थान में भामाशाह श्री लक्ष्मीनारायण गोयनका ने अ. शबनम भारतीय की प्रेरणा से एक लाख सत्तर हजार (1,70,000/-) रुपये की लागत का/के टीन शेड का निर्माण करवाया। प्रधानाध्यापक श्री गोपाल सिंह ने भामाशाह का धन्यवाद व आभार प्रेषित किया।

स्काउट्स ने कुंचौली में मनाया विश्व स्कार्फ दिवस

राजसमंद। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली स्थानीय संघ-कुंभलगढ़ में स्काउटर श्री राकेश टांक के मार्गदर्शन में विश्व स्कार्फ दिवस के दिन के अनुसार बताया कि विश्व स्कार्फ दिवस के आयोजन के पीछे उद्देश्य यह है कि सभी पूर्व और सक्रिय स्काउट्स को सार्वजनिक रूप से अपने स्काउट स्कार्फ को पहनने के लिए प्रेरित किया जाना है ताकि स्काउटिंग की भावना सभी को देखने को मिले। स्काउटिंग सनराइज दिवस पर स्काउट्स ने सोशल डिस्टेंसिंग की पालना करते हुए कुंचौली में विभिन्न रंगों व डिजाइन के स्कार्फो का प्रदर्शन विभिन्न प्रकार की आकृतियों में कर बड़े ही हर्षोल्लास से दिवस को मनाया गया साथ ही प्रभारी सहित स्काउट्स ने स्काउट गाइड प्रतिभा को दोहराते हुए अपना-अपना वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड किया ताकि भारत स्काउट गाइड का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज हो सके। इस अवसर पर सहायक लीडर ट्रेनर सर्वश्री राकेश टांक, सहायक स्काउटर दला राम भील, स्काउट्स शंकर सिंह कुम्भावत, देवेन्द्र सिंह डुलावत, धूल चंद भील, महेन्द्र सिंह कुम्भावत, अभिषेक प्रजापत, नवीन कुमार ने मिलकर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया विश्व स्कार्फ डे।

शिक्षकों ने मिलकर किया विद्यालय का सौन्दर्यकरण

जोधपुर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय साँवलों की ढाणी, गोविन्दपुरा पं. स. देचू में सभी शिक्षकों ने मिलकर विद्यालय के सौन्दर्यकरण का कार्य किया। इन दिनों विद्यालयों सभी विद्यार्थियों की छुट्टियाँ चल रही हैं तथा केवल शिक्षक उपस्थिति दे रहे हैं। ऐसे में प्रधानाध्यापक श्री खेताराम, शिक्षक, सर्वश्री शेषा राम, ईश्वर सिंह, सोहन राम, धनसुख, विकास असवाल, पीटीआई तुलछाराम व समाज सेवी शिक्षक सवाईदान ने मिलकर विद्यालय की कक्षाओं में बहुत सारे शिक्षाप्रद चित्र बनाकर कक्षा-कक्षों में चार चाँद लगा दिए। विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किए गए इस कार्य की गोविन्दपुरा पीईईओ. श्री गोपाल सिंह जी ने सराहना की। सभी शिक्षक साथी पौधों के रखरखाव के साथ ही विद्यालय परिसर की साफ सफाई भी करते रहते हैं।

नरेगा कार्यस्थल पर 1100 मास्क वितरित

राजसमंद। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमरवास, पं. स कुंभलगढ़ (राजसमंद) के प्रधानाचार्य गणेश राम बुनकर और स्काउट द्वारा कोरोना महामारी के दौरान सरपंच, पुलिस थाना चारभुजा के नरेगा कार्यस्थल पर 1100 मास्क वितरित किए गए।

पौधों को रक्षा सूत्र बाँधकर लिया संकल्प

चित्तौड़गढ़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरपुरा पं.स. बेंगू में आज वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। रोवर स्काउट लीडर जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि सभी शिक्षकों ने प्रधानाचार्या मधुबाला शर्मा के नेतृत्व में विद्यालय के खेल मैदान एवं बंजर पड़ी भूमि पर वृक्ष लगाए गए एवं पौधों की रक्षा सूत्र बाँधकर रक्षा करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर व्याख्याता सर्वश्री दिनेश भट्ट, हरिश खत्री, रमेश मीणा, राकेश शर्मा, चंद्र प्रकाश, कृष्ण कांत शर्मा, राजेन्द्र सिंह, उमराव बाकोलिया, लक्ष्मीकांत भट्ट, देवीलाल, शकु आमेटा, वंदना गुर्जर, हिमांशु सिंह आदि ने पाँच-पाँच पौधे लगाकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। इस पुनीत कार्य में विद्यालय के रोवर रेंजर ने भी वृक्षारोपण किया।

उत्कृष्ट परिणाम देने वाली बालिकाओं का किया सम्मान

बाड़मेर। मेराम चंद हूंडिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मोकलसर में बारहवीं कला वर्ग में उत्कृष्ट परिणाम देने वाली बालिकाओं का विद्यालय परिवार द्वारा सम्मान किया गया। ज्ञात हो कि इस वर्ष बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मोकलसर के कला वर्ग का परिणाम 96.15% रहा है। जिसमें विद्यालय की होनहार बालिकाओं प्रथम कुसुम्बी मेघवाल 84%, द्वितीय प्रियंका गोस्वामी 83%, तृतीय प्रेमा कुमावत 79.2% का साफा और माल्यार्पण से सम्मान किया गया। विद्यालय के संस्थाप्रधान श्री सुरेश कुमार सोलंकी एवं सटाफ व सभी ने बालिकाओं को बहुत-बहुत बधाईयाँ दी गई। मेरामचंद हूंडिया रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर में हरियालो राजस्थान कार्यक्रम के तहत विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। जिससे सरेस, करंजी, गुलमोहर और नीम के पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में विद्यालय के संस्थाप्रधान सुरेश कुमार सोलंकी, व्याख्याता श्री ओमप्रकाश पटेल, श्री जगदीश विश्नोई, व्याख्याता श्री भरत कुमार सोनी, वरिष्ठ अध्यापक श्री जितेन्द्र, वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती सुधा रैया, अध्यापिका श्रीमती सजना कुमार, श्रीमती सागर बाई सहित विद्यालय के स्टाफ उपस्थित रहे।

कलाम के रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

बीकानेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में भारत के पूर्व राष्ट्रपति जैनुल अब्दीन अब्दुल कलाम की 5वीं पुण्यतिथि उनके फोटो पर माला पहनाकर एवं दीपक जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद ने कलाम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए इन्हें बताया की इन्होंने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक

सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम अधिकारी एवं प्रवेशोत्सव प्रभारी श्री मोहरसिंह सलावद के नेतृत्व में अध्यापकों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए विद्यालय प्रांगण में छायादार एवं फलदार पौधे लगाए। विद्यालय के अध्यापकों द्वारा नव प्रवेश के लिए घर-घर जाकर अभिभावकों से संपर्क किया जा रहा है उनसे एक-एक पेड़ लगाने का आह्वान किया जा रहा है। पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ अध्यापक श्री सलावद, सुजान सिंह राठौड़, रणछोड़ सिंह सोढ़ा, प्रभुराम, प्रेमसिंह आदि मौजूद रहे।

स्काउट जिला मूल्यांकन समिति की बैठक सम्पन्न

डूँगरपुर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूँगरपुर के तत्वावधान में जिला स्तरीय स्काउट गाइड जिला मूल्यांकन समिति बैठक का आयोजन स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूँगरपुर में जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री बंशीलाल रोत की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में जिले की सत्र 2019-2020 की गतिविधियों पर मंथन एवं विचार-विमर्श किया गया तथा सत्र 2020-2021 की प्रस्तावित कार्य योजना का निर्माण किया गया। श्री रोत ने अपने उद्बोधन में विद्यालयों में स्काउट गतिविधियों को प्रभावी रूप से संचालित करने का आह्वान किया। सी.ओ. स्काउट श्री सवाईसिंह ने बताया कि इस दौरान तृतीय सोपान, चतुर्थ चरण, हीरक पंख, गोल्डन ऐसे, राज्य पुरस्कार, आवेदन, ग्रुप विजिट, ग्रुप पंजीकरण, स्थानीय संघ सम्मान, दीर्घकालीन सेवा अलंकार, ईको क्लब, जल सेवा परिण्डा अभियान सहित विभिन्न उपयोगी विषयों पर जानकारी का आदान-प्रदान किया गया। इस दौरान स्थानीय संघवार सभी सचिवों ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा विशिष्ट अतिथि श्री गटुलाल अहारी प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर एवं जिला शिक्षा अधिकारी ब्लॉक डूँगरपुर ने अपने विचार में कोरोना जागरूकता बचाव तथा पौधरोपण किचन गार्डन की जानकारी आमजन तक पहुँचाने का आह्वान किया। इस अवसर पर जिले के स्काउटर गाइडर व संगठन के पदाधिकारियों ने सहभागिता की।

वेबसाइट का लोकार्पण

बीकानेर। शिक्षकों से ही स्कूल बनता है और शिक्षक वह है जो शाला और बच्चों का सर्वांगीण विकास करता है। माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री सौरभ स्वामी ने निदेशालय के अपने कक्ष में राजकीय सादुल उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा निर्मित वेबसाइट के लोकार्पण करते हुए कहा उन्होंने कहा कि संचार के इस युग में बच्चे और अभिभावकों को कोई परेशानी ना हो और स्कूल से संबंधित समस्त जानकारी करने के पश्चात ही विद्यालय का चयन कर सकते हैं। आज के इस दौर में सरकारी विद्यालय अपनी उपलब्धियों से निजी स्कूलों से बहुत आगे आ गई हैं। सादुल स्कूल की वेबसाइट की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि अब दूसरे सरकारी स्कूलों को इससे प्रेरणा लेकर इस संबंध में विचार करना चाहिए। उन्होंने वेबसाइट के लोकार्पण के पश्चात उसका अवलोकन करते हुए विद्यालय की पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, पूर्व छात्र और विद्यालय की अन्य उपलब्धियाँ तथा वर्तमान होनहार छात्रों की जानकारी लेकर विद्यालय की प्रशंसा करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर उपस्थित जिला शिक्षा अधिकारी मा. शि. (मुख्यालय) उमाशंकर किराडू ने कहा कि आज के दौर में सरकारी विद्यालय अपने विभिन्न कार्यों से प्रगति के पथ पर हैं और शिक्षकों की कड़ी मेहनत से इस बार बीकानेर जिला संभांग में परीक्षा परिणाम में सर्वोच्च रहा है। उन्होंने कहा कि सादुल स्कूल ने वेबसाइट का निर्माण कर जिले की दूसरी सरकारी स्कूलों को एक दिशा दी है। वेबसाइट बनने से बच्चों को प्रवेश और शुल्क के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा। इस अवसर पर वेबसाइट के बारे में जानकारी देते हुए सादुल उ.मा.वि. की प्रधानाचार्य डॉ. सोनिया शर्मा ने बताया कि वेबसाइट के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों को विद्यालय की समस्त गतिविधियों से अवगत करवाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वेबसाइट में विद्यालय स्टाफ एवं अन्य शैक्षिक और सहशैक्षिक गतिविधियों की समस्त जानकारी उपलब्ध होगी उसके साथ-साथ विद्यालय में प्रवेश और पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध रहेगी। वरिष्ठ अध्यापक श्री सुभाष जोशी ने बताया कि सादुल स्कूल के नवाचारों में आज एक और अध्याय जुड़ गया है। वेबसाइट के माध्यम से देश-विदेश में बैठे व्यक्ति और पूर्व विद्यार्थी स्कूल की जानकारी से समय-समय पर अवगत होते रहेंगे। इस अवसर पर सर्वश्री पवन मित्तल, मांगीलाल गोदारा सहित निदेशालय के विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

उपखण्ड स्तर पर सुमेरपुर में शिक्षकों को दिया कोरोना वारियर्स सम्मान

पाली। जिले से सुमेरपुर उपखंड में अगस्त क्रांति सप्ताह के दौरान शिक्षकों को कोरोना वारियर्स सम्मान में सम्मानित किया गया। उपखंड अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार (IAS) व वृत्ताधिकारी श्री रजत विश्नोई ने कोरोना वारियर्स को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न भेंट कर इनके कार्य की सराहना की। इस क्रम में श्री गोरधन सिंह राजपुरोहित, श्री रविन्द्र त्रिवेदी, श्री अशोक चोरड़िया, श्याम सुंदर लौहार, घनश्याम लौहार, सुरेश शर्मा, गौरव सिंह घाणेराव, छोगाराम देवासी, हस्तीमल सैन, कलाराम, राहुल राज, ईश्वरदास मीणा, पुकाराम, रामस्वरूप छाबा सहित 22 शिक्षकों व चिकित्सा विभाग, एन.सी.सी. पुलिस मित्र और आँगनबाड़ी के कर्मचारियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में CI श्री रविन्द्र सिंह खींची, सीबीईओ श्री मोहनलाल सोनी, नगरपालिका अध्यक्षा श्रीमती उषा कँवर, एसीबीईओ. श्री परबत सिंह राठौड़ व श्री गजेन्द्र सिंह राणावत आदि मौजूद रहे।

जनसहयोग से नवनिर्मित कक्षा-कक्ष का लोकार्पण एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम

अजमेर। महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) वैशाली नगर अजमेर में 74वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह कोविड-19 के चलते छात्र-छात्राओं की अनुपस्थिति के कारण 200 पौधों के वृक्षारोपण के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत ध्वजारोहण के पश्चात विद्यालय के संस्कृत शिक्षक डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी के द्वारा राजस्थानी

गीत 'धरती धोरां री' एवं विद्यालय की शिक्षिकाओं द्वारा गाए गए गीत 'ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम' के साथ हुई। इसके बाद विद्यालय के खेल मैदान में रोटरी क्लब भांकरोटा एवं ग्रीन आर्मी अजमेर के प्रयास से सभी तरीके के टिम्बर प्लांट लगाकर बॉटनिकल गार्डन का उद्घाटन किया गया। इस गार्ड में लगाए गए सभी प्रकार के पौधों का इनसाइक्लोपीडिया तैयार किया जाएगा जिससे हर प्रकार के पौधे की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी। इसी कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के 'एक मिनख-एक पेड़' कार्यक्रम की भी शुरूआत की गई। 74वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर ही विद्यालय में जनसहयोग से नव निर्मित कक्षा-कक्ष का लोकार्पण सत्र 2019-20 की बोर्ड परीक्षा में विद्यालय में सर्वाधिक अंक 92.40% प्राप्त करने वाले छात्र दिनेश खूबचंदानी द्वारा करवाया गया। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अजमेर के सचिव एडीजे श्री शक्ति सिंह शेखावत, महिला एवं बाल विकास विभाग, अजमेर के उपनिदेशक श्री हेमंत स्वरूप माथुर, राजस्थान काराग्रह प्रशिक्षण संस्थान अजमेर के प्राचार्य श्री पारसमल जाँगिड़, बंसल पूर्वांचल जनचेतना समिति चैरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री रजनीश वर्मा, अजमेर महिला कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती सबा खान, रोटरी क्लब भांकरोटा के अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह गहलोत, ग्रीन आर्मी अजमेर के अध्यक्ष श्री सिद्ध भटनागर, विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव एवं विद्यालय स्टाफ आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में प्रधानाचार्य श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आडसर में भी हुआ कोरोना योद्धा व शिक्षकों का सम्मान

बीकानेर। लूणकरनसर ब्लॉक के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर में स्वतंत्रता दिवस पर कोरोना महामारी काल में सक्रिय भूमिका निभाने वाली कोरोना योद्धा ए.एन.एम. सुमन को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। 74वें स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ पर प्रधानाचार्य रामजीलाल घोड़ेला ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर पधारे हुए ग्रामीणों ने सोशल डिस्टेंस का पालन किया। इस अवसर पर कक्षा 10वीं का शत प्रतिशत परिणाम रहने पर शिक्षकों का ग्रामीणों द्वारा शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय में 21,000 की छात्रों के लिए दरियाँ भी भेंट की गई। विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति द्वारा भामाशाहों सम्मान पत्र व प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के शिक्षक श्री सुलतान राम सुण्डा ने प्रिंटर भेंट किया। वक्ताओं ने कोरोना काल में सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी का पालन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री रामजीलाल घोड़ेला, सर्वश्री ओमप्रकाश गोदारा, ओंकार मल राधायी भामाशाह बिशननाथ सिद्ध, जेठनाथ, पन्नाराम मेघवाल, आदूनाथ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित

चित्तौड़गढ़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पारसोली में आज दिनांक 14 अगस्त 2020 को प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में बोर्ड परीक्षा परिणाम 2020 में 70% से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले 22 मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी बेगू श्री सतीश चंद्र शर्मा ने बच्चों का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि जीवन में शिक्षा ही जीवन का मूल मंत्र है विशिष्ट अतिथि नायब तहसीलदार साहब पारसोली श्री रामधन सराधना ने अपने जीवन के संस्मरण बताएँ और कहा कठिन परिश्रम से सफलता प्राप्त की जा सकती है ग्राम पंचायत पारसोली के सरपंच प्रतिनिधि श्री पृथ्वीराज सिंह ने विद्यालय के विकास हेतु हर समय तत्पर रहने का आश्वासन दिया इस कार्यक्रम में सरपंच श्रीमती निर्मला सिंह, डॉ हर्षित शर्मा, आरपी कन्हैया लाल धाकड़, आरपी खालिद मिर्जा, सीए अंकुर बसेर यह आयुषी बसेर स्टेशन मास्टर पारसोली विजय शर्मा, भंवर सिंह चौहान, लादू लाल प्रजापत, रतन लाल खटीक ने विशिष्ट अतिथि पद को सुशोभित किया। इस मौके पर स्टाफ के सर्वश्री नंदकिशोर धाकड़, रतन लाल, दिनेश लाल जी डीडवानिया, शंकरलाल यादव, अशोक मीणा, अजय सिंह राठौड़, श्यामसुंदर मूंदड़ा, खुर्शीद अहमद, मांगीलाल जीनगर, सपना जैन, अमृता मीणा, राधा व्यास, इंदिरा बाहेती, शकुंतला बैरागी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य श्री रविंद्र सिंह राव ने सभी स्टाफ साथियों की टीम भावना से अच्छे परिणाम के लिए आभार व्यक्त किया। मंच संचालन सुंदरपाल शर्मा ने किया। इस मौके पर विद्यालय के अध्यापक और स्काउटर श्री अजय सिंह राठौड़ द्वारा कोरोना सहयोग में गुरु द्वारा प्रताप नगर भोजन शाला चित्तौड़गढ़ में साथियों के सहयोग से 1,02,100 रु प्रदान करने के लिए मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री सतीश चंद्र शर्मा और सभी अतिथियों ने स्वागत किया।

विद्यालय में वृक्षारोपण किया गया

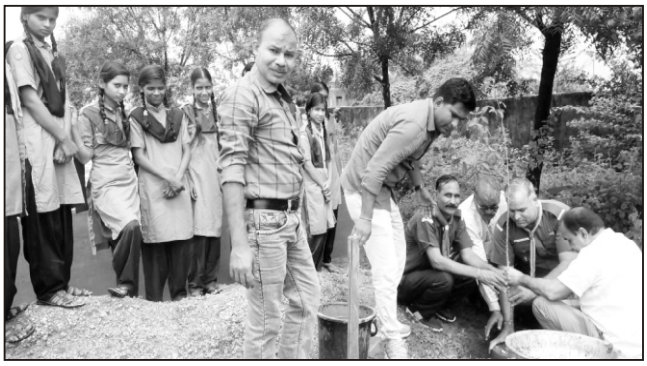

झालावाड़। दिनांक 23.08.2020 को राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़ मे राज्य सरकार की गाइड लाइन के अनुसार सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए व मास्क लगाकर ईको क्लब योजनान्तर्गत वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्रीमान सी.ओ. स्काउट श्री रामकृष्ण शर्मा, अध्यक्षता पर्यावरण प्रेमी समाज सेवक श्री गायत्री प्रसाद बोहरा, विशिष्ट अतिथि विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री प्रेमचन्द दाधीच रहे। इस कार्यक्रम मे कल्पवृक्ष के साथ साथ पंचवटी के पौधे भी लगाए गए। पर्यावरण प्रेमी गायत्री प्रसाद बोहरा ने

वृक्षारोपण का महत्त्व बताते हुए गाइड्स व बच्चों को प्रेरणा देते हुए बताया की जब भी अपने घर पर मांगलिक अवसर हो एवं अपना जन्मदिन हो एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। पौधे लगाने से अपनी जीवन आयु बढ़ती है। साथ ही आज जिस कोराना जैसी महामारी से हम जूझ रहे है, वह भी नहीं आती है क्योंकि ये सब महामारियाँ प्रकृति के असन्तुलन से ही पैदा होती है। प्रकृति का सन्तुलन पौधे लगाने से ही हो सकता है। सी. ओ. स्काउट रामकृष्ण शर्मा द्वारा ग्रुप सम्भाल व निरीक्षण किया गया निरीक्षण के पश्चात् सभी स्काउटर, गाइडर व गाइड्स द्वारा एक एक पौधा भी लगवाया गया। इस कार्यक्रम मे स्काउटर श्री हरिओम लववंशी विद्यालय स्टॉफ सर्वश्री ओम प्रकाश सेन, मोहन सिंह चन्द्रावत, सीयाराम धाकड़, श्रीमती सरोज मीणा, प्रियंका दुबे, कहकशा खानम, कविता नागर, शैलेन्द्र सेन व स्कूल की गाइड्स आदि ने पौधारोपण कर सराहनीय कार्य किया।

सहायता राशि का सहयोग किया

श्रीमती इन्द्रा चौधरी, जिला शिक्षा अधिकारी (सीएसआर./आदर्श विद्यालय) निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा आज ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से राजकीय बालिका उमावि. कानोई, सुजानगढ़ जिला चूरू में प्रयोगशाला के उपकरण हेतु 21,000 रुपये की राशि का सहयोग किया गया। आप उक्त विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी रहे हैं। शिक्षा अधिकारियों द्वारा की जा रही यह पहल सराहनीय है।

भामाशाह सम्मान समारोह एवं प्रतिभावान छात्रा सम्मान समारोह का आयोजन

प्रतापगढ़। आज 26 अगस्त, 2020 को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़ में भामाशाह सम्मान समारोह एवं प्रतिभावान छात्रा सम्मान समारोह कैलाश चंद्र जोशी सेवानिवृत्त उपनिदेशक टी.ए.डी. उदयपुर के मुख्य आतिथ्य एवं श्री युगल बिहारी दाधीच मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़ की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि किशन लाल कोली, जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय माध्यमिक प्रतापगढ़, रामप्रसाद चर्मकार मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़, सुधीर वोरा, अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़, दीपक श्रीवास्तव, शाखा प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, प्रतापगढ़, उत्सव जैन, पूर्व पार्षद, राकेश पालीवाल पूर्व पार्षद एवं एसडीएमसी सदस्य, उपेंद्र शर्मा भामाशाह थे। स्वागत उद्बोधन दिलीप कुमार मीणा ने किया। श्री कैलाश जी जोशी ने अपने उद्बोधन बताया विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम में निरंतर गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टि से उन्नति कर रहा है।

श्री किशन लाल कोली जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक प्रतापगढ़ ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने के लिए विद्यालय स्टाफ को बधाई दी। श्री सुधीर वोरा ने बालिका विद्यालय के भौतिक परिवेश में सकारात्मक परिवर्तन की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए स्वर्गीय प्रधानाचार्या श्रीमती विमला शर्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री युगल बिहारी दाधीच ने श्रीमती विमला शर्मा के निधन पर शोक प्रकट करते हुए बताया कि उनकी कार्यशैली उत्कृष्ट श्रेणी की थी। वे विद्यालय और समाज के विकास के लिए लगातार प्रयासरत रहती थी उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन एवं स्वास्थ्य की ओर ध्यान न देकर विद्यालय विकास में निरंतर प्रयास किया।

विद्यालय में उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाली स्थानीय विद्यालय की छात्राओं को प्रतीकात्मक रूप से प्रतीक चिन्ह देकर अतिथियों के द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 2020 की बोर्ड परीक्षा में उच्च माध्यमिक कक्षा में कला वर्ग में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली स्थानीय विद्यालय की छात्रा दिशा सालवी 95.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इसी प्रकार दिव्यांशी सोलंकी 94.00, प्रियांशी सालवी 93.80, लक्षिता दवे 90.20, पुजा तेली 89.60 एवं माध्यमिक परीक्षा 2020 में स्थानीय विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली भावना ग्वाला को 78.17 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

विद्यालय परिसर में स्थानीय विद्यालय की पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती विमला शर्मा की स्मृति में उनके पति श्री देवेंद्र कुमार शर्मा एवं पुत्र श्री उपेंद्र शर्मा द्वारा राबाउमावि. प्रतापगढ़ के पुरे परिसर में सीसीटीवी का सेट लगवाकर भेंट करने पर उपेंद्र शर्मा को माला पहनाकर शाल ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर सभी अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया एवं अतिथियों द्वारा बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त सीसीटीवी केमरा सेट लगवाने हेतु श्री दीपक पंचोली प्राध्यापक राबाउमावि प्रतापगढ़ द्वारा श्रीमती विमला शर्मा के परिवार को प्रेरित किया गया। विद्यालय परिसर में उक्त सीसीटीवी लगवाने का व्यय लगभग 3,10,000 अक्षरे तीन लाख दस हजार रुपये भामाशाह श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा एवं श्री उपेन्द्र शर्मा द्वारा वहन किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं भामाशाह का आभार श्री दीपक पंचोली द्वारा व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री ऋषिकेश पालीवाल के द्वारा किया गया इस अवसर पर विद्यालय परिवार के सर्वश्री दिलीप गुर्जर सिद्धेश्वर जोशी मनोज कुमार दीपक कुमावत असलम खान मशरूफ अहमद अंबालाल कलाल विक्रम सिंह श्रीमती कल्पना शर्मा ममता कुवर लविका शर्मा श्यामा डूंगरिया ममता जैन सरोज व्यास उषा दवे प्रवीणा भाणावत नाजिमा खान तारामती गांधी संध्याकिरण हेमा शर्मा अंजली तेली डाली कुमारी आदि उपस्थित रहे।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

पाली

श्री बंशीलाल रामनाथ अग्रवाल रा.उ.मा. वि. भाटून्द पं.स. बाली को श्री छगन लाल कुमावत से एक कम्प्यूटर सैट प्राप्त जिसकी लागत 32,000 रुपये, श्री बाबू लाल जोशी (शिव बुक डिपो) सुमेरपुर द्वारा प्राथमिक कक्षाओं हेतु डेस्क प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री मदन लाल दवे से एक तीरंदाजी सैट प्राप्त जिसकी लागत 6,000 रुपये, श्री प्रभुलाल जानी से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 4,000 रुपये, श्री नरेन्द्र कुमार दवे से दो पंखे प्राप्त जिसकी लागत 2,400 रुपये। **रा.उ.मा.वि. कण्टालिया तह. मारवाड़ जं.** में H.P.C.L. जोधपुर द्वारा आधुनिक लाइब्रेरी का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 42,00,000 रुपये, श्री अमर चन्द सीखी द्वारा प्रवेश द्वार का निर्माण एवं फर्नीचर खरीदा गया जिसकी लागत 5,21,000 रुपये, श्री चौथाराम भाटी द्वारा बाउन्ड्री की तारबन्दी कराई गई जिसकी लागत 2,50,000 रुपये, श्री विष्णु कुमार व्यास से 100 स्टूल टेबल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 1,35,000 रुपये, स्थानीय विद्यालय स्टाफ द्वारा फर्नीचर भेंट जिसकी लागत 31,500 रुपये, घीसू लाल जांगिड़ से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 29,500 रुपये, श्री तुलसीराम से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 29,500 रुपये, श्री नेमाराम सीखी से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 23,000 रुपये, श्री सतार मौहम्मद से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 23,000 रुपये, ग्राम पंचायत कण्टालिया से साऊण्ड सिस्टम प्राप्त हुआ जिसकी लागत 16,000 रुपये, श्री चून्नीलाल चौहान से फर्नीचर प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री रुपम उ.मा.वि., हरिया माली से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये, कण्टालिया अधीनस्थ विद्यालय से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री सुरेन्द्र सैन से एक लेक्चर स्टैण्ड प्राप्त जिसकी लागत 9,000, श्री ढगला राम परिहार व नारायण लाल से फर्नीचर प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 7,500-7,500 रुपये, श्री मोतीलाल अरोड़ा व श्रीमती भगवती व्यास से फर्नीचर प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 5,100-5,100 रुपये, श्री प्रेमचन्द मौर्य फर्नीचर हेतु 5,000 रुपये प्राप्त, श्री ओम प्रकाश मौर्य से बेण्ड ड्रम प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री ताराराम प्रजापत से एक ट्रोली ईंट प्राप्त जिसकी लागत 4,000 रुपये, श्री लादूराम मेघवाल से 2 दरी प्राप्त जिसकी लागत 2,000 रुपये।

सिरोही

रा.उ.मा.वि. भीमाना को श्री हेमेन्द्र सिंह देवड़ा (सरपंच, भीमाना) से विद्यालय के छात्र-छात्राओं हेतु 25 सैट लोहे के टेबल स्टूल बनवाकर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये, समस्त

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

शाला स्टाफ द्वारा भी 25 सैट लोहे की टेबल-स्टूल बनाकर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये।

बीकानेर

रा.उ.मा.वि. जैतपुर को श्रीमती पुष्पा गोयल (प्रधानाचार्या) से एक वाटर कूलर प्राप्त जिसकी लागत 24,200 रुपये।

जालोर

रा.उ.मा.वि. लूणावास, पं. स. भीनमाल को सर्वश्री नरसाराम हीराराम (अध्यापक), दिनेश कुमार हरणी लूणावास से टिन शेड प्राप्त हुआ जिसकी लागत 90,000 रुपये, श्री मोड सिंह राजपूत से वाई-फाई स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 7,250 रुपये। ग्राम के 28 भामाशाह द्वारा 61,600 रुपये के लागत से 56 स्टूल टेबल सैट प्राप्त, श्री भलाराम चौधरी लूणावास द्वारा विद्यालय में रंग-रोगन का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री करना राम सुथार से एक R.O.

हमारे भामाशाह

मशीन विद्यालय में सादर भेंट जिसकी लागत 28,500 रुपये, डॉ. हरि सिंह चारण (वरिष्ठ अध्यापक) से वाटर कूलर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 28,500 रुपये।

जोधपुर

शहीद छोटूराम मेघवाल रा.उ.मा.वि. चोपासनी चारणान पं.स. तिवरी को H.P.C.L. मितल फाउंडेशन एवं H.P.C.L. मितल पाईप लाइन के संयुक्त सहयोग से विद्यालय को 328 टेबल-स्टूल भेंट जिसकी लागत 3,50,000 रुपये और पाँच कम्प्यूटर लिनोवा भी विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 2,02,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. देवातड़ा तह. भोपालगढ़** में श्री लालसिंह सिसोदिया की तरफ से विद्यालय भवन का रंग-रोगन करवाया गया जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री दिलीप सिंह सिसोदिया द्वारा 30X20 के चबूतरे का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री मांगीलाल खटवालिया की तरफ से विद्यालय में प्रोजेक्ट एवं साइकिल स्टैण्ड का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 1,25,000 रुपये तथा अन्य भामाशाहों के सहयोग से 50X50 का चबूतरे का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 85,000 रुपये, स्टाफ के सहयोग से स्वतंत्रता दिवस पर 50 पौधे फल, फूल और छायादार वृक्ष लगवाए गए।

नागौर

रा.उ.मा.वि. टूंकलिया पं.स. मेड़ता में स्टाफ के सहयोग से विद्यालय में रंग-रोगन करवाया जिसकी लागत 60,000 रुपये, दो लकड़ी की दिवार, अलमारी लागत 12,000 रुपये, श्रीराम खोजा (प्रधानाचार्य) से एक कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 5,500 रुपये, कक्षा 12 के छात्रों द्वारा एक लकड़ी का लेक्चर स्टैण्ड विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 4,000 रुपये, ग्रामीण भामाशाहों व पूर्व छात्र द्वारा दिवार की 100 फुट लम्बाई व 3 फुट ऊँचाई बढ़वाई गई तथा एक कमरे की मरम्मत व दरवाजे, खिड़की लगवाई जिसकी कुल लागत 45,000 रुपये।

दौसा

रा.बा.उ.मा.वि. लालसोट को अध्यक्ष ग्रेन मर्चेन्ट एसोसिएशन से 40 सैट फर्नीचर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 30,800 रुपये, श्री पुरुषोत्तम जोशी से एक माइक सैट (आहूजा) 2 स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 8,425 रुपये, री गोविन्द प्रसाद गोयल से आहूजा एम्पलीफायर मशीन (250 वाट) प्राप्त जिसकी लागत 14,000 रुपये, श्री संजय वैद से एक मिक्सी प्राप्त जिसकी लागत 4,299 रुपये, अभिभावक कक्षा 12 से ऑफिस टेबल प्राप्त जिसकी लागत 4,500 रुपये तथा एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, पाटनी पेट्रोल पम्प लालसोट से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्रीमती रेखा राजवंशी (व्याख्याता) से एक बैंच प्राप्त जिसकी लागत 1,100 रुपये, श्री आनन्दी लाल मीना (पूर्व सरपंच) से 5 छोटी बैंच प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री युगल बिहारी शर्मा (सवाई माधोपुर) से 5 छोटी बैंच प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये तथा अक्षय पेटिका में 2,100 रुपये का दान, श्री रविशंकर सैनी एवं अभिभावक कक्षा 12 द्वारा एक सौफा सैट भेंट जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री प्रभुलाल नोगिया से टी टेबल प्राप्त जिसकी लागत 2,800 रुपये, श्री विनोद कुमार शास्त्री द्वारा पानी की टंकी का निर्माण हेतु 2,675 रुपये प्राप्त, श्री पवन सोजावत से एक गैस चूल्हा प्राप्त जिसकी लागत 1,300 रुपये, श्री लल्लू सैनी से एक पलंग प्राप्त जिसकी लागत 1,000 रुपये, श्री गोकुल सैनी से पानी की मोटर प्राप्त जिसकी लागत 5,230 रुपये, पाटनी पेट्रोल पम्प से 15 टेबल प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, श्री अर्पण त्यागी से 02 गैस भट्टी प्राप्त जिसकी लागत 1,800 रुपये, श्री राकेश बिहारी (पार्षद) से माईक कोड लैस प्राप्त जिसकी लागत 2,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : सितम्बर, 2020

माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्रीमान् सौरव स्वामी अपने कार्यालय में राजकीय सादुल उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर द्वारा निर्मित वेबसाइट का लोकार्पण करते हुए। साथ में जिशिअ. बीकानेर श्री उमाशंकर किराडू एवं अन्य शिक्षा अधिकारीगण।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्रीमान् सौरव स्वामी को कार्यालय में श्रीमती इन्द्रा चौधरी, जिशिअ., माशि. निदेशालय, बीकानेर द्वारा ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से राबाउमावि. कानोई (सुजानगढ़) चूरू में प्रयोगशाला उपकरण हेतु 21,000 रुपये की राशि भेंट करते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खेरपुरा (बेंगु) चित्तौड़गढ़ शाला परिसर में पौधारोपण कर रक्षासूत्र बांधकर संकल्प लेते हुए संस्थाप्रधान मधुबाला शर्मा, स्टाफ एवं विद्यार्थी ।

संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा बीकानेर कार्यालय में आदिवासी दिवस पर पौधारौपण करते शिक्षा अधिकारी एवं राजस्थान शिक्षक संघ (अम्बेडकर) के पदाधिकारीगण।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूंगरपुर द्वारा जिला मूल्याकंन समिति की बैठक में विचार-विमर्श करते हुए सीओ स्काउट श्री सवाई सिंह एवं संगठन के पदाधिकारीगण।

राउमावि. शोभागपुरा, उदयपुर में राउण्ड टेबल इण्डिया ट्रस्ट द्वारा चार कक्षा-कक्षों का निर्माण (फर्नीचर सहित) लागत 23 लाख रुपये का लोकार्पण करते हुए संयुक्त निदेशक (माशि) उदयपुर श्री शिवजी गौड, स्टाफ एवं अन्य अतिथिगण।

स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल, टोडारायसिंह (टोंक) में प्रधानाचार्य एवं स्थानीय शाला स्टाफ के सहयोग से शाला परिसर में माँ सरस्वती के मंदिर का निर्माण व मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा पश्चात अनावरण करते हुए प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार गुप्ता एवं शाला स्टाफ तथा अभिभावकगण।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● सितम्बर, 2020 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2020 पृष्ठ 132 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : सितम्बर, 2020

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011